राहुल सांकृत्यायन

प्रकाशक
किताब महल • इलाहाबाद

दो शब्द

ऐनी सोवियत-मध्य-एसियाके प्रेमचंद हैं उनका "दाखुंदा" (और "गुलामान" भी) केवल उपन्यास नहीं इतिहास हैं। सोवियत् मध्य-एसियाके परिचयमें ऐनीके उपन्यासों से बढ़कर सहायक शायद ही कोई पुस्तक हो। यह भी स्मरण रखना चाहिये, कि ऐनीने अपनी पुस्तकोंको अपने लोगोंके लिये लिखा था, जिनसे उनका मनोरंजन ही नहीं शिक्षा भी हुई। लेखकने अपने उपन्यासोंमें मध्य-एसियाके समाजका सूक्ष्म चित्र उतारकर रख दिया है, जिससे भविष्यके इतिहास प्रेमी तथा समाजशास्त्री बहुत लाभ उठायेंगे।

राहुल सांकृत्यायन

प्रयाग
१५—३—४८

विषय-सूची

प्रथम खण्ड

बेचारे किसान

(१९९८—१९१३)

महान उपन्यासकार सद्रुद्दीन ऐनी

(जीवनी पुस्तक के अन्त में)

१

दर्रा-निहाँ

यदि आप सरेजूयसे कुर्गानतप्पा हो पहाड़ोंमें अन्दर ही अन्दर जाना चाहें, तो आपका रास्ता दर्रा-निहाँसे जायगा। दर्रा-निहाँका दूसरा नाम तङ्ग-निहाँ भी है। यह हिसारकी अति रमणीय पर्वत-शृंखलाके दर्रों (जोतों) मेंसे एक है। जैसाकि नामसे मालूम होता है, यह दर्रा दृष्टिसे छिपा (निहाँ) है, और केवल दो ओरसे—सरेजूय और बाबालकी की तरफसे दिखाई देता है। जिस पर्वतने इस दर्रेको अपने घुमावमें छिपा रखा है, वह भी दूरसे देखने पर एक बिना सूराख या छेदकी शिला-सा मालूम होता है। सरेजूयसे आकर दर्रेसे नीचे पहुँचने पर पानीसे कटी एक दरार दिखाई पड़ती है। पहले-पहल देखने पर आप सोचेंगे, कि वर्षाके पानीने युगोंसे पहाड़के ऊपरसे नीचेकी तरफ गिरते शनैः-शनैः पर्वतहृदयको काटकर यह आकार प्रदान किया है; लेकिन जब आप और भीतरकी ओर बढ़ेंगे, तो यह विचार दूर हो जायगा। आप समझने लगेंगे, यह दरार पानीका कटाव नहीं, बल्कि एक घूम-घुमौआ सँकरा मार्ग है, जिसे मानो सैनिक इंजिनियरोंने शत्रुकी निगाहसे छिपा रखनेके लिये अपने सैनिक दुर्गमें जानेको तैयार किया है। यह मार्ग बहुत पेचीला और इतना अन्धकारपूर्ण है, मानो पर्वतकी कटिमें सेंध दी गई है।

लेकिन यह मार्ग सुरंगोंकी तरह ऊपरसे ढँका नहीं। इसकी दोनों तरफ़ पर्वत कई तल्लोंकी अट्टालिकाओंकी पाँती-सा खड़ा है और सिरपर आसमान दिखलाई पड़ता है। सारे दिन सूर्यकी धूप चाहे न भी पड़े, किन्तु दोपहरको वह इन दीवारोंके ऊपरसे झाँकता जरूर है और उसका प्रकाश दीवारकी जड़पर देखा जा सकता है।

अगर आपके दिलमें पर्वतके चमत्कारको देखनेका शौक़ है, तो भय और शंकाको मनसे हटा, इस तङ्ग अँधेरे मार्गसे त्रस्त न हो, आगे निगाह किये बहादुरीसे क़दम बढ़ाते चलिये। दृश्य आरम्भ होता है।

नीचे धारा बह रही है। यह न समझिये कि इस धारामें मन दो मन भारी चीज़को बहा ले जानेकी शक्ति है। वस्तुतः यह कितने ही निर्बल चश्मे हैं, जोकि बादशाही जमानेके अन्याय-पीड़ितोंकी चश्मों (आँखों) की तरह अपने आँसुओंको बूँद-बूँद टपका रहे हैं। अन्तर इतना ही है कि वह आँखोंसे खून बहाते थे और यह पानी।

इन झरनोंसे गिरती बूँदें एकत्रित हो एक छोटी धाराका रूप लेती हैं। और पानी इतना साफ़ है, मानो पत्थरोंमेंसे निखारकर उसे शुद्ध किया गया है और वह रज-धूलि-रहित हीरे-सा दिखलाई पड़ता है। वस्तुतः यह वही बर्फ़ और वर्षाका जल है, जो पाषाणकणोंसे गुजरते साफ़ होते आया है। इस धारामें मैदानी नदियोंकी भाँति कीचड़-मिट्टी नहीं। इसके तट और भूमि शिलाखण्डों और पाषाणकणोंके हैं, जिससे पानी सदा दर्पणकी भाँति स्वच्छ रहता है। तट और निम्न भागकी स्वच्छताने धाराकी स्वच्छताको कई गुना बढ़ा दिया है।

यदि आप दोपहरको इस धाराके किनारे आएँ, तो उसपर आँख नहीं गड़ा सकते। दीवारोंपर पड़ती सूर्यकी किरणें, निर्मल जल और स्वच्छ धारापर प्रतिबिम्बित हो, अपनेको उछाल रही हैं। दीवारोंके पत्थर इस उद्दीपित जलके भीतर इस तरह दिखलाई पड़ रहे हैं, मानो चतुर पाषाण-शिल्पियोंने खुरदरे पत्थरोंको एकके-ऊपर-एक रख ज्यामितीय

चित्र अङ्कित किये हैं। विशाल दीवार और पतली धाराके अन्दर भुवन-भास्करका चपल प्रतिबिम्ब आपको आश्चर्यित किये बगैर न रहेगा। अगर गीदड़ों भेड़ियों जैसे हिंसक जंतुओंसे भय न खाते हों, तो स्वच्छ आकाशवाली रातको इस जगह आइये और यहाँके अद्‌भुत दृश्यको देखिये। दर्रीकी छतवाली दरारपर पंक्तिबद्ध तारागण किरणें बिखेरते अपने प्रतिबिम्बको धारापर डाल रहे हैं। पाषाणखण्डोंके फर्शपर धारा बड़ी मनोरम गतिसे निम्नोन्नत होती बह रही है, और उसकी गर्दनमें रुपहली जंजीरका सुन्दर हार बना रही है। प्रत्येक तारा इस जलमें अपना प्रतिबिम्ब डाल रहा है और इन निम्नोन्नत तरङ्गोंमें अपना अलग-अलग चक्कर तथा भँवरियाँ तैयार कर रहा है। इस प्रकार यदि ऊपर आकाशमें सौ तारे दिखाई पड़ते हैं, तो इस अँधेरी रातमें धाराके अन्दर चालीस-धरातलवाले दर्पणके सामने रखे विद्युत्प्रदीपोंकी भाँति बीस गुना तीस गुना किरणें बिखेर रहे हैं।

यदि सामने नजर रखकर आप आगे बढ़ें, तो एकाएक यह प्रकाश-मान जल पत्थरोंके नीचे वैसे ही छिप जायेगा, जैसे बादलोंके पीछे चाँद। इस मुफ़्त, किन्तु अति नयनाभिराम दृश्यसे वंचित होनेपर खेद अवश्य होगा, किन्तु मनमें अवसाद न आने दीजिये। सौ दो सौ पग और आगे बढ़ जाइये। दीवारकी चन्द घुमावटोंको पार कीजिये। फिर वही पत्थरोंके अन्दर छिपा हुआ जल दूसरे पत्थरोंपर से उबलता-उछलता दिखलाई पड़ेगा और सुरङ्गी राहसे गुजरते कितने ही और झरनोंको साथ लेते, पहलेसे भी अधिक शक्तिशाली और तेज भी। अब आवाज अधिक तीव्र है, और पाषाणखण्डोंको लुढ़काती-बिछाती, रास्ताको बराबर करती धारा बह रही है। जैसे-जैसे आप आगे बढ़ेंगे, धाराको भी अधिक बड़ी और पूर्ण पायेंगे। अब आपका मार्ग उतना सङ्कीर्ण और अन्धकारपूर्ण नहीं है। ऊपर नजर दौड़ानेपर आकाश भी अधिक विस्तृत दिखाई पड़ेगा। अब बर्फ़ और वर्षाके काटे शिलाखण्डोंके

गिरनेका भी भय जाता रहा। यदि कोई पत्थर गिरे भी तो आप अपनेको एक तरफ हटा ले सकते हैं। यहाँ जहाँ-तहाँ पिस्ता, बादाम, देवदार जैसे पहाड़ी वृक्ष भी दिखलाई देने लगे। और कुछ फासला तय करें। यह दर्रीका कटि-प्रदेश है। एक धारा पहाड़से गर्जन करती गिर रही है। यहाँसे भरी धारा दौड़ रही है। अगर यहाँ खड़े हो अपनी चारों ओर निगाह डालें, तो जान पड़ेगा आप एक पाषाणी नौकामें सवार हैं। अन्तर यही है कि दूसरी नौकाएँ पानीपर चलती हैं, और यहाँ नौकापर पानी चल रहा है। इस नौकाके मुँह और कटिको खोदकर लोगोंने अपने लिये घर बना लिये हैं। यहाँ कोई घर लकड़ी या कच्ची ईंटोंका नहीं। इस दर्रीके निवासियोंके घर पक्षियोंके नीड़ोंसे अन्तर नहीं रखते। अन्तर है तो इतना ही कि इन घरोंके छिद्र आदमीके शरीरके अनुसार कुछ ज्यादा बड़े हैं। ऊपरके पत्थरों और बर्फानी बाढ़से बचनेके लिये उन्हें सख्त किया गया है।

२

तरुण पनिहारिन

दर्रीके निवासी अपने-अपने काममें लगे थे। लड़कोंने ढोरोंको पहाड़ी डाँड़ेपर ले जा चरनेको छोड़ रखा था। सयाने हलोंकी जोड़ी लिये दर्रीकी उन समतल पतली जमीनोंको जोतनेमें लगे हुए थे, जहाँ युगोंसे बर्फ और वर्षाके पानीने गुजरते हाथभर मिट्टी डाल दी थी। औरतें और लड़कियाँ दूध गरम कर रही थीं, दही जमा या मह रही थीं, अथवा मसका निकालने या घी तैयार करनेमें लगी थीं। बूढ़े दो-दो चार-चार हो पत्थरोंका तकिया लगाये बैठे, पुरानी कहानियाँ और अपनी जीवन-घटनाएँ सुना रहे थे।

एक जगह एक बीससाला जवान, मानो अपनी चिन्ता मिटानेके लिये, मनुष्योंकी बस्तीसे दूर आकर बैठा था। उसके सरपर फटा साफा, तनपर फटा कुर्त्ता था, ऊपरसे चकत्ता-चकत्ता हुआ जामा, जिसके ऊपर चीथड़े-चीथड़े हुआ कमरबन्द बँधा था। और पैरोंमें तिनकेकी चपलियाँ थीं। उसकी चमकीली आँखोंसे भय टपक रहा था। सेब जैसे उसके लाल कपोलोंपर त्रासकी रेखा अंकित थी। जवानके हाथमें एक छः हाथकी लाठी थी, जिसकी नोंकसे वह भूमिपर यंत्रवत् रेखायें खींचता, बिन्दु बनाता और मिटा देता था। कभी-कभी वह खड़ा हो सामनेके एक घरपर नजर डालता और फिर अपनी जगह बैठ रेखांकनमें लग जाता।

वह अपने आपसे बोल उठा—क्या ये आज पानीके लिये नहीं आयेंगे?

जिस घरकी तरफ नौजवान जबतब नजर डालता, वहाँ तीन व्यक्ति दिखलाई पड़ रहे थे। एक पचाससाला मर्द शिलातलपर बैठा रोटी-दही खा रहा था। दूसरी थी चालीससाला स्त्री जो आटेका खमीर बना रही थी। तीसरी सोलह-सत्रहसाला लड़की जो मथानीसे दही मथ रही थी। वह बड़े जोरसे अपने काममें निरत थी। उसके सिर और मुँहसे पसीना चू रहा था। कभी-कभी वह मथानी छोड़ शरीरको सीधा करती और हाथसे ललाटके स्वेद-बिन्दुओंको पोंछती। पतली रस्सियोंकी तरह बँटे अपने लम्बे कृष्ण केशोंको सीनेसे समेट पीठपर डालती। ऐसा करते वह अपनी आँखोंके कोनेसे खाना खानेमें लगे पुरुषकी ओर जबतब देख लेती। अगर पाती कि वह उसकी तरफ नहीं देखता है, तो आँखें चुराकर लाठीकी नोकसे रेखांकन करते जवानपर निगाह डालती। संयोगसे यदि निगाहें मिल जातीं, तो उसका चेहरा खिल उठता और फिर जल्दीसे वह मथनेमें लग जाती। अगर निगाह न मिल पाती, तो निराश हो जाती और काली आँखोंमें चिन्ताके चिह्न प्रकट

होते; जिसका प्रभाव उसके बाहुओं तक पड़ता। फलस्वरूप मथानी की गति धीमी पड़ जाती।

पुरुषने खाना खतमकर दराँती और रस्सी हाथमें ले स्त्रीकी ओर देखकर कहा—आचेश! जबतक तेरा खमीर तैयार होता है, तबतक मैं भी एक बोझ ईंधन-लकड़ी ले आऊँ।

वह कंकड़ोंकेभरे वर्षाजल द्वारा समतल किये मार्गसे पहाड़के ऊपरकी ओर रवाना हो गया। स्त्रीने खमीरको कठौतेसे निकाल, भेड़के चर्मपर रख एक रुईदार जामासे ढँक दिया; फिर पासमें पड़े मिट्टीके आफताबा (टोंटीदार लोटा) से हाथ धोया। पानी खतम हो गया। चाहा कि तूंबेसे, जो कि परिवार में घड़ेका काम दे रहा था, पानी उँड़ेल ले; लेकिन देखा कि वहाँ भी पानी नहीं है। उसने मथनेमें लगी लड़की की ओर निगाह करके कहा—"गुलनार! पानी ला, मैं मसका तैयार करे लेती हूँ। जल्दी कर। पानी बिलकुल नहीं। खमीर अभी तैयार होनेवाला है। तेरा बाप भी ईंधन लेकर लौट रहा होगा। रोटी पकानेके लिये पानीकी जरूरत है।"

गुलनार एक आज्ञाकारिणी भली लड़कीकी तरह जल्दीसे उठ तूंबेको हाथमें ले पानीके लिये रवाना हो गई। गति उसकी इतनी तीव्र थी, कि देखनेवाला समझता—आज्ञाकारिणी बेटी माँका हुक्म पूरा करनेमें बहुत तन्देही कर रही है। लेकिन वास्तविकता कुछ और ही था? वहाँ एक दूसरी ही शक्ति काम कर रही थी जोकि उसे कहरबा घास या चुम्बककी भाँति अपनी ओर खींच रही थी।

नौजवान अब भी रेखायें खींच रहा था, किन्तु तरुणीकी प्रत्येक गति-विधिपर उसकी दृष्टि थी। जिस समय तरुणी तूंबा लेकर चली, नौजवान भी अपने स्थानको छोड़ माँकी आँखोंसे ओझल एक शिलाकी ओटमें जा बैठा। अब तरुणी भी नजदीक आ पहुँची। उसने मुड़कर मथनेमें लगी माँकी ओर एक नजर डाली, फिर तेजीसे रास्ता बदल उस

"मैं पानी के लिये आई"

पृष्ठ ७

चट्टानके पीछेकी तरफ चल पड़ी, जहाँ नौजवान बैठा हुआ था और ऐसी सूरत बनाये, मानो नौजवानके वहाँ होनेका उसे पता ही नहीं। उसने आश्चर्य प्रगट करते कहा—"यादगार ! तू यहाँ क्या कर रहा ?"

"तू यहाँ क्या कर रही ?"

पानी लेने आई—कहकर वह पानीके किनारेकी तरफ चल पड़ी।

—पानी लेने आई ! मैंने तो समझा, आग लेने आई, जोकि इतनी जल्दीमें है।

गुलनारने मुस्कुराकर तूंबेको नीचे रख दिया और खुद भी चट्टानपर बैठ गई। फिर एक क्षण तरुणकी चिन्तापूर्ण आँखोंकी ओर नजर डालकर कहा—

—सच कह, यादगार ! तू यहाँ क्या कर रहा है ?

—पहले तू कह कि यहाँ क्यों आई ?

—मैं पानीके लिये आई; देख, यह रहा तूंबा—कहते लड़कीने लौकेकी तरफ इशारा किया।

—मैं यहाँ भेंड़ें चरा रहा हूँ ; देख, यह रही चरवाहीकी लाठी—कहकर लाठीकी तरफ इशारा किया।

—यादगार ! मैंने ऐसी अवस्थामें तुझे कभी नहीं देखा। आँखें बता रहीं कि तेरे दिलमें कोई बड़ी भारी चिन्ता है, मन बेहद परेशान है। सच बता, क्या बात है ?

—कुछ नहीं मुझे हुआ। मन भी मेरा ठीक है। हाँ, एक बात तुझसे कहना चाहता था, कहूँ या न कहूँ, इसी दुविधामें पड़ा हूँ।

—अगर मुझे खुश रखना चाहता है, तो कह डाल। चाहे बात कितनी ही बुरी क्यों न हो, मैं उसे सुनकर रंज न होऊँगी।

—बात बुरी नहीं, अच्छी है। खासकर तेरे लिये शुभ और आनन्दकी बात है। बता ही क्यों न दूँ ?

पुराने कुर्त्तेकी ओर इशारा करते हुए गुलनार ने कहा—बस, यही

है। देखती ही है, यह भी करीब-करीब फट चुका है। इसके अलावा दूसरा मेरे पास नहीं है। फिर क्यों तू मुझे बधाई देना चाहता है?

—कल सुबह नये कुर्त्ते पहनेगी और अतलस-अदरसके कुर्त्ते रेशमके कुर्त्ते, न कि यह चिट-पेवन्द लगा कुर्त्ता।

—यादगार, पहेली न बुझा। मैं तेरी बात बिल्कुल नहीं समझ पा रही हूँ। आखिर तुझे हुआ क्या है?

—तूने नहीं सुना?

—क्या?

—अपनी शादी!

यह बात सुन गुलनारका चेहरा लाल हो गया। अगर यादगारकी आँखों पर भविष्यकी चिन्ताने अँधेरेका पर्दा न डाल दिया होता, तो गुलनारके इस रूपको देखकर वह पहलेसे भी अधिक उसपर मुग्ध हो जाता। लेकिन इस वक्त यादगारका ध्यान गुलनारके ललित सौन्दर्यकी ओर न था। वह एक गम्भीर समस्याकी तान-बुनमें पड़ा था। यादगारने पिछले दिन अक़सकाल (मुखिया) के लड़केसे सुना था, कि गुलनारकी सगाई हमराह बायके लड़केके साथ होनेवाली है। अक़सकाल बीचमें पड़ा है। जल्दी ही शहर जाकर चीजें खरीदी जानेवाली हैं। फिर शादी और फ़ातिहा-पढ़ाई होगी। यही बात थी जिसने यादगारको कलसे परेशान कर रखा था। वह चाहता था कि गुलनारको कहकर इसके बारेमें उसकी राय मालूम करे। यादगारने सारी सुनी बात एक-एक करके कह सुनाई। गुलनारने सुना और सुननेपर उसका भी चेहरा मुरझा गया, परेशानी उसपर भी आ गई। एक ओर यह सब था और दूसरी ओर लज्जा और शरम अपने मनोभावोंको साफ़-साफ़ व्यक्त करने नहीं दे रही थी। वह केवल इतना ही कह सकी—यादगार! सच समझ। तुझे छोड़ मैं और किसीसे शादी न करूँगी। चाहे सिर भी काट डाला जाय, मैं स्वीकार नहीं करूँगी।

यह कहकर उसने तूम्बा उठा लिया और शिरको इतना झुकाये पनघटकी ओर चली, मानो उसपर अस्सी मन भारी सील रखी हो। यादगार जमीनमें खूँटेसे गाड़ दिया गया था, चिन्ता और बेकलीके नीचे दबा जा रहा था।

३

यसावुल (पुलिस-सवार)

दर्रा-निहाँ पर शान्ति छाई हुई थी। हर आदमी अपने रोजके काममें लगा हुआ था। कहीं कोई असाधारण गतिका चिह्न नहीं। यादगार और गुलनारके दिलोंमें एक तीव्र हलचल पैदा हो ज्वाला-वमन करना चाहती थी अवश्य, किन्तु इसे उन दो दिलोंके सिवा कोई तीसरा नहीं जानता था। इसी समय एक बड़ा पत्थर पहाड़की चोटी परसे गिरा। वह पत्थर दूसरेको, दूसरा तीसरेको इस तरह बीसियों पत्थरोंको लुढ़काते जमीन पर पहुँचा। आपसमें टकरानेसे पत्थरोंकी कड़ाक-कड़ाक आवाज पैदा हुई। पहाड़ी दीवारोंसे टकरा, हजार गुना बन उस आवाजने दर्राको कम्पित कर दिया। इस आकस्मिक आवाजको सुन सारे लोगोंने एक ही बार खड़ा हो उस ओर निगाह डाली, जिधरसे पत्थर गिर रहे थे। वहाँ पहाड़के डाँड़ेपर एक नौजवानको उन्होंने खड़े देखा। जब नौजवानने सारी निगाहोंको अपनी ओर देखते, सारे कानोंको अपनी ओर लगे पाया, तो सारी पर्वतमालाको बुलंद आवाजसे गुँजाते हुए कहा—यसावुल !

दूर और नजदीकके सारे लोग जिसमें इस आवाजको सुन लें, इसलिये हर तरफ़ 'यसावुल' 'यसावुल' शब्द दुहराया गया। वस्तुस्थितिका पता हमारे पाठकोंके लिये चाहे स्पष्ट न हो, किन्तु दर्राके लोगोंके लिये

1489

वह साफ थी। सभी हाथके हर काम और चीज़को वहीं छोड़ ऊपर निगाह किये पहाड़ी डाँड़ेकी तरफ दौड़े। आप वहाँ होते तो ख्याल करते—क्या यह हरिणोंके झुंड हैं कि शिकारीको देख या बंदूककी आवाज सुनकर इस तरह भाग पड़े; अथवा कबूतरोंका झुंड है जो कि बाज़ या दूसरे शिकारी पक्षीके आक्रमणसे भयभीत हो जान लेकर उड़ पड़ा! दश मिनट बाद सारे लोग पहाड़के डाँड़ेपर पहुँच चुके थे। सभी अपनेको विपद-मुक्त समझने लगे। जरा दम लेनेके बाद "वह अभागा शिकारी कौन और कहाँ है?" यह जाननेके लिये उन्होंने अपनी दृष्टि वहाँ गड़ाई, जहाँ **सरेजूयका** रास्ता आकर दर्राके दूसरे रास्तोंसे मिलता था।

दश मिनट और प्रतीक्षा करनेके बाद उन्होंने एक पचीससाला सवारको आते देखा। उसके शिर पर एक ढाकई साफा था, जो बुख़ाराके सिपाहियोंकी तरह शलगमकी शकलमें बँधा था। शरीर पर अदरसका लम्बा जामा, पैरोंमें बुख़ारी जूता, पीली सलवार (पाजामा) के किनारोंपर लाल-काले रेशमी धागोंका काम था। जवानकी बाईं बगलमें एक हिसारी तलवार लटक रही थी, कन्धेसे कार्तूसी बन्दूक; कमरमें रुपहला कमरबंद लपेटा हुआ था, जिसके दोनों पहलुओंमें चमड़ेका खीसा बखिया किया हुआ था।

यद्यपि सवारकी शकल-सूरत भयदायक थी, लेकिन लोग अब डाँड़े पर पहुँच चुके थे, उन्हें कोई भय नहीं था। यह उसकी शक्तिसे बाहरकी बात थी, कि वह सवार या प्यादा पहाड़ीके सिरेपर जा पहुँचता। पहाड़ों पर दौड़ लगाना तो उन्हींका काम था, जो कि यहाँ पैदा हुए और पले। अब हमारे ये पर्वती पक्षी उस आदमीको परिहासपूर्ण दृष्टिसे देख रहे थे, ठीक उसी तरह जैसे कुत्तोंकी चंगुलसे निकलकर वृक्षपर पहुँच गई बिल्ली। मानो "अगर मर्द हो तो अब आओ हमारे पास। जो चाहो, सवाल करो और जवाब लो" कहते हुए वे उसे

मैदानमें आनेकी चुनौती दे रहे थे। शिकार के जालसे छूटकर निकल भागनेपर जैसे शिकारी और चंगुलसे मुर्गीके निकल भागने पर जैसे गीदड़ हो, वैसे ही सवार क्रोधसे होठोंको चाबता व्यर्थ ही पागलकी भाँति पहाड़में घोड़ेको दौड़ा रहा था।

४

चट्टानके पीछेवाला आदमी

—गुलनार ! गुलनार ! जल्दी आ, हम पकड़े गये।

इन शब्दोंको सुनकर निराश सवारके दिलमें फिर आशाका संचार हुआ। उसने घोड़ेको उस दिशाकी ओर मोड़ एक कोड़ा लगाया। घोड़ा भी मालिकके अभिप्रेत स्थानको जाने बिना जानपर खेल सरपट दौड़ा और दो मिनटमें वहाँ पहुँच गया। सवार भी बहुत सजग, बंदूकको हाथमें लिये निशाना बाँधे तैयार था। पहुँचते ही उसने कड़कती आवाजमें हुकुम दिया :—

—दाखुन्दा (अबे पहाड़ी) ! अपने हाथोंको खड़ाकर नहीं तो यहीं ढेर हो जायगा।

'दाखुन्दा' नामसे पुकारे गये आदमीके लिये दूसरा चारा था ही नहीं। उसने आज्ञा मान ली। चारों तरफसे बंद जगहमें एक निहत्था आदमी कार्तूसी बंदूकसे लैस अश्वारोहीके समक्ष भला और कर ही क्या सकता था ? वह हाथोंको ऊपर करके खड़ा हो गया। सवार घोड़ेसे उतर पड़ा। उसने आदमीके फटे साफेके एक छोरसे दोनों हाथोंको पीठकी ओर बाँध दिया और दूसरे छोरको चारजामासे लपेट दिया। फिर एक हाथमें बंदूक, दूसरे हाथमें लगाम और चाबुक सँभाले हुए सवार ने हुकुम दिया—चल आगे !

आदमीने सवार की तरफ मुँह करके कहा—यसावुल साहब ! मुझे कहाँ ले चल रहे हो ? मेरा क्या अपराध है ?

सवारने चिल्लाकर कहा—अपराध ! तू चोर है और अपनेको फिर भी निरपराध समझता है ? पर अकेला ही तू चोर नहीं है, बल्कि वे सारे ही चोर हैं, जो जनाब-आली (बुखाराके अमीर) की सरकारसे अपनेको अलग समझ यहाँ चैनका जीवन बिता रहे हैं। और मामूली चोर नहीं हैं बल्कि बागी अर्थात् मृत्युदंडके अपराधी चोर। अगर तू बागी चोर नहीं तो क्यों हकूमतदारों (सरकारी अफसरों) से भागा ? क्यों हाकिमके हुकुमको नहीं मानता ?

ऊँचाईकी ओर चट्टानकी आड़में खड़े एक आदमीने सारी घटना देखी और वार्तालाप भी सुना। उसने क्रोधपूर्ण आवाजमें जोरसे कहा :—

—ओ यसावुल ! होश संभालकर बात कर। हमने चोर बनकर किसके घरमें सेंध लगाई ? किसकी भेड़-बकरियाँ चुराई ? किसके स्त्री-बच्चों पर बुरी निगाह डाली ? चोर वह है जो अकारण गरीबों—निरपराधोंके घरोंमें जबर्दस्ती घुसता है। चोर वह है जो निहत्थे निरीह आदमियोंको पकड़कर उनके शिरपर तलवार और छातीपर बन्दूक चलाता है। चोर वह है जो अपने काममें लगे गरीब आदमियोंको बेवजह मारता-घसीटता है। चोर वह है जो गरीबोंके न केवल मालको ही लूटता है, बल्कि उनके स्त्री-बच्चों तथा इज्जत-आबरू तकको पामाल करता है। अगर अब भी तेरी समझमें नहीं आया कि चोर कौन है, तो सुन—तू खुद चोर है, तेरा अमलाकदार और हाकिम चोर, तेरा अमीर (बादशाह) और वजीर चोर, तेरा काजी और रईस चोर। सुना ? हम जनाब-आलीकी सरकारसे भागकर यहाँ जिन्दगी नहीं बिता रहे हैं, बल्कि खुदाके बनाये इन किलों (पहाड़ोंकी तरफ इशारा करते हुए) की शरणमें शान्तिपूर्वक रह रहे हैं। जबसे तूने और तेरे जनाब-आलीने

दखल दिया, तबसे हमारे आदमियों की अधिकतर आयु हिसार और बुखारा के जेलखानोंमें कटने लगी, हमारी बहू-बेटियोंकी इज्जतको हाकिमों और अमीरने हरममें दाखिलकर खानगीके नामसे बर्बाद किया। पूछता है कि हम क्यों तेरे हकूमतदारोंको पसन्द नहीं करते ? जब-जब तुम दैवी आपदा और आकस्मिक बलाकी भाँति हमारे सिरपर पड़े, हम अनेकों बार हाथ बाँधे तुम्हारे सामने आये; लेकिन तुमने बिना पूछ-ताँछ किये हमारे हाथोंको पीठकी ओर बाँधा, हमारे माल-असबाबको लूटा और हमें जेलखानोंमें भेजा।

यसावुल इस सत्य किन्तु कटु बातको सुन उचित उत्तर न पा कुचले साँपकी तरह छटपटा रहा था। वह सोच रहा था, कि यदि इस आदमीको पकड़ पाता, तो एक गोलीमें इसका शिर उड़ा देता। लेकिन यह कब सम्भव था ? एक पहाड़ी मर्दका—जो दुरारोह दुर्गम पहाड़की चट्टानके पीछे छिपा हो—बंदूककी गोली क्या बिगाड़ सकती है ? अन्तमें यसावुल सिर्फ इतना ही कह सका :—

—मैं किसी आदमीको पकड़ने आया था, जिसपर सरेजूयके एक मातबर आदमीकी तरफसे शरई (धर्मानुमोदित) मुकदमा दायर हुआ है। मुझे अच्छी तरह पता है, कि उस गुनहगारको तुम्हारे अन्दरसे खुशी-खुशी पकड़ ले जाना असम्भव है। इसीलिये किसी एकको गिरिफ्तार करनेका मेरा मतलब था। अगर यह आदमी भी न मिला होता, तो खाली हाथों ही लौटना पड़ता। लेकिन 'खुदा यार शरीयत मददगार' (ईश्वर मित्र, धर्म सहाय) हुआ और जनाब-आलीके प्रतापसे यह शिकार हाथ लगा। अगर इस नौजवानसे तुझे काम है, तो पीछे-पीछे आ, हमारा खिदमताना दे, जमानतदार बन और असली अपराधीको सुपुर्दकर इसे छुड़ा ले आ। अगर नहीं तो समझ रख कि इसकी उमर जेलखानेकी भेंट हुई।

चट्टानके पीछे वाले आदमीने कहा—ले जा, इसका गोश्त कबाब

बनाकर खा। यहाँ पैसा और आदमी बेकारका नहीं है, जो इसके पीछे आयें।

५

निराशा और साहस

—जल्दी कर, आगे बढ़ दाखुन्दा!—यसावुलने हाथ-बँधे जवानको आगे चलने के लिये कहा!

आगे चलनेके अतिरिक्त जवानके लिये कोई रास्ता नहीं था। लेकिन एक बात उसे आगे पग बढ़ानेसे रोक रही थी। उसने घबराहटसे चारों ओर नजर दौड़ाई, मानो किसीसे विदाई चाह रहा हो। यसावुलने सुस्ती देखकर समझा, कि वह चलना नहीं चाहता। उसने उसकी पीठपर कोड़ा जमाकर कहा—बहरा है क्या?...

यसावुल अपनी बात समाप्त नहीं कर पाया था कि पनघटसे किसीकी क्रन्दनपूर्ण आवाज आई;

—हाय, यादगार! तुझे क्यों मार रहा है? कहा ले जाना चाहता है?

यसावुलने उधर निगाह करके देखा। एक षोड़शी उसकी ओर दौड़ी आ रही थी। उसने जवानसे पूछा—क्या, यादगार तेरा नाम है?

सिर हिलाकर तरुणने स्वीकार किया।

यसावुलकी प्रसन्नताकी सीमा न रही, उसने हँसते हुए कहा:—

—यार घरमें और हम खोजमें दुनिया भर की खाक छानें! अब भी तू अपनेको निरपराध समझ रहा है? जिस मुल्जिमको मैं तलाश रहा था वह तू ही तो है—और गर्दन पर दूसरा कोड़ा जमा दिया।

अब तक षोड़शी भी पास आ गई थी। यह कहनेकी आवश्यकता

"इसे छोड़ दो" पृष्ठ १४

नहीं कि वह गुलनार थी। वफादार गुलनारमें अपने सच्चे प्रेमीकी गिरिफ़ारीको सहन करनेकी शक्ति नहीं थी। इसीलिये वह एक ऐसे राक्षसी स्वभावके सिपाहीके समक्ष आनेमें न हिचकिचाई, जिसे देखते ही लोग "लाहौल व लाक़ूव्वत" कह उठते। हाँ, गुलनारकी दशा बड़ी दयनीय थी। कितने ही समयसे यादगारसे उसका प्रेम था और मनमें लालसा रखती थी कि दोनोंका प्रेम दोनोंके जीवनको एक सूत्रमें बाँध देगा। यादगारने अकसककालके लड़केसे सुनकर जो शादीकी बात की थी, वह गुलनारकी मधुर लालसामें विषके एक बूँदकी तरह पड़ गयी थी। तो भी उसने यह कहकर अपने मनको दिलासा दिया था, कि मुझे कदापि जबर्दस्ती जिस किसीकी बीबी नहीं बना सकते; उसका मैं अपनी सारी शक्तिसे विरोध करूँगी। उसके मनमें इसका अन्तिम रास्ता यही पसन्द आया था, कि यादगारके साथ भाग निकले। किन्तु अब वह विचार बेकार था। वह देख रही थी, यादगार उसके हाथसे छीना जा रहा है। उसे एक अपराधी, बदमाश, खूनी, बाग़ी, चोर और ग़द्दारकी तरह हाथ बाँधे ले जाया जा रहा है। वह यह भी जानती थी, कि यादगार एक गरीब, बेचारा, बेकस, अनाथ आदमी है। उसके बाप या भाई-बंद नहीं कि पैरवी और खरच-वरच करके जमानतपर छुड़ा लायेंगे। यह वियोग गुलनारकी दृष्टिमें सदाका वियोग था। यही वजह थी, कि वह सारी लाज-शरमको तिलांजलि देकर यसाबुलकी ओर दौड़ी और किसी बातकी परवाह न कर रोती-चिल्लाती बोली :—

—यसावुल साहब ! तुम्हारी बलि-बलि जाऊँ और पैर पड़ूँ। मेरी अरजपर कान दो। यह जवान बेकसूर है, चोर-बदमाश नहीं है ! किसीने इसके विरुद्ध चाहे कुछ भी कहा हो, वह झूठ है। इसे छोड़ दो। अल्लाह तुम्हारे बच्चोंको खुश...।

लेकिन यसावुल उन आदमियोंमें न था, जिसका दिल एक लड़कीके रोने-चिल्लानेसे नरम पड़ जावे। यदि ऐसी गुस्ताखी किसी मामूली

औरतने की होती, तो उसपर दो-तीन कोड़े पड़े बिना न रहते। लेकिन गुलनारके रूप और सौन्दर्य ने यसावुलके दिलको लुभा लिया था।

गुलनारका रूप-सौन्दर्य वस्तुतः मोहक था। उसकी आँखें चमकीली काली थीं; पलकें दीर्घ और मनोहर, भौंहें धनुषाकार जो हर दर्शकके दिलको आहत किये बिना न रहतीं। उसके चमकीले आ-जानु लम्बे केश मनको फँसानेमें जालका काम करते थे। गालोंपर पड़ी लहराती जुल्फोंके सौंदर्यका उतारना सुचतुर शिल्पीके लिये भी असम्भव था। सुन्दर आकार, स्वच्छ बदन, घुँघराले केश, आपसमें मिली भौंहें सभी एक दूसरेके अनुकूल, सभी एक दूसरेके लिये सौन्दर्यबर्धक थे। चमकीली आँखोंसे मुक्ताबिन्दु जैसे कपोलोंपर गिरते आँसू गुलाबपर पड़े प्रातः-कालीन ओस-कणको मात कर रहे थे। उस दशामें गुलनारका सौन्दर्य दशगुना बढ़ गया था। अपनी एक निगाहमें देखनेवालेपर जादू डाल देनेवाली उन बेपरवाह आँखोंसे अपार कातरता बरस रही थी। स्वाभि-मानी ओठ जो यादगारके सामने भी कभी मुश्किलसे खुलते थे, वह आज भिक्षा माँग रहे थे।

यसावुलको अपने प्राणोंका भय न होता, तो इस शिकारको वह हाथोंसे जाने न देता। पर वह खूब जानता था, कि उसने यदि ऐसा किया, तो तंग-निहाँसे सही-सलामत नहीं लौट सकता। सारे बाशिन्दोंकी तो बात दूर, यदि एक आदमी भी नाकेके ऊपर खड़ा हो पत्थर लुढ़काने लगता, तो उसे बच निकलनेका रास्ता न मिलता। गुलनारका पकड़ना यादगारकी गिरिफ्तारी-जितना आसान न था। इसे लोग तमाशबीन बनकर नहीं देख सकते थे। वहाँ इज्जत-आबरूका सवाल उठ खड़ा होता और वे आनपर सब कुछ करनेको तैयार हो जाते। यही वजह थी कि यसावुलको गुलनारके पकड़नेके लिये हाथ बढ़ानेकी हिम्मत न हुई। लेकिन आइन्दा उसे हाथमें लानेकी उसने ठान जरूर ली, क्योंकि यह अमलाकदार (कलक्टर) के सामने या भाग्यने यदि

सहायताकी तो हिसारके हाकिम या खुद अमीरके समक्ष पेश करनेका एक अनमोल तोहफा साबित होता। उसने थोड़ा रुककर गुलनारके बारेमें कुछ और जाननेके लिये उससे पूछा ;

—क्या तू इस जवानकी बहन है जो इतनी दुखी हो रही है ?

—नहीं—गुलनारने कहा।

—भांजी या भतीजी है ?

—नहीं।

—तो जान पड़ता है, तू इसकी औरत है।

गुलनारने शरमाते हुए कहा—अभी नहीं।

यसावुलने सिर हिलाते अपने आपसे कहा—इस सहृदयताका रहस्य मालूम हो गया। (फिर गुलनारकी तरफ निगाह करके) अच्छा, बहुत अफसोस न कर, तू अपने भावी पतिको सरेजूय या हिसारमें देख सकेगी।

इतना कहकर यसावुलने रास्ता लेना चाहा। गुलनारको उसकी मुलायम बातोंसे आशा हो चली थी, कि उसके प्रियतमको छुटकारा मिल जायगा; लेकिन अन्तिम जवाबने बेचारीके दिलको बिलकुल तोड़ दिया। तमाम दुनिया उसे अन्धकारपूर्ण दीखने लगी। कोई भी वस्तु अब उसे भयभीत नहीं कर सकती थी। कुत्तेके आक्रमणसे जान बचानेको तैयार बिल्लीकी भाँति, गुलनार सिंहनीके साहसके साथ यसावुलके तरफ यह कहती हुई झपटी :—

—ओ अन्यायी ! खूँखार ! जालिम ! देख, अभी तुझे घोड़ेसे नीचे गिराती हूँ—और गुलनारने चाहा कि यसावुलके कमरबन्दको पकड़े।

यसावुलने रिकाबसे अपने पैरको बिना निकाले जूतेसे ज़ोरके साथ गुलनारके छातीपर मारा और वह कई पग दूर एक गड्ढेमें मुर्देकी तरह जा पड़ी। उसमें चिल्लानेकी भी शक्ति न रही।

पचास क़दम ऊपर, चट्टानके पीछे खड़े आदमीने ललकारा :

—ओ आततायी ! नरभक्षक ! तू अपने लिये इस दर्रेमें कब्र खोद रहा है।

यसावुलको खतरा साफ दिखलाई देने लगा। यादगारको सामने रख उसने घोड़ेको चाबुक लगाया और देखते-देखते आँखोंसे गायब हो गया।

६

लुढ़कते पत्थर

जिस वक्त चरवाहेके पत्थर फेंकनेसे यसावुलके आनेकी खबर पा लोग भाग गये, गुलनारकी माँने कुछ मिनट प्रतीक्षा की। जब गुलनार न आई, तो समझा कि वह दूसरे रास्ते डाँड़ेपर चली गई; और अधिक प्रतीक्षा न कर स्वयं भी लोगोंके पीछे पहाड़पर पहुँच गई। गुलनारका बाप भी खबर पा दूसरे रास्तेसे भागने वालोंके पीछे-पीछे ऊपर पहुँचा। पति-पत्नी एक दूसरेके सामने हुए, तो पतिने सबसे पहले सवाल किया :

—गुलनार कहाँ है ?

—शायद यहाँ हो।

—कहाँ है, पता लगा।

—नहीं मालूम।

—क्यों नहीं मालूम ?

—...?

पतिके बहुत पूछताँछ करनेके बाद बीबीको मालूम हुआ, कि गुलनार पीछे छूट गई, लेकिन पतिके डरके मारे यही दुहराती रही, कि शायद भागनेवालोंमें वह भी यहीं कहीं है। बापने लोगोंमें एक एक

करके ढूँढ़ा, किन्तु वह वहाँ न थी। उसको विश्वास हो गया कि उसपर कोई आफत आई। फिर उसने 'हाय-तोबा' मचाते आसमानको सिरपर उठा लिया—हाय मेरी बच्ची! बच्चीको ज़ालिम ले गया!

एक अस्सीसाला बूढ़ेने गुलनारके बापके औरतोंकी तरहके रोनेको देखकर मजाक करते हुए कहा:

—रुस्तम! तेरा नाम रुस्तम भले ही हो, किन्तु तू अपनी स्त्रीसे भी अधिक कायर है! क्या होगया? आसमान नहीं फट पड़ा और न जमीन बर्बाद हो गई। लड़की भी अभी पकड़ी नहीं गई है। अगर पकड़ी गई हो तो भी विश्वास रख, उसे कोई भी नहीं ले जा सकता। क्या तू इस दर्रामें आज आया है? क्या हम सिर्फ आज यसावुलके सामने हुए? इस जगहको दर्रानिहाँ कहते हैं। यह वही दर्रा है जहाँ रहीमखाँ मंगीत अपने चालीस हजार सवारोंके साथ भी सफल न हो सका। यह वही दर्रा है, जो दानियाल अतालीक़की दुर्गभेदी तोपोंसे भी भयभीत न हुआ और देह्-नौमें घिर गये विद्रोहियोंको दो माह तक भोजन पहुँचाता रहा। यह वही दर्रा है, जिसने अकेले मुहमद अमीन हिसारीकी सरेजूयमें मदद करता रहा और उस समय जब कि शेराबादसे देह्-नौ और बाला-हिसार तक सारे देशपर मंगीती सेनाका अधिकार था। यह वही दर्रा है जहाँ सरदारोंके अपनेको बेच देनेपर भी तप्पा और पोज़न्दके चार सौ सवारोंको महमद अमीनने मार भगाया*। आज क्या यह हो सकता है, कि एक यसावुल एक लड़कीको पकड़े और सही-सलामत निकल जाये? नहीं, यह नाशुदनी है। तू ज़रा होशियारीके साथ छिपे रास्तोंसे नीचेकी ओर जा। अगर देखे कि यसावुल लड़कीको लिये जा रहा है, तो पत्थर गिराकर हमें खबर दे। हम अपने जवानोंको हुकुम देंगे, वे ऊपरसे जा दर्राके निकलने वाले रास्तेपर पत्थर

* यह घटना १७५४ ई० (११७५ हिजरी) की है।

लुढ़काकर उसे बंदकर देंगे। अगर यसावुलकी सौ जान भी हो, तो भी यह सम्भव नहीं कि वह एकको लेकर भाग सके।

दूसरोंने सिर हिलाते "हाँ ठीक, हाँ ठीक" कह बूढ़ेके साथ सहमति प्रगट की। एक चरवाहे लड़केने बूढ़ेके पास जाकर कहा :

—यादगार भी नहीं है शायद वह भी नीचे रह गया।

अक़सक़ालने झुँझलाकर कहा—अगर गिरफ्तार हो तो सिरकी न्योछावर। मालूम नहीं वह कौन और कहाँका है। यह भारी मूर्खता होगी यदि हम एक वेसिर-पैरके आदमीके लिये हाकिमोंसे भिड़कर आफत मोल लें।

बूढ़ेकी बात सुनकर यह रुस्तम ही था, जो दुरूह रास्तेसे चट्टान के पीछे पहुँचा था, वहींसे उसने सवाल-जवाब किया था।

७

मालिक

एक बड़ी शान-शौक़तवाली हवेली थी।

हवेलीके अन्दर चाराघर, बावर्चीघर और तन्दूरघर थे। भीतरी बाहरी हवेलियोंके बीच एक बहुत भारी दो-कतारी भंडारघर था, जहाँ बखारोंमें जौ गेहूँ मक्का भरा हुआ था। बाहरी हवेलीमें एक मेहमान-खाना (बैठका), दो दालान, एक साईसखाना और साईसखानाके ऊपर भूसाघर तथा पुआलघर थे। हवेलीके आँगनमें कतारसे खूँटे गड़े थे, जिनमेंसे एकपर सवारीका घोड़ा बँधा था। गोशालाके नीचे एक जोड़ी जवान बैलोंकी खड़ी थी, जिनकी गर्दनसे जूआ अभी उतारा नहीं गया था। आँगनमें एक छायादार हौज़ था, जिसके पास चबूतरेपर

जोड़ा कालीन बिछा पड़ा था। उसपर बैठने या लेटनेके लिये तीन मसनदोंके साथ दो तोशकें रखी थीं।

"खो-खो" खाँसते कोई गलीसे दरवाजाके भीतर आया। आवाज सुन हलवाहा—जो कामसे लौटकर साईसखानाके सामने चटाई पर लेटा था—सिरको उठा, आनेवालेको एक नजरसे देख फिर अपने जामाको मुँहपर डाल सो रहा। आगन्तुकने "साबिर! ओ साबिर!" कहकर पुकारा। हलवाहेने तुरन्त खड़ा हो "लब्बैक" (जी, सरकार!) कहा।

—क्या तू यहाँ सोने आया है? भोरमें जब तू हल जोत रहा था, तो क्या मैंने कहा नहीं था, कि खेतसे लौटकर खलिहान जाना? दाँवनेवाले सारे चोर हैं। आँख खता हुई नहीं कि गेहूँ अपने घर ढो ले गये! मूर्ख! मेरे हुकुम और हिदायतको भूल गया?

साबिर आँखोंको मलते-मलते अपनी जगहसे उठकर बोला—लेकिन, मालिक! क्या बिना सोये काम किया जा सकता है?

मालिकने गुस्सा-भरी आवाजमें कहा—आखिर मालिककी रोटी क्या मुफ्त समझ रखी है? खानेके वक्त बैलकी भाँति खाता है और कामके समय लँगड़ा गदहा बन जाता है। अगर सोना इतना ज़रूरी था, तो नौकर ही क्यों बना? जाड़े के दिनों में, बेकारीके वक्त ऐसा सो जाता, कि वसन्त तक न उठता।

साबिर थकावटसे चूर-चूर था। उसमें उठनेकी शक्ति न थी। वह पैरोंको मल-मलकर खड़ा हुआ, और हवेलीके अंदर की तरफ नजर करके चल पड़ा।

मालिकने फिर चिल्लाकर कहा—आखिर, तुझे हुआ क्या है? मैं कह रहा हूँ तुझे खलिहान जाने को और तू जा रहा है हवेलीकी ओर?

—घरसे रोटी तो ले लूँ? आज नमकतक मुँहमें नहीं डाला।

—जा खलिहान पर। वहाँ दाँवनेवालोंके पास रोटी खाना। मत खयालकर कि दाँवनेवाले अपनी रोटी खाते हैं। नहीं-नहीं, वे मेरा गेहूँ

चुराते हैं, उसीकी रोटी खाते हैं। अगर तू भी उसमेंसे एक कौर खा लेगा, तो टाट नहीं उलट जायेगा?

साबिरने होठोंके भीतर कहा—रोटी तो दाँवनेवाले गरीबोंकी खाऊँ और सोऊँ भी नहीं, मगर तेरा काम किये जाऊँ!

—क्या कुर्र-कुर्र कर रहा है कुत्ते? जल्दीसे खलिहान जा, मैं कह रहा हूँ।

साबिर जानेको हुआ तो मालिकने फिर टोका—पहले घोड़ेको साईस-खानामें ले जाकर घास डाल दे।

साबिरने घोड़ेको ले जाकर अस्तबल में बाँध दिया, फिर घास ले आ उसे पीटने लगा। मालिकने पीटनेकी आवाज सुनकर कहा—साबिर!

—लब्बैक (जी, सरकार)!

—इधर आ।

साबिरके आनेपर मालिकने कहा—घास कटी नहीं थी तो काटकर डाल क्यों नहीं दी? अब मैं उसे तेरे लिये काटूँ और खुद ही मालोंको चारा दूँ। बैलोंका जुआ उतार और जल्द खलिहान जा!

साबिरने जुआ उतारकर रख दिया और चाहा कि फाटकसे बाहर निकले, लेकिन मालिकने फिर पुकारा—साबिर!

साबिरने दरवाजापर खड़े-खड़े ही "लब्बैक" कहा।

—यहाँ आ!

साबिर आया। मालिकने कहा—खलिहानमें जाकर क्या करेगा?

—आपकी आँख बनकर रहूँगा, जिसमें दाँवनेवाले गेहूँ न चुराने पायें।

—बस, इतना ही काम? (अपने-आपसे) खलिहानमें जाकर उनके साथ गप्प-लड़ाते बैठ रहना चाहता है। अज़ीमशाहकी रोटी मुफ्त खाना चाहता है (फिर साबिरकी तरफ निगाह करके) कुदाल लेता जा, खलिहानकी बग़लमें जो जमीन है, उसे बराबर कर देना।

ध्यान रहे, जगह-जगह मिट्टी न ढेर हो जाय। सबको बराबर और साफ करना।

साबिरने कुदाल और झाड़ू साथ ले चलना चाहा।

मालिक—झाड़ू किस लिये ?

—साफ करूँगा।

—साफ करनेके लिये भी झाड़ूकी जरूरत ? बेरीके पेड़से डाली नहीं तोड़ ले सकता ? उससे झाड़ू देना।

साबिरने झाड़ू रखकर जाना चाहा कि फिर मालिकने कहा—मेरी ओर ताक साबिर ! जमीन बराबर करने के बाद क्या करेगा ?

—क्या इतना काम दिन भरके लिये काफी नहीं है ?

—अगर काम न करके सोना चाहे, तो दो दिनमें भी यह खतम नहीं होनेका, लेकिन अगर मालिककी रोटीको हलाल करके खाना चाहता है, तो तीसरे पहरसे पहले ही काम खतम हो जायेगा। जमीनको बराबर करनेके बाद खलिहानकी जमीनको ऊँची करना, जिसमें वह दुगुनी ऊँची हो जाय। किनारोंको और ऊँचा करना, क्योंकि खलिहानको बज्र बनानेके लिये वहाँ पानी डालना होगा; मेंडें ऊँची रहेंगी तो पानी टिकेगा।

साबिर चला गया।

मालिक मानों एक एकड़ जमीन जोत पटेला दे थके माँदे लौटे हों, 'ओह' करते चबूतरेपर आये। उन्होंने गुलाबी बूटेवाले ऊपरी जामाको उतारकर अलग रखा, पीले कमरबंदको खोला, फिर वह भीतरी जामा को ढीला कर गद्देपर बैठे। नीले अफगानी साफेको, जिसने उनके सिरको बड़ा बना रखा था, उतारकर कालीनपर बालिशके पास रख दिया। फिर दूसरी बालिशको बगलमें दबा विचारोंमें डूब गये।

८

जौका हिसाब जौ, और बख्शीश अलग

फाटककी ओर से 'इश्-इश्'की आवाज आई। मालिकने आधा उठकर देखा, कि भार लदे पाँच गधोंको हाँके दो किसान फाटकसे अंदर आ रहे हैं। किसानोंने "सलामालेकुम्" "सलामालेकुम्" कहते अन्न-भंडारके पास आ बोझोंको गिरा दिया। एक किसानने गधोंको गोशालाकी तरफ हाँक दिया, जहाँ कि बैल बँधे थे।

मालिक—नज़र! गधोंको वहाँसे हटा, नहीं तो बैलोंके चारेमें मुँह डालेंगे।

नज़र—अगर, आपकी दौलतमेंसे एक मुट्ठी घास मेरे गधे खा लेंगे, तो क्या हो जायेगा? इतनी फिक्र क्यों करते हैं मालिक?

मालिक—'ऊँट बड़ा कोहान भी बड़ा' कहावत है! मुझे अपना ही सिर-दर्द है। तू ऐसी बात कहता है, मानो अपने खलिहानसे दो बोझ भुस लादकर लाया है।

—भुस भुस ही है मालिक! एक बोझ दो बोझकी बात क्या, आपकी कृपा चाहिये—नज़रने गधोंको दूसरी ओर हाँक दिया।

मालिक उठकर कोठार के सामने आये। कुर्त्तेकी जेबसे बड़ी चाबी निकाल, ताला खोल भीतर गये। छतसे लटकते काँटेपर लकड़ीके पल्लेको लटका दिया। बटखरा रखनेकी तरफ डाँड़ीके नीचे एक छोटी-सी लकड़ी टिका दी, जिसमें डाँड़ी उस ओर कुछ लम्बी हो जाय। फिर बोझा लानेके लिये आवाज़ दी।

किसानोंने अनाजसे भरे बोरोंको अंदर पहुँचाया। मालिकको तराजूके पास देख एक किसानने कहा:

—मालिक! तोलनेकी ज़रूरत नहीं। चार मनसे ज्यादा लाये हैं। कम नहीं होगा सरकार!

—तोलकर पक्का कर लेना अच्छा है। कहावत है "हक़ हक़दार को मिलै, यमपुरमें करज न रहै" नहीं तो बराबर होने पर भी मनको सन्तोष नहीं होता।

किसानने कहा—दो मन देकर चार मन ले रहे हैं मालिक। चार दाना कम हो गया ही तो क्या हुआ?

मालिक—नहीं सुना। "जौका हिसाब जौ और बख्शीश अलग"? अगर तुम्हें ईनाम बाँटने लगूँ तो हो चुका! आओ हिसाब पूरा करें।

नज़र (अपने आपसे)—तू क़ब्रकी मिट्टी इनाम देगा! (फिर मालिककी ओर निगाह करके) हाँ, अब याद आया। हमने तराजूसे तौलकर नहीं बल्कि 'मनक'से नापकर अनाज लिया था। हर 'मनक'का हमने पाँच सेर हिसाब लगाया था। यद्यपि वह 'मनक' दश 'चरक'की थी। उस हिसाबसे हमारा यह अनाज ज्यादा है। अच्छा, तोलो, हमारी किस्मतको लूटो।

मालिक—जो होगा, तराजू आप ही साफ कर देगी। अनाज टोकरेमें डाल।

एक तराजू तौलनेके बाद नज़रने कहा—जब आपने गेहूँ तौलकर दिया था, उस समय दश सेर इस टोकरेसे ज्यादा हो जाता था, अब इसमें दश सेर नहीं समा रहा है।

—मेरा गेहूँ गुद्दादार और भारी था। तेरा पैया और हल्का है, इसीसे ज्यादा चढ़ता है।

तोल खतम हुई। किसानके हिसाबके मुताबिक गेहूँको पाँच मनके करीब होना चाहिये था, लेकिन यहाँ चार मनसे थोड़ा ही ज्यादा हुआ। किसानने बचे गेहूँको अपने बोरेमें डालना चाहा। इसपर मालिकने कहा:

—इस गेहूँको लौटा ले जाना ठीक नहीं, कोठारमें डाल दे। बखा।

नज़रने कुछ गरम होकर कहा—लेकिन क्या "जौका हिसाब जौ नहीं" है?

—मुझे तुम्हारे एक मुट्ठी गेहूँका लोभ नहीं। मेरी अपनी दौलत ही अपने लिये काफी है। लेकिन तुम्हारा लाभ इसीमें है, कि टोकरीका बचा गेहूँ भी हमारे कोठारमें डाल दो। यदि लौटाकर ले जाओगे, तो—दो, तीन दिनमें खतम कर डालोगे। "पानी खुश्कीमें नहीं ठहरता" यहाँ रहेगा तो जरूरतके वक्त तुम्हारे लिये हमारे कोठारका दरवाजा सदा खुला है।

किसानोंने टोकरी भर दानेके लिये मालिकको नाराज नहीं करना चाहा। आखिर अगले साल बीजके लिये फिर यहीं आना था। उन्होंने अनाजको अखारमें डाल बोरे तह कर लिये। फिर नज़रने मालिकसे कहा :

—हमारा कागज (हैंडनोट) दे दीजिये, हम जायेंगे।

—कागज अंदर संदूकमें है। इस वक्त घरमें स्त्री मेहमान आई है। अंदर जाना संभव नहीं। हम निकाल रखेंगे, बाज़ारके दिन ले जाना।

—आजकल कहाँ फुर्सत मिलती है कि बाजारको आवें। अच्छा होगा कि इसी वक्त दे दें।

—एक बार कह दिया कि घरमें मेहमान स्त्री आई है। अंदर जाना संभव नहीं। "बहुत अधिक बात गधेपर भार" कही गई है। यदि बाजारके रोज छुट्टी नहीं, तो जिस दिन छुट्टी हो ले जाना।

नज़रने अपने मनमें कहा—ठीक, यदि अधिक बात गधेपर भार नहीं होती, तो तू इतना शोर क्यों मचाता? (फिर मालिकसे) अच्छा खैर, खुश! कागज ढूँढ़कर रखना, भूल न जाना मालिक!

—खातिर जमा रह, मैं तेरे कागजको शहद लगाकर चाटूँगा नहीं।

किसान चले गये। हवेलीके अंदरसे एक आठसाला लड़का आया। मालिकने बच्चेका हाथ पकड़ कुछ देर प्यार किया, फिर कहा—पुत्र

दिलावर ! जा, फातिमा आपाको कह कि मेरेलिये थोड़ी चाय गरम करके लाये।

मालिक फिर तकिया बगलमें दाबे अपने विचारोंमें डूब गये। पन्द्रह मिनट, आध घंटा बीत गया, अब भी चायका कहीं पता नहीं। जैसे कोई भूली बात एकाएक याद आ गई हो, मालिक खड़े हो गये। हवेलीके अंदर पहुँचे। चार औरतें चार पीढ़ोंपर बैठी कपड़े धो रही थीं। सबने अपनी जगह खड़ी हो, बड़े सम्मानके साथ हाथको सीनेपर रखकर सलाम किया। मालिकने सलामका जवाब न दे कड़कती आवाजमें कहा—फातिमा कहाँ ?

बारहसाला लड़की फातिमा धुले कपड़ोंको ठीक कर रही थी। अपना नाम सुनते ही वह फौरन सामने आई और बोली—मालिक !

मालिकने बिना कुछ पूछे ही ऐसी जोरकी चपत लगाई, कि फातिमा 'हाय मरी' कह जमीनपर जा पड़ी।

मालिक—मरी ! बलासे। तू अपने और अपने माँ-बापके घरसे खजाना लेकर यहाँ नहीं आई। अकालके जमानेमें भूखसे मर गई होती। उस समय बापने दस सेर गेहूँके बदले तुझे मेरे हाथ बेंचा। अगर मैंने वह गेहूँ न दिया होता, तो तुम सारे उसी अकालमें मर गये होते। अब तो पेट इतना भर गया है, कि बात भी कानसे नहीं सुनती। एक घंटा हो गया, एक चायनिक चाय माँगी, पर कहीं पता नहीं।

फातिमाने रोते-रोते खड़ी होकर कहा—मुझसे किसीने चायके लिये नहीं कहा।

"बेशरम ! चाहती है मुझे झूठा बनाना ?" कहकर मालिकने दूसरी बार चपत लगाना चाहा, किन्तु फातिमा भागकर एक ओर चली गई।

अब मालिकने "और जवाँमर्द दिलावर कहाँ है ?" कह बच्चेको ढूँढ़ना शुरू किया। दिलावर बापके आनेके वक्त पानीसे खेल रहा था।

और बापको गुस्सेमें देख माँके घरके दरवाजे पर जा खड़ा हुआ था। जैसे ही "जवाँमर्द" उपाधिके साथ अपना नाम सुना, चीखकर वह माँके पास चला गया। मालिकने बच्चेकी सजाके लिये इतना काफ़ी समझ बीबियोंकी ओर नजर करते कहा।

—लेकिन क्या मैंने तुम्हें सिज्दा (दण्डवत्) करनेकेलिये ब्याहा? तीन घंटा हुआ घर आये, एक चायनिक चाय भी नहीं दी! सबीर खलिहान गया। घोड़ों-बैलोंने अभी तक चारा नहीं खाया। तुम लोग खुद कोई काम नहीं करतीं, तो आखिर मेरे घरका अनाज खा मोटी हुई इस पिल्लीको क्या हुकुम भी नहीं दे सकतीं?

मालिक झल्लाये हुए घरके बाहर निकल गये। बाहर आकर कालीन-पर जा लेटे।

६

सम्मानित मेहमान

"मुल्ला अज़ीमशाह!...मुल्ला अज़ीमशाह!...ओ मुल्ला अज़ीम-शाह...!"

मालिकको नींद आ गई थी। आवाजने नींदको तोड़ दिया। जागकर आँख मलते-मलते "ओ हो! अलीमर्दा बेक्। अस्सलाम् अलैकुम्" कहकर खड़े हो उन्होंने दूसरा गद्दा उठा अपनी दाहिनी तरफ़ बिछा दिया। लेकिन मेहमानसे बिना पूछे, उसके अपनी जगह बैठनेके पहले ही मालिक अपनी जगह बैठ गये। फिर दूसरी बार अपनी जगहसे उठ बालिशोंको मेहमानकी बगलमें रख, अपनी जगहपर बैठ हाथ मिला "अल्लाहु अकबर" कह उन्होंने हाथोंको मुँह पर फेरा।

—मेरी आँखें झँप रही थीं, आपको आते नहीं देख पाया। क्षमा कीजिए।—मालिकने आगन्तुकसे क्षमा माँगी।

कोई हर्ज नहीं—मेहमान बोले—बुजुर्गोंने कहा है, "ख्वाब चाश्तगाही, बेश्तर अज़ पादशाही" (दोपहरका सोना बादशाहीसे चौगुना)।

—खैर, खूब कुशल-आनन्द सेहत-सलामतसे तो हैं ?

—धन्यवाद ! जनाब-आलीके राज्यकी छाया, सब सलामती है। आपसे भी वही पूछता हूँ।

—धन्यवाद ! प्रथम भगवानकी कृपा, दूसरे जनाब-आलीकी सरकारकी दयासे मिट्टीसे बाहर आया...

मालिकने चबूतरेपर रखी चायनिकको छूकर देखा, कि वह ठंडी है। चायनिक हाथमें ले "आप आराम करें, मैं अभी हाजिर हुआ" कह हवेलीके अन्दर गये। स्त्रियाँ अब भी कपड़े धोनेमें व्यस्त थीं। उन्हें भला-बुरा कहा, किन्तु धीमे स्वरमें जिसमें कि बाहर सुनाई न पड़े—फातिमा गर्दन-टूटी तो मेरी चीजोंके बर्बाद होनेकी पर्वाह नहीं करती। तुम लोग भी मानो इस घरमें बेगाना हो, जो कुछ नहीं बोलतीं। मैं नींदमें सो गया था, क्यों चाय गरम करके छोड़ आई ? चाय गरम किया तो क्यों नहीं मुझे जगा दिया ? चाय बरफ बन गई। और बदजात है कहाँ ?

बीबियोंमेंसे एकने कहा—मालोंको चारा डालने बाहर गई। भूसा-घर या आँगनमें होगी।

—मेहमान आया है। दस्तरखान बिछाना चाहिए। चाय तैयार करनी चाहिये...

इतना कहकर मालिक हवेलीसे बाहर आये और आवाज लगाई।

—फ़ातिमा, कहाँ है तू ? जा, अंदर देख।

मालिक फिर भीतर गये। कुर्त्तेके खीसासे कुंजियोंका गुच्छा निकाल एक कुंजीसे लकड़ीकी संदूकका ताला खोला। उसमेंसे एक डब्बा निकाला। डब्बेके अंदरसे कुछ मेवा, सूखा तूत और मिसरी निकालकर

डब्बेको फिर संदूकमें रख दिया। फिर ताला लगाकर संदूक बंद कर दी। तब मेहमानके पास चबूतरे पर आये।

मालिकके लिये यद्यपि 'काला अक्षर भैंस बराबर' था, लेकिन मेहमानने सम्मान प्रदर्शित करते हुए मुल्लाकी उपाधि दे डाली थी, मुल्ला अज़ीमशाह कहकर पुकारा था। अब उसने सम्मानार्थ खड़ा होना चाहा, लेकिन मालिकने झट-झट पग बढ़ाकर कहा—तकलीफ़ न करें, तशरीफ़ रखें। फिर अपनी जगह पर बैठ गये। मेहमान अभी, पालिलजानू भर ही हो पाया था, मालिकने उसकी ओर नजर डालकर कहा—पल्थी मारकर बैठिए।

दस्तरखान लाकर फातिमाने चबूतरेपर बिछा दिया। मालिकने मेवा और मिठाईकी तश्तरियाँ उसपर रख दीं। रोटीको भी टुकड़े-टुकड़े करके अधिक आगन्तुकके सामने और थोड़ी अपने सामने रखा।

—मेहरबानी कीजिये, रोटी हाज़िर है—मालिकने मेहमानसे निवेदन किया और स्वयं एक कौर मुँहमें डालकर तश्तरीको उसके आगे सरका दिया। मुँहमें एक दाना मेवा डाल मेहमानको भी "मर्हमत फरमाइये" कह मेवा-मिठाई खानेकी प्रार्थना की।

—कितना समय हो गया, आपका कहीं पता नहीं। आज प्रातः मीरसाहबके सलामके लिये गया था। वहाँ भी आपका पता नहीं पाया—मालिकने बात शुरू की।

—दुनियाका चक्कर जरा भी छुट्टी नहीं देता, कि किसी दिन दोस्तोंमें बैठकर निश्चिन्ततासे साँस लूँ। आज देखिए तो करमीनामें जनाब-आली (बादशाहके) चरणोंमें, कल बुखारामें क़ुशबेगी (महामंत्री) के सामने। परसों हिसारमें ख़ुद अपने साहिबेदौलत (गवर्नर)के दौलतखानेमें। इस तरह हर रोज हर जगह उमर गुजरती जा रही है। जहाँ कहीं अधिक जरूरी और भारी काम होता है, मीरसाहब (गवर्नर) इसी दासको हुकुम देते हैं। एक दिन मीरसाहबसे हँसी-हँसीमें मैंने

कहा—"दूसरे भी हुजूरके खिदमतगार हैं, हुजूरका नान-नमक खाते हैं, उन्हें भी कामके लिये हुकुम दीजिये" इसपर जनाब मीरने फरमाया—दुनियामें अलीमर्दा दो नहीं हैं। "हर बकरी अगर खलिहान दाँवती तो बैलोंकी क्या जरूरत ?" इस तरह मेरी हुकुमबरदारीकी प्रशंसा की। मैंने हँसते हुए कहा—"जो भी हो, सरकारने बैल तो बनाया, किन्तु उसके लायक घास-भूसा भी तो मिलना चाहिये। फिर तो बैल बननेमें भी उज्र नहीं।" जनाब मीरने प्रसन्न हो अपने निचले जामा (अपनी ज़रदोज़ी रेशमी जामाको दिखलाकर)को, इस दासको बख्श दिया।

फातिमाने चायकी चायनिक लाकर चबूतरेपर रख दिया। मालिकने दोबारा चायकी फेराफेरी की, फिर बगलसे रूमाल निकाल पानी पड़नेसे नरम हो गई प्यालीकी मैलको पोंछा। तब प्यालामें चाय उँड़ेलकर पहले खुद कुछ पिया और जूठे प्यालाको जामाके पल्लेसे—जोकि खुद भी दाढ़ीके तेलसे लग-लगकर पतीली साफ करनेवाले लत्तेकी तरह मैला हो गया था—मला। आधी प्याली चाय ढाल होंठपर फेरी, बिचली अँगुलीके नाखूनसे प्यालाके अंदर टन्‌टन् कर उसे मेहमानके आगे बढ़ाया। मेहमान डालियोंपर गौरैयोंका फुदकना देख रहा था। अब उसका ध्यान टूटा। उसने प्यालेको मालिकके हाथसे ले जमीनपर रखा और फिर डालियोंपर नज़र गड़ाई। मालिकने रूमालको जेबसे निकाल, चार तहकर चायनिकके मुँहपर रख दिया। मेहमानका ध्यान अब भी दूसरी ओर बँटा था; यह देखकर "मर्हमत कीजिये, रोटी भी खानी चाहिये" कहा और खुद भी रोटीका एक टुकड़ा मुँहमें डाला।

अलीमर्दा बेगका ध्यान वस्तुतः और ही ओर था। वह सोच रहा था, कैसे अपनी चालाकी और चतुराईको मालिकके सामने रखकर आगे की जानेवाली सेवाके बदलेमें अच्छा खिदमताना हाथ आये। वस्तुतः वह चिड़ियोंकी फुदकको नहीं देख रहा था, बल्कि यही सोच रहा था। उसने फिर बात शुरू की—जी, हाँ, मुल्ला अज़ीमशाह ! "सिपाहगरीके तीस

पैर होते हैं।" "हर बातके तीन सौ साठ अंग होते हैं" यह पुराने बुजुर्गों-का कहना है। और यह भी कि "हरेक बातका समय और हरेक बिन्दुका स्थान सोता है"। यह बिलकुल सच है। अगर बातको ठीक जगह अदा करे तो हर किसीको मात कर सकता है। इसलिये मीरसाहब हर कठिन कामको मुझपर छोड़ते हैं। मैं सूखा करूँ चाहे गीला, उनको फिक्र नहीं। मुझपर उनका ऐसा ही विश्वास है। इसलिये मेरी बातमें दोस्त या दुश्मन कोई भी दखल नहीं दे सकता। कुछ दिन हुए, एक औरतका मुकदमा पेश था। उन्होंने एक दो रोजतक जंजालको देखा-भाला। मालूम हुआ कि दावा करनेवाली पार्टी दुधार है। मैंने एक चाल चलकर काम पूरा कर दिया। पूछोगे, यदि लड़कीवाले राजी न होते तो क्या करते? अगर राजी न होते तो हाकिम-खाना (अदालत)में ही न आते? वहाँ भी तो मेरी ही चलती। अभी वही काम करके आया था, कि मीरसाहबने कहा—"मुल्ला अजीमशाहके पास जाओ, उनका एक काम है। उसे पूरा करके आओ" और मुझे आपके पास भेजा। शागिर्दपेशा (चपरासी) और यसावुल और भी हैं, जो महीनों चौखटपर सिर रगड़ते रहते हैं, लेकिन एक भी काम मुयस्सर नहीं होता। हाथमें जो भी काम आता है, मैं मीर और दावादार दोनोंको खुश कर देता हूँ। एक दिन भी बेकार नहीं रहता। खिदमताना छोड़ गरीब और क्या देंगे? हाँ, मीरसाहब स्वयं समय-समयपर इस तरहकी (जामाकी ओर संकेत करके) विशेष कृपाओं द्वारा इस दासको अनुगृहीत करते रहते हैं।

अलीमर्दाने अपनी बातको समाप्तिपर पहुँचाया। अब उसने यह देखनेके लिये अपनी आँखोंको मालिककी आँखोंमें गड़ाया कि उन पर बातका क्या असर पड़ा। इसी वक्त दिलावरने पास आकर कहा—दादा! मिठाई दो।

मालिकने मुँह बिचकाकर कहा—बच्चा! ये चचा सरतराश

(हजाम) हैं। कैंची और उस्तुरा साथ लाये हैं। भाग नहीं तो तेरा... सिरसे उड़ा देंगे।

सरतशशका नाम सुनते ही दिलावरका होश उड़ गया। अब मिठाईका नाम कौन लेता है? वह अंदर हवेलीकी ओर भगा।

१०

भगा चरवाहा

बच्चेकी मिठाईकी माँगसे अज़ीमशाहका होश-हवास बिगड़ गया था। दो मिनट सिर हिलानेके बाद ध्यानको एकाग्र कर उत्तरकी प्रतीक्षा करते मेहमानकी तरफ़ निगाह करके बोले :

—यह सब तुम्हारी महिमा है अलीमर्दा बेग! तुम जनाब मीरके जाँबाज़ सच्चे सेवक हो। मसल मशहूर है :

"इस ब्रह्मांडमें दिलके लिये दिलमें स्थान है
द्वेषको द्वेष और प्रेमके लिये प्रेम है"

इसीलिये वह तुमको प्रसन्न रखते हैं। इस बातकी सच्चाई मैं भी देखता हूँ। खुदाने मुझे कम-बेशी दौलत दी है। माल-मिल्कियत प्रदान किया है। अलबत्ता, उनको मैं अपने साथ कब्रमें नहीं ले जाऊँगा, लेकिन उन्हें गली-कूचेमें फेंक भी नहीं सकता। जो मुझे प्रसन्न करता है, मैं भी अपने मनके मुताबिक उसकी सेवा करता हूँ। जबतक जान है, उसे खुश रखता हूँ। माल और जान भी उसके लिये कुछ नहीं। कहावत है 'दिल मेरा ले, माल मेरा खा'। ऐसा ही एक काम आ पड़ा है और वह तुम्हारे हाथोंमें है। अगर मेरा मतलब पूरा करो तो मैं भी खिदमत करनेसे पीछे नहीं हटूँगा। यार-दोस्तोंके सामने पैसा क्या चीज है?

—सिर-आँखोंपर! जो भी काम हो, फरमाइये। दिलोजानसे उसे पूरा करनेमें कोई कसर न रखूँगा। आपकी दुआ चाहिये!

—सूखी साँस बाँसरी सुर नहीं निकाल सकती। मैं सूखी नहीं, तर हुआ करूँगा।

—किसीने आपका माल तो हजम करनेकी कोशिश नहीं की?

—मैं सांसारिक पैसोंके लिये जनाब मीर या तुमको तकलीफ नहीं दूँगा। मेरा पैसा किसने नहीं खाया? यह काम एक भगे चरवाहेसे सम्बन्ध रखता है, जो बापके हिसाबमें मेरा एक हजार तंका (टंक, टका) का कर्जदार है। बदलेमें उसने मेरे यहाँ सेवा करनेके लिये काजीखाना (रजिस्टरी)में खुद दस्तावेज लिखकर दिया है। इसके अतिरिक्त वह मेरे घर रहता, सर्द-गर्म पानी में हाथ डुबाये बिना यहीं खाता पीता। भेड़ोंको खरीदकर मैं जब उसे साथ ले बुखारा जानेको तैयार हुआ, तो वह एकाएक गायब हो गया। अब सुनता हूँ, दर्रा-निहाँमें रहता है। अफसोस मुझे यही है, कि उसने मुझे धोखा दे मूर्ख बनाया, नहीं तो पैसेके लिये कोई बात नहीं। दूसरी बात यह कि अगर मैं इसे तरह दे दूँ, तो दूसरे नौकरोंकी पूँछमें भी पानी लग जायगा, हरेक खिदमतगार खायेगा, पहनेगा और कामके समय भाग निकलेगा। एक नौकर घरमें है, उसकी भी आँख बदल चुकी है। आज ही जनाब मीरके यहाँसे लौटा, तो देखा सो रहा था। जबर्दस्ती उठाकर खलिहान भेजा। वहाँ क्या कर रहा है, कौन जाने। दाँवने वालोंके पास हा-हा हू-हू करते बैठा है, या कि जिस हल्केसे कामके लिये ज़ोर देकर भेजा, उसे करता है। चरवाहेके भागनेका यह पहला असर है। अगर इस बातका मैंने फैसला नहीं करवाया, तो मेरी ही तरह दूसरोंके भी नौकर बिगड़े बिना न रहेंगे। तुम जानते ही हो, कि कहीं भी कोई बर्बाद (नाबूद) आदमी आबाद (बूद) को, गरीब (नादार) आदमी मालदार (दारम) को फूटी आँखों देखना नहीं चाहता। जब भूखे और मोहताज होते हैं, तो आकर नौकर हो जाते हैं, हमारी खिचड़ी खाते हैं, नमक खाते हैं। पेट भर जाता है, तो पत्तल (दस्तरखान)को पैरों तले रौंदते हैं, हमारे

नमकदानको तोड़ते हैं। हमेशा द्वेषाग्निसे जलते रहते हैं—क्यों यह बाय (जमींदार) हैं और हम गरीब हैं ? क्यों यह सम्पन्न हैं और हम विपन्न हैं ? क्यों यह दारम् हैं और हम नादार ? नहीं जानते कि बुजुर्गोंने कहा है "खुदाने जिनको दिया है उनसे ईर्ष्या न कर ; उन्हें दौलत खुदाने बख्शी है"। बेगी ! तुमसे झूठ क्या, खुदा जानता है। जब मैं दरवाजसे आया तो एक लकड़ीके जूते, एक थैले, एक टाट और एक लाठीके सिवा कोई चीज मेरे पास न थी। अव्वल, खुदाकी मेहरबानी, दोयम जनाबआलीकी सर्कारकी छाया। हवेली, बीबी-बच्चा सबका मालिक हूँ। एक नहीं, चार-चार बीबियाँ हैं। दिल और नीयतके मुताबिक माल-मिल्कियत भी है। यद्यपि मैंने कुदाल नहीं चलाई, चोरी नहीं की, लोगोंका माल नहीं हड़पा। खुदाने मुझे लायक देखा, और दिया। कहावत "बेकिस्मत अगर खेती करै, पानी नहीं पावै। बाकिस्मत के लिये खेती और बेखेती दोनों बराबर" वस्तुतः स्वयं मैंने किसानी नहीं की। कुछ एकड़ (तनाब) ऊसर-बंजर पासमें है, जिसमें बटाईदार (चार-यक्कार) या नौकर काम करते हैं। बसन्त (बोनेके वक्त)में सिर्फ खैरातके लिये भगवानका खयाल करके गरीब किसानोंको बीज दे देता हूँ। जब फसल तैयार होती है, तो खुद ही कम या बेशी दे जाते हैं। बहुतसे लोग दिन रात काम करते हैं, पर पेट नहीं भरता। फिर वह 'बाय' या मालदारोंको कोसते हैं। अगर उनमें बुद्धि होती, तो अपनी किस्मत, अपने दिल और अपनी नीयतको कोसते। हमारा कर्तव्य है कि जबतक जान है, तब तक उनपर सख्ती करें। उन्हें उभड़नेका मौका न दें। वह मनुष्यके धनके शत्रु हैं। अन्धे हैं। मजदूरों और खिदमतगारोंके साथ नेकी करनेका परिणाम उलटा ही होता है।

—यह आपका चरवाहा है कहाँका ? उसका और उसके बापका नाम जानते हैं ?

—नाम है यादगार। बापका नाम था बाज़ार। वे इधरके रहनेवाले

नहीं हैं। सात-आठ साल पहले जब कि कूलाबमें अकाल पड़ा था, बाज़ार अपने बीबी-बच्चेके साथ बुखारा जाते यहाँ आया। उसकी स्त्री यहीं मरी। मैंने उसकी लाशको अपने खर्चसे कब्र दिलाया। उसे और उसके बारह-तेरह सालके लड़केको अपने यहाँ पनाह दी। मार्गके कष्ट और भूखसे उनका प्राण निकलने जा रहा था, मैंने उनकी परवरिश की। बाज़ार तन्दुरुस्त हुआ। हड्डियोंपर पानी चढ़ा। उसने नौकरी माँगी। मैंने सिर्फ सवाब (पुण्य) के लिये उसे चरवाहा रखा। हर साल एक बार समरकन्द और एक बार बुखारा भेड़ें लेकर जाता। हर बार उसने चोरी की। मेरी मोटी भेड़ोंको चुराकर बेंच डाला। उसकी चोरी इस्लामके काज़ीके सामने साबित हुई और उसकी गर्दनपर पड़ी। मेरा एक हजारका कर्जदार बना। बदलेमें उसने मेरी नौकरी करनेका दस्तावेज़ बनाकर दिया। लेकिन अपना कर्त्तव्य पूराकर चुकनेके पहले ही वह चल बसा। उसके मुर्देको भी दफन कराया। उसके लड़केने नौकरी करके क़रज चुकानेके लिये नया दस्तावेज लिख दिया। लेकिन एक बार भी बुखारा गये बिना ही भाग गया। यही बात है जिसके लिये मैंने आज जनाब मीरके पास यसावुल माँगा। मेरा सौभाग्य है, कि उन्होंने तुम्हें नियुक्त किया। आशा है, उस भगे चरवाहेको पकड़कर मुझे सुपुर्द करोगे और नमकहरामको ऐसी सजा दिलाओगे, कि दूसरोंको शिक्षा मिले। फिर ये नंगे, मुफ़्तख़ोर समझेंगे, कि देशमें हाकिम भी है, शरीयत (धर्मशास्त्र) भी है। इस तरह दूसरोंको फिर ऐसा करनेका साहस न होगा। मैं आपको अभी दस्तावेज निकालकर दिखलाता हूँ।

बात खतम करके मालिक हवेलीके अंदर गये। कुंजियोंका एक गुच्छा निकाल उनमेंसे एक चाबीसे संदूकका ताला खोला। संदूकमेंसे एक बस्ता निकाला, जिसमें दस्तावेज़ भरे थे। हर दस्तावेज पर एक विशेष चिह्न था। मालिक क-ख तक नहीं जानते, तो भी चिह्नसे पहचान लेते, कि कौन दस्तावेज किसका है। ढूँढ़-ढाँढ़के समय किसानका

हैंडनोट हाथ आया। उसको बस्तेमें सबसे नीचे रखकर अपने आपसे बोले—मूर्ख! कहता था कि मेरा कागज वापस दीजिये! मैं नादान नहीं हूँ, कि इस फंदेको हाथसे दे तुझे मुक्त करूँ। जिस दिन भी तू बेजा क़दम रखेगा, उसी दिन इस कागजके द्वारा तुझे ऐसे चक्करमें डाल दूँगा, कि जान बचानी मुश्किल हो जायगी। अन्तमें बाजार और यादगारके दस्तावेज हाथ आये। बस्ताको बाँधकर संदूकमें रखकर ताला लगाया। बाहर आ दस्तावेज अलीमर्दांको देते हुए कहा :

—इन्हें पढ़कर खुद समझिये बेगी!

अलीमर्दांने हाथमें ले उनमेंसे एकको ऊँची आवाजमें पढ़ना शुरू किया :—

तारीख...माह रजब, सन् तेरह सौ पाँच हिजरीको बाजार बाय—जाल सी दाढ़ी, मझोला कद, गेहुँआ रंग, कंजी आँख—वल्द एवज़ मुरादने धर्मस्कन्धावार सरेजूयमें आकर शरीयत (धर्म)के अनुसार सच्चाईसे स्वीकार किया, मैं क़रार करता हूँ कि मन्मुक़िरने मुल्ला अज़ीमशाह वल्द रहीमशाहसे बुखारा-शरीफ़—जिसकी अल्लाहने प्रशंसा की और आफतोंसे जिसे अमन दिया—में ढला और प्रचलित आठ सौ उनठस चाँदीका टंका लिया। और, कबूल करता हूँ कि माँगनेपर उक्त रक़मको इस्लामके काज़ीके सामने महाजनको अदा कर दूँगा। यह मुसलमानोंके सामने प्रमाण-पत्र है।

मजलिसके हजूरी रऊफ़ बाय, रहिमान करावलबेगी, खुदा-ए-नज़र वगैरह।

—काज़ीकी मुहर

दूसरे दस्तावेजका लेख भी इसी प्रकार था, अन्तर यही था, कि वहाँ बाज़ारकी जगह यादगारका नाम था।

अलीमर्दांने दस्तावेज पढ़कर "इन दस्तावेजोंके पास रहनेपर सौ जान भी हो, तो भी वह एक जान नहीं बचा पायेगा।" इस वक्त इन्हें

सँभालकर रखिये, जरूरतके मुताबिक निकालियेगा।" यह कहकर दस्तावेज मालिकको लौटा खानेके लिये फ़ातिहा पढ़कर छुट्टी लेनी चाही।

अज़ीमशाह थोड़ा ठहरनेके लिये कह घरके अँदर गये और मिठाई वाली सँदूकको खोल उसमेंसे एक टुकड़ा पाँच-छटाँकी मिसरी ले आये और कहा—"इससे मुँह मीठा कीजिये" इसके बाद मिसरीका वह टुकड़ा अलीमर्दाके हाथमें थमा दिया। दरवाजा तक पहुँचाते समय उसे ताकीद की—"जो भी हो, कोशिश कीजिये, कि वह हाथ आये।"

—खातिर जमा रखिये। पहले तो खुद उसे ही गिरफ्तार करूँगा। अगर निकल भागा, तो दर्राके दो आदमियोंको पकड़कर जीनखानामें लाकर बंद करूँगा, जिसमें दूसरे मजबूर होकर खुद मुलज़िमको हाजिर करें। फिर बंदीको जंजीरमें जकड़कर आपके सामने लाऊँगा। खैर, खुश। भगवान् रक्षा करें।

—खुदा आपका मार्ग उज्ज्वल करे। शिकार हाथ आये। हक़ हक़दारको मिले—कहकर अज़ीमशाह हवेलीके अँदर लौटे।

११

आकस्मिक बीमारी

मेहमाह (चन्द्र-सूर्य)ने बुने कपड़ेको लपेटते हुए "दिगिच्!" कह अपनी देवरानी तूतीको आवाज़ दी। तूती आई तूतके नीचे चबूतरेपर अगले दिनके कामके लिये नड़ी भर रही थी। उसने चर्खे और परेतेको अपनी जगह छोड़ दूकानखाना (कर्घा घर) में जा मेहमाहसे पूछा—क्या कहती हो?

मेहमाहने ढरकीको हाथसे छोड़े बिना कहा—मैं भूली जा रही थी, यादगारके आपने कहा था, कि आज एक टोकरी गेहूँ धोकर रखना।

रातको सफ़र, उसे चक्कीपर ले जायेगा। मैं और सफ़र शामतक खेतके काममें लगे रहेंगे। इसलिये गेहूँ धोना हमसे नहीं हो सकेगा।

मेहमाहने अभी अपनी बात खतम न की थी, कि एक पाँचसाला बच्चा—जो दूकानखानामें एक ओर गड्ढा खोद जुलाहेकी दूकान (कर्घा) तैयार कर रहा था—बातकाटकर बोल उठा—आचा! मैंने चक्की नहीं देखी। मैं भी रातको चचा के साथ पनचक्की जाऊँगा।

—रात होगी तेरा अता (बाप) चक्की बनाकर तुझे देगा। अभी दूकान बना।

मेहमाहने बच्चेको भुलवा तूती आई-से कहा—मेरा थान दो गज भी नहीं हुआ। तू गेहूँको टोकरेमें धोकर कम्मलपर फैला दे। दो नड़ी और बुननेके बाद मैं भी काम पूरा कर तेरा हाथ बटाने आती हूँ।

× × ×

सूर्य अस्त हो चुका था। अन्धकारने दुनियाको कुछ-कुछ ढाँक लिया था, लेकिन अब भी बाजार और सफरका कहीं पता न था। मेहमाहने करीब-करीब बुझ गये चूल्हेमें एक कंडा डालकर देवरानीसे कहा—क्यों आज ये लोग देर कर रहे हैं? यादगारके पिता ने कहा था कि खाना समयसे पहले तैयार रहे, सफर खाना खाकर दिन हीमें पनचक्की चला जायगा। क्या बात हुई जो अभी तक नहीं आये?

तूती आई—कहावत है, "घरकी बात बाजारमें नहीं आती।" उनका काम पूरा नहीं हुआ या कोई दूसरा काम आ पड़ा। लेकिन मैं ख्याल करती हूँ, यादगारका चचा आज रात चक्की नहीं जा सकेगा। वह दो रोजसे कह रहा है, कि मेरा सिर सिम-सिम करके दर्द कर रहा है। आज बड़ा जोर करके उठा और काम पर गया, नहीं तो उसमें हिलने-डुलने तककी ताक़त न थी।

—मैं अफगान मुसाफिरके मरनेके दिनसे ही सफ़रकी अवस्था बदली देखती हूँ। न जाने कहाँसे बीमार मुसाफिरपर दया दिखाते

उसे यहाँ ले आया ? मरते वक्ततक वह उसके पाससे नहीं हटा । अजब नहीं कि वही बीमारी इसे भी लगी हो ।

इस प्रकार मेहमाहने देवरानीका समर्थन किया, लेकिन जब तूती आईपर उलटा प्रभाव पड़ते देखा, तो कहा—घबड़ानेकी जरूरत नहीं । उसका भाई ईशान (पीर) को लाकर झाड़-फूँक करायेगा "तूने देखा, मैंने देखा" हो उसकी दशा फिर पहलेकी हो जायेगी । देर से आयें, कोई बात नहीं, लेकिन गायको आना चाहिये, जिसमें समयपर उसे दुह सकें ।

इसी वक्त रास्तेसे 'इश्-इश्' करके किसीके आनेकी आहट आई । मेहमाह झटपट चूल्हेसे उठ, दुहनी हाथमें लिये यह कहते बाहर गई—दंदेश् ! अगर दो बार इसी तरह हुआ और बेवक्त दूही गयी, तो गाय बिसुक जायगी ।

लेकिन सामनेका दृश्य देखकर वह एक कदम पीछे हट गई । मेहमाहने जो कुछ देखा, वह वस्तुतः भयानक था । अपनेको न सँभाल सकनेकी वजहसे सफर गधेकी एक ओर लटका हुआ था । बाजार गायके पगहेको हाथसे लपेटे दोनों हाथोंसे सफरको सँभाले हुए था । जैसे ही बाजारकी आँखें बीबीकी दुहनीपर पड़ीं, उसने कहा—दुहनीको परे रख, आ इसको सँभालकर उतारें ।

इसके बाद बाजारने बीबी और भ्रातृवधूको मददके लिये बुलाया ।

दोनों औरतें दौड़कर बाजारके पास पहुँची और उतारकर सफरको दरीपर लिटाया । बाजार बोला—मैं खेतपर जा बैलोंको लाता हूँ ।

घरसे निकल वह खेतकी तरफ रवाना हुआ । मेहमाहने दीया जलाया । तूती आईने अपने घरमेंसे गद्दा और तकिया लाकर बिस्तरा तैयार किया । बीमारने न मुँहसे आवाज निकाली न आखें खोलीं । दोनों स्त्रियाँ एक दूसरीकी सहायता करती बिस्तरपर बैठी बीमारकी देख-भाल करने लगीं । इस वक्त मेहमाहकी दृष्टि एक मटमैले रंग के कीड़े

पर पड़ी। वह सफरके मुँहपर रेंग रहा था। चिराग लेकर नजदीकसे देखा, तो एक सींगवाला मोटा जूँ-सा दिखलाई पड़ा। मेहमाहने पकड़ जमीनपर फेंक पैरोंसे घीसकर उस कीड़ेको मार दिया। फिर व्यंगके स्वरमें तूती आईसे कहा—दिगिच्! अपने गद्दोंको धूपमें रख, इसमें जूँ पड़ गये हैं।

तूती आईने सफाई देते कहा—जबसे वह बीमार मुसाफिर हमारे घर आया, तभीसे गद्दों और तकियोंमें जूँएँ पैदा हो गईं। मैं कितना ही चुनती और मारती हूँ, लेकिन ये बाप-जले खतम ही नहीं होते!

तूतीआईने चाहा कि पतिके हाथको लेकर मले, लेकिन जैसे ही उसे अपने हाथोंमें लिया, जान पड़ा जैसे तपा लोहा है और उसका हाथ जल जायेगा! बीमारने अपने हाथको हटा कर "हाय जला" कहते उसे दूसरी तरफ़ पटक दिया, जहाँ कि वह मेहमाहकी जाँघपर पड़ा। मेहमाहको उसकी गर्मी कपड़ेके अंदर भी मालूम हुई। रोगीकी हालत बड़ी चिन्ता-जनक थी।

तूती आईने पतिके ललाटपर हाथ फेरते पूछा—तुम्हें क्या हुआ?

रोगी "हाय जल गया!" कह आधा उठ दूसरी करवट गिर पड़ा।

बाजारने बैलोंको खूँटेसे बाँध बीमारके पास आ "हालत कैसी है?" पूछा।

मेहमाहने कहा—आँखें नहीं खोलता। जल्दी जाओ, एक ईशान (पीर)को लाओ। दम और दुआकी जरूरत है।

बाजारने कहा—"यदि रोगी अच्छा होनेवाला होता है तो वैद्य खुद घरके दरवाजेपर पहुँचता है" इस मसलके मुताबिक दरबाजवाले ईशान सुल्तान खान-दुनियाके मशहूर ईशानोंमेंसे एक—आज रात याकूब बायकी हवेलीमें मेहमान हैं। उन्हींको लाकर दुआ कराता हूँ।

बाजार ईशानको लानेके लिये चला गया।

१२

ईशान (पीर)

कनक़ुर्त गाँवमें आज असाधारण चहल-पहल थी। गाँवकी सबसे अच्छी और शानदार इमारत याक़ूब बायकी हवेली आज खूब सजाई गई थी। बाहर दरवाजा और कूचेतक पानीका छिड़काव हुआ था। आज आनेवाले प्रतिष्ठित अभ्यागतके दर्शनोंके लिए याक़ूब बायने घोड़ेपर जा बुखारामें शिक्षाप्राप्त कूलाबके मुल्ला महम्मद सलीम, मुल्ला असद नजर मखदूम, मुल्ला अली महम्मद और दूसरे मुल्लों-को खबर दी थी।

अस्र (अपराह्ण) की नमाज़के करीब "आये आये" की आवाज़ आई। सब सीनेपर हाथ रखे रास्तेपर खड़े हो गये। एक पच्चीससाला जवान सफेद घोड़ेपर दूरसे आता दिखाई पड़ा। उसका आकार मझोला, शरीर माँसल, बड़ी-बड़ी आँखें नीचेकी ओर झुकी, दाढ़ी भरी, छोटी और काली थी। जवानके सिरपर पगड़ी, तनपर पियाजी रंगका बुखारी चकमन, पैरोंमें पीले रंगका सुन्दर जूता और ज़ीनके ऊपर दरवाज़का बना मनोरम नमाजी कालीन था। चार आदमी पैदल, पैरोंमें काठका जूता पहने साफ़ोंमें दातुअन बाँधे साथ-साथ दौड़ रहे थे।

स्वागत करनेवालोंमेंसे एकने याक़ूबसे "क्या ईशान सुल्तान खाँ यही छोकरा है?" कहते आश्चर्य प्रकट किया।

याक़ूब बायने यह कहकर प्रश्नकर्त्ताकी शंकाको मिटाना चाहा—हाँ, आप ही हैं। बुजुर्गोंने कहा है, जवानीमें तोबह करना पैगम्बरका सदाचार है। आप जवान हैं, तो भी बहुत संयमी हैं।

मेहमान बहुत नजदीक पहुँच गये थे। याक़ूब बायने आगे बढ़कर ईशानके हाथको चूमा और उसे अपनी आँखोंसे मला। दरवाजेपर

पहुँचनेपर बगलमें हाथ दे ईशानको घोड़ेपरसे उतरनेमें मदद दी। दूसरे लोगोंने भी पीरका हाथ चूमकर आँखोंसे मला।

पीरके पधारनेके उपलक्षमें हवेलीमें एक मोटे दुम्बेकी कुरबानी दी गई। ईशान कालीनपर बैठे। याकूब बायने पीछे पीछे आ बड़े आदर और सम्मानके साथ "स्वागतम्" कहा। जब ईशानने बायसे कुशल-मङ्गल पूछा, तो वह खड़े हो हाथको सीनेपर रख "शुक्र हजरतकी दुआ और कृपासे सब कुशल-मंगल है," कहकर अपनी जगहपर बैठ गया। ईशानके स्वागतके लिए आये गाँवके लोग भी उनकी आज्ञासे नजदीक आये और दोबारा सलाम और हस्तचुम्बनकर पीरके इशारेपर दरीकी एक ओर पाँतीसे बैठ गये।

नमाजका वक्त आया। ईशानके चेलेने अज़ान दी। सबने पाणि-पाद-शुद्धि की। पीरने भी वज़ू किया। ईशान इमाम बने और सब लोगोंने उनके नीचे अस्रकी नमाज़ पढ़ी। नमाज़के बाद सब चक्र बाँधकर बैठे। पीर स्वयं ही चक्रके प्रमुख थे। सबने सिर नीचे करके आँखें मूँद लीं। कुछ क्षणबाद ईशान थोड़ा आगे बढ़ दाहिने बैठे एक आदमीके समक्ष आसीन हुए। ईशानकी जाँघसे उसकी जाँघें मिल रही थीं। ईशान अपने दाहिने हाथको उस आदमीकी जाँघपर रख सिर नीचा किए कुछ देर मौन बैठे रहे। इसी तरह दूसरे और तीसरे आदमीके साथ भी कुछ-कुछ क्षण बिताते पीरने सारे चक्रको समाप्त किया। तबतक शामकी नमाज़का भी वक्त आगया। अज़ान दी गई। नमाज़ पढ़ी गई। अब मुल्ला लोग भी आ पहुँचे थे। ईशान बड़ी गर्मजोशीके साथ उनसे मिले। उन्होंने भी गर्मागर्म कुशल-मंगल पूछा, लेकिन हस्तचुम्बन नहीं किया। ईशानके कहनेपर वे उनके साथ एक पंक्तिमें बैठे।

दस्तरखान (परोसनेकी चादर) आया। घी-छलकते शोरबाके साथ घी-चूती रोटियोंका भोजन हुआ। फिर मुल्ला महम्मद सलीमने पूछा—कहाँ पधार रहे हैं?

—इच्छा है हिसार और दोशम्बा (आधुनिक स्तालिनाबाद) की ओर जाकर उधरके बुजुर्गोंकी समाधियोंके दर्शन करूँ। उस तरफ़ बहुत सी चमत्कारिक समाधियाँ हैं। आम लोग नहीं जानते, लेकिन जिन्हें शेखोंके पथका परिचय है और पवित्र कब्रोंके साक्षात्कारका सौभाग्य प्राप्त है, वह जानते हैं कि इन जमीनोंमें कितने बुजुर्ग सो रहे हैं। पिछले साल जब मैं हिसारमें था, तो जनाब आस्ताना क़ुलबेक क़ुशबेगी (गवर्नर) हिसारने इस दासकी अयोग्यताके होते हुए भी सौहार्द दिखलाते निमंत्रित करनेकी अनुकम्पा की। यह चकमन (जामाकी तरफ इशारा करके) आपका ही प्रसाद है। आपके पास भी इस चकमनको इस्ताम्बूल (तुर्कीसे) शेख अब्दुल अजीजने भेजा था। कहते हैं, असलमें यह मुसलमानोंके खलीफाके तोशाखानासे प्रदान किया गया था। सेवक कुछ-कुछ परचित्त-ज्ञानसे भी परिचय रखता है। जिस वक्त मीर क़ुशबेगीके साथ एक चक्रमें बैठा, तो मालूम हुआ, कि आँजनाब भी उससे वंचित नहीं हैं। सांसारिक धंधों और राजकाजमें लगे रहनेपर भी ऐसी सिद्धिका पाना बड़ी प्रशंसनीय बात है। मीर क़ुशबेगीने इच्छा प्रगट की, कि फ़क़ीर आँजनाबके पास रहे, और दोनों एक दूसरेके सत्संगसे लाभान्वित हों। इसीलिये मुझसे कहा—"आप हिसार या दोशम्बाकी बिलायत (जिला) में जहाँ भी रहना चाहें, मैं स्थान दौलते-आलोके तरफ़से प्रदान करूँगा और आप वहाँ निवास करने मेरे नजदीक रहें।" मैंने भी वहाँ आसपास देखा और दोशाम्बासे नातिदूर यंगीबाजारके जवारमें यंगेकुर्गानको पसंद किया। वहीं एक चक उपजाऊ जमीन प्रदान की। इस साल वहाँके किसानोंको कामपर लगा गेहूँ और शाली (धान)की खेती कराई। अब जा रहा हूँ कि वहाँ एक फकीरखाना तैयार कराऊं। साथ ही वहाँ काफिरनिहाँ नदीके किनारे बहुत सी कामकी जमीन पड़ी है, चाहता हूँ, कि वहाँ नहर और पनचक्की बनवा दूँ। ताकि प्रभुकी प्रजा लाभ उठावे।

ईशानकी बात बहुत लम्बी थी, लेकिन वह दिलचस्प थी। मुल्लोंको चाहे ईशानके परचित-ज्ञान और क़ब्र-साक्षात्कार से दिलचस्पी न भी हो, लेकिन प्याजी चकमनका प्रसाद और उपजाऊ जमीन, पनचक्की और नहरकी बात सुनकर उनके मुँहमें वैसे ही पानी भर आया, जैसे बच्चे को हलुआ देखकर। यहाँ तक कि मुल्ला नजर मखदूमने मुल्ला महम्मद सलीमके कानोंमें "हम व्यर्थ ही बुखाराके मदर्सोंकी धूल चाटते आधी उमर गँवा आये, मान-प्रतिष्ठा धन-दौलत तो ईशान (करपात्री) के चरणों-को चूम रही है।" कहते हसरत जाहिर की। मुल्ला महम्मद सलीमने ईशानके वार्तालापका संक्षेप करके कहा—है है, क्या खूब! आपका सफर जियारत भी है, तिजारत भी है।

१३

जिन्नने पकड़ा है

जिस वक्त मुल्ला लोगोंकी ईशानके साथ खूब छन रही थी, उसी वक्त किसीने पैरहने की तरफ़ दीवेकी छायामें खड़े हो याकूब बायको इशारा किया और स्वयं दरवाजासे बाहर जा रास्तेपर खड़ा हो गया। याकूबने धीरसे उठ उसके पास पहुँचकर पूछा—खैरियत तो है बाजार बाय? रातको इस वक्त क्या काम? यदि हजरत ईशानके दर्शनोंके लिए आये हो, तो आओ मैं दर्शन कराता हूँ।

—मेरे शिरपर भारी आफत आई है। दादार (छोटा भाई) बहुत बीमार है, पैर और जीभसे बिलकुल बेकाबू है। हजरत ईशानके पधारनेकी बात सुनकर आया हूँ। आज ही रात या कल पधारकर यदि कुछ मन्त्र-तंत्र करते, तो शायद बेचारेकी जान बच जाती।

—बहुत अच्छा। लेकिन मुझे नहीं मालूम, कि तुम हजरत ईशानकी मान-पूजा ठीक तौरसे कर सकोगे।

—जरूर करूँगा। मैं जी जानसे हाजिर हूँ। जैसे भी हो मेरा दादार अच्छा हो जाये। धन-दौलत मेरी नजरमें कुछ नहीं।

—यह ईशान मामूली ईशान नहीं। हिसारके क़ुशबेगी और स्वयं जनाब-आली (अमीर-बुखारा) आँजनाबके चेले हैं। अगर आँजनाबको अपने घर ले जाना चाहते हो, तो सवारीके लिये घोड़ा भेंट करना जरूरी है, और तुम्हारे पास घोड़ा है नहीं।

—घोड़ा नहीं है तो क्या? दूधवाली गाय और बैल तो हैं। बीमार-की जान बचे। मैं आपकी सलाहके मुताबिक 'जानगिरो जामा गिरो' करके किसी तरह भी खुश करूँगा।

—अगर बैल भेंट करो, तो हजरतको ले चलनेकी कोशिश करूँगा।

बायके नौकर जफ़रने रास्ता पर होती इस बातको सुना और उसने अपने आपसे कहा—"बकरीको जानकी चिन्ता और कसाईको चर्बीकी।"

बाजारने एक बैलकी भेंट स्वीकार करके पधरावनीके समयके बारेमें पूछा। याक़ूब बायने उत्तर दिया—आज रात सम्भव नहीं। हज़रत ईशानके दर्शनोंके निमित्त आलिम लोग तशरीफ लाये हैं। कल सुबहकी नमाज़के बाद ले आऊँगा।

× × ×

अगले दिन जब ईशान सुबहकी नमाज़ पढ़ चुके, तो बायने सलाम करके कहा—तकसीर (अपराध क्षमा-निधान)! लक्ष्मी आपके चरणोंमें आ रही है। यंगक़ुर्गानमें जो ज़मीन मिली है, खुदाने उसके लिये एक बैल भेजा है।

ईशानने बायसे "कहाँ से, कैसे बैल आया?" इसके बारेमें कुछ भी पूछे बिना आधा खड़ा हो बायकी गोशालामें थानपर बँधी बैलोंकी जोड़ीको देखकर पूछा—इनमेंसे कौन?

याकूब बायने "यह नहीं" कह बाजारके भाईकी बीमारी और एक बैलकी भेंटका बयान किया और कहा—तकसीर ! ऐसा करें कि बला भाग जाय । यदि बैलोंकी जोड़ी मिल गई, तो प्रतिदिन एक बीघा जोतनेके लिये काफी रहेगा ।

ईशान—खुदाकी मदद चाहिये । मैं उसको बाँध लूँगा ।

—खुदाकी मददमें इन्सानकी भी मदद जरूरी है । यदि हज़रतके यह खड़ाऊँबदीर (अनुचरोंकी तरफ इशारा करके) न हों, तो बैल क्या बकरी भी मुयस्तर न हों ।

ईशानने अपने खड़ाऊँवर्दारकी तरफ़ निगाह करके कहा—मुल्ला नवाज़ ! सुना न ? यह बाय भी तेरी करामातको समझते हैं । अब मुरीदोंके साथ किस तरह बर्ताव करना चाहिए, इसे अच्छी तरह सीख ले ।

फिर बायसे "आओ चलें" कह दोनों रवाना हुए । मुल्ला-नवाज भी साथ हो गया, क्योंकि उसे बैल लाना था ।

× × ×

—दादारकी हालत और भी बुरी है । ईशान भी अभी नहीं आये—कहकर बाजारने अपने दिलका दर्द बीबीसे जाहिर किया । इसी समय बाहरसे बायकी आवाज़ आई । बाज़ार औरतोंसे दूसरे घरमें जानेकी बात कर खुद बाहर आ गया और ईशानको देखते ही रोना शुरू कर सलाम करना भी भूल गया । फिर उसने उनके हाथोंको अपनी आँखोंसे मला और उन्हें साथ लेकर बीमारके पास पहुँचा । बीमार हाथ-पैर पटक रहा था । कभी आखें खोल कर वहाँ बैठोंकी तरफ़ फाड़-फाड़ कर देखता, फिर आँखें मूँद लेता । ईशानने अपने हाथको रोगीके ललाटपर रख कुछ पढ़ कर 'फू' किया, फिर अपने सिरको नीचेकर आखें मूँद ध्यानस्थ हो गये । कुछ मिनट बाद सिरको उठा कर एक ठंडी आह खींच बायकी तरफ निगाह करके कहा :

—इसपर जिन्नने असर किया है । वक्त तो बीत गया है; अच्छा, रातको

मुझसे पूछना। मैं कोशिश कर रहा हूँ। काम बिगड़ चुका है। अब अफ़सोस करनेसे क्या फायदा ? अब भी समय है। जब तक प्राण तब तक प्रयत्न करना चाहिये। शायद बच्चा छुटकारा पा जाये। कहावत है, "जब तक जड़ पानी में तब तक फलकी आस"; लेकिन इसके लिये सबसे अधिक प्रिय एक प्राणधारी न्यौछावर करना चाहिये।

बाजारने कहा—एक बढ़िया बैल है जो दादारके बाद मुझे सबसे ज्यादा प्रिय है। वही आपके चरणोंमें न्यौछावर है! ऐसा कीजिये, जिसमें मेरा दादार खलास हो जाय।

—खलासी पहले तो खुदाके हाथमें, दूसरे अपने इखलास (सद्भाव) पर है। पीरोंने कहा है "इखलास व खलास" जो हमारे हाथमें है, करनेसे उठा नहीं रखेंगे। आगे खुदा मालिक।

ईशानने फिर मंत्र पढना आरम्भ किया। दो-तीन बार बीमारकी तरफ़ दम किया, फिर हाथ-पर-हाथ रखकर कुछ पढ़ा। दूसरोंने भी हाथ-पर-हाथ रख 'आमीन' कहा। फिर ईशानने एक लम्बी चौड़ी दुआ पढ़ मुँह पर हाथ फेर बीमारकी ओर 'फू' करके दम किया। दूसरोंने भी मुँह पर हाथ फेर 'अल्लाहु-अकबर' कहा।

बाजारकी आँखें डब-डबाई हुई थीं। ईशानने उसकी ओर देखकर कहा—चिन्ता मत करो। कहावत है "दर्द दूसरा मौत दूसरी" मैं जाकर ताबीज़ लिखता हूँ। उनमेंसे एकको मोटे कपड़ेकी तीन तहमें लपेट दाहिने बाज़ू पर बाँध देना। और तीन ताबीजें भेज रहा हूँ, जिनमें एक अब, दूसरी शामको, तीसरी रातको पानीमें घोटकर पिला देना। और भी तीन दुआएँ लोबानकी लकड़ीपर लिखकर भेज रहा हूँ। उनमेंसे एक अब, दूसरी शामको; तीसरी रातको आगमें डाल बीमारके नीचे धूप देना।

यह कहकर पीर अपनी जगहसे उठ खड़े हुये। दूसरे भी खड़े हो गये। बाजार आगे दौड़कर बैल खोल ईशानको भेंट करनेके लिये तैयार था। ईशानने दूसरोंसे आँख बचा बैलकी तरफ एक नजर देखा।

याकूब बायने मुल्ला नवाजसे कहा—बैलको तुम पकड़ लो—फिर बाजारकी तरफ मुड़कर कहा—तुम जल्दी अपने दादारके पास जाओ। किसी समय उसे अकेला न छोड़ो।

याकूब बायने ईशानके साथ बातचीत करते घरका रास्ता पकड़ा। पीरने याकूब बायके यहाँ आ वज़ू (हस्त-पाद-मुखप्रक्षालन) कर दो रकात (चरण) नमाज़ पढ़ी। नमाज़से उठकर खीरके थालपर पीर साहब बैठे भी न थे, कि गाँवके मुअज़्ज़िनने आकर बाजारके भाईके जनाज़े (शवयात्रा) का समाचार सुनाया।

बायने चुटकी लेते हुए ईशानसे कहा—तकसीर! लोग कितने सद्भाव (इखलास) वाले हैं, यदि उनका रोगी अच्छा हो गया तो यह ईशानकी दुआसे, यदि मर गया तो यह खुदाकी मर्जीसे। फिर ईशानको जनाज़ेका समाचार दे खैरात देते हैं। हर हालतमें ईशान शव-स्नापकोंसे तो अधिक सम्मानित और सौभाग्यशाली है। बेचारे मुर्दा नहलाने-वाले मुर्देकी मृत्युसे कोई सम्बन्ध नहीं रखते, सिर्फ मरनेके बाद मुर्देको धोते-धाते हैं, लेकिन मुर्देके साथ जानेकी उन्हें आशा नहीं। वह कुलक्षणी समझे जाते हैं।

१४

जनाज़ा (अरथी)

ईशान अपने जूताबरदारों और गाँवके इमामके साथ बाजारके घर जा, फातिहा पढ़, गमी मना फिरसे वज़ू (हस्त-पाद-मुखप्रक्षालन) करने मस्जिदमें पहुँचा। याकूब बाय बुड्ढों और गाँवके अर्‌बाब (चौधरी)के साथ मुर्दाखानेमें गया। गाँवके एक बूढ़ेने सफरकी मृत्युपर तसल्ली देते बाज़ारसे कहा:

—तुम्हारा दादार बाज़ार बाय! तुम्हारा भाई दुनियामें बगैर कुछ

देखे ही चल बसा। बेचारेके सन्तान भी नहीं कि, घरमें दीया जलाये। बीबी है जो बीसवाँ या चालीसवाँतक और बहुत हुआ तो वार्षिक श्राद्धतक चली जायगी। तुम्हारे लिये उचित है, कि सफरकी आत्माको शान्त और परितृप्त करो। दोस्त-दुश्मनके बीच इज्ज़त-आबरूके साथ उसे कब्रमें सुलाओ। संसारी चीज़ें अच्छे-भले दिनोंके लिये दर्कार होती हैं। भगवानकी दया है, तुम्हारे पास किसानी है, माल-मिल्कियत है, गल्ला-दाना है, बैलकी जोड़ी...

बूढ़ेने जब बैलकी जोड़ीका जिक्र किया, तो बाजारने एक बार आशा भरी निगाहोंसे गोशालाकी तरफ देखा। उसे ख्याल आया कि सफरके मरनेके बाद ईशानने बैल लौटा दिया। लेकिन जब वहाँ बैलका कोई पता न पाया, तो उसपर दुबारा भारी निराशा छा गई।

बूढ़ेने बाजारकी दशा देखकर समझ लिया, कि उसकी बातका उसपर कोई असर नहीं हो रहा है। कुछ और गरम होकर उसने कहा—बाजार! मैं तुझसे बात कर रहा हूँ। इधर ध्यान दे। खुदाका शुक्र है, एक भाईको छोड़कर दुनियामें तेरे पास किसी चीज़की कमी नहीं। शरीरमें स्वास्थ्य और काम करनेकी शक्ति है। इज्ज़त-आबरू बढ़ा। अगर किसी चीजकी कमी हो तो याकूब बाय दिल खोलकर मदद करेंगे—

बूढ़ेने यह कहते अपनी नेक सलाहको खतम किया। याकूब बायने सिर हिलाकर उक्त कृपालु शिक्षाप्रदाताका समर्थन किया, और कहा—अलबत्ता! अलबत्ता! मेरी बड़ी इच्छा थी, कि पुत्रके तूय (काज-प्रयोजन)में बाजार बायकी सेवा करूँ। अब भी वह इच्छा दिलमें है। खुदा वह दिन दिखाये। मैं खुद आगे बढ़कर यादगार बायकी तूय करूँगा, लेकिन आज जो खुदाने बाजार बायके सिरपर कष्टके दिन डाले हैं, मैं किसी तरह मदद देनेसे पीछे न हटूँगा। इनके भाईके शवके मान-सन्मानके लिये जो कुछ जरूरी है, देनेको मैं तैयार हूँ।

गाँवके अरबाब (चौधरी)ने बायकी बातकी पुष्टि करते हुए

कहा—शाबाश ! अल्लाह तुम्हें बरकत दे बाय ! भले दिनोंमें सभी दोस्त होते हैं, लेकिन पक्का दोस्त वह है, जो बुरे दिनमें काम आये और हस्तावलम्ब दे ।

बाजारने अश्रुपूर्ण नेत्रोंको आस्तीनसे पोंछते हुए कहा—मेरी अकल ठिकाने नहीं है । जो आप उचित समझें, सरदार बनकर करें । मुझे सब स्वीकार है ।

बाज़ारने शवस्नापकके हाथमें पड़े शवकी भाँति सारा अख्तियार गाँवके बड़ोंके हाथोंमें दे दिया । इसके बाद सारे खर्चके लिये अधिकार बाज़ारके हाथमें नहीं बल्कि गाँवके अर्बाब और याकूब बायके हाथोंमें था । कब्रमें रखने और भोजका सामान याकूब बायके घरसे आया । बायने खैरातके लिये भी एक सौ तंका (टंका) अर्बाबके हाथमें रक्खा । ईशानकी भेंटके लिये विशेष तौरसे एक थान ढाकाका भी दिया । जवारके भोजभक्षकोंको जनाज़ा (अन्त्येष्टि-क्रिया)की खबर दी । आस-पासके इमाम भी सदलबल आ, फातिहा पढ़ जनाज़ेमें शामिल हुए । गाँवके इमामने मुर्देकी तैयारीकी देख-भाल की । शवस्नापकोंने कफ़न सीकर नहलानेके लिये मुर्देको तख्तेपर रखा । मुवज़्ज़िन (अज़ान देने वाले)ने "हाथमें पानी दें" कहकर इमामसे निवेदन किया । इमामने यह कहकर विधिका चक्र शुरू किया—'पिछले एक सालके रोज़ा-नमाज़ और दूसरे धार्मिक कर्तव्योंके न करनेके बदले एक घोड़ा फकीरको दिया जाय (इसके लिये अरबाबके घरसे घोड़ा माँग लाया गया था)' । फ़कीरने लौटाकर घोड़ा इमामको वापस कर दिया । इस तरह बीस बार घोड़ा दान किया गया । चक्कर समाप्त होनेके बाद फकीरको एक टोकरी गेहूँ दे घोड़ेको उसके मालिकके पास लौटा दिया गया । फकीर एक टोकरी गेहूँके साथ सफ़रके बीस सालके पापोंको भी अपने सिरपर लादे गया । अब इमाम (ग्रामपुरोहित)के विचारानुसार सफर नवजात शिशुकी भाँति बिल्कुल निष्पाप था ।

जनाज़ाकी नमाज़ पढ़नेके बाद मुर्देको कब्रमें रखकर खैरात बाँटी गई। तीन दिनतक कब्रपर फ़ातिहा पढ़ा जाता रहा। पहले जुमाँ (शुक्र-वार)को प्रातः फातिहा-पाठके बाद कुरानका पारायण किया गया। दो सप्ताह बाद 'बीसवाँ' और पाँच सप्ताह बाद 'चालीसवाँ' (श्राद्ध) मनाया गया। 'बीसवाँ' और 'चालीसवाँके' दिन भी कुरानका पारायण हुआ, भोज-भात हुआ। जिसमें इमाम, मुअज्ज़िन और गाँवके बड़े-बूढ़ोंके लिये देग गरम हुआ।

शोक और सूतककी अवधि समाप्त होने पर अरबाबने बाजारके घर सारे खर्चका हिसाब दिया। उसके मुताबिक बाजारपर बायका एकसौ तंका और पाँच बोरा गेहूँ कर्ज था। देशकी प्रथाके अनुसार सब खर्चको गेहूँमें जोड़ा गया था। अरबाबने कहा—बाजार! गल्ला-दाना ज्वार-कपास जो कुछ भी पास हो, उसे बेंचकर बायके नक़द तंकोंको लौटा दो, जिसमें तुम्हारा भाई कब्रमें शान्तिसे सोये। गेहूँको कुछ और बढ़ाकर अगले साल खलिहानसे दे देना।

बाजारने कहा—मैं अकेला हूँ। यह जोतने-बोनेके दिन हैं। नाज-दाना उठाकर किसके पास ले जाकर बेचूँ? बायसे कहिये, इतनी नेकी की है, तो कुछ दिन और क्षमा करें। जैसे ही मुझे कामसे छुट्टी मिलेगी, मैं अपने घोड़े-गधे पर चीजें लादकर दोशम्बा (स्तालिनाबाद) या कूलाब ले जाकर बेंच आऊँगा।

—बाज़ार! कोई चिन्ता फ़िकर मत करो। रवाजके मुताबिक अनाजका भाव करके बायको ही दे दो। बायके पास बहुतसे साधन हैं। वह दोशम्बे ले जाकर बेंच लेगा या कूलाबमें। जैसे भी हो, मुर्देके कर्जको जल्दी-से-जल्दी बेबाककर देना ही उचित है, जिसमें बेचारा सफर तुम्हारा भाई कब्रमें शान्ति-पूर्वक सो सके।

बाजारने बात मानकर गेहूँ कितना बढ़ाकर देनेके बारेमें पूछा। अरबाबने कहा—यह भी देशके रवाजके मुताबिक होता है, लेकिन

बाय तुम्हारे साथ रियायत करके कुछ कम कर देगा। अगर आदमी किसीसे वसन्तमें बोनेके वक्त गेहूँका बीज उधार ले, तो रवाजके मुताबिक खलिहानमें दुगुना देना होता है। अभी वसन्तको छः सात महीने बाकी हैं। गेहूँके तैयार होनेमें दस महीनेकी देर है। खैर, बायके पाँच बोरोंके बदले दश बोरा हिसाब कर लो, लेकिन मेरी और बायकी नेकियोंको भूलना नहीं। बायके कामकी बात तो हो गई। अपने सेवाओंके बारमें मैं कुछ नहीं कहता। मेरे लिये तुम जो उचित समझो, करो।

इस तरह अरबाबने बायके हिसाबको खतमकर फिर कहा—आओ, चलो, बायके पास चलें। यहाँ जो बातचीत हुई, उसे बतलाकर बायको भी राजी कर लें। जिस दिन बायको छुट्टी हो, गल्ला लेकर उसके घर पहुँचा आना।

'अच्छा चलें' कहकर बाजार अरबाबके साथ बायके यहाँ गया। उससे सारी बात कही। बायने भी प्रथम तो बाज़ारके खातिर, दूसरे सफरकी आत्माकी शान्तिके खातिर, तीसरे अरबाबकी खातिर बातको स्वीकार करते हुए बाजारको हिदायत दी—अरबाबकी कृपाओंका भी बदला देना चाहिए।

१५

"शुभ सम्मति"

उस साल बाजारकी खेती अच्छी नहीं रही, क्योंकि दो बैलोंकी जगह एक बैल और दो काम करनेवालोंकी जगह सिर्फ एक काम करनेवाला रह गया था। बाज़ारके घरका काम भी पहिलेकी तरह नहीं चल रहा था। सफरके 'चालीसवाँ'के बाद उसकी बीबी मायके चली गई। मेहमाह अकेली थी। उसे खाना पकाने, घर साफ़ रखने और फटे-पुरानेकी सिलाई करनेके लिये मुश्किलसे छुट्टी मिलती, इसलिये पहिलेकी

तरह बुनाई आदिका काम नहीं कर सकती थी। बाज़ार कुछ समय बायका काम करनेके लिये भी मजबूर था।

गेहूँ तैयार हुआ। सबसे पहिले याकूब बायके ओरे खलिहानपर पहुँचे, फिर दाँवनेवालों, ओसानेवालों, इमाम और दूसरोंका हक देनेके बाद बाजारके लिए सिर्फ भूसा भर रह गया। दूसरे नाज सरकारी माल-गुजारी और सालभरकी अपनी रोजीके लिये पर्याप्त नहीं थे। इस साल जाड़ा शुरू होते ही बाज़ार याकूब बायसे मदद लेनेको मजबूर हुआ। बायने भी मदद करनेमें कोई कसर न की। बायके कहनेके मुताबिक उसके और बाजारके बीच चीज-वस्तु कोई महत्त्व नहीं रखती, सिर्फ एक दूसरेकी सलामती चाहिये थी, सिर्फ सावधानीके तौरपर ना-उमेद दिनोंके लिये एक टुकड़ा कागज चाहिये था। बाजारको जिस चीजकी भी जरूरत हो, सब मौजूद थी। क़ाज़ीके कागज़से बाजारको डरनेकी ज़रूरत नहीं। यह कोई उतनी भारी बात नहीं। जो शर्तें जबानी हुई थीं, सिर्फ उन्हींको तो कागज़पर लिख देना था।

जो भी हो, बाजार कागज लिखनेकी बातसे चिन्तामें पड़ गया। अपनेपर बहुत बल देकर सन्तोष करके वह घरपर बैठा रहा, आवश्यक वस्तुओंके लिये बायके दरवाजेपर नहीं गया। अन्ततः उसके घरमें न एक मुट्ठी दाना खानेको, न एक बित्ता कपड़ा पहननेको रह गया। बाध्य हो गल्लाके लिये बायके यहाँ एक दिन उसे जाना पड़ा। बायने इस तरह बात शुरू की—दादार! मैं तुम्हारे लिये किसी बातको उठा नहीं रखता। तुमने स्वयं पिछले साल तङ्गी हाथ-सिकोड़ीके समय देखा, कि मैंने तुम्हारे कौलको कौल तुम्हारी बातको बात माना और तुमपर विश्वास किया। तुमपर विश्वास करके आजतक मैंने न हानि उठाई न धोखा खाया। यह अवस्था जबतक तुम और हम ज़िन्दा हैं, ऐसी ही रहेगी। लेकिन जो एक दिन तुम्हारे या हमारे लिए भगवानका बुलौवा आया, और तुम्हारी हमारी लेन-देनका भार हमारे कमसिन बच्चोंपर पड़ा, तो मालूम

नहीं, वह हक़को हक़दारके पास पहुँचायेंगे या नहीं। महापुरुषोंने कहा है "जबतक बद न कहो तबतक नेक सामने नहीं आता।" इसीलिये उसी बद और ना-उमेद दिनके लिये एक दिलपूरीकी जरूरत है, जिसमें यह हिसाब तुम्हारे और हमारे सिरपर क़यामत (यमराज)के लिये न रह जाय। यह दिलपूरी है, काज़ीका एक टुकड़ा कागज। इस कागज़से तुम डरो नहीं। जो गल्ला तुम लोगे, मैं उसका हिसाब तंकामें करूँगा। उसके बदले दस्तावेजमें तुम अपनी जमीनको मेरे हाथ गिरौं कर दो। पीछे जमीनको पहिले हीकी तरह अपने हाथमें रखो। जुताई-बुवाई करो। खुद मेवादारी (मेवाके बागका काम) करो। सिर्फ इतना और कि पिछले साल वादेपर जो चीज़ें ली थीं, उन्हें लौटा दो।

यह सुनकर बाजारका होश उड़ गया। यद्यपि बायके कथनानुसार "काज़ीके एक टुकड़ा कागज"के अतिरिक्त कोई और नुक्सानकी बात नहीं दिखलाई पड़ती थी, लेकिन उसका मन शंकित हो उठा। उस दिनसे मानो वह बेवतन, बेजमीन और बेघर हो चुका था। लेकिन उपाय क्या? बुवाईके वक्त तक अपने, अपनी बीबी और लड़केका पेट भी भरना था, और यदि इस साल बीज न मिला, तो अगले साल भी गेहूँ के बिना भूखों मरना पड़ेगा।

बायने बाज़ारकी शंकापूर्ण आँखोंसे भाँप लिया, कि सिनेमाके पर्देपर गुजरती फिल्मी छायाकी तरह कौनसे विचार उसके अन्दर उठ रहे हैं। फिर स्वरको कोमल करके उसने कहा—बाजार! मेरी यह बातें सुनकर तुम सन्देहमें तो नहीं पड़ गये? तुम स्वयं जानते हो कि अबतक मैंने तुम्हारे हकमें कोई बदी नहीं की और आगे भी बदी करनेवाला नहीं हूँ। इन बातोंको मैंने सिर्फ़ सावधानी और ना-उमेद दिनोंके लिये कहा। यदि तुम्हें संदेह हो गया है, तो अब भी मैं पहिलेकी तरह बिना लिखा-पढ़ीके ही तुम्हारा पेट भरनेको तैयार हूँ, लेकिन काजीका कागजका एक टुकड़ा हमारे बीच हो जाय, तो उससे मन सन्तुष्ट रहेगा। खुद सोचो, और जिससे

चाहो, सम्मति ले लो। फिर कुछ तय करके आओ। अभी जाओ, बोरा लाओ और गेहूँ ले जाओ।

बायकी अंतिम बात—जो बहुत ही नरम और सहानुभूतिपूर्ण थी—सुनकर बाज़ारका भय करीब-करीब दूर हो चुका था, तो भी उसने कहा—अच्छा, कलतक सोचनेकी मुहलत चाहता हूँ।—इतना कहकर उसने छुट्टी ली।

—'बारक'ल्लाह! (शाबाश!) बात इसे कहते हैं। कहावत है, "सोचकर काटा जामा छोटा नहीं होता।" सोचो, सलाह करो, फिर जो कुछ कहना हो कहो। हाँ, जैसा कि मैंने कहा—अगर घरमें खानेकी चीज न हो तो जल्दी बोरा ले आकर गल्ला ले जाओ।

बाजारने भी 'सलामत रहें' कहकर रास्ता लिया।

× × ×

—हाँ, आका बाजार! कहाँ से? तुम्हारा होश उड़ा-सा मालूम होता है!

—कोई बात नहीं। यहाँ ही तुम्हारे मालिकके यहाँ से आ रहा हूँ।

—वहाँ क्या बातचीत हुई? मेरे मालिकसे तुम्हारी जान-पहिचान कबसे है? अब तो हम जैसोंकी ओर निगाह भी नहीं करते।

बाजारने फीकी हँसी हँसकर कहा—बेदर्दोंकी तरह बात कर रहे हो ज़फ़र! यदि मुहताज न होता तो साफा छूट जानेपर भी उसे लाने तुम्हारे मालिकके घर नहीं जाता। यही गरीबी और मुहताजी है, जिसने मेरे रङ्गको पीला कर दिया और धकेलकर तुम्हारे मालिकके दरवाजेपर पहुँचाया।

ज़फ़र बायका हलवाहा था। वह खेत जोतकर लौट रहा था। उसने बाज़ारको रास्ते पर जाते देख बात शुरू की। ज़फ़रने बाजारके करीब पहुँच बैलोंको "हो:—हो:"—कहकर रास्तेके किनारे खड़ा कर दिया। "सलामलेकुम्, कैसे हो? राजी-खुशी तो हो? बाल-बच्चे कैसे हैं?" कहकर बाज़ारसे उसने कुशल-मंगल पूछा।

बाज़ारने भी कहा—वालेकुम् सलाम, खुदाका शुक्र है। तुम तो अच्छे हो?

ज़फ़र बहुत थक गया था। वह बोला—'आओ, यहाँ बैठें। चार बातें करें कि चिंता दूर हो जाय।' फिर राहके एक ओर जा बैठा। बाजार भी आकर बैठ गया। फिर जफरने पूछा—किस मुहताजीने तुम्हें मालिकके दरवाज़े तक धर घसीटा?

बाजारने एक एक करके याकूब बायके साथ हुई बातोंको दुहराया और अंतमें कहा—जमीनके गिरवीं रखनेकी बातने मुझे चिन्तामें डाल दिया है। कौन जाने, इसका अंत कहाँ जाकर हो! इसी दुविधामें मैं पड़ा हूँ।

ज़फ़रने सिर हिलाकर असम्मति प्रगट करते हुए कहा—आक़ा बाजार! मेरी बात मानो। इस कामको न करो। मैं अपने मालिकको तुमसे अच्छा जानता हूँ। (नाभिके नीचे फटकर अलग हो गये चीथड़े-चीथड़े जामाको दिखलाकर) देखो यह मेरी पोशाक। मैं सालमें बारहों-महीने दिनरात काम करता हूँ। पेटमें सदा आग जलती रहती है। कभी पेट भरा, नहीं जानता। मालिक हर आदमीको अपनी दयालुता दिखलाता है, लेकिन वह झूठ है। उसके समान निर्दय धोखेबाज आदमी दुनियामें कम ही हैं। यह सारी सहानुभूति जो वह तुम्हारे साथ दिखला रहा है, वह सिर्फ तुम्हारी जमीन और माल-मिल्कियतको हड़पनेके लिये। यह "दिलपूरीका एक टुकड़ा काग़ज़" उसीका श्रीगणेश है। अगर बाय वस्तुतः दयालु होता, तो मैं जो गुलामकी तरह उसके घरमें काम करता हूँ, उसे वह पेट भर खाना क्यों नहीं देता? क्यों नहीं तन ढाँकनेको कपड़ा देता?

ज़फ़रने एक ठंडी साँस लेकर फिर बात शुरू की—तुम्हारी तरह एक टुकड़ा उपजाऊ जमीन मेरे बापके पास भी थी। वह ज़मीन बायके पास कैसे गई, सो बतलाता हूँ। पिताके कथनानुसार जिस वक्त शादी—

खाना-आबादी करनी चाही, बायने दया दिखलाते उन्हें पैसा-कपड़ा दिया। इसके अतिरिक्त जिस किसी चीजकी जरूरत होती वह मेरे पिताको देता। जब बायका कर्जा भारी हो गया, तो बायने 'दिलपूरी'के तौरपर जमीनको गिरों करा लिया। धीरे-धीरे बैलकी जोड़ी और खेतीका सामान भी मेरे पिताके हाथसे निकलकर बायके पास आ गया। मेरे पिताके लिए धरती-आकाश कहीं हाथ-पैर फैलानेके लिये जगह न बची। वह बायकी चाकरी करनेको मजबूर हुए। मरते दमतक एक दिन आहार और दो दिन निराहार रह कड़ी मेहनत करते मेरे पिताने जीवन बिताया। उनके देहान्तके बाद मैं भी इसी याकूब बायके घरपर गर्भदासकी तरह रह रहा हूँ। मेरे लिये कहीं जाने, काम करनेका रास्ता नहीं। लाचार चाहे भूखा रहूँ या अघाया, इसी कसाईका काम करता हूँ। चोटीसे एँड़ी तकका पसीना मेरा बहता है और सुनहले गेहूँका दाना इस आदमीको नसीब होता है; मैं काली मेहनत करता हूँ और कपासके सफेद गालोंको यह आदमी अपने कोठारमें भरता है; भारी कामके मारे मेरा बदन सूख जाता है और तिल और सरसोंका तेल यह आदमी जमा करता है। आज सबेरे उसी जमीनमें हल चलाने गया था। पुरानी बातें याद आगईं। आँखोंसे खून टपकने लगा। चाहता था, कोई मिले जिससे अपना दर्द कहकर दिलको हलका करूँ। तुम्हें पाकर मैंने अपने बोझको हलका किया।

ज़फ़रने अपनी बातको खतम करते कहा—राहमें रोक रखनेके लिए क्षमा करना बिरादर! कुछ भी हो, खूब सोच-समझकर याकूब बायके साथ काम करना।

फिर ज़फ़रने बैलोंको हाँकते हुए मालिकके घरका रास्ता लिया।

ज़फ़रकी बातें सुनकर बाज़ारका भय और बढ़ गया। एक सिर और हजार दर्द, एक दिल और हजार ख्याल लिये वह घर पहुँचा। देखा, बच्चा रो रहा है और पत्नी कह रही है—चुप रह, अभी तेरा अता (बाप) आ रहा है, रोटी ला रहा है।

जब बच्चेकी दृष्टि बाप पर पड़ी, तो माँको छोड़ बापकी गोदमें जा "दा-दादाजान ! मैं रोटी खाऊँगा। रोटी लाये ? कहाँ है रोटी ?" कह बापकी जेब और बगलको टटोलने लगा।

बाजारने मुँह चूमते हुए कहा—दादाकी जान ! दादाके प्राण ! अभी रोटी लाता हूँ। आचेश् ! बोरा कहाँ है ? ला दे मुझे। मैं बच्चेके लिये एक मन रोटी लाता हूँ।

मेहमाहने कहा—हाँ, रोटीका इन्तिजाम करना जरूरी है। बच्चेने सारा दिन नमक तक नहीं चखा। रोटी रोटी कर रहा है।

—पड़ोसियोंसे एक रोटी उधार क्यों नहीं ले ली ?

—किस पड़ोसीसे ? सब किसीसे तो एक-एक दो-दो रोटी ले चुकी हूँ। दुबारा माँगनेका साहस नहीं होता। माँगनेपर वह देंगे, इसकी आशा नहीं। बीबी सारासे दो दिन पहले एक रोटी उधार ली थी। आज जब बच्चा बहुत रोने लगा, तो हियाव करके दीवारके पास जाकर बोली "भगवान् भला करें, एक और रोटी उधार दो।" वह मुँह बिचकाकर बोली "रोटी खतम हो गई। आज मेरे घर खमीर बनेगा, यह भी मालूम नहीं" और यह कहकर घरसे बाहर चली गई।

—जैसे भी हो, एक रोटी कहींसे लाकर बच्चेको खिला। बायने एक बोरा गेहूँ देनेका वादा किया है। लेकिन गेहूँको पनचक्कीपर लेजाकर आटा पिसानेमें एकदिन और लग जायगा (बच्चेकी तरफ निगाह करके) यादगार ! तू अपनी आचाके पास बैठ, मैं अभी बोरा भरकर रोटी लाता हूँ !

बाजार उठकर बोरा ले दरवाजाके बाहर गया, किन्तु तुरन्त पैरको पीछे लौटा बीबीसे बोला—तेरे साथ एक सलाह करनी है। बाय गेहूँ देनेको तैयार है, लेकिन कहता है कि अपनी जमीन गिरों कर दो। समझमें नहीं आता कि क्या करूँ ? तेरी क्या राय है ?

—कदापि इस कामको न कर। हम बेवतन दर-दरके भिखारी बन जायेंगे।

—लेकिन, फिर जिंदगी कैसे काटें?

—ज्यादा नहीं, थोड़ा खाना चाहिये। सब्र करके किसी तरह गेहूँ बोनेके वक्ततक दिन बिता लेना है।

—लेकिन भोजन खानेकी ही तो बात नहीं। बैलको दाना और खेतके लिये बीजकी जरूरत है। और इस कम खानेको भी कौन देगा? तुझे एक रोटी उधार भी नहीं मिल रही है। मैं साल भरके खर्चको बिना लिखा-पढ़ी और गिरोंके किस तरह कर्ज़ पा सकता हूँ?

—कुछ भी हो, मैं इस कामकी सलाह नहीं दे सकती। खुद ही समझ ले, जबतक तनमें जान है, इस काम को न कर।

बाजारका दिल भी इस कामके लिये तैयार न था, लेकिन दूसरा रास्ता क्या था? आशा थी, बीबी कोई सलाह देगी, लेकिन उसका 'यह काम न कर' कहना कोई लाभदायक सलाह न थी। इसलिये सिर्फ बायकी कृपाका भरोसाकर वह चल पड़ा। अनन्त समुद्रमें गोते खाता लहरोंके थपेड़ोंसे आगे बढ़ता-बढ़ता बाजार बायके दरवाजेपर पहुँचा। आवाज लगाने पर बाय बाहर आया और हाथमें बोरा लिये बाजारको देख, वह समझ गया, कि बाजारकी हालत बहुत तङ्ग है। उसे और स्पष्ट करनेके लिए उसने बाजारसे पूछा:

—बहुत जल्द लौट आये? क्या बिना किसीसे सलाह किये ही मेरी बातें कबूल कर लीं?

—अभी गेहूँ लेकर चक्की पर जाना चाहता हूँ। बच्चा बहुत भूखा है। सलाह करनेके लिये समय न मिला। कल सलाहकर जवाब दूँगा।

अपने रुखको बिलकुल बदलकर बायने कहा—दादार! दुनियाका काम इस तरह नहीं चलता। चाहिये था कि सलाह करते, कोई निश्चय

करके आते। अब भी कोई हर्ज नहीं। बोरेको यहीं रख इसी वक्त अरबाबके घर जा सलाह कर आओ।

बाजार उसी वक्त उलटे पैर लौटा और अरबाबके यहाँ जाकर उससे सारी बात कही और राय माँगी। अरबाबने कहा—इस काममें सलाहकी क्या जरूरत? दुनियामें कोई आदमी नहीं है, जो बिना दिलपूरीके पैसा दे। बायने परसाल मेरा ख्याल करके बिना लिखा-पढ़ीके ही कर्ज दे दिया। इस साल भी यदि बीचमें पड़ूँ, तो बिना कागज-पत्रके कर्ज दे देगा। लेकिन जो कुछ मैंने सुना है, उससे जान पड़ता है, कि बायकी हालत भी अच्छी नहीं है, यद्यपि इस बातको वह दूसरोंके सामने प्रगट नहीं करता। मगर, मुझे अच्छी तरह वह बात मालूम है। तुम देखते हो, बाय प्रतिदिन दो बकचा बाजारी माल अपने घोड़ेपर लाद आज कनकुर्त्त, कल बलजुवान परसों किसी तीसरे बाजारमें ले जाकर बेंचता है। प्रति सप्ताह हिसार या दोशम्बे जाकर वहाँसे मालकी गाँठें लाता है। तुम समझते होगे कि यह सारा माल बायकी अपनी चीज है और वह अपने पैसेसे लेन-देन, क्रय-विक्रय करता है। नहीं, बात ऐसी नहीं है। वह भी दूसरे बेगों और रूसी कम्पनियोंसे कर्ज लेता है, जिसके लिये दस्तावेज लिखकर देता है और जमीन-मिल्कियतके अपने दस्तावेजोंको गिरों रखता है। इस साल जो तुमसे वह दस्तावेज माँग रहा है, वह इसी ख्यालसे कि तुम्हारे दस्तावेजको भी गिरों रखकर अपने दर्दकी दवा करे; नहीं तो उसके दिलमें तुम्हें तकलीफ देनेका ख्याल नहीं है। बाय इस तरहका खराब आदमी नहीं है, कि धोखा देकर किसीकी जायदादको हथिया ले। जाओ, दस्तावेज लिखना कबूल करो, कोई बात नहीं होगी। अगर बायको जमीनकी जरूरत हो, तो मुल्कमें आधी जमीन बेकाश्त और परती पड़ी हुई है।

अरबाबकी बात सुनकर बाजारको कुछ ढाँढ़स बँधी। जफ़रकी बात और बीबीकी इन्कारकी बात यादकर उसका दिल काँप रहा था,

लेकिन अब दूसरा रास्ता ही नहीं था। बायकी बातसे मालूम हो चुका था, कि वह अब एक बोरा गेहूँ भी नहीं देगा। हार मानकर राजी हो बाज़ारने अरबाबसे कहा—ऐसा ही सही। तुम मेरे साथ बायके यहाँ चलकर लिखा-पढ़ीका दिन मुकर्रर कर दो। मैं भी गेहूँ ले चक्कीकी तरफ जाऊँ।

अच्छा चलो, चलें—कहकर अरबाब बाज़ारके साथ बायके घर गया।

१६

तूय खुदाका ख़ज़ाना है

याकूब बायने अपने वादेके अनुसार किसी चीज़में उठा नहीं रखा। बैलका चारा-घास, खेतके लिए बीज और दूसरी सभी चीजें दीं।। बाज़ार भी हरेक चीज़को याद रखते रात-दिन लगकर काम करता। सौभाग्यसे इस साल ऋतुने भी बाज़ारकी सहायता की। वक्तपर खूब वर्षा हुई। वक्तपर सूर्यने ज़मीनको गरम किया। इससे फसल आशातीत अच्छी हुई। मेहमाहने भी अपने वचनके अनुसार संयम और सन्तोष किया, "चूल्हेकी बचत हिन्दुस्तानके व्यापारकी पूँजी" कहते हर खर्चमें किफायत की। उसने सिर्फ अपने ही खर्चमें किफायतसे काम न लिया, बल्कि पतिके खेतीके काममें भी मदद दी। इस तरह पहले ही साल खेतीकी आमदनीसे बायके कर्जका आधा चुका दिया। बायने बहुत मुरव्वत दिखलाते बाज़ारसे कहा—बाज़ार बाय! कोई चिन्ता नहीं करो। बायका कर्ज़ा है, यह ख्याल करके फिक्रमें मत पड़ो। जब खुदा दे और घरके खर्चसे अधिक हो, दे देना। मुझे दुनियाकी चीजें पसन्द नहीं। आपसमें दिलजमई और सलामती रहे, बस यही दर्कार है।

अगले साल भी बाज़ारका काम बुरा नहीं रहा। फसल अच्छी हुई

लड़केने भी हलके कामोंमें मदद की। हवा-पानी भी सहायक हुई। संक्षेपमें भाग्य बाज़ारके कामके साथ रहा। बाज़ारने दाँये गेहूँकी रास खलिहानमें जमा की थी। यादगार बैल चरा रहा था। रास्तेसे जाते अरबाब बाजारको देखकर "सब कुशल-मङ्गल तो है?" कहते खलिहानके पास तूतकी छायामें बैठ गया। बाजार भी "सलामत रहें" कहते रस्सी-हँसिया एक ओर रख अरबाबके करीब बैठ गया। अरबाबने कहा—इस साल तुम्हारा काम अच्छा चल रहा है। लड़का भी मदद कर रहा है। अब जल्दी इसके हाथको हलाल (सुन्नत) कर डालो।

—अभी आठ सालका है। जिन्दगी रही तो एक-आध साल बाद यह शुभ कार्य हो जायगा। इस सालकी पैदावारसे चाहता हूँ कि कर्जसे छुटकारा पा जाऊँ और बायका सारा हिसाब बेबाक कर दूँ।

—तूय (कार्य-प्रयोजन) भी कर्ज है। अधिक नहीं तो कम ही सही कुछ तैयारी करके छोटे-बड़ोंके सामने रख देना चाहिये। बायके पास अपना धन है। वह तुम्हारे चार मन गल्ले पर आँख गड़ाये नहीं बैठा है।

—भगवान् उसके धनको बढ़ायें। बायने तो "कुछ नहीं दो तो भी हर्ज नहीं, बीबी-बच्चेको तकलीफ नहीं देना" कहकर मुझे समझाया, तो भी मैं इस साल कर्जसे अपनेको बिल्कुल खलास कर लेना चाहता हूँ; फिर अच्छी अवस्था देखकर पंचोंके सामने हाजिर होना अच्छा होगा। तूय भी कर्ज है, इसमें संदेह नहीं, किन्तु वह सन्तोषका कर्ज है। दो-एक साल देर हो, तो भी हर्ज नहीं। कहते हैं "देर आया दुरुस्त आया।"

—"तूय खुदाका खज़ाना है" तुम आरम्भ करो, खुदा पूरा करेगा। परवाह न करो, इसी साल कमर कस लो। तुम्हारा एक ही बच्चा है। जल्दी इसके हाथको हलालकर पंचोंकी पाँतीमें आ जाओ। खुदा मदद करेगा, तो दो-तीन साल बाद कहींसे जोड़-जाड़कर इसका घर बसा देना

जरूरी है। बेचारी माँ भी अकेली है। बहू पाकर, उसकी भी मुराद पूरी हो जायगी और एककी जगह दो सन्तानों वाली हो जायगी।

—ज़रा सोच समझकर कोई बात तै करनी है।

—हिम्मत दर्कार है हिम्मत। हिम्मत करो तो खुदा बेड़ा पार कर देगा कह—अरबाब अपने काम पर चला गया।

बाजारने रातको यह बात स्त्रीको सुनाई। मेहमाहने अरबाबकी जल्दीकी सलाह पर और भी जोर देते हुए कहा—अरबाब ठीक कहते हैं। आज हम-तुम हैं, कौन जानता है, कल कौन रहेगा कौन नहीं रहेगा। जबतक हमारी आँखें खुलीं हैं, इसी बीच बच्चेका हाथ हलाल कर देना चाहिये।

बाजार इस साल तूय करना बिल्कुल नहीं चाहता था, लेकिन अरबाब और बीबीकी दलीलें सुनकर अपना विचार उसे बदलना पड़ा। वह सोचने लगा—वस्तुतः यदि इसी साल तूय कर डालूँ, तो भार हल्का हो जायेगा। जितनी ही देर करो, उतनी ही लोभ-लालच ज्यादा होती है और काम भी बढ़ जाता है। बाय इस साल कर्जके लिये तगादा नहीं करेगा। अगर तूय करूँगा तो वह कुछ और देनेसे हाथ नहीं खींचेगा।

बाज़ारको सबसे अधिक जो बात रोक रही थी, वह यही थी, कि उसने तूयके लिये किसी जानवरको खिला-पिलाकर मोटा ताजा नहीं किया था। पासमें एक बैल जरूर था, मगर उसीपर उसकी सारी खेती निर्भर थी। बाजार इसी चिन्तामें था, कि याकूब बायसे भेंट हो गई। दुआ-सलाम करनेके बाद उसने तूयके फैसलेपर बाजारको बधाई दी। बाजारने कहा—अगर आप कहते हैं, तो इसी साल कर डालूँ लेकिन मेरे पास कोई जानवर नहीं, जिसे तूयके लिये हलाल करूँ।

—उसके लिये चिन्ता मत करो। मेरे पास एक मोटी-ताजी गाय है, उसीको लाकर कुर्बानी करना। उसकी जगह अपने बैलको लाकर बाँध देना।

यह सुनकर बाजारका दिल काँप उठा। बैलके न होनेपर खेती कैसे होगी। बाय बाजारके भावको बिल्कुल ताड़ गया और तुरंत बात बदलकर बोला—पर्वाह मत करो। जोतनेके वक्त बैलसे अपनी जमीन जोतना, बल्कि उसके साथ मेरे बैलको भी जोड़ लेना ताकि जुताईमें बल पड़े। हाँ, सिर्फ इतना होना चाहिये, कि बैल तुम्हारे दर्वाजेपर बँधा चारा न खाये। यदि हकका ख्याल करना, तो समय-समयपर मेरी जुताईमें भी मदद दे देना।

बायकी इस बातने बाज़ारकी सारी आशंकाओंको दूर कर दिया। उसने अपने दिलमें कहा—मैंने जितना भी शंका-संदेह बायके बारेमें किया, सभी निर्मूल निकले। इस तरहके शुभेच्छु दुनियामें बिरले ही होते हैं। उसके सम्बन्धकी जफरकी बातें भी पोच हैं। जब वह हमपर इतना मेहर्बान है, तो तूय इसी साल करके छुट्टी पा लेनी चाहिये।

१७

पोलावखोरी (भोज)

धनुर्मास (नवम्बर) यानी पतझड़का अंत और शरदका आरम्भ था। ऋतु सुन्दर थी। सूर्य रास्तेको छोड़ अधिक दक्षिणकी ओर, ताजिकिस्तानके पहाड़ोंसे दूर चला गया था, तो भी ऋतुके स्वच्छ और सुखद होनेसे धूपका अच्छा प्रभाव था। कर्क (अक्तूबर) के आरम्भमें चंद रोज कुछ प्रतिकूल वायु चला। बर्फ मिली वर्षा हुई। अब वृक्ष अपने सुनहले पत्तोंको गिरा, नंगे हो, रुईके गाले जैसे धवल हेमन्ती परिधान पहिननेके लिये उद्यत थे। गाँव और खेतोंमें शिशिरका सरस, मोदप्रद समय प्रकट हुआ। लेकिन जिस समय लोग कड़ी सर्दीकी आशा कर रहे थे, उसी समय सूर्यकी किरणें इतनी गर्म हो उठीं, कि सभीको एक अलौकिक आनन्द और अकालिक सुख मालूम होने लगा। अकालिक

सुखकी इस झलकको बाज़ारके परिवारमें भी देखा जा सकता था। घरके अंदर मेहमाह पड़ोसिनों, दयादिनोंके साथ रोटी और खिचड़ी (आश) पकानेमें लगी थी। गाँवकी कदवानू (कथवानू) जो दूसरे रोज भी अपनी खुशीको छिपाये नहीं रह सकती थी, आज तूयके रोज काम बिना हँसी-मजाकके कैसे कर सकती थीं। उसने कहा—जाओ, छोड़ो भी आचेश ! दश थाल आश (खिचड़ी)में इतनेसे माँससे क्या बनेगा ? अभी एक टुकड़ा तेरे मौसाको भी दे आती हूँ, खाकर रातके लिये तैयार हो जायगा।

एक बुढ़ियाने नाराज होकर कहा—अरे ! तेरा मुँह जले ! पचास सालकी हो गई और अब भी यह हवस ?

—अभी मुझे हुआ ही क्या है ? तुम स्वयं सत्तर सालकी हो गई, किन्तु क्या तुम्हारा मन नहीं करता ? सुना नहीं है "बुढ़िया हुई सत्तरी, देखा और गिर पड़ी ?"

केवानीका जवाब सुनकर सभी औरतें कहकहा मारकर हँस पड़ीं।

बाहरी बैठकेको बाजारने सजाया था। फर्श और कालीन बिछे थे। हवेलीके दरवाजेसे कूचातक पानीका छिड़काव किया गया था, जिससे प्रगट था कि आज यहाँ कोई भारी उत्सव और भोज है।

मेहमाहकी प्रसन्नता भले ही सीमाका अतिक्रमण कर रही हो, लेकिन बाजार बहुत चिन्तित था। वह हर घड़ी सौ बार दीवार और छतपर सूर्यके अस्त होनेकी प्रतीक्षा कर रहा था। दीवार और छतपर सूर्यकी किरणें मद्धिम पड़ीं। बाजारकी चिन्ता और बढ़ गई। जब कभी उसकी दृष्टि गोशालापर पड़ती और वहाँ अपने बैलको न पाता, तो अगले सालकी खेतीकी चिन्ता कलेजेमें सुई चुभोने लगती, उसका सारा उत्साह ठंढा पड़ जाता।

सूर्य अस्त हुआ। शाम आई। गौरैयोंने दीवारोंके छिद्रोंमें जाकर बसेरा लिया। बाजारका भी तरद्दुद दूर हुआ, क्योंकि बार-बार जमा किये

कूड़ेके ढेरको खोदकर वह बिखेर देती। बाजारको इसीलिये कई वार झाड़ू लगाना पड़ा था। उसने बैठकेमें चिराग जला दिया। चिरागको लकड़ीकी दीवठपर रखा। फिर दर्वाजेसे बाहर आ राहपर खड़ा हो मेहमानोंकी प्रतीक्षा करने लगा। बहुत देर नहीं हुई, कि मस्जिदकी तरफसे आगे-आगे मुल्ला इमाम (ग्रामपुरोहित), बगलमें याकूब बाय और पीछे-पीछे गाँवके पन्द्रह-सोलह बड़े-बूढ़े आते दिखाई पड़े। जब वे नजदीक आ गये, तो अरबाब (चौधरी) उनसे अलग हो बाजारके पास आकर खड़ा हो गया और मेहमानोंका स्वागत करने लगा। सभी बैठकेके अन्दर पहुँचे। मेहमानोंके जूते ठीकसे रखकर बाजार भी अन्दर आया और पैरहनेकी ओर पातितजानु बैठ गया। मुल्ला इमामने फातिहा पढ़ा। दूसरोंने हाथ उठा "आमीन" कहा। इमामने हाथोंको मुँहपर फेरा, दूसरोंने भी "पग पहुँचै ऊपर न पहुँचै" कहकर अपने हाथोंको मुँहपर फेरा। बाजारने खड़े हो सीनापर हाथ रख "स्वागत" कहा। मेहमानोंने अपने सिरोंको थोड़ा झुकाकर इसका जवाब संकेतमें दिया। संकेतका अर्थ था "सुकाल होवे"।

बाज़ारने घरके भीतरसे दस्तरखान (परोसनेका कपड़ा), रोटी और मिठाई लाकर रखी। गाँवके मुवज्ज़िन यानी सूफ़ीने दस्तरखानको फैला दिया। फिर रोटियाँ ले दो दमुल्लाके सामने और दूसरोंके लिये हर जगह एक-एक रोटी रखी। बाजारके हाथसे मिठाईकी तश्तरी ले दो मुट्ठी दमुल्लाके सामने और दूसरोंके सामने थोड़ी-थोड़ी रखी, बाकी मिठाइयोंको बचा दो रोटियोंपर धर अपनी रूमालपर रख दिया। एक मेहमानने हँसी करते कहा—यदि मेरी बीबी पुत्र जने, तो उसका नाम सूफ़ी रख उसे गाँवका मुवज्ज़िन बनाऊँ।

दूसरे चुप रहे। मुवज्ज़िनने चायनिक (चायभरे बर्तन) को भी जगह-जगह रख हर चायनिकके पास एक-एक प्याला रखा। दमुल्ला इमामने अपने सामनेकी दोनों रोटियाँ दस्तरखानके छोरपर खींचकर

रख दीं, फिर अपनी दाहिनी ओर बैठे याकूब बायके सामनेकी रोटीको टुकड़े-टुकड़ेकर दो-चार टुकड़े बायके सामने रख बाकीको अपने सामने रख लिया।

इमामने "मर्हमत फ़रमाइये" कहकर बायको रोटी खानेके लिये कहा और स्वयं भी एक कौर रोटी दो-तीन टुकड़े मिठाईके साथ मुँहमें डाली। दूसरोंने भी अपने आगेकी रोटियोंको टुकड़े-टुकड़ेकर एक दूसरेको "लीजिये-लीजिये" कह खाना शुरू किया।

याकूब बायने एक प्याला चाय दमुल्ला इमामके सामने बढ़ाते कहा—तकसीर (क्षमा-निधान) ! बुखारा शरीफ़के भोज तो बड़े ही रौनकदार होते होंगे ?

—बुखारा शरीफ़ (काशीधाम)का भला क्या कहना ! वहाँका एक भिश्ती भी अगर भोज करता है, तो आलिमों-फ़ाज़िलों (पंडितों), शेखों (संतों) और बड़ोंको निमंन्त्रितकर बड़े सम्मानके साथ पधरावनी कराता है। विद्या भी बुखारामें है, धर्म (शरीयत)भी बुखारामें है, भोज और उत्सव भी बुखारामें है, ऋद्धि-सिद्धि भी बुखारामें है। हमारे पैगम्बर सल्लल्ला-अलैह-व-सल्लम ने मेराज (स्वर्गदर्शन)की रात बुखाराको देखकर कहा—"अल् बुखारा व मिन्नी" (बुखारा मेरी आन है), इसीलिये दुनियाके अंत तक वहाँ कोई कुपंथ न पैदा हो सदा शरीयत (इस्लाम) मौजूद रहेगी। यह बुखारावालोंका धर्म-प्रेम है, कि वह भोज-उत्सवको इतनी शान-शौकतसे करते हैं। इस्लामकी किताबोंमें लिखा है, कि पिताकी गर्दनपर पुत्रके कुछ ऋण हैं : अव्वल यह कि पिता किताबके अनुसार पुत्रका अच्छा नाम रखे। दोयम् यह कि पुत्र हो तो दो और पुत्री हो तो एक दुम्बा (भेड़) न्यौछावर करे ! सोयम् (तीसरे) यह कि यदि पुत्र हो तो वयस्क होनेसे पहले भोज देकर उसका हाथ हलाल (सुन्नत) करे और पुत्री हो तो कन्यादान करे। तूयको हदीस (स्मृति)की किताबोंमें 'वलिमा' कहा गया है। हमारे पैगम्बर सल्लल्ला-

व-सल्लमने स्वयं अपने नातियोंका 'वलिमा' किया था। इमाम हसन व इमाम हुसैनकी सुन्नतके दिन पैगम्बर-परिवारमें कोई चीज न थी। आँ-हज़रतने खुद अपने जामा और बीबी फ़ातिमाकी ओढ़नीको एक यहूदी बनियेके पास गिरों रखकर 'वलिमा'में खर्च किया। आँ-हज़रतका यह काम बतलाता है, कि तूय करना कितना धर्म और पुण्यका कार्य है। धर्मकी किताबोंमें लिखा है, कि यदि कोई आदमी गरीब निर्धन होते भी आलिमों-फ़ाज़िलोंका सम्मान कर तूय करे, तो खुदावन्द तबारक-व-ताला आगे न्यायके दिन तूयमें खर्च किये हरेक चावलके बदले बहिश्तमें एक-एक महल बख़शेगा, जिसकी दीवारें चाँदीकी, दरवाज़े सोनेके, छत-मेहराब और कंगूरे मोतीके होंगे...

लोगोंने मुल्लाके इस महोपदेशको बार-बार सुन रखा था, इसीलिये वह उस ओर ध्यान न दे अपनी चख-चखमें लगे थे। तो भी वहाँ दो आदमी ऐसे थे, जो मानो पूरा-पूरा कान लगाकर सुन रहे थे। इन दोनोंमें एक था मुवज़्ज़िन जो पैरहनेकी ओर पातितजानु बैठे आँखें-मूँदे ध्यान उधर लगाये मालूम देता था और जब-तब सिरको दाहिने बाएँ झुमाते तन्मयताका भी परिचय दे रहा था। यह देखकर दर्शक समझता कि वह जल बनकर आकाशमें तुरंत उड़ने ही वाला है। यह सब होते हुए भी मुवज़्ज़िन जब-तब होशमें आ आँखोंको खोलकर जहाँ तक उसका हाथ पहुँचता, दस्तरखानपर बिखरे रोटीके टुकड़ों और मिठाई-मेवोंको चुन-चुनकर अपने रूमालमें डालता जाता था। दूसरा व्यक्ति था बाज़ार जिसपर वस्तुतः इमामके उपदेशका भारी प्रभाव पड़ रहा था। वह यद्यपि अरबाबकी दलीलों, बीबीकी बातों और बायके वादोंपर विश्वास करके इस साल तूय कर रहा था, लेकिन परिणामसे भयभीत था। जब तूयके समयके नज़दीक आनेपर देखा कि खर्च भी ज्यादा हो रहा है, इससे उसका भय और भी बढ़ने लगा। थानसे कमाऊ बैलके खुल जाने पर आने वाली बला आँखोंके सामने और स्पष्ट दिखाई देने लगी थी। यही वजह

थी, कि आज सारा दिन उसका दिल विह्वल और विकल था। लेकिन जब दमुल्ला इमामने महोपदेश आरंभकर तूयका माहात्म्य वर्णन किया, तो बाज़ारके मनसे सारी आशंकायें दूर होगईं। उसने अपनेको दुनियाका सबसे अधिक सौभाग्यशाली आदमी और अपनी पहिली शंकाओंको शैतानका बहकावा समझा। अब वह सोचने लगा, कि इसके कारण यद्यपि उसकी आर्थिक अवस्था बुरी होगी, किन्तु साथ ही तूयसे बहुत अधिक पुण्य और सवाब भी मिलेगा। दमुल्ला इमामने इस भावको आयतों, हदीसों और पैगम्बरकी जीवन-घटनाओंसे सिद्ध कर दिया। इसीलिये बाज़ार रोम-रोममें आँख रखते इमामकी तरफ निगाह किये, सिरसे पैरतक कान रखते महोपदेशको सुन रहा था।

आश (मांसमिश्रित खिचड़ी) तैयार हो गया था। घरके भीतरसे किवाड़ पर टक्टक्की आवाज़ आई। इमामके उपदेशामृतको पान करनेमें जो माधुर्य अनुभव हो रहा था, उसे छोड़ बाज़ारको मजबूरन अपनी जगहसे उठना पड़ा। वह घरके अंदर आश लाने गया। एक दो जवान मेहमान भी मदद देने खड़े हो गये।

मुवज्ज़िनने आश और पोलावके थालोंको तीन-तीन मेहमानोंके सामने एक-एक करके रखा। अन्तिम थालको रोटीसे ढाँककर बैठकेके एक कोनेमें रख दिया, यह मुवज्ज़िनका माल था। अब मुवज्ज़िनने पातितजानु हो इमामके थालके पास बैठ आशवाले मांसको खंड-खंड किया और दमुल्लाके आशमें डालनेके लिये बाज़ारसे खासतौरसे एक रोटी माँग ली। रोटीके बड़े टुकड़ेको अपने लिये आश पर रखा।

सब लोग आश-भोजनमें इतने निरत थे, न किसीने साँस खींची न बात की। सारी शक्ति इस काममें खर्च हो रही थी, कि मुँहमें कौर डालें और बिना चबाये निगल जायें, खासकर इमाम और मुवज्ज़िनमें तो मानो इसके लिये होड़ लगी थी। पेट भर खानेपर लोगोंने हाथ खींच लिया, परन्तु मुवज्ज़िन अब भी दस्तरखानपर आशके चावलों और

रोटीके टुकड़ोंको चुननेमें लगा था। पास बैठे एक मेहमानने "सूफी बहुत भूखा है" कहकर अप्रसन्नता प्रकट की। दमुल्लाने मज़ाक करते कहा :—

—हर्ज क्या है ? कोशकी पुस्तकोंमें सूफ़ीको 'दस्तरखानका झाड़ूदार' कहा है और साथ ही धर्मकी किताबोंमें यह बात भी कही गई है, कि दस्तरखानसे चुनकर खाये चावलके दाने और रोटीके टुकड़े बहिश्तकी हूरों (अप्सराओं)के लिये महर (वधू-धन) होते हैं।

मुल्लाकी यह बात सुनकर दूसरोंने भी दस्तरखानसे चुनकर दो-एक दाना चावल मुँहमें डाल बहिश्ती हूरोंके लिये महरकी रकम जमा करनी शुरू की।

भोजन समाप्तकर लोग आरामसे बैठे। खानेके वक्त बाज़ार बैठकेसे बाहर आकर खड़ा हो गया था। अब वह अन्दर आकर पातितजानु (घुटने टेककर) बैठा। इमाम और दूसरोंने दोनों हाथ उठा फातिहा पढ़कर मुँहपर हाथ फेरा। बाज़ारने खड़े हो बड़े सम्मानके साथ "भले पधारे" कहा। मेहमानोंने सिर हिलाकर उत्तर दिया।

दस्तरखान समेट लिया गया। ताज़ी चाय आई। मेहमान चाय पीने लगे। याकूब बायने अरबाबकी ओर निगाह करके कहा—अक़सक्काल (सफेद दाढ़ी) ! कहो, कैसा भोज है ?

—दादार बाजार अपने लड़केका हाथ हलाल कर रहे हैं, बड़े-छोटे सबकी यहाँ दावत करके आप सबसे सलाह पूछते हैं।

बायने कहा—बहुत अच्छा। खुदा मुबारक करे। बाज़ार बायका तूय हमारा तूय है। हम कमर बाँधकर हर काम करनेको तैयार हैं। (बाज़ारकी ओर निगाह करके) तूयको किस तरह करना चाहते हो ?

बाज़ार—जिस तरह छोटे-बड़े पसन्द करें, उसी तरह।

बाय—बहुत खूब ! ऐसा ही हो। हिम्मतको बुलन्द करो। खर्चसे मत डरो। कमीमें मदद करनेको मैं तैयार हूँ। भोजकी खबर जवारमें

भी दे दो। एक देग आश ज्यादा पक जाय, पक जाय, पर इज्जत-आबरू नहीं जानी चाहिये। जवारके लोग जब भोज-भात करते हैं, तो हमको खबर देते हैं। हमारे गाँवमें तूय हो और उन्हें खबर न हो, यह हो नहीं सकता। अंतमें एक बार फिर कहता हूँ, खर्चका ख़याल मत करो। "तूय ख़ुदाका खज़ाना है" वह खुद इसे पूरा करेगा।

नीचेकी तरफ बैठे एक तरुण मेहमानने कहा—चचा बाय! आपने सिर्फ अपनी फिक्र की और हमें भुला दिया। इस साल आक़ा बाज़ारका तूय होगा, यह सोचकर हमने दो महीनेसे एक-एक मन जौ खिलाकर अपने घोड़ोंको तैयार किया है। अगर आक़ा बाज़ारने बकरी न दी, तो सारी मेहनत अकारथ जायेगी।

बाय—इसके कहनेकी जरूरत नहीं। कौन नहीं जानता, कि बिना बकरी और कूबकारी*के तूय नहीं हो सकता। लेकिन तुम्हें भी बाज़ारकी स्थितिका ध्यान रखना चाहिये और केवल एक बछड़े और पाँच बकरियों पर सन्तोष करना चाहिये।

अर्बाब—बाज़ार बायने सारे प्रबन्धका भार मेरे ऊपर छोड़ रखा है। इस वक्त कर्ता-धर्ता मैं और बाय हैं। हमें चार आदमियोंमें सुर्खरू होने लायक काम करना है। बकरी-घुड़दौड़ कहो, गायन सभा कहो, जो भी कहना चाहो कहो। हम सब देशके रवाजके अनुसार करेंगे। बाय आवश्यक चीजोंकी मदद करनेको तैयार हैं। मैं स्वयं हरएक रस्म-रवाजको अच्छी तरह जानता हूँ। बाज़ारको बस कमर बाँधकर मेहमानोंसे "भले आये, भले पधारियो" कहते रहना पर्याप्त है, दूसरी बातकी चिन्ता करना आवश्यक नहीं। (फिर इमामकी ओर देखकर) तक़सीर (क्षमानिधान)! अब एक दुआ पढ़िये, रात बहुत बीत गई।

इमामने दोनों हाथ उठा लम्बी-चौड़ी दुआ पढ़नी शुरू की।

---

*बकरी छीननेकी प्रतिद्वन्द्वितावाली घुड़दौड़।

"आमीन आमीन" कहते मुँहपर हाथ फेर लोग चलनेके लिये हिलने-डोलने लगे। अरबाबने हाथसे इशारा करते हुए कहा—"क्षण भर और विराजें!" बाज़ारने जामा-रखी चार डालियाँ सामने ला रखीं। मुवज्जिनने बाज़ारके इशारे पर हिसारका बना एक नीमशाही जामा इमामको, एक हिसारी रेशमी जामा बायको और एक दूसरा जामा अरबाब (चौधरी)को पहनाया। वहाँ एक कूलाबी रेशमी जामा बच रहा था, जिसे बाज़ारने अपने हाथसे मुवज्जिनको पहनाया। मेहमानोंकी ओरसे "मुबारक हो मुबारक हो"की आवाज़ बुलन्द हुई। इमामने फिर एक बार फातिहा पढ़ा। मेहमान एकके पीछे एक निकलकर प्रस्थान करने लगे। बाज़ारने दरवाजापर खड़े हो हरएकको "भले पधारे" कहकर सम्मानके साथ विदा किया।

रात बहुत अँधेरी थी। इस अँधेरी रातमें बाजार अपनी बीबीके साथ हवेलीमें अभी तूयके प्रारम्भ न होनेपर भी आधा बर्बाद हो, अकेला रह गया।

१८

गलीमें

—हाँ, जफर! कहो, कैसे गलीमें बैठे हो?

दीवारका तकिया लगाये, दोनों पैर फैलाये बायके फाटकपर बैठे जफरने जवाब दिया—मालिक घरमें नहीं हैं। जरा साँस लेनेकी छुट्टी मिली और यहाँ आकर बैठ गया।

—मेरा भी मालिक आज घरमें नहीं है। सारेके सारे आज बाजारकी हवेलीमें गये हुए हैं—कहते कुर्बानने भी ज़फ़रके पास बैठते 'सलामलेकुम्' किया।

अभी उनका कुशल-प्रश्न समाप्त नहीं हुआ था, कि तीसरा चौथा

…आया और कूचेमें एक सभी जम गई। सबसे पीछे आनेवालेने "आज तुम सभी पिंजड़ेसे निकले पंछीकी तरह आकर बैठे हो" कहते मज़ाक किया।

—हाँ, मालिक अरबाबके साथ तैयार हो बाज़ारके घर आग लगाने गया है। आज बस यही काम चल रहा है।

—बाज़ारकी कबसे बुद्धि मारी गई? आज बायके पास, कल अक़सक्क़ालके पास, परसों इमामके पास बस बड़ों-बड़ोंके यहाँ उठक-बैठक करता है।

ज़फ़र—बाजार नादान है। परसाल बायने मुँह मीठाकर धोखा-धड़ीसे उसकी ज़मीनको लिखवा ली थी, लेकिन देखा कि इस तरह बाज़ारकी ज़मीन हाथ नहीं आयेगी, न वह हमारे घर चाकरी करनेको मजबूर होगा। अब चाहता है, काम ही खतम कर दें, और धरती-आकाशसे जड़ काट उसे अपना गुलाम बना लें। मैंने परसाल इस धोखेको बतला आनेवाली आफतसे बाज़ारको सजग किया था, लेकिन मेरी बातकी अपेक्षा उसने अरबाबकी बात मान अपनी ज़मीन गिरो रख दी। इस साल फिर उसीकी सलाहसे तय कर रहा है।

—बेशक, बाज़ार अहमक़ है। वह बाय और अक़सक्क़ालकी दोस्तीका दम भरते उनकी सलाहसे सब काम कर रहा है। किस बायने किस गरीबका तन ढाका है, जो याकूब बाय करेगा। यह बाय हम लोगोंको अपनी सेवाके लिये पैदा हुए जानवर समझते हैं—कुर्बानने कहा।

तीसरा बोल उठा—बिरादर! "पानी कीचड़के ऊपर" मसलके मुताबिक मुल्कके हाकिम भी बाय लोगोंका पक्ष लेते हैं। अगर एक बाय और एक गरीबके बीच जंजाल हो जाये, तो सारे बाय अरबाबको आगे-आगे किये हाकिम और क़ाज़ीके पास जाकर गरीबका घर जलाकर ही साँस लेते हैं। हम गरीब उनके सामने मुँह तक नहीं खोल सकते।

हाकिम भी उनकी ओर, क़ाज़ी भी उनकी ओर, रईस भी उनकी ओर, यहाँ तक कि अमीर भी उन्हींकी ओर है। जब नियाज़शाहने धोखा दे मेरी ज़मीन लिखवाकर अपने हाथमें करली, तो क़ाज़ी-हाकिम-रईस सभीके यहाँ दौड़ा। सबके पास अरज़-गोहार की। सब मुझे मारकर खदेड़ते रहे, लेकिन आज खदेड़ा कल मैं फिर पहुँच गया, फिर दाद-फरियाद की। अन्तमें हाकिमके यसावुल-बाशी (सवार-अफसर)ने कहा "यदि तू पैर न रोक प्रतिदिन यहाँ आकर हाकिमको तंग करता रहा, तो तुझे बंदी बना जेल भेज देंगे"। मैंने समझ लिया कि यह साफ-साफ बायके पक्षपाती हैं। आँखोंके सामने अँधेरा छा गया। फटा जूता पहने पैदल बुखारा मैंने अमीरके पास जाकर अरज लगाई। अमीरने एक मुबारकनामा (आदेश पत्र) दिया। पढ़ाकर सुना। जानते हो, क्या लिखा था?—"क़ारातगिन निवासी अशूर नामक गरीबने दरबारमें आकर अरज लगाई कि नियाज़-शाहने मेरी ज़मीनको जबर्दस्ती छीन लिया और वलायत (सूबा)का हाकिम मेरी सुनवाई नहीं करता, यह कहकर सहायतापत्र माँगा। जाँच करो। यदि यह बात ठीक है तो उसकी ज़मीन दिलवा दो, नहीं तो शरीयत शरीफ (सद्धर्म)के अनुसार जंजालका फैसला करो।"

अशूरने ठंढी साँस लेकर फिर कहना आरम्भ किया—देखो तो सही, मैंने हाकिमसे निराश होकर वहाँ अरज लगाई थी और अब फिर मेरे मामलेको उसीके हवाले किया गया! यदि इस मुबारकनामाको ले जाकर हाकिमको देता, तो जो जानसे न मारता, तो भी मेरी बुरी गत बनाता। मुबारकनामा न देकर मैं गर्म चला गया। वहाँ भी अधिकारीने "तूने विलायतके हाकिमके विरुद्ध शिकायत की" कहकर दण्ड देना चाहा, इसलिये वतन छोड़कर यहाँ भाग आया। देखते ही हो, लोगोंके ढोर चराकर जिन्दगी बिता रहा हूँ।

—सब जानते हैं—जफ़रने कहा—अमीर भी बायोंकी तरफ है। ऐसी स्थितिमें हम गरीबोंके लिये क्या रास्ता है? हमारी रोजी-ज़मीनको

जाल-फरेबसे इन बायोंने अपने हाथमें कर लिया। कोई नहीं जो इनके फंदे में न पड़ा हो। यदि बाज़ारको बुद्धि होती, तो इन धोखेबाज़ोंको अपने घरमें जमाकर उनकी सलाह न लेता। कब देखा कि भेड़ियेने भेड़को, लोमड़ीने मुर्गेको, बिल्लीने चूहेको अच्छी सलाह दी है। बाज़ार पहले एक अच्छा खाता-पीता किसान था। अब बायकी 'कृपा'से दर-दरका भिखारी बननेको है। अगर उसके पास अकल होती, तो हम तुम जैसे गरीबोंसे सलाह लेता। कहावत है :—

"सजातीय उड़ता सजातीयके साथ
कबूतर कबूतरके साथ, बाज़ बाज़के साथ"

दूसरेने कहा—ज़फ़र! तू बहुत सीधा है। जबतक बाज़ारके हाथमें कुछ भी चीज़ है, तबतक समझाकर दबाकर उससे तूय करायेंगे, भोज करायेंगे, हर काम करायेंगे और उसकी धन-दौलतको फुँकवाकर उसे हमारे-तुम्हारे जैसा भुक्खड़ बना अपने दरवाजे पर ला बैठायेंगे। यदि बाज़ार उनकी बात माननेसे इन्कार करे, तो उसके ऊपर मुक़द्दमाकर काजीखाना (न्यायालय) तक उसे घसीटेंगे, गाँवसे निकाल भगायेंगे। जब मुल्कका हाकिम भी उनकी तरफ हो, तो हम गरीबोंको क्या आशा? इसलिये "आज बीता, कलके लिये खुदा बादशाह" कहते अपना रास्ता लेना चाहिये।

कुर्बानने कहा—इन बेगोंको जो हम देखते हैं, उनमेंसे कोई बापकी कब्रसे धन-दौलत लेके नहीं आया है। हरएकने धोखा-फरेबसे हम जैसे गरीबोंकी जमीन-असबाब, बैल-गायको अपने हाथमें किया। हमें मुँहताज बना, हमसे काम करवा उन्होंने अपने लिये धन जमा किया। यदि अच्छी तरह देखा जाय, तो मालूम होगा कि उनकी सारी माल-मिल्कियत हमसे और हमारी मिहनतसे पैदा हुई है। अन्तर है तो यही, कि हम बहुत नादान हैं और वह बहुत चतुर, हम ज्यादा सीधे-सादे और वह

ज्यादा धोखेबाज। इसलिये हमारे भोलेपन और हमारी निर्बलतासे लाभ उठा, हमारी सारी चीजोंपर हाथ साफकर, हमें बेज़बान जानवर बना मालिक बन बैठे हैं। अगर हम उनके विरोधमें कुछ कर नहीं सकते, तो कमसे कम उन्हें सलाहकार बना हमें भलाईकी उम्मीद तो नहीं करनी चाहिये। बाजारकी भूल यह है, कि वह उनसे भलाईकी उम्मीद रखता है, उन्हें हितेच्छु समझता है। उसने क्यों नहीं एक बार हमसे तुमसे सलाह ली? ज़फ़रका कहना ठीक है, "कबूतर कबूतरके साथ और बाज बाजके साथ।"

इसी समय ज़फ़रने दूरसे आदमियोंके झुंडकी छाया अपनी ओर आती देखकर कहा—कबूतरो! भागो बाज़ आ रहे हैं।

दूसरोंने भी उस ओर निगाह करके देखा, कि बड़े लोग बाजारकी हवेलीकी तरफसे आ रहे हैं। सभी खड़े हो अपने बसेरोंकी तरफ भागे।

१६

शरई दस्तावेज़

तूय खतम हो गया। लेकिन उसकी समाप्तिके साथ बाज़ारके घरमें शोक और मुसीबत छा गई। याकूब बाय और अरबाबने सारा प्रबन्ध अपने हाथमें ले इतना खर्च किया, जिसका ख्याल भी बाज़ारके दिमागमें नहीं आ सकता था। बायके घरसे लेकर जो चीजें खरचकी गईं और उनका जो दाम लगाया गया, उसने खर्चको और ज्यादा कर दिया। अभी भोजके देगों (हंडो)को न साफ किया गया था, न आँगनमें खोदे चूल्हों को ही मूँदा गया था, कि बायने हिसाब करनेकी बात शुरू करदी। हिसाब करनेसे मालूम हुआ कि घरकी चीजों और जानवरोंके अतिरिक्त बायसे पाँच सौ तंका लेकर खर्च हो गया है। बायने बाज़ारसे कहा:—

—दादार ! जैसे भी हुआ, तुम्हारे यज्ञको निर्विघ्न पूरा कर दिया। मेरे पाससे लेकर इतना तंका खर्च हो गया, तो कोई हर्ज नहीं ? पैसा कोई चीज़ नहीं। संसार असार है। जिन्दगी बनी रहनी चाहिये। लेकिन जिन्दगी और तन्दुरुस्ती आदमीके हाथकी चीज़ नहीं। मोमिन (मुसल्मान)को सदा मरनेके लिये तैयार रहना चाहिये। मृत्यु आदमीके गर्दनकी नाड़ीसे भी अधिक समीप है। उन्हीं मनहूस दिनोंके लिये आदमीको चाहिए, कि अपने कामोंको शरीयत (धर्म)के अनुकूल करे। परसाल तुम्हारे ऊपर मेरा ढाई सौ तंका कर्ज़ था। भोजके खयालसे वादा किये पहलेके ढाई सौ तंकोंको भी तुमने बेबाक नहीं किया। सूदको खैर, मैं यज्ञके लिये छोड़ देता हूँ। पहलेका कर्जा पाँच सौ तंका हुआ था, अब नया मिलकर सब एक हज़ार हुआ। यह रकम बहुत ज्यादा है, इसके लिये अपनी जमीनकी लिखा-पढ़ी कर दो। तुमको खुद मालूम है, मैं एक व्यापारी आदमी हूँ। कर्ज-कबाला मामला-मुकदमा करना मेरा काम है। इतनी भारी रकमको जमीनके गिरो रखने पर भी नहीं छोड़ा जा सकता, क्योंकि जमीनकी आय भाग्यके आधीन है। शायद तुम समझो, कि मैं तुमसे एक निश्चित रकम सूदके तौर पर लेना चाहता हूँ, बिल्कुल नहीं। मैं सूदखोर नहीं हूँ। सूद हराम है, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। तुम बेचारा और गरीब हो, यह भी मैं अच्छी तरह समझता हूँ; इसलिये मैं तुमसे इस रकमको दूसरे सूदखोरोंकी तरह अधिक सूद लेनेके लिये नहीं रखना चाहता। हर महीने सिर्फ एक-एक तिल्ला*पर आधा तंका अर्थात् सौ तंके पर ढाई तंका, यानी इस हजार तंका पर पचीस तंका दे दिया करना, और बस। सूदखोरीके पापसे बचनेके लिये जमीनका शरीयतके अनुसार बैनामा लिख देना जरूरी है।

---

*बुखाराका "तिल्ला" (सोनेका सिक्का) चाँदीके बीस तंकोंका होता था।

फिर प्रतिमास पचीस तंकाका ठीका मैं मान लूगा। इतना तंका कहाँ से आयेगा, इसके लिये डरनेकी जरूरत नहीं, चाहो तो अपनी जमीनमें काम करके दे सकते हो। यदि यह नहीं तो मेरे घरमें काम करो। तुम्हारी जमीनको मैं बेकार नहीं रहने दूँगा। उससे भी चीज़ पैदा की जा सकती है।

बायकी इस निष्ठुर बातको सुनकर बाजार मानो स्वप्नसे जाग उठा, उसका नशा उतर गया। उसने देखा कि बायकी सारी सहानुभूति और अरबाबका तूय (यज्ञ) करनेपर जोर किस बातके लिये था। आँखें खुलीं, लेकिन उसके लिये धरती और आकाशमें सिर्फ अँधेरा ही अँधेरा दिखलाई देता था। बहुत सोचा, किन्तु इस फन्देसे निकलनेका कोई उपाय नहीं सूझ पड़ा। उसने सिर्फ इतना ही कहा :

—आपने कहा था कि अपना तूय करो, जो कुछ मेरे पास है, उससे तुम्हारी मदद करूँगा। क्या आपकी वह मदद यही थी, कि मेरे पास पैर रखनेके लिये जो थोड़ा-सा जमीनका टुकड़ा था, उसे भी छीनकर मुझे गुलामी करनेको मजबूर कर रहे हो ?

अरबाबने बीचमें दखल देते हुए कहा—बाज़ार ! तुम बच्चोंकी-सी बात करते हो। तुमने कहाँ देखा है, कि दूसरेके बच्चेकी यज्ञके लिये कोई हज़ार तंका लुटा दे या इतनी भारी रकमको बिना लिखा-पढ़ी और बेसूद ही रख छोड़े। बायकी मदद यही थी, कि तुम्हें किसी सूदखोरेके दरवाजे पर जाना नहीं पड़ा, घरकी तरह बायके यहाँसे ला-लाकर खर्च किया, यज्ञ किया, त्योहार किया। आदमीके साथ आदमीकी मदद बस इतनी ही होती है। अगर तुमने सोच रखा है, कि बाय अपना हजार तङ्का तुम्हारे यज्ञमें दान दे देगा, तो यह तुम्हारी बड़ी भूल है। दुनियामें कभी ऐसा नहीं होता।

बाज़ार—मैंने नहीं कहा कि बाय इतना तङ्का मुझे दान दे दें, लेकिन प्रतिमास पचीस तङ्का याने सालमें तीन सौ तङ्का सूद अन्याय है।

बायने "अन्याय"का शब्द सुन आगबबूला होकर कहा—कसूर खुद मेरा है। सृष्टिसे लेकर आजतक, बाबा आदमसे लेकर हातिम तक नेकीके बदले बदी, उपकारके बदले अपकार ही होता आया है। यह सब जानते हुए भी मैं तुम्हारे साथ नेकी करनेको तैयार हुआ। फिर तुम्हारी ओरसे "अन्यायी"की पदवी मिलना बहुत कम है। अच्छा आओ, अब तुम्हारे साथ न्याय करें। पाँच सौ तङ्का जो तुम्हारे यज्ञमें खर्च हुआ, उसे लाकर मुझे इस वक्त दे दो। पुराने कर्जेको मैं एक साल तक और बिना सूदके रहने दूँगा।

लेकिन बाजार उस वक्त पाँच सौ तङ्का तो क्या पाँच सौ पैसा भी नहीं दे सकता था। मजबूर हो बाजारने शिर खुजलाते-खुजलाते बायकी शर्तोंको कबूल किया। दूसरे दिन नायब क़ाजीको बुलाकर दस्तावेज लिखवाया गया :

> तारीख माह सफ़र सन् १३१८ हिजरी। बाजार बाय—मझोला कद, काली दाढ़ी, गेहुँआ रंग, कंजी आँख—वल्द एवज मुरादने कूलाब विलायतके काजीखानामें आकर शरीयतके अनुसार सही और विश्वसनीय करार किया, कि मन्मुकिरने याकूब बाय वल्द यूनूस बायके हाथमें अपनी सारी दस तनाब (एकड़) जमीन मिल्कियतको शरीयतके अनुसार बै किया। यह जमीन मेरी निजी और मौजा कन्कुर्त विलायत (जिला) कूलाबमें अवस्थित है। उक्त जमीनके उत्तर, पच्छिम और पूरब आम-रास्ता और दक्खिणमें कूल-नजर है। बुखारा शरीफ़के ढले मुबलिग एक हज़ार तङ्का पर उक्त सीमा द्वारा सीमित भूमिको उपरोक्त महाजनके हाथ बेंचकर फिर महाजनको हर चान्द्रमासकी पूर्णमासीको पचीस तङ्का देनेकी शर्तपर उक्त ज़मीनको ठीका लिया। अगर ठीकाकी रकमको वादाके मुताबिक न दे सका, तो बिना हीला-हुज्जत, बिना शर्त महाजनकी

चाकरी करूँगा। यह दस्तावेज मुसलमानोंके सामने लिख दिया।

दस्तखत—मुल्ला महम्मद सलीम, अरबाब रोज़ी अब्दुलक़यूम ......।

दस्तावेज लिख जानेके बाद नायब क़ाज़ीने पूछा—बाज़ार बाय!

—लब्बैक (जी सरकार)।

—क्या अपनी दस तनाब जमीन याकूब बायके हाथों एक हज़ार तङ्कामें शरीयतके अनुसार तुमने बेंचा?

—बेंचा।

—कीमत पाई?

—पाई।

—उसी जमीनको पचीस तङ्का माहवार पर ठीका लिया?

—लिया।

—यदि ठीकेकी रकमको प्रतिमास न दे सके तो बायकी चाकरी करोगे?

—हाँ!

इस तरह इन्हीं सवाल-जवाबोंमें बाज़ारके पास जो कुछ था, सब हाथसे निकल गया, वह जड़-मूल कटवाकर बायका गुलाम बन गया। अब बायकी मीठी-मीठी बातें भी खतम हो चुकी थीं और अरबाबका बिचवईपन भी। लेकिन अब भी बायकी दया-दृष्टिसे बाज़ारकी आशाएँ नहीं खतम हुई थीं, इसलिये जब वसन्तमें खेत बोनेका समय आया, तो उसने बायके घर जाकर यज्ञके पहिलेके वादोंका स्मरण दिला खेत जोतनेके लिये बैल माँगा। बायने त्योरी बदलकर कहा—मेरे पास बैल बेकारका नहीं है। यदि अपनी जमीनको जोतकर वसन्तकी फसलके लिये तैयार नहीं कर सकते, तो चाहे मेरे कर्जका सूद दो, या उसके बदलेमें मेरी चाकरी करो।

—अगर ऐसा है तो मैं कैसे खेती करूँगा ! ठीका और अपने पेटके लिये भी पैसा कहाँसे लाऊँगा ?

—तुम खुद सोचो, यह तुम्हारा काम है।

—मेरे ऊपर दया कीजिये बाय !

—तुम अभागे हो। तुम्हारी मदद करनेसे कोई फायदा नहीं, अगर तुम भाग्यवान् होते, तो इन चन्द सालोंमें, जब कि मैं तुम्हारी सहायता करता था, तुम्हारा घर अशर्फियोंसे भर गया होता; लेकिन अवस्था यह है, कि मैंने जितनी ही तुम्हारी मदद की, उतने ही तुम गिरते गये। अच्छा यही है कि भगवान्‌के काममें हाथ न डालकर तुम्हें भाग्यके हाथोंमें छोड़ दूँ।

२०

जलावतन

हूत (मार्च)का महीना था। सर्दी अब भी बहुत अधिक थी। पंचांगके अनुसार यद्यपि सर्दी समाप्त हो चुकी थी, किन्तु अभी उसका अखण्ड राज्य था। सर्दी ज़ालिम हकूमतकी तरह हार और भागनेके समय भी सारी चीजोंको पामाल कर रही थी। हाँ, उस साल मार्चकी सर्दी बर्फकी अत्याचारी सफेद-सेना थी, जो क्रान्तिके वसन्तके आगमनसे पलायमान हुई, लेकिन जिस तरह दोतोफ़ और कोलचककी सफेद-सेना सिबेरियासे और देनिकिन तथा व्रंगलकी दक्षिणी रूसके केन्द्रसे पाशविकता और सर्वनाश मचाकर भगी।

दाहिने बायेंसे हवा सर-सर बह रही थी। बादल बड़ी तेजीसे दक्षिणसे उत्तरकी तरफ़ दौड़ रहे थे। बरफ़मिश्रित वर्षा हो रही थी। जोरकी बाढ़ोंने नहरोंके रास्तोंको तोड़ दिया, वृक्ष जड़से उखड़ गये, दीवारें पट

हो गयीं, पहाड़के पत्थर अपनी जगहोंसे धसके, मकानोंके कोठे जमीनपर आ पड़े।

इस तूफ़ानसे गिरे घरोंमें एक घर बाजारका भी था। बाजार, मेहमाह और यादगारके साथ बैठकेके कोनेमें ठिठुरते भविष्य पर सोच रहा था। धूप और पानीसे बचानेवाला मकान पस्त हो गया था, आखिरी पोशाक भी चिथड़ी-चिथड़ी हो गई थी। घड़ा, प्याला और थाल टूटकर मिट्टीमें मिल गये थे। बाजारने पत्नीकी ओर निगाह करके कहा—नहीं नहीं, चलो चलें। इस जवारमें जिन्दगी काटना सम्भव नहीं।

मेहमाह—कहाँ चलें, किस आशाको लेकर चलें ?

—जहाँ कहीं भी भाग्य ले चले वहाँ चलें, जहाँ कहीं भी दाना-पानी खींचे वहाँ चलें।

मेहमाह—भूखे रहें, प्यासे रहें, नंगे रहें ! चाहे जो भी शिरपर आये, अपना वतन, अपना वतन है। इस विपदामें पैदल कहाँ भागेंगे ! न जाने किस पहाड़के सामने किस दीवारके नीचे परदेशमें मरेंगे। सन्तोष करना भगवानको धन्यवाद देना ही ठीक है, जिसमें इनसे भी बुरे दिनोंको न देखना पड़े।

—इस अवस्थामें सन्तोष नहीं किया जा सकता। किस बातके लिये भगवानको धन्यवाद दें ? बैलकी जोड़ी गयी, जमीन गयी, खेती और जिन्दगीके साधन गये, बसेरा भी आज उजड़ गया। (बैठकेकी छतके छिद्रकी ओर इशारा करके) यह हाल इसका है, यह हमारा अन्तिम शरण-स्थान है, जो आज या कल जानेवाला है। फिर किस आशा-भरोसा पर इस दयारमें रहें। नहीं, नहीं हो सकता। चलो चलें।

बाजारके लिये ऐसी निराशा ऐसी हसरत होनी उचित थी। बायने अर्बाबके द्वारा कहलवाया था—अब बाजारको इस जमीनपर पग नहीं रखना होगा। अगर खेती करना है, तो मेरे दूसरे खेतोंमेंसे लेकर करे। चाहे बटाईके तौरपर या चाकरके तौरपर काम करे। मैं मुल्कके रवाजके

मुताबिक मजूरी दूँगा, लेकिन उसकी अपनी जमीनको बटाईके तौरपर भी उसके हाथमें देना ठीक नहीं समझता। नहीं तो शायद एक न एक दिन वह "जलियादी" (मौरूसी)का दावा कर बैठे। अगर मेरी जिन्दगीमें नहीं तो मेरे न रहनेपर मेरे लड़कोंको जमीन सुपुर्द न करेगा। इसलिये इस जमीनसे उसका पैर उखाड़ देना जरूरी है। पतझड़के बोये गेहूँ और जौको ठीकेके हिसाबमें ले लेना है।

बाज़ारने बायके फैसलेको सुनकर देश छोड़नेका पक्का इरादा कर लिया, क्योंकि अगर वह ऐसा न करता तो बालबच्चे सहित भूखे-प्यासे गुलामकी तरह याकूब बायकी चाकरी करनी पड़ती।

जब-जब वह कामके लिये अपने खेतों पर जाता, विशेषकर जब वह उस टुकड़ेको देखता, जहाँ कई सालोंकी मेहनतसे उसने चारबाग (मेवोंका बाग) लगाया था, तो हसरतसे उसका हृदय फटने लगता और आँखोंसे खून टपकता। अब अच्छा यही था, कि इस दयारसे निकल जाये। अगर काम करना ही है, तो ऐसे आदमीका करे, जिसने उसपर इतने जुल्म न ढाये हों, अगर मरना ही है, तो ऐसी जगह मरे, जहाँ दुश्मनोंकी गाली और दोस्तोंका ताना सुननेको न मिले।

हाँ हाँ! कौन मुर्गा है जो अपने सीनेको फाड़नेवाली लोमड़ी की खिदमत करेगा? कौन दुम्बा है जो पकड़कर अपनी दुमको चीरनेवाले भेड़ियेकी पूजा करेगा? यही वजह थी, कि वह कई दिनोंसे चलनेके लिये अपनी बीबीसे कहा-सुनी और लड़ाई-झगड़ा कर रहा था। बीबीके अपनी बात न माननेपर हिम्मत न हार वह कुछ समय चुप रहता, बादमें फिर उसी सवालको छेड़ देता। आज जब कि उसका घर भी गिर गया और वह अशरण हो गया था, उसने फिर इस सवालको और ज़ोरके साथ सामने रक्खा और अन्तमें लाचार हो बीबीको उसे कबूल करना पड़ा।

२१

मेहमानी

वर्षा बहुत हो रही थी। रास्तेमें कीचड़ थी और मौसिम सर्द। दिन चलते-चलते गुजरा। शाम होने वाली थी। एक आठ-साला बच्चा रास्तेमें चल रहा था। वह हर कदमको तीन-चार बार आगे रख, फिर पहली जगह आ पीछेकी तरफ देख लेता।

मालूम होता था, बच्चेने बहुत सर्दी खाई है, वह अपनेको गरम करनेके लिये तेज चलना चाहता है। लेकिन बार-बार पीछे ताकनेसे साफ था, कि वह किसी की प्रतीक्षामें है। हाँ, वहाँ पीछे एक चालीस-साला मर्द पीठपर एक पैंतीस-साला स्त्रीको उठाये चल रहा था। राहकी थकावट और बोझके भारीपनसे मर्द अपने कदमको बहुत धीरे-धीरे उठा रहा था। वह हर कदमपर इधर-उधर निगाह डालता कि कहीं पड़ाव मिले और वह वहाँ विश्राम करे; या कोई आदमी मिले, जो इस विपदामें उसके साथ सहृदयता दिखलावे।

मर्दको अधिक देर प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। एक मुसाफिर आ पहुँचा। उसे देखकर मर्दकी मुर्झाई आँखें दीपक-सी जगमगा उठीं। मर्दके कुछ कहनेसे पहले ही मुसाफिरने पास आकर उससे पूछा—कहाँसे आये?

—कुलाबकी तरफसे। तीन दिन हुआ रास्ता भूल गया, नहीं जानता कहाँ जा रहा हूँ। अगर हो सके तो पड़ाव (मंजिल) तक मेरा पथ-प्रदर्शन कीजिये, जिसमें वहाँ आराम लें और शायद बीमारकी भी अवस्था सुधर जाये।

—यहाँ पासमें एक दर्रा है, जहाँ चरवाहोंके कितने ही खानदान रहते हैं, वे बड़े अतिथि-सेवी हैं। मैं भी वहीं जा रहा हूँ। यदि चाहो तो तुम भी मेरे साथ आ सकते हो।

मर्द थकावट और कमजोरीसे गिरने-गिरने वाला था। पड़ाव और अतिथि-सेविताकी बात सुनकर उसकी हिम्मत बढ़ी और "आओ चलें" कहकर साथ हो लिया।

मुसाफिर आगे-आगे और बीमार औरतको पीठपर लिये मर्द पीछे-पीछे चला। अनजान आदमीको देखकर बच्चा मर्दके पीछे छिप गया था, अब उसने पूछा—अता! हम कहाँ चल रहे हैं?

मुसाफिरकी ओर इशारा करते बापने जवाब दिया—तेरे चचाके घर चल रहे हैं, वहाँ मेहमान रहेंगे, वहाँ रोटी है।

—वहाँ रोटी है?

—हाँ।

बच्चा खुश हो कभी आगे-आगे कभी पीछे-पीछे चलता। चक्कर काटते पर्वतके किनारे वह दर्राके मुँहपर पहुँचे। देखा, वहाँ दस-बारह अदमियोंको हाथपैर बाँधकर लिटा रखा है। उन बंदियोंके सामने पैर बँधे कुछ घोड़े और गधे भी थे। दूसरी ओर तीसके करीब हट्टेकट्टे हथियारबंद आदमी बैठे हुक्का पीते चख-चख कर रहे थे। उनकी शकल-सूरत देखनेसे मालूम होता था, कि उनमें कोई किर्गिज़, कोई ताजिक और कोई अफगान (पठान) हैं। उनके पास तीन पत्थरोंके ऊपर एक बड़ा देग रखा था, जिसके नीचे आग जल रही थी और अंदर मांस पक रहा था। दूसरी ओर कितने ही भरे बोरे रखे थे। पासमें कुछ मोटे-ताजे घोड़े जौ खा रहे थे।

मुसाफिरने अपने "मेहमानों"को हाथ-पैर बँधे मर्दोंके पास लाकर बंदियोंकी ओर इशारा करते हुक्म दिया—यह मेहमानखाना है। यह लोग भी तुम्हारी तरह आज रात यहाँ मेहमान हैं। अपने भारको जमीन-पर रखो, और अपने हाथोंको यहाँ लाओ।

मर्दने स्त्रीको जमीनपर रख हाथोंको बढ़ा दिया। साथ आये मुसाफिरने उसके हाथों-पैरोंको बाँधकर दूसरे "मेहमानों"के पास लिटा

दिया। बच्चा अपने हाथोंके बाँधते वक्त ज़ोर-ज़ोरसे रोने लगा। आदमीने उसकी कनपटी पर एक चपत जड़कर कहा "चुप रह"। बच्चा चुप हो गया, किंतु नहीं मालूम डरसे या चोटसे। इसके बाद आदमीने चाहा कि बीमार स्त्रीके हाथको भी बाँध दे। उस समय एक काले रंगके २५-२६ साला जवानने आकर आज्ञा दी—इस मुर्देका हाथ बाँधनेकी जरूरत नहीं, रस्सीको खराब न कर, इसका फिर काम होगा।

—यह क्या बात है, कौन लोग हैं, हमारे साथ क्या करना चाहते हैं?—कह नये बंदीने अपने नजदीक पड़े दूसरे बंदीसे पूछा। उस बंदीने पैरकी तरफ़से थोड़ा खिसककर शिरको हिलाते हुए 'यहाँ बातचीत करना खतरनाक है' जैसे इशारा किया।

रात आई। शस्त्रधारियोंने मांस-शोरबा खाया, बाकी मांसको दस्तरखान (चादर)में लपेट खुर्जीमें डाल बोरोंके पास रख दिया। फिर दोको बंदियों-पर और एकको मालपर पहरा देनेके लिये छोड़ बाकीने पहिले रूमालसे अपने-अपने सिर और दाढ़ीको मज्बूतीसे बाँधा, जिसमें कि देखनेवाला सिर्फ़ आँखोंको ही देख सके; फिर वह घोड़ोंपर चारजामा कसकर सवार हो थोड़ी देरमें आँखोंसे ओझल हो गये।

मेहमानोंमें बीमार औरत बच्चेको छोड़ सारेही ऐसे चुप थे, मानो उनके मुँह भी बँधे हुए थे। कोई दमतक न लेता था। पहरेदारने बच्चेके रोनेसे तंग आकर एक टुकड़ा रोटी निकालकर बच्चेके मुँहके पास रख दिया और यह कहकर धमकाया—यदि फिर रोया तो तेरे कान काट लूँगा।

बच्चेने रोटी खाना सीखनेवाले बिल्लीके बच्चेकी तरह रोटीके टुकड़ेको मुँहसे घसीट-घसीटकर खाया, भूखसे कुछ शाँति मिली, फिर उसे नींदने आ घेरा।

× × ×

बादलोंके बीच जहाँ-तहाँ दिखलाई देते तारोंसे जान पड़ा कि यह

फटने वाली है। एक पहरेदारने एक बार आकाश फिर मार्गकी ओर देखकर शंकित-हृदय हो दूसरे पहरेवालेसे पूछा—उनके ऊपर कोई आफत तो नहीं आई ? क्यों वह अब तक नहीं लौटे ?

—क्या आफत आयेगी ? हाकिम आज हिसारमें नहीं है, वह दोशांबे गया हुआ है।

पहिले पहरेवालेको इससे कुछ तसल्ली हुई और उसने फिर कहा—मुझे हाकिमसे डर नहीं है। हाकिम कभी भी चोरको चोरी करते समय नहीं पकड़ते। जब चोर मालको अपना बना चुकते हैं, तो संभव हुआ तो गिरफ्तार करते है, जिसमें चोरीके मालको हथियायें। मुझे डर शहरके लोगोंका है। यदि खबर पाकर सब उनके ऊपर टूट पड़े, तो सबको नहीं तो कुछ को शायद पकड़ सकें। ऐसी अवस्थामें हाकिमके आदमी भी चोरोंके पकड़नेमें उपेक्षा नहीं कर सकते।

—शहरके निहत्थे लोग बन्दूकके सामने क्या कर सकते हैं, बताओ तो सही ? खासकर हमारा सर्दार बहुत जबर्दस्त है। वह हर तरहकी आफत और संकटसे अपने साथियोंको निकाल ला सकता है।

पहरेवाला अभी अपनी बातको समाप्त भी न कर पाया था, कि उसकी बात सच होती दीख पड़ी, और दस मिनटमें सारे सवार आकर जमा हो गये, उनमेंसे हरएकके पास भार था।

काले रंगके जवानने ढेरकिये बोरोंकी ओर संकेत करके कहा—इन्हें अपने घोड़ोंपर लादो।

घोड़ोंके पैरों को खोल उनकी पीठपर माल लादकर वह खुद उनपर सवार हुए, और बाकी घोड़ोंको उन्होंने कोतल ले लिया। काले जवानने बंदियोंकी ओर निगाह करके उनसे पूछा—"मुझे पहिचाना या नहीं ?" "नहीं, नहीं पहिचाना" कहकर बंदियोंने जवाब दिया।

जवानने नीचे खड़े अपने साथीसे कहा—"तू यहाँ ठहर, जब हम कोतल (ओत) पार हो जायें, तो बच्चेका हाथ खोल देना और

जल्दी-जल्दी हमारे पास दौड़ आना"। जवानने यह कह घोड़ेको एड़ लगाई, दूसरे सवार भी उसके पीछे दौड़े।

उनके दूर निकल जानेपर पीछे छोड़े आदमी बच्चेका हाथ खोल "तू दूसरोंके हाथोंको खोल देना" कह घोड़ेपर चढ़कर चल दिया।

कुछ देरमें बंदियोंके हाथ खुल गये। उनके मुँहका ताला भी टूट गया। एकने दूसरेसे पूछा—तुमने पहिचाना?

—क्यों नहीं पहिचाना, वह काला जवान इनका सर्दार चक्कबे तूक़साबा लक्केका लड़का इब्रहीम गल्लू है, जो कितने ही डाकुओंको जमा करके लूटमार करता है। वह ज़वान जो हमारे सामने बैठा था और जिसने बच्चेका हाथ खोला, उसका नाम अब्दुलख़ालिक़ है। वह बड़ा ज़ालिम और इब्राहीम गल्लूका दाहिना हाथ है। जान पड़ता है, आज रात इन्होंने हिसार नगरको लूटा और कितनोंको भिखारी बनाया। यद्यपि ये लोग हाकिम और उसके अमलोंसे मिलकर डकैती करते हैं, किंतु हाथमें पड़ जानेका इन्हें भय भी रहता है।

दूसरे बंदीने कहा—तुम जब सबको पहिचानते थे, तो सर्दारके पूछनेपर उसे क्यों नहीं बतलाया?

—तुम बहुत भोले जान पड़ते हो। यदि मैं कहता कि मैं पहिचानता हूँ, तो वह मुझे उसी वक्त मार डालता। डाकुओंका नियम है, यदि उन्हें संदेह होता है कि दूसरा उन्हें पहिचानता है, तो उसी वक्त उसे मार डालते हैं, जिसमें उनका भेद न खुले।

२२

परदेस, कलेस

सरेजूयकी एक मस्जिदमें बामदाद (अतिप्रातः)की नमाज पढ़कर लोग बाहर निकलनेवाले थे, कि मुवज़्ज़िन (अज़ान पुकारनेवाले)ने आवाज़ दी:

—भाइयो! कूलाबसे आये मुसाफिरकी बीवी—जो कितने ही दिनोंसे मस्जिदके ताबूत खानेमें पड़ी हुई थी—आज रातको खुदाकी बंदगी बजाने दूसरे लोकको चली गई। जमातको उसे दफनानेके लिये थोड़ा-थोड़ा चँदा देना चाहिये। हरएकको खुदाके रास्तेमें थोड़ा-थोड़ा देकर पुण्य-लाभ करना चाहिये।

रातको जब मुसाफिर—औरत मरी, तो उसके पतिने रोते-राते इसकी सूचना मस्जिदके मुवज्ज़िनको दी। मुवज्ज़िनने यह बात मुहल्लेके बाय तथा मुखिया अज़ीमशाहसे कही, और मुर्दाके दफनानेके बारेमें पूछा।

अज़ीमशाहने जवाब दिया—यद्यपि मुर्देके दफन-कफनका खर्च मेरे लिये कोई मुश्किल नहीं है, लेकिन लोग पुण्यसे वंचित न हों, इसलिये यह काम जमातको सपुर्द करना अच्छा है। अतएव बामदादकी नमाज़के बाद इस बातको लोगोंसे कह खुदाके नामपर थोड़ा देनेके लिये कह, तूभी इसमें प्रेरक बन पुण्यका भागी बन। जो कमी होगी वह मैं पूरा कर दूँगा।

यह वजह थी, जिससे मुवज्ज़िनने जमातको सूचित किया। लोग मस्जिदके दर्वाजेपर जमा हो, "खुदाके पैसेको किसके हाथमें दें" कहकर मुवज्ज़िनसे पूछने लगे। मुवज्ज़िनने अजीमशाहकी ओर इशारा किया। लोगोंमेंसे एकने कहा—क्यों न अक़सक्काल को देवें?

अक़सक्काल (चौधरी) यद्यपि इस सेवाके लिये दूसरोंसे अधिक हकदार था, लेकिन मालिकका नाम आ जानेपर उसने आगे बढ़नेकी हिम्मत न की और कहा "जब मालिक खुद मौजूद हैं, तो मेरे हाथमें पैसा जमा करनेकी जरूरत नहीं। 'गौरैयाको कौन मारे? कसाई' की मसलके अनुसार बाय खरच-वरचका ढंग ज्यादा अच्छा जानते हैं, वह कमीबेशीको पाससे पूरा भी कर सकते हैं।"

किसीने एक तंका दिया, किसीने एक मीरी और किसीने आठ पूल

(ताँबेका पैसा)। इस तरह बीस तंका बायके पास जमा हो गया। मालिकने मुवज्जिनके द्वारा कब्रखोदकको कब्र खोदने मुर्दानहापकको मुर्दा नहलाने के लिये नियुक्त किया, और अपने घरसे चार गज़ कपड़ा कफनके लिये दिया।

दफनानेकी तैयारी हो गयी। इमामने "दौरा" किया लोगोंने "खुदाई जनाज़ा" पढ़ा। जवानोंने अर्थीको उठाया। मालिक और कुछ और लोग अर्थीके साथ कब्रिस्तान गये। मुर्दाको दफनाया गया, इमामके (क़ुरानके) सूरा तबारुक पढ़नेके बाद सब अपने-अपने घर लौटे।

मालिकने इमामको दो तंका, मुर्दा-नहापकको दो तंका, कब्रखोदकको दो तंका, अक़्सक्कालको दो तंका और मुवज्जिनको एक तंका—सब नौ तंका नगद और चार गज गाढ़ा खरचकर सबको खुश और कामको पूरा कर दिया। अक़्सक्कालने धीरेसे मुवज्जिनके कानमें कहा—पैसाका स्वभाव पानी जैसा है। वह बड़ी नदी या समुन्दरकी ही तरफ जाता है। मालिकने दफनाने और खैरात बाँटनेके बाद मुसाफिरको अपने पास बुलाकर पूछा—तुम्हारा नाम क्या है?

—बाज़ार।

—कहाँके रहनेवाले हो?

—कूलाबके इलाकेका।

—कहाँ जाना चाहते हो?

—चाहता था कि बुखाराकी ओर जाकर चाकरी करूँ।

—बहुत अच्छा। दुनियाँमें ऐसा होता ही रहता है। मैं भी दर्वाज़के शाहोंके खान्दानसे हूँ, यहाँ आ पड़ा और खुदाकी मेहरबानीसे बाल-बच्चा और घरका मालिक बना। तुम्हारी पत्नी मर गयी। भगवान्‌की दया हुई और जीवित रहे, तो फिर ब्याह हो जायेगा। शुक्र है, कि तुम उतने बूढ़े नहीं हो। बच्चा भी मदद करनेके लिये पासमें है। अगर चाहते हो तो हमारा घर मौजूद है। पेटके लिये दो मुट्ठी अन्न और तनके लिये कपड़ा

मिलनेमें कमी न होगी। और क्या चाहिये? चाहोगे तो बीबीवाले भी बन जाओगे।

बाज़ार माल-मिल्कियत खो कर वतन छोड़ यहाँ आ पड़ा था। कहाँ जाय, क्या करे इसका उसे कुछ पता न था। उसने मालिककी राय मान चाकरी करनेका निश्चय किया।

मालिकने समरकन्दकी ओर ले जाकर बेंचनेके लिये भेड़ें जमा की थीं। यात्रा करनेके समय तक उनकी चराईका काम उन्होंने बाज़ारके हाथमें दिया। आठ-सालका यादगार भी घरके कामोंमें लगा रहता, घोड़ों बैलोंकी देख-भाल करता, गायके सामने चारा डालता।

यद्यपि मालिकने बाजारके वेतनके बारेमें कुछ नहीं कहा था, किन्तु वह मन लगाकर काम करता, भेड़ोंको सवेरेसे शामतक घासभरे पहाड़ी पथरोंमें चराता, जिससे दो माह बीतते-बीतते भेड़ें खूब तैयार और मोटी-ताजी हो गयीं।

२३

नई आशा

गर्मीका मौसिम आया। हिसार और समरकन्दके बीचके रास्तेकी बरफ गल गई। अब यात्राका समय था। मालिकने देखा कि बाजार एक बहुत मेहनती नौकर है। ऐसे नौकरसे बहुत देरतक बिना वेतन चाकरी कराना ठीक नहीं। नौकर स्वयं चाहे सिर्फ खाने-कपड़ेपर काम करनेको तैयार हो, लेकिन दूसरे नौकर उसे बिगाड़ और बहका देंगे। इसलिये "बीमारीसे पहले दवाका प्रबन्ध"की कहावतके अनुसार मालिकने समरकन्दके लिये रवाना होने से पहिले बाजारको बुलाकर कहा—मैं नहीं चाहता कि तुम बिना वेतनके काम करो, इसलिये बातचीत करके उसे तय कर लेना अच्छा है।

—आपकी सलामती चाहिये। मैं एक मुसाफिर हूँ, आपके घरमें अपने घरकी तरह रह रहा हूँ। पहिले तो मुझे वेतनकी आवश्यकता नहीं, यदि आप नहीं मानते, तो मैं कुछ नहीं कहूँगा; आपकी इच्छा चाहे जितना वेतन ठीक कर दें।

—दूसरोंको उतना वेतन नहीं दिया जाता, लेकिन तुम भले आदमी हो, मैं तुम्हें पचास तंका वार्षिक दिया करूँगा। कहो क्या कहते हो?

—खुदा आपकी दौलत बढ़ाये, मैं बहुत सन्तुष्ट हूँ।

—भेड़के सौदागरों और चरवाहोंके बीच एक और भी नियम चला आता है, उसे भी तुम्हें सुना रखना चाहता हूँ। वह नियम यह है, कि यदि भेड़को भेड़िया खा जाय या वह गुम हो जाय, तो उसका हर्जाना चरवाहेके ऊपर होता है। यह नियम इसीलिये बना है, कि अधिकांश चरवाहे ईमानदारी नहीं जानते। मालिकका अन्न-जल खाते, पोशाक पहनते हैं, लेकिन उसके मालकी परवाह नहीं करते; जिसकी वजहसे बहुत-सी भेड़ें रास्तेमें गुम या नष्ट हो जाती हैं; कुछ चरवाहे तो स्वयं चोरी करते हैं। इसलिये यह शर्त रखी जाती है, जिसमें चरवाहे प्रमाद न करें और खुद भी चोरी न करें। बेशक तुम वैसे नमकहराम आदमियोंमें नहीं हो, तो भी यह शर्त रखनी जरूरी है, नहीं तो दूसरे चरवाहे भी शर्त न रखनेकी माँग करेंगे।

यद्यपि बाजारका मन पहिले कुछ डरा, लेकिन अपनी सावधानी और तत्परतापर पूरा भरोसा करके उसने इस शर्तको मान लिया।

बाज़ार वस्तुतः अब अपने भाग्यपर बहुत सन्तुष्ट था। वह सोचने लगा, इस तरह बारह साल कामकर लेनेपर मेरे पास छः सौ तंके हो जायेंगे। यदि सालके अन्तमें वेतन लें उससे भेड़ें खरीद लिया करूँ, तो मेरे पास एक छोटा-मोटा झुण्ड हो जायेगा। यद्यपि मैं अपनी शादी नहीं करना चाहता, लेकिन यादगारके वयस्क होनेतक एक

झोपड़ी बना लेना जरूरी है, क्योंकि उसे परिवारवाला बनाना है। मेरी अन्तिम आयु लड़के और बहूके साथ गुजरेगी। अफ़सोस, बेचारी बीबी इस खुशीको न देख रास्तेमें बेघर और बेधन चल बसी। सच्ची ईमानदार पत्नी! उसने सारी आफतोंको मेरे साथ-साथ झेला। उसके मर जानेसे यह भविष्यका आनन्दपूर्ण जीवन फीका मालूम पड़ता है—
फिर बाज़ारने यह कहकर मनको तसल्ली दी—

—मेहमाह मर गई। मेरी वफादार मेहमाह चल बसी। लेकिन बिना चिन्ह (यादगार) के नहीं। उसने यादगारको मेरे पास अपनी यादगार छोड़ी।

बाजार अब याकूब बायके जुल्मोंके लिये पछताता न था। वह सोच रहा था—उसने जो कुछ बुरा या भला किया, अपने लिये किया; यदि उसने बुराई की तो मुझे अज़ीमशाह जैसा भलेमानुस मालिक भी मिला।

२४

यात्रा

यात्राका दिन आ पहुँचा। उर्गूत और हिसारके भी कितनेही भेड़-सौदागर यात्राके लिये तैयार थे। किसीके पास सौ किसीके पास पचास भेड़ें थीं। सबने अपनी-अपनी भेड़ें चरवाहोंके जिम्मे लगा अजीम-शाहके साथ यात्रा की। चरवाहोंने भेड़ें हाँकीं। मालिक भी घोड़ोंपर सवार हो उर्गूततक साथ-साथ गये।

बाजार रातको भी आराम न कर अपनी ढाई सौ भेड़ोंकी रखवाली करता। कुत्तेको हर तरफ दौड़ा भेड़ियों और दूसरे श्वापदोंसे भेड़ोंकी रक्षा करता। उर्गूततक कोई खतरा नहीं आया। खतरनाक जगहोंसे सकुशल निकल आनेपर बाजारने भगवान्‌को धन्यवाद दिया। वह सन्तुष्ट और प्रसन्न था। समझता था कि अब इसके बाद कोई आफत

शिरपर न आयेगी; क्योंकि उसने सुन रखा था कि उर्गूतसे आगे समरकन्दतक बस्ती-ही-बस्ती है, सभी जगह मकान और खेतियाँ हैं, सभी जगह गाँव और बाग हैं; इस प्रदेशमें न भेड़ियेका डर है न चोरका। उर्गूतके भेड़-सौदागर चरभूमिमें कुछ दिन चरानेके लिये चरवाहोंको हुकुम दे अपने घरोंमें चले गये। अजीमशाह भी उनके मेहमान हुए। जब भेड़ों और मालिकोंकी थकावट दूर हो गई, तो वे फिर समरकन्दकी ओर रवाना हुए।

चरवाहोंको धीरे-धीरे आनेके लिये कहकर मालिक घोड़ेपर सवार हो आगे चले गये। चरवाहे, जिनमें बाजार भी था, भेड़ोंको हाँकते समरकन्दकी ओर चले। रास्ता अब पर्वतीय मार्गसे अच्छा और आबाद था, लेकिन पहाड़की स्वच्छ-सुखद हवामें पले चरवाहोंकी हालत धूलि भरी हवासे बुरी हो गयी थी। भिनसारसे सूर्योदयतक उतनी तकलीफ न थी, क्योंकि आस-पासकी नहरोंके वाष्प-विन्दु प्रातःकालीन ओस-कणके रूपमें जमीनमें पड़कर धूलको कुछ तरकर उसे ऊपर अधिक उड़ने नहीं देते थे। लेकिन जैसेही भुवन-तापक सूर्य निकलकर अपनी किरणोंको संसारपर डालते और ओसकण वाष्प बन हवामें उड़ जाते, तो शुष्क अतएव हल्की धूलि पशुओंकी खुरोंसे रौंदी जा हवामें उड़ने लगती। जब सूर्य दस हाथ ऊपर उठता, तो धूल भी सूर्य और आकाशको ढाँक संसारको अन्धकारपूर्ण कर देती, मानो सूर्य उदय होनेके एक घंटे बाद फिर अस्त हो गया। लेकिन इस अस्त होने और रातके अस्त होनेमें अन्तर था। रातको यदि सूर्य अस्त होता, तो आकाशमें चमकीले तारे खिल आते, जो सूर्यके समान प्रकाशमान न होने पर भी इतनी रोशनी देते, कि पथिक अपने पथको पहिचान सकता। किन्तु अब पथिकको न चाँद, न तारे, न आकाश न भूमि न वृक्ष न दीवार दिखलाई पड़ती थी। सिर्फ साथ चलते कुत्ते और भेड़ें पथप्रदर्शन करतीं। पहिले चरवाहे जबर्दस्ती कभी-कभी कठिनाई से आँख खोलकर देखते। लेकिन जब आँसू-बहाते-बहाते आँखें

सूज गयीं तो उन्हें बन्द करना पड़ा। धीरे-धीरे आँख खोलनेकी भी शक्ति न रही। चरवाहोंके सिर और मुँहपर पड़ी धूल ललाटके पसीने और आँखोंके आँसुओंसे भीग कर कीचड़ बन गयी, जिससे उनकी सूरतें मिट्टीकी बनी मूरतों जैसी दिखलाई पड़ती। धूलिने उनके आँख, मुँह, नाकको बन्द-सा कर दिया था। लोहारकी भाथीकी तरह उनकी नाक धूल खींच धूँआ बाहर कर रही थी। उनके कानोंमें इतनी धूल पड़ गयी थी; कि दूरसे आती 'कू-कू'की आवाजके सिवाय कुछ नहीं सुनाई पड़ता था।

इसी तरह भेड़ोंको लिये चरवाहे दर्गम्के तटपर पहुँचे। अब न चरवाहोंको और न भेड़ों ही को एक भी कदम आगे चलनेकी हिम्मत थी। भेड़ोंको चरनेके लिये छोड़ चरवाहे भी अपने को धो-धा साफकर वृक्षोंकी छायामें विश्राम करने लगे। बीरीकी छाया और दर्गमके किनारे बहते शीतल मन्द समीरने कब्रसे निकाले इन मुर्दोंमें नयी जान डाल दी। हर साँसके साथ भीतर जानेवाले शुद्ध वायुने उनके गले और फेंफड़ेको शुद्धकर हृदयको पूर्ववत् फिर गतिशील बना दिया। धीरे-धीरे भूख मालूम हुई और उन्होंने सूखी रोटी और पनीरको बहते पानीके साथ खाया। भेड़ें भी तृण-जलसे पेट भर विश्राम लेनेके लिये भूमिपर लेटीं और उन्होंने अपने खुरोंसे खुजलाते आँखों और कानोंको शुद्ध किया। सूर्य भी पुनः उदय हो अपनी प्रभासे दर्गम्के जलको प्रभासित करने लगा। सूर्य जितना ही नीचे ढलता गया हवा उतनी ही अधिक आनन्दप्रद होती गयी।

रात वहाँ बिता दूसरे दिन प्रातः फिर चरवाहोंने भेड़ोंको हाँका। बाज़ारने भी अपनी भेड़ोंपर एक एक करके नज़र डाल सन्तोषके साथ रास्ता लिया।

चरवाहे इसी तरह पड़ाव पार करते जुमा-बाजार और तीलक् होते समरकन्द शहरके पास पहुँचे और मालिकोंके कथनानुसार शहरमें

न जा कावज़ार गाँव, और दश्तक नहरके किनारे-किनारे ज़ामिन् और पिस्तामज़ारके बागोंके पाससे होते दश्ते-सोख़्ताकी ओरसे फिर दर्गम्के किनारे चलने लगे। बागोंके बीच धूल और खाकने उन्हें पहलेसे भी अधिक परेशान कर दिया, क्योंकि यहाँ वृक्षोंकी शाखायें भेड़ोंकी खुरोंसे उड़ी धूलको आकाशमें अधिक दूर उड़ने नहीं देती थीं और प्रत्येक धूलि-कण उड़कर एक क्षण बाद अपनी जगह आ गिरता था, मानो वसन्तकी वर्षाकी भाँति धूलिकी वर्षा हो रही थी।

बाज़ार जब कावज़ार और पिश्तामज़ारके बागोंके बीच धूलि-समुद्रमें डूबता भेड़ोंके पीछे-पीछे जा रहा था—उसी समय एक बागकी दीवारके पास उसने किसीको रोते-चिल्लाते सुना। रोने वाला कह रहा था—हे पुण्यात्मा पथिको! हे दयालु चरवाहो! मेरे ऊपर दया करो। लक़वा मारनेसे मुझे हिलने-डोलनेकी ताकत नहीं है। मेरी मदद करो और उस फाटकतक पहुँचा दो। भगवान् तुम्हारी भलाई और इच्छापूर्ति करें।

बाज़ारको भलाई और इच्छा-पूर्तिकी बहुत परवा थी। उसने पाँच मिनट समय नष्ट होनेका ख्याल न कर बीमारको उठा दूसरे दरवाज़ेपर पहुँचाया और उसका आशीर्वाद ले वह फिर अपनी भेड़ोंमें पहुँच गया।

२५

उड़ता दान

चरवाहे दश्तसोख़्ताकी बालुका-भूमिसे हो जब दर्गम्के किनारे पहुँचे, तो बाज़ारने अपने स्वभावके अनुसार अपनी भेड़ों पर नज़र डाली और "दो दुम्बे नहीं, दो तगड़े दुम्बे नहीं" कहकर वह चिल्लाने लगा। तो भी उसे विश्वास नहीं आया कि दुम्बे गुम हो गये। एक घने बसे शहरके पास दो भेड़ोंका गुम होना विश्वास करनेकी बात नहीं थी। उसने फिर

एक एक करके भेड़ों पर नजर दौड़ाई। सचमुच ही दो नहीं थीं। उसकी भेड़ोंके एक कानपर मालिककी चारखानावाली मुहरके चिह्न दगे हुए थे। उसने अपनी भेड़ोंको दूसरी भेड़ोंसे अलग करके किनारेकी तरफ हाँका और एक बार फिर उन्हें देखा। वहाँ दो मोटी भेड़ें नहीं थीं। अब भी उसके मनको विश्वास नहीं हो रहा था। उसने साथियोंसे कहा। उन्होंने भी खोजनेमें मदद दी, लेकिन कहीं पता नहीं लगा।

अब इसमें सन्देह नहीं रहा, कि दो भेड़ें गुम हैं। लेकिन बाज़ारका मन मानता न था। वह इसके लिये तैयार नहीं था, कि दो भेड़ें इस तरह गुम हो जायँ, अर्थात् एक सालकी मिहनतकी कमाई बरबाद हो जाय। लेकिन वस्तुस्थिति यही थी; चाहे वह कितनी ही नापसन्द हो, किंतु उसे कबूल करना ही था। उपाय क्या था? उसने चाहा कि पीछे लौटकर रास्तेको फिरसे देखे-भाले, क्या जाने कहीं पता लग जाये। लेकिन साथियोंने यह कहकर मना किया—भेड़ कभी भी अपने मनसे झुण्डसे अलग हो नहीं रुक सकती। यहाँ भेड़ियेका होना भी सम्भव नहीं। जान पड़ता है, उन्हें कोई दोपाया भेड़िया उठा ले गया।

बाज़ार इसे माननेको तैयार न था। साथियोंको छोड़ नदीके किनारे किनारे दूरतक जा उसने सिरमें धूल डाली और थोड़ी देर दर्गामूके तट पर बैठ इस दुर्घटनाके लिये शोकाश्रु बहाता रहा, फिर मनको तसल्ली देते बोला—कोई उपाय नहीं, भगवदिच्छबलीयसी। भाई मरा, बैल-जोड़ी और ज़मीन हाथसे चली गयी, जीवन-सहधर्मिणी और सारे संकटोंकी सहचरी मेह-माह भी छोड़कर चली गयी? इस-तरहकी विपदायें जिसके ऊपर भी पड़तीं, उसका दिमाग खराब हुए बिना नहीं रहता। उन विपत्तियोंके सामने दो भेड़ोंका गुम होना, एक सालकी मजूरीका बर्बाद होना कुछ भी नहीं। इसे बर्दाश्त करना चाहिये। यदि जीवन रहा तो अगले साल इस क्षतिको पूरा कर लूँगा।

बाजार इस तरहकी समझकी बातोंसे दिलको समझा दर्रामूके पानीसे हाथ-मुँह धो फिर अपने साथियोंके पास लौट आया।

× × ×

भेड़-सौदागर समरकन्दके दलालों और कसाइयोंसे मिलकर अपने चरवाहोंके पास आये। अज़ीमशाहने अपनी दो भेड़ोंके गुम होनेकी बात सुनकर तनिक भी खिन्न न हो कहा—

खैर, कोई हर्ज नहीं, दो भेड़ें गुम हुईं, सिरकी निछावर। फिर भेड़ें आजायेंगीं। सलामती चाहिये। गुम हो गयी चीज "उड़ते दान"में गिनी जाती है।

अज़ीमशाहने इस तरहकी फ़िलासफ़ी द्वारा अपने नौकरको आश्वासन दिया। भीतर अपने दिलमें वह बहुत खुश था और अपने आपसे कह रहा था:

—दो भेड़ें गुम हो गयीं मेरा क्या नुकसान? उनकी क्षति-पूर्ति बाजारको देनी होगी, जिसे वह भेड़ोंको समरकन्द पहुँचानेसे पहले ही दे चुका है। यह काम बाजारके लिये भले ही हानिकर हो, लेकिन मेरे लिये तो यह भगवान्‌का वर है। यदि बाजार मेरा कर्ज़दार न होगा, तो सम्भव है, वह मेरा काम छोड़कर दूसरेके यहाँ चला जाय। ऐसे मिहनती चाकरको सदा कर्ज़दार और मुहताज बनाये रखना चाहिये। दो भेड़ें गुम हुईं, यदि दो भेड़ें और भी गुम हो जाँय, तो और भी अच्छा, क्योंकि तब वह अगले सालके लिये भी मेरा बन्दा हो जायेगा।

२६

ज़कातची*

एक बाग था, जो चारों ओर छोटी दीवारसे घिरा था। भीतरकी

---

* चुंगीका अफसर।

और एक छोरसे दूसरे छोर तक थाले बने थे, जिनमें सेब, ज़र्दालू, गिलास, आल-वालू, दूलाना, नाख, दिल-अफ़रोज़, आलूचा, सुरूद और दूसरे मेवोंके वृक्ष पाँतीसे लगे हुए थे।

लेकिन वृक्षोंके शिखर शुष्क और शाखायें टूटी, मेवा न देने लायक रह गयी थीं। बागमें एक तरफ़ करीब एक बीघा जमीनमें अंगूरकी बेलें लगी थीं, जिनके खुत्थे बहुत पुराने और बेलें साल दो सालसे न छाँटी गयी थीं। कुछ क्यारियोंमें बेलें बीरी या जर्दालूके वृक्षोंसे लिपटी हुई थीं। इन क्यारियोंकी अधिकांश शाखायें यद्यपि सूखी-सी थीं, किन्तु कितनी ही बेलोंमें अंगूरके नये हरे गुच्छे दिखलाई पड़ रहे थे। बागकी दूसरी ओर नहरका तट-भाग टूटा-फूटा और गिर गया था, जो उसके स्वामीकी दुरवस्थाका परिचय दे रहा था। बागके अन्दर घुसतेही सामने एक पुरानी दालान थी, जिसके आगे एक कुण्ड था। कुण्डके किनारे सरोंके वृक्ष छाया किये हुए थे।

कुण्डकी वारीपर लम्बे पड़े चार आदमी आपसमें बात करनेमें लगे थे। उनमेंसे एकने दूसरेसे कहा—इस्ताम्क़ुल्! यदि थोड़ा परिश्रम करता, तो यह तेरा बागही एक सालकी मुसल्लिसी (शराब)के लिये अंगूर दे देता और अंगूरकी फसलके समय पड़ोसी भी मेरे और तेरे हाथोंसे कष्ट न पाते।

इस्ताम्क़ुल्ने जवाब दिया—रुस्तम आक़ा! खूब बातें मार रहे हो। खुद अपने बागको इससे भी ज्यादा चौपटकर चुके हो और यहाँ आकर मुझसे लन्तरानी झाड़ रहे हो। मैं और तुम खुदाके खास बन्दे हैं। खुदा नहीं चाहता कि हम तुम काम करें। हमारा बाग और चारबाग (मेवाबाग) हमारे पड़ोसियोंके बाग हैं, जिनमें वे मिहनत करते हैं और हमारे लिये अंगूर तैयार करते हैं। अगर आस पासके हर बागसे पाँच-पाँच पूत् (पन्द्रहसेरी) की भी निशाचर्य्या (चोरी) करें तो पचास पूत्, यदि दस-दस पूत् करें, तो सौ पूत् हमारे हाथ आयेगा।

यदि उसकी मुसल्लिसी डालें, तो साल भर पानीकी जगह सिर्फ़ मुसल्लिसी (मदिरा) ही पीते रह सकते हैं।

—खानाबाद शम्शीने अपने बागको खूब आबाद कर रखा है न ? कल दीवारसे झाँककर मैंने देखा कि कियारियाँ पत्तेकी जगह अंगूरोंसे ढँकी हुई हैं। ऐसे बागोंसे बीस-बीस पूत् भी लें, तो कोई हर्ज नहीं—कहते तीसरे आदमीने बीचमें टोक दिया।

—रोज़कुल्! अधिक लोभ न कर, सुना नहीं "कम कम खा, सदा खा" ? फसल बहुत अच्छी समझकर यदि एक बागसे इकट्ठा बीस पूत् निकाल लें, तो बागदारकी जान निकल जायेगी। और वह चोर पकड़नेमें जानतक लड़ा देगा। संयमके साथ थोड़ा-थोड़ा खाना ठीक है। यदि हम जुल्म पर उतर आयेंगें, तो जान लड़ाकर मेहनत करने वाला बागदार हमारे पीछे पड़ जायेगा—कहकर रुस्तमने दोस्तोंको शिक्षा दी।

एक कोनेमें साँस बन्द कर बैठे शाकुल्ने हसरतके साथ कहा—सत्यानाश हो, नैकःलेका। वह हमारे शहरमें शराब-खाना और पीवा (पानशाला) खोलकर भुवन-मोहिनी सुन्दरियोंको चषकवाहिनी बना मौजसे बैठा है और हमको उसने इस कुपथमें बर्बाद होनेके लिये छोड़ दिया है। हमारे बाप-दादा कब शराब पीकर बड़े हुए थे ? यदि हम इस कुपथमें न पड़ते, तो हमारे बाग शम्शीके बागसे भी और अच्छी तरह आबाद होते।

—छोड़ो इन बातोंको, एक दूसरी बात सुनो। अंगूर करीब-करीब मीठा हो चुका है। पिछले सालकी मुसल्लिसीसे एक ठिलिया बाकी रह गयी है, उसे भी पीकर समाप्त करें और सभी घड़ोंमें नया अंगूर डाल नयी मुसल्लिसी तैयार करें—बाय-पुत्र बेदारने कहा।

इस्वामकुल्—यह ठिलिया कहाँ थी ? मैंने जुमाके दिन बहुत खोजा

लेकिन न पाया। ख्याल किया, किसी दिन नशेमें उसे भी खतम कर डाला होगा।

—पारागोरकी क्यारीमें रखे था।

—ओ अभागे!

—उठ, जा ले आ, पीकर खाली करें।

—मदिरा भी साथियोंके साथही पीनेमें अधिक आनन्द देती है, लेकिन चीन्चूता बिरयानी गोश्त (भुनामांस) या सीख-कबाब न हो, तो मदिरापान क्या?—रोजकुल्ने कहा।

—गोश्त नहीं तो बक़ला (टोमाटो) जान ही सही। दस बक़ला-जान, चारदाना पियाज और एक बोतल मदिरा, फिर मज़ा आ जाता है—रुस्तमने कहा।

"ठहरो ठहरो"—कूचाकी ओर निगाह करते नौरोज़ने कहा—"कूचेमें भेड़ें जा रही हैं, अगर हम उनमेंसे ज़कात (चुंगी) ले सकें, तो बिरियानी गोश्त भी हो सकता है और सीख-कबाब भी।"

—सचमुच बहुत-सी भेड़ें जा रही हैं, किस तरह हाथ साफ़ करें?

नौरोज़ने कहा—यह आसान है रोज़कुल! उठ, जा दीवारके पास लम्बा पड़ रह। तेरे पीछे रुस्तम आक़ा रहेगा। मैं रास्तापर जा सबसे पीछे आनेवाले चरवाहेको बातमें फंसाता हूँ। जिस वक्त मुझे बात करते सुने, रोज़कुल भेड़का पैर मजबूतीसे पकड़े और रुस्तम आक़ा उसे खींचकर अन्दर करले। और इस्तामक़ुल्! भेड़के गलेको मजबूतीसे बाँधनेके लिये तू एक रस्सीको तैयार करके रख जिसमें वह "मा" न कर सके।

रोज़कुल्—कितनी भेड़ें पकड़ूँ?

इस्तमक़ुल्—जितनी पकड़ सके।

रुस्तम्—नहीं, कहावत है "चोर भी हो लेकिन न्यायके साथ"

इसलिये बुखाराके ज़कातचियों (चुंगीवालों) की तरह जो कुछ हाथ आये, सबको हड़पना नहीं चाहिये । एक या दो पकड़ना, बस।

योजना बनानेवाला आदमी "उठो, जल्दी, समय न बीत जाय" कह, उठकर दीवार फाँद कूचेमें आया और बीमार बन दीवारके पास पड़ रहा ।

इसी बीमारको बाज़ारने अपनी मनमुराद पूरा होनेकी नियतसे उठाकर दूसरी जगह पहुँचाया और उसकी दो भेड़ें 'उड़ता दान" हो गयीं ।

२७

यह भी उड़ता दान

बुख़ारा शहरके किलेके दक्खिणवाले मैदानमें—जो कि नमाज़शाह दरवाज़ासे निकलनेपर मिलता है—सैकड़ों भेड़ें अलग-अलग झुण्डोंमें जमा थीं । मैदानमें प्रवेश करनेवाले स्थानपर फ़र्शके ऊपर गद्दा बिछा हुआ था, जिस पर सिपाहियाना पोशाकमें एक आदमी पालथी मारे बैठा था । आदमीकी बगलमें हर तरहकी पोशाकोंका एक बगचा रखा था, दूसरी ओर दो आदमी सामने रजिष्टर और कलमदान रखे बैठे थे ।

सिपाहियाना पोशाकवाले आदमीने "पायकी" कहकर आवाज़ दी ।

—हाँ तक़सीर (क्षमा-निधान) ! पानी ताज़ा करके अभी लाता हूँ,—कहकर पायकीने जवाब दिया और हाथका हुक्का लिये मैदानके बाहर कुण्डके पास जाकर गड़गड़ेके पानीको गिरा, कमरसे लटकते थैलेमेंसे लत्ता निकाल उसके सिर, गर्दन, नली और चिलमको अच्छी तरह पोंछा । फिर सीखसे हुक्काकी नलीको साफकर गीला तम्बाकू चिलममें रखा और ताज़ा पानी डाल चिलम ऊपर रख जल्दी-जल्दी मैदानमें

आया और सिपाहियाना आदमीके सामने "ताजा पानी" कहकर उसने निगाली उसके मुँहमें दे दी।

आदमीने एक-दो फूँक खींचनेके बाद पूछा—क्या हाल है तेरा?

आपकी कृपासे रोजही हँड़िया चढ़ानेके लिये मिल जाता है—कह सलाम करके पायकी "ताजा पानी" कहते भेड़ोंके झुण्डमें घूमने लगा।

× × ×

बाजारमें बड़ी चहल-पहल थी। बीस-बीस पचास-पचास दुम्बे बिककर जहाँ-तहाँ खड़े थे, उनमें अजीमशाहकी भी बीस भेड़ें थीं, जिन्हें फतहुल्ला भेड़-दलालके द्वारा एक बुखारी कसाईने खरीदी थीं। कसाईने दाममेंसे दो सौ तंका गिनकर बाकीके लिये अगले बुधकी करार की थी। अजीम-शाहने तंकोंको गिनकर सामने रखा और चाहते थे कि उन्हें अपने दूसरे तंकोंमें मिला दें, इसी समय पायकीने "ताजा पानी, ताजा पानी" पुकारते वहाँ आ पहुँचा और हाथके हुक्केको बीचमें कर वहाँ बैठे हर एक आदमीके सामने निगाली फिरायी। जब फतहुल्लाने हुक्का पीना चाहा, तब पायकीने एक हाथमें ले चिलमको 'फू फू' करके जगाते दूसरे हाथसे निगालीको फतहुल्लाके मुँहमें देना चाहा। जलती राख उसके दूसरे हाथपर गिर पड़ी और हाथकी झिझकसे हुक्का ठीक उसी जगह जमीनपर गिरा, जहाँ अजीमशाहके तंके चिने हुए थे। पायकीने बड़ी होशियारीसे हुक्काको न लुढ़कने दे फुर्तीसे उठा लिया और फतहुल्लाको पिलाकर "ताजा पानी" पुकारते बाजारमें चला गया।

× × ×

आज अजीमशाहका सौदा खतम हो गया था। उन्होंने सारे मिले पैसोंको हिसाब करके देखा, तो मालूम हुआ, कि कुछ तंके कम हो रहे हैं। दुबारा गिना फिर भी कम। जब विश्वास हो गया, कि तंके गुम हैं, तो चिल्लाकर आसमानको सिरपर उठाते 'चोर हरामी' और क्या-क्या कहकर गाली देने लगे।

बाजारने समरकन्दमें दो दुम्बोंके गुम होनेके वक्त मालिककी तसल्ली देनेवाली बातका खयालकर सहृदयता प्रकट करते हुए कहा—मालिक! हरज नहीं, गुम हुई चीज "उड़तादान" है। खुदा उसके बदलेमें दूसरी चीज देगा।

अजीमशाहने आपेसे बाहर होकर कहा—उड़ता दान? उड़ता दान उन लोगोंके लिये है, जिन्होंने अपनी खुशीसे कभी खैरात और दान न दिया या न देनेकी शक्ति रखते हैं। और मैं? मैं अपनी आमदनी और बचतके आधेको सदा दान-पुण्यमें ख़रच करता हूँ। तेरी बीबीके मुर्देको दफनाया वह भी खैरात थी, तुझे और तेरे बेटेको खिलाया-पहनाया, स्थान दिया यह भी खैरात; कितने ही बेचारोंको काम देता हूँ यह भी खैरात। बादशाहको ज़कात और व्यवस्था कर देता हूँ, ईदकी नौछावर देता हूँ, कुर्बानी करता हूँ यह सब खैरात हैं। इसके बाद "उड़ते दान"की मुझे क्या जरूरत? मुझसे बढ़कर खैरातदेनेवाला खुदाका बन्दा दूसरा नहीं। तूं जा अपना काम कर, मुझे उपदेश देनेकी कोशिश न कर।

अजीमशाह "क्या यह शहर बे-बादशाहका है" कहते उठे और बाजारके मैदानमें गद्देपर पलथी मारकर बैठे आदमीके सामने जाकर बोले—ज़कात्‌ची बेक! मैं बादशाहको ज़कात देता हूँ, व्यवस्था-कर देता हूँ, बादशाही बाजारमें माल बेचता हूँ, बादशाही बाजारमें दिन-दहाड़े मेरा पैसा चोरी चला गया। यहाँ-कहाँ व्यवस्था रही? फिर मैं किसलिये ज़कात और व्यवस्था-कर दूँ? आप बाजारके हाकिम हैं, मुझसे जकात लेते हैं, इसलिये चोरको पकड़कर मेरे पैसे दिलवाइये।

ज़कातचीने इसी झगड़ेके सम्बन्धमें आकर खड़े फतहुल्लासे धीरेसे पूछा—इस कामको किसने किया होगा?

—मैं खयाल करता हूँ यह काम शेरका है वही वहाँ आया था। —फतहुल्लाने जवाब दिया।

—शेर पायकी ?

—हाँ तक़सीर !

"ओ अभागे" कह ज़कातचीने अज़ीमशाहकी तरफ मुँह करके "अच्छा, हम तहक़ीकात करेंगें" फिर अपने आदमीसे कहा "सन्दिग्ध आदमियोंको पकड़कर मीरशब (कोतवाल)खानामें भेजो ।

आदमीने पूछा—किनको ?

—किन्हीं मामूली गरीबोंको । खाते-पीते आदमी चोरी थोड़े करते हैं, चोर हमेशा-भूखे नंगोंमें ही से होते हैं ।

—बहुत अच्छा तक़सीर !—कहकर आदमी आज्ञाको कार्य रूपमें परिणत करनेके लिये चला गया ।

अजीमशाहको जकातचीकी इन सारी कोशिशोंसे अपने पैसेके लौट आनेकी उम्मीद न थी । धनुषसे छूटा तीर कहाँ लौट कर आता है ! अजीमशाहका दिल ठंढा नहीं देखकर जकातचीने अधिक जकात देने वाले दूसरे भेड़-सौदागरोंकी तरह अजीमशाहको भी एक बादशाही जामा पहिनाकर जनाबआलीके लिये दुआ करा खुश कर दिया ।

बाजारसे भेड़ोंके सौदागर, दलाल और कसाई सब चले गये । चरवाहे भी बाकी बची भेड़ोंको झुण्ड-झुण्ड करके चर-भूमिकी ओर ले चले ।

जकातची भी अपनी चीजोंको समेटकर आदमियोंके जिम्मे लगा रवाना होना चाहा, इसी समय "ताजा पानी" पुकारते पायकी दिखलाई पड़ा । जकातचीने कहा—शेर !

—लब्बैक, तक़सीर (जीहुजूर-निधान) !

—कितना उड़ाया ?

—दश तंका तक़सीर !

—झूठ न बोल, मैंने सुन लिया, ज्यादा था ।

—नहीं तकसीर ! आपके सिर की क़सम, यदि दस तंक़ासे एक पूल (पैसा) भी ज्यादा हो।

—अच्छा, तो उसकी जकात ला।

पायकीने थैलेमें हाथ डाल ताँबेके पैसोंमेंसे कालिख लगे पाँच तंकोंको अलगकर जकातचीके सामने रखा। जकातचीने जाजिमसे पोंछकर तंकोंको अपनी जेबमें डालकर कहा—शेर ! मेरी शिक्षा सुन, ऐसा काम बड़े सौदागरों और बायोंके साथ न किया कर। बड़े लोग जरा-सी बातमें जमीन आसमान एककर हर जगह न्याय करानेके लिये पहुँच सकते हैं। जो कुछ करना हो साधारण लोगोंके साथ कर, क्योंकि उनकी पुकार कहीं नहीं पहुँचती। देख, वह बाय हल्ला मचाते हुए मेरे पास आया। खैर, फतहुल्लाने सहायता की और बात वहीं दबा दी गयी। मैंने जनाब-आलीकी सरकारकी तरफसे जामा पहिना दिया, बाय लोगोंके साथ ऐसा करना ही होता है, चाहे वह जकात (कर)के नामपर कुछ भी देवें। गरीबोंसे हम एककी जगह दो-दो तीन-तीन कहकर जकात लेते हैं और उन्हें कुछभी नहीं देते, तो भी वह दमतक भी नहीं मार सकते।

शेर—आपके सिरकी कसम बेगीजान ! जकात उनसे कौन लेता है, लेकिन सबपर हाथ साफ करते तीरको निशान पर ठीक लगाना मुश्किल है। वह कभी-कभी भूलसे हरिनकी जगह भेड़ियेपर चल जाता है।

वह फिर 'ताजा पानी' पुकारते बाजारसे बाहर चला गया।

२७

ऋणग्रस्त

बुखारासे लौटनेके बाद मालिकने हिसाब करना चाहा और एक रोज बाजारसे बातचीत शुरू करते कहा—यद्यपि बुखाराकी यात्रा मेरे लिये बहुत अच्छी नहीं रही, किंतु तुम्हारे लिये भी वही बात हुई, तो भी

हिसाबको रख छोड़ना अच्छा नहीं। यद्यपि दूसरी भेड़ोंको और भी ज्यादा दामपर बेंचा, किंतु तुमसे गुम हुई दोनों भेड़ोंका दाम पचीस तंकाके हिसाबसे पचास तंका रखता हूँ।

बाजार—भेड़ें कितनेमें खरीदी गई थीं?

—उनकी खरीदसे तुम्हें क्या मतलब? पहले तो हरेक भेड़को मैं अलग-अलग नहीं खरीदता, कि उनकी कीमत मालूम हो। मैं दस-दस बीस-बीस करके एक साथ खरीदता हूँ। उनमें कोई दस तंकेकी होती है, तो कोई चालीस तंकेकी भी होती है। दूसरे यह कि खरीदनेके बाद ६ महीने वह मेरे पास रहीं। मेरा पैसा उनपर रुका रहा। मैंने उन्हें खिला-पिलाकर मोटा किया, जिसमें समरकन्दके बाजारमें पहुँचकर तंका बनें। इस तरह खरीदका दाम बतलाना मुश्किल है। अच्छा यही है कि तुम्हारे लिये असल कीमतसे कुछ कमही का हिसाब करूँ, जिसमें यदि मेरे हाथसे जाय तो तुम्हारे हाथमें रहे। तुम गरीब आदमी हो, मेरे लिये दुआ करोगे।

हाँ तो हिसाबके मुताबिक तुमपर मेरा पचास तंका ऋण रहा। बच्चेके साल भरके खाना-कपड़ेका भी हिसाब करनेपर वह भी पचास तंका होता है, इस प्रकार सारा ऋण पचास तंका हुआ।

—लेकिन क्या बच्चा सालमें पचास तंका खायेगा—कहकर बाज़ारने आश्चर्य किया।

मालिक—"बछड़ा घास-घर खाली करता है और बच्चा रोटी-घर" की कहावत नहीं सुनी? एक बच्चा एक सालमें एक बड़े आदमीसे भी ज्यादा खाता है, लेकिन मैंने तुमपर दया करके कमका हिसाब लगाया। यह ठीक है यदि तुम न होते तो खुदाके नामपर मैं उसे खिलाता-पहनाता, किंतु जब तुम जिंदा हो, हाथसे काम भी करते हो, तो मैं तुम्हारे बच्चेको पालूँ-पोसूँ यह उचित नहीं। मैं वैसा करना चाहूँ, तो भी तुम्हें इन्कार करना चाहिए। यदि बच्चा घरका एक दो काम कर भी देता है, तो भी

उसके बदले मैं खिलाने-पिलानेका बोझा नहीं उठा सकता; क्योंकि उससे जो काम मैं लेता हूँ, वह केवल सिखलानेकी नीयतसे ही, अपने लाभके ख्यालसे नहीं। अब तो उसे सीखनेके लिये कहना भी हानिकर मालूम होता है। एक दिन गाय चरानेके लिये कहा, तो वह उसकी घंटी गुम कर आया। खैरियत यह हुई, कि किसी राह चलतेको मिली और वह पहुँचा गया। अच्छा, तो तुम मेरे सौ तंकेके करजदार हुए। अब यह तुम्हारी मर्जी है, यदि चाहो तो इसके लिये एक हैंडनोट लिख दो और मेरे यहाँ काम करो; यदि नहीं चाहते तो पचास तंका नगद लाकर मुझे दे दो। तुम्हारे छः महीनेके कामकी मजूरी बच्चेकी छः माहकी खुराक-पोशाकमें बराबर हो गई। आगे जहाँ खुशी हो वहाँ जाओ।

यद्यपि अब बाज़ारकी सबसे अधिक इच्छा यही थी, कि इस घरसे जल्दीसे जल्दी चला जाय, लेकिन उसकी नज़रमें कोई ऐसा आदमी नहीं आया, जो मालिकके हिसाब-किताबको बराबर कर देता। अंतमें उसे हैंडनोट लिख देनेको राजी होना पड़ा। अज़ीमशाहने बाज़ारको क़ाज़ीके मिर्ज़ा (लेखक) के पास ले जाकर कहा—इस आदमीकी तरफसे मेरे नाम सौ तंकेका एक करारनामा लिख दीजिये।

मिर्ज़ाने पूछा—यह सौ तंका लाभ-सहित रखना चाहते हो या धर्म-ऋणके तौर पर देना चाहते हो।

अज़ीमशाह—आजकलके जमानेमें धर्म-ऋणका क्या काम? बेकारका पैसा कहाँ है? जरूरत पूरा करनेके लिये कर्ज़ देता हूँ, यही धर्म मेरे लिये पर्याप्त है।

—सौ तंकापर प्रतिमास कितना पैसा?

—आप ही बतलाइये प्रतिमास कितना पैसा ठीक होगा?

—सभी जानते हैं, यदि कर्ज़खोरके पास माल-मिलकियत हो, अपनी जमीन-हवेली गिरों रखनेको हो, तो हर बीस तंकापर प्रतिमास आधासे

एक तंका तक होता है। यदि पासमें कोई चीज न हो तो लोग बीस तंका-पर प्रतिमास दो तंका लेते हैं।

—मेरे कर्जदारके पास कोई माल-मिलकियत नहीं है, न वह स्वयं ही इस प्रदेशका रहनेवाला है। इसलिये एक काम करें, कि 'न सीख ही जले न कबाब ही', मैं आधा तंका मासिक लेनेको राजी हूँ।

—यह आप ही की हिम्मत है। लेकिन जब कर्जदारके पास गिरों रखनेके लिये चीज न हो, तो कागजपर सूद लिखना ठीक नहीं; क्योंकि वैसा करनेपर वह हराम हो जायगा और शरीयत (धर्मशास्त्र)के अनुसार नहीं होगा। अगर कोई चीज गिरों रखनेको होती तो 'लाभ'को उसी चीजकी पैदावारका इजारा (लगान) मानकर कागज पर शरीयतके अनुसार लिखा जा सकता था। अब रास्ता यही है, कि साल भरके लाभको कर्जकी रकमपर रख उसके लिये एक करारनामा लिखा जाय।

—बहुत अच्छा, यह काम आपका है। ऐसा करें कि काम शरीयत-सम्मत हो।

मिर्जाने सौ तंकाके लाभका हिसाब तीस तंका करके एक सौ तीस तंकाका करारनामा बाज़ारकी तरफ़से लिख दिया, और बाज़ारको मालिक-का कृतज्ञ होनेकी शिक्षा देते हुए कहा—मालिकका शुक्र मानो। यदि उनकी जगह कोई दूसरा आदमी होता, तो बीसपर दो तंकाका हिसाब करके तुम्हें दो सौ बीस तंकाका कर्जदार बनाता। मालिकने तुमपर बड़ी मेहरबानी की।

मिर्जाने चपरासीको बुलाकर उसके हाथमें कागज दे करजदार और महाजनको 'शरीयत-पनाह' (धर्मरक्षक) काज़ीके पास ले जा मुहर करानेको कहा। चपरासीने उन्हें ले जाकर काजी-खानाके दरवाजेके सामने रखी चटाईपर बिठा कागजको काजीके हाथमें दिया। काजीने कागजपर नजर दौड़ाकर कहा—बाज़ार!

—लब्बैक!

—मुल्ला अज़ीमशाहसे एक सौ तीस तंका लिया ?

—लिया ।

—जिस वक्त भी मालिक माँगेंगे, इस पैसेको काजीखानामें आकर उनको दे देगा ?

—हाँ ।

चपरासीने उकड़ूँ बैठकर मुहरको काज़ीके सामने रख दिया। काज़ीने कागजपर मुहर कर दी। फिर चपरासीने खड़े हो कागजको काजीके हाथसे लेकर पातितजानु बैठे कर्जदार और महाजनको भी 'खड़े हूजिये' कहा।

काजीने मुल्ला अज़ीमशाहकी तरफ निगाह करके कहा—मुल्ला अज़ीमशाह! आप तो गूलरके फूल हो गये। कभी हमारे यहाँ आतेही नहीं। अंदर आइये, कुछ बातचीत करें।

अजीमशाह 'बहुत अच्छा तकसीर!' कहते देहलीके अंदर काजीके पास गये। काजीने उनका सन्मान करते आधा खड़े हो बैठनेके लिये जगह बतलाई। अजीमशाहने वहाँसे कुछ नीचेकी तरफ बैठकर जनाब-आली (बुखारा-अमीर), ईशान काजी (न्यायाधीश महाशय) और मखदूम जानों (काजी-पुत्रों)के लिये दुआ की। काजीने 'लड़के! दस्तरखान और चाय ले आ' कहकर अपने नौकर लड़केको हुकम दिया। फिर अजीमशाहसे बात करते बुखारा-यात्राकी बात छिड़ गई, जिसपर उलहना देते काजीने कहा—बुखारा जा मुझे भूल गये। और साग-सब्जी कोई सौगात मेरे लिये नहीं लाये! इस बार अगर बुखारा जायँ तो मुझे न भूलियेगा।

अजीमशाहने कुछ शर्माकर कहा—बुखारा बाजारमें भेंड़ोंका पैसा कुछ चोरी चला गया, जिससे मन खराब हो गया और काम आधा-तिहा करके ही लौट आया। आगे जानेपर हुजूरकी सेवा करके अपराधकी क्षमा माँगूँगा।

काजीने अफसोस करते हुए कहा—खुदा उसका बदला एककी जगह दस दे। कितनी रकम चोरी गई?

—बहुत ज़्यादा नहीं। थोड़ेसे तंके गये। तो भी पैसा खोए जानेका किसे अफसोस नहीं होता।

—अलबत्ता, अलबत्ता, 'मोमिनका माल मोमिनका खून' कहा है। बदनसे खून चाहे थोड़ा भी निकले, लेकिन कौन अफसोस नहीं करता। बुखाराशरीफ़के हाकिमोंसे अर्ज नहीं किया?

—बाज़ारके ज़कात्चीसे कहा। उसने दो-तीन संदिग्ध आदमियोंको बँधवाकर मीरशबखाना (कोतवाली) भिजवा दिया मैं और ज्यादा इस बातके पीछे नहीं पड़ा।

—ज़कात्ची इससे अधिक कुछ नहीं कर सकता था। क्यों नहीं जनाब काजी-उल्-कुज्ज़ात ईशान काजी-कलाँ (महान्यायाधीश)के पास जाकर निवेदन किया? वह चोरको पकड़कर शरीयतके अनुसार पैसा दिलवा देते।

—थोड़ीसी रकमके लिये हजरत ईशान-कलाँको हैरान करना मैंने पसंद नहीं किया।

—क्यों? चाहे ईशान काजी-कलाँ हों, चाहे दूसरे काजी या हाकिम; सभी आप जैसे धनवानोंकी मदद करनेहीके लिये हैं। हमारे बाग, चारबाग (मेवाका बाग) आप हैं। हमारा आश-पुलाव, हमारी रोटी, हमारा सब कुछ पहले दौलत-जनाबे-आली (बादशाहकी सरकार) से है; दूसरे आप जैसे धनवानोंसे। साथ ही यदि आप इसके बारेमें ईशान-कलाँसे निवेदन करते, तो इसके लिये उनको मुहराना (मुहर लगानेका पैसा) और चपरासियोंको खिदमताना मिलता। ईशान-कलाँ भी पैसेको बुरा नहीं समझते!

—जी तकसीर!

—मेहरबानी कीजिये, रोटी आ गई, भोजन हो।

कुछ खा लेने पर 'तकसीर! बहुत खा चुका' कहकर अजीमशाहने हाथको आधा खींचकर फातिहा पढ़नेके लिये काजीसे निवेदन किया। काजीने भी हाथ खींच जनाबआली (बादशाह)के लिये दुआकर फातिहा पढ़ा। लड़केने आकर दस्तरखानको समेटा। अजीमशाहने बातचीतको समाप्त समझ सीनापर हाथ रखकर कहा—अब जानेकी आज्ञा मिले।

काजीने 'हाँ जाना चाहते हैं, अच्छा। इतने अल्प-दर्शन न बनें। जब तब आते रहिये' कहकर हाथोंको उठा दुआ करके मेहमानको बिदा किया। अजीमशाह भी हाथोंको मुँहपर फेर मेहमानखानेके दरवाज़े और देहली तक बिना पीठ फेरे लौट एक पार्श्व हो बाहर आये।

बाज़ार अब तक मिर्ज़ाखानेकी दीवारके सहारे बैठा दिलमें सोच रहा था—मेरे मालिका काजीके साथ इस तरहका चोली-दामनका संबंध है। ऐसी अवस्थामें वह जितना भी चाहते, उतनेका कर्ज़दार बना मुझसे लिखवा लेते। मिर्जाकी बात सच है, वस्तुतः मालिकने मुझपर बड़ी मेहरबानी की।

अजीमशाह जब क़ाजीके पाससे बाहर आये तो चपरासीने कागजको चौपते कर उनके हाथमें थमाते हुए कहा—मालिक! मुझे अपने धनमें से वंचित न रखियेगा।

अजीमशाह उसके हाथमें आधा तंका रख फिर मिर्जाखानामें गये और मिर्ज़ासे कहा—एक तंका कातिबाना (लेखकका श्रम), दो तंका मुहराना, आधा तंका खिदमताना कुल साढ़े तीन तंका खर्च आया, इसे भी कागजकी पीठपर लिख दीजिये।

लिखवा लेनेके बाद घर लौटते वक्त मालिकने बाज़ारसे क़ाजीके साथ बैठकीका खूब अतिरंजित वर्णन किया।

२६

मनमाना हिसाब

इस कर्जके बाद बाज़ारने आठ-साल तक मालिककी नौकरी की और हर साल दो-दो-बार समरकन्द और बुखारा भेंड़े लेकर जाता रहा, लेकिन फिर बाज़ारके ऊपर आफत नहीं आई और किसी भेड़को कोई चोर या भेड़िया नहीं ले गया। यात्रासे लौटनेपर वह मालिककी भेड़ोंको चराया करता।

आठ सालमें हिसाबके अनुसार बाज़ारकी मजदूरीके चार सौ तंके हुए, और एक सौ तंके कर्जको निकाल देने पर भी उसे दो सौ सत्तर तंके मिलने चाहिए थे। लेकिन हुआ ऐसा नहीं। हर सालके आरम्भमें नया हिसाब होता, और नया कागज बनता, जिससे नवें वर्षके आरम्भमें बाज़ारपर अज़ीमशाहका आठसौ उनसठ तंका कर्ज हो गया। कैसे ऐसा हुआ, इसे समझनेमें बाजारकी बुद्धि काम नहीं दे रही थी। लेकिन अज़ीमशाहके लिये यह हिसाब वैसा ही स्पष्ट था, जैसे दो और दो-चार। प्रथम वर्षमें अज़ीमशाहने एक सौ तीस तंका बाज़ारको कर्ज दिया था। दूसरे वर्षके आरम्भमें बीस तंकापर आधा तंका मासिकके हिसाबसे रकम एक सौ उनहत्तर तंकापर पहुँची। बाज़ारने बच्चेकी खुराक-पोशाकको अपने वेतनसे न काट उसके काममें मुजरा करनेके लिये बहुत कहा, लेकिन मालिकने उसे न मानते हुए जवाब दिया—यादगार क्या काम करता है, कि उसके बदले उसे खुराक-पोशाक दूँ। परसाल चार गज गाढ़ा उसके दो कुर्ते और पायजामेके लिये काफी होता था। लेकिन इस साल वह एक कुर्ता और पायजामेके लिये भी काफी नहीं। जबतक यादगार वयस्क नहीं हो जाता, तबतक उसकी खुराक और पोशाक तुम्हारी मजदूरीसे कटेगी। अगर यह बात कबूल नहीं करते, तो मेरा पैसा लौटाओ। मैं तुम्हारे लिये एक सफेद-फातिहा पढ़ता हूँ।

हाँ तो हिसाबसे तीसरे सालके आरम्भमें बाज़ारपर दो सौ बीस तंका, चौथे साल दो सौ छियासी तंका, पाँचवें साल तीन सौ एकहत्तर तंका और छठें साल चार सौ बियासी तंकाका कर्ज हुआ। इस वक्त तक यादगार खाना बायके सर और कपड़ा मालिककी तरफसे पाता रहा।

बाज़ारने देखा कि लड़का खूब काम कर रहा है। उसने ख्याल किया, कि इसके लिये कोई काम ढूँढ़ना चाहिए, जिसमें वह अपनी खुराक-पोशाक आप पैदा करे और बाजार अपनी मजदूरीसे मालिकका कर्ज बेबाक कर दे। सरेजूय के अमलाकदार (माल-अफसर)के यहाँ एक बुखाराका चपरासी था। उसको पता लगा। उसने बीस तंका सालानापर यादगारको नौकर रखना कबूल किया, लेकिन इस शर्तके साथ, कि यादगार बुखारामें जाकर उसके घरमें काम करे। यद्यपि बाज़ारके लिये यह दुःसह था, कि कृपामयी मेह्माहकी यादगार (स्मृति) अपने इकलौते पुत्रको बुखारा भेजे, लेकिन कर्जसे जल्दी मुक्त होनेके खयालसे वह इस शर्तपर भी राजी हो गया। लड़केको सिपाहीके हाथमें देनेसे पहले "नमकका हक हलाल करनेके लिये" इस बातको अज़ीमशाहसे कहा और उनसे सफेद-फातिहा देनेके लिया प्रार्थना की।

अज़ीमशाहने मानो, उन्हें यादगारकी कोई जरूरत नहीं, बड़ी बेपरवाहीसे पूछा—लेकिन जानते नहीं एक अपरिचित नगरमें इस बच्चेका भविष्य कैसा होगा? यदि बेटेसे मन भर गया हो, तो भेज दो, इसमें तुम्हें फायदा है। लेकिन यदि बेटेका प्रेम है, तो यहाँ ही रक्खो। अब लड़का बड़ा हो गया है। यद्यपि वह एक जवान आदमीके बराबर काम नहीं कर सकता, लेकिन आधे आदमीके बराबर काम कर सकता है। मैं सोच रहा था, कि इस सालसे उसकी खुराक तुम्हारे ऊपर न रहे और तुम्हारी तनखाहको कर्जमें काटा जाय। मुझे उम्मीद है कि अगर दो साल और यहाँ रहे, तो यादगार सालमें पचास-साठ तंका यहीं कमा सकता है। बाकी मर्जी तुम्हारी, हर आदमी अपनी ही सलाहको बेहतर समझता है।

बाज़ारको सबसे ज्यादा फिकर इस बातकी थी, कि उसकी तनखाहसे कर्जको चुकाया जाय। उसका मन यह भी नहीं चाहता था, कि लड़का दूर जाय। इसलिये उसने मालिककी बात स्वीकार की और यादगारको बुखारा न भेजा।

सातवें सालके आरंभमें फिर करारनामा नया करनेका वक्त आया। अज़ीमशाहने चार सौ बयासी तंका कर्जपर एक सालका लाभ (सूद) रख, छः सौ चौबीस तंका हिसाब किया, उसमेंसे बाज़ारकी तनखाहका पचास तंका काटकर पाँच सौ छिहत्तर तंकेका नया कागज लिखवाया। आठवें सालके आरम्भमें यह रकम लाभ जोड़ और तनखाह काटकर छः सौ निन्नानवे तंका हो गई। नवें सालके आरंभमें आठसौ उनसठ तंकेका नया दस्तावेज लिखा गया।

बाज़ारने देखा कि तनखाह काटनेपर भी कर्जकी रकम कम होनेकी जगह बढ़ती ही जा रही है। उसको मालिकके हिसाबपर सन्देह हुआ और वह काजीखानाके समावार्ची (चायवाले) कुदरतसे सारी कथा कहकर हिसाब लगा देनेको कहा। कुदरतने जवाब दिया—बिरादर! इस तरहके हिसाबको मनमाना हिसाब (हिसाब-हमदूना) कहते हैं। यह हिसाब समझना मेरी और तेरी अकलसे बाहरकी बात है।

३१

वसीयत (अधिकारपत्र)

कुछ दिनोंसे बाज़ार साईसखानामें बीमार पड़ा था। बीमारी सख्त होनेसे बाहर आनेकी उसमें ताकत न रह गई थी। रातको बेटा सामनेसे नहीं हटता था, लेकिन दिनको वह काम कैसे छोड़ता? मालिक हर रोज सबेरे और शाम बीमारको देखने, कुशल-मंगल पूछने और तसल्ली देने आते। बीमारी और बिगड़ने लगी। अब वह करवट भी नहीं बदल सकता था। एक दिन अज़ीमशाहके आनेपर उसने कहा—मालिक!

मैंने तुम्हारा नमक ज्यादा खाया और सेवा कम की। यदि भगवान्की इच्छा है और मेरे दिन पूरे हो गये, तो छुट्टी दीजिये।

अजीमशाह—"दर्द दूसरा और मौत दूसरी", आदमी सिर्फ़ बीमार पड़नेसे नहीं मरा करता। कहावत है "जब तक जड़ पानीमें तब तक फलकी आशा" लेकिन "जब तक बद न कहो, नेकी नहीं आती" इसीलिये इस्लामने वसीयत करनेको सुन्नत (सदाचार) कहा है। इमाम और अर्बाबको बुलवाता हूँ। उनके सामने हम दोनों अपना हिसाब करें। तुम इस कर्जको अदा करनेके लिये अपने लड़केको वसीयत कर दो। वसीयतके मुताबिक लड़का नया दस्तावेज लिख देगा। आशा है, इस वसीयतसे सब ठीक हो जायेगा।

बाज़ार ननु-नच किये बिना "भले काममें देर करनेकी जरूरत नहीं" कहते मालिककी बातपर राजी हो गया। अज़ीमशाह बीमारके पाससे बाहर गये। कुछ देर बाद इमाम और अर्बाबको लेकर लौटते वक्त यादगारको हवेलीके बाहर काममें लगा देख आवाज देकर बोले—छोड़ दे, दुनियाका काम तो हर वक्त रहता है। बापका आशीर्वाद लेना जरूरी है। आ, बापके पास बैठ। उसकी देख-भाल कर।

यादगार भी उनके पीछे-पीछे बीमारके पास गया। बाज़ारने इमामके लिये सम्मान प्रदर्शित करते सिरको उठाना चाहा, लेकिन न कर सका। उसने सिर्फ इशारासे ही आदर प्रगट करनेपर सन्तोष कर लिया। इमामने हालचाल पूछ लेने के बाद कुरानकी आयत पढ़कर बीमारके लिये दुआ माँगी। बाजारने साँस ले लेकर इमाम और मालिकके कहनेपर कर्जदारीकी बात कह सुनाई और उनके सामने लड़केको अपने नामसे नया दस्तावेज लिखनेके लिये वसीयत की। यादगार कुछ न जवाब दे धरतीकी ओर देखता रहा।

अज़ीमशाहने कहा—यादगार! बोलता क्यों नहीं? क्या इस अंतिम घड़ीमें भी बापकी बातपर कान नहीं देना चाहता?

यादगारने आँखको जमीनसे हटाये बिना ही कहा—बकरीको उसके पैरसे बाँधते हैं और भेड़को उसके पैरसे" अगर मेरा बाप कर्जदार है, तो इससे मुझको क्या ?

बाजार बेटे के मुँहसे यह शब्द सुनने की उम्मीद नहीं रखता था। वह बहुत निराश और खिन्न हुआ। उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धार बह निकली। मुल्ला इमामने यादगारसे कहा—अगर तेरे बापके पास माल होता, तो उसके बाद तू उसका मालिक होता। आज जब उसके पास कर्ज है, तो तू उसे स्वीकार नहीं करता! क्यों शरीयतके हुकुमसे गर्दन खींचता है!

यादगार—बाप कर्जदार है, इसका पता आपको कहाँसे चला? मैं इतना ही जानता हूँ, कि मैं और मेरा बाप इनके यहाँ दस सालसे काम कर रहे हैं। हमने फजूल खर्ची नहीं की, यज्ञ नहीं किया, जलसा-दावत भी नहीं की। मेरे बापसे पहले ही साल सिर्फ़ दो भेड़ें गुम हो गई और उसके बदले हम दोनोंकी दस सालकी मजूरी इनके पास है, फिर कैसे मेरा बाप इतनी भारी रकमका कर्जदार बन गया? नहीं, मैं इस तरहके हिसाब-हमदूनाको अपने सिरपर उठानेको तैयार नहीं हूँ।

यादगारकी बातचीतसे उद्दंडता और सरकशी प्रकट हो रही थी। मालिकको बहुत भय लगने लगा। उन्हें चिन्ता होने लगी कि यदि यादगारने राजी-खुशीसे दस्तावेज न लिखा, तो जबर्दस्ती लिखवानेसे क्या फायदा? इस जगह न उसकी कोई माल-मिलकियत है, न दूसरा ही कोई चित्ताकर्षण। यदि बापके मरनेपर यह भाग जाये तो सूखा दस्तावेज किस काम आयेगा? मालिकने कहा :

—यादगार! तेरा बाप बच्चा नहीं था, पागल नहीं था। वह हिसाबके मुताबिक कर्जदार हुआ और उसने इसके लिये इस्लामके काजीके सामने करारनामा लिखकर दिया। यह ठीक है कि हर साल मूलधनपर कुछ तंका लाभका भी जोड़ा गया, लेकिन वह देशके रवाजका

आधा ही था। इसके अतिरिक्त हर सालके दस्तावेजकी लिखाईके खर्च, मुहराना, कातिबाना, और खिद्मतानाको मैंने दिया; यह सब दस्तावेजकी पीठपर लिखा हुआ है। सिर्फ यही खर्च साठ तंकासे ज्यादा हुए। यदि तू नया दस्तावेज बना देगा, तो तेरी उम्रका ख्याल करके मैं रकमको बिना-लाभ (बे-सूद) करके धर्म-ऋणकी तरह मान लूँगा। अपनी वार्षिक मजूरी ठीक करके उससे कर्ज अदा करते जाना। काजी-खानामें जो पैसे खर्च हुए, उन्हें भी मैंने बख्श दिया। कर्ज की रकम जो आठ सौ उनसठ तंका हुई है, उसमेंसे भी उनसठ तंका बख्श दिया। अब सिर्फ आठसौ तंकाका हिसाब होगा। खुदा न करे, यदि तेरे बापके दिन पूरे हो गये, तो कब्र और कफनमें भी जरूरत पड़ेगी।

अजीमशाहने अपनी बातको समाप्त करते हुए कहा—मैं इस बातको औ बख्शनेकी बातको इसलिये करता हूँ, कि तेरा बाप दुनियासे बेकर्ज जाय। ऐसा न हो कि तूने और तेरे बापने जो मेरा नमक खाया है, खुदा उसका बदला कयामतमें लेकर मुझे दे। तुम कयामतके दिन सच्चे क़ाज़ीके सामने मेरे कर्जसे कैसे इन्कार कर सकते हो?

यादगारने अब भी किसी तरफ निगाह नहीं फेरी थी और सिरको दाहिने-बायें घुमा "नहीं, यह नहीं होगा" कह कर चाहा, कि अपनी जगहसे उठे। उसी वक्त उसके बापने—जिसपर अजीमशाहकी कब्र और कयामतवाली कथाने बहुत प्रभाव डाला था—करुणापूर्ण स्वरमें कहा—यादगार! मेरे बेटे यादगार! इधर निगाह कर, मेरी तरफ।

यादगार फिर लौटकर अपनी जगह बैठ गया और उसने बापकी आँखोंकी तरफ देखा, जिनसे आँसुओंकी धार बह रही थी। बाजार उन आर्द्र और करुण नेत्रोंसे कुछ देरतक लड़केकी ओर देखता रहा। वह कातर दृष्टि, निराशापूर्ण दृष्टि प्रेम और खेदसे मिश्रित दृष्टि अपनी सारी निर्बल-ताओं और बेबसियोंके साथ अपने लड़केसे दया और सहृदयताकी भीख माँग रही थी। यादगारपर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहा। वह निराशा

और कातरतासे भरी दृष्टि थी ही ऐसी, कि अगर पत्थरपर भी पड़ती, तो उसे पानी-पानी कर देती, फिर एक बेटेके दिलकी तो बात ही क्या ?

बाजारने बेटेकी दृष्टिसे उसके भीतरी भावोंको भांपकर कहा—क्या, तू चाहता है, कि इस सनातन ऋणको अपने सिरपर उठाये या चाहता है, कि मेरा मुर्दा कूचेमें पड़ा रहे ?

यादगारमें अब इन्कार करनेकी शक्ति नहीं रह गई थी। उसने कहा—'अच्छा, तुम्हारी खातिर मैं दस्तावेज लिखने को राजी हूँ'।

द्वितीय खण्ड

अमीरका बुख़ाराशरीफ

१९१२—१७ ई०

१

कब्रिस्तानसे गुलिस्तान

आकाश निर्मेघ था। सूर्योदय अभी नहीं हुआ था, किन्तु तारे अन्तर्धान हो चुके थे। प्रातः समीर मंद-मंद चल रहा था, मानो विश्वमें व्याप्त रात्रिकी निर्जीवताको दूर कर रहा था। इस प्रमोदवर्धक प्राकृतिक सुषमामें एक चीज थी, जो दर्शकके मनको अवसाद दिये बिना नहीं रह सकती थी और वह था कब्रिस्तानका दृश्य। कब्रिस्तान एक विस्तृत ऊँची किन्तु सुनसान जगहमें अवस्थित था और अपनी डरावनी सूरतसे हर आदमीमें भयका संचार करता था। वहाँ एक छोरसे दूसरे छोर तक उभड़ी हुई मिट्टीकी ढेरियाँ ही ढेरियाँ दीखती थीं, मानो इस भूमिमें सोये मुर्दे चाहते थे, कि सिरसे मिट्टीको उठा फेंके। कब्रोंसे भरी भूमि आदमियोंकी सभा जैसी मालूम देती थी, किन्तु यह सभा मूक, निश्चल और शोक-पूर्ण थी।

इस मूक सभाकी शान्तिको एक अठारह-बीस साला जवानका करुण-क्रन्दन भंग कर रहा था। जवान एक कब्रके पास बैठा रो रहा था। उसकी क्रन्दन-ध्वनि मानो एक शोकपूर्ण संगीत था, जिसने अपने श्रोताओंसे जीवनके सारे चिह्नोंको छीन लिया था। इस मौन संसारमें जीवनके चिह्नका प्रकाश सिर्फ कुछ काले जन्तु दे रहे थे, जो कभी-कभी अपने शरीरको कुछ ऊँचा करके हमारे क्रन्दन-गायककी ओर दृष्टि डाल लेते थे।

कुछ देर रुदन कर लेनेके बाद तरुण चुप हुआ। कुछ क्षण बाद

उसने सिरको जरा ऊपर उठाया और कब्रपर अपनी निगाह गड़ा उसे सम्बोधित करते हुए बोला—केवल तुम थे, जिसकी प्रसन्नताके लिये मैंने सभी कष्टोंको सहा; केवल तुम थे जिसकी खुशीके लिये इस तरहकी जिन्दगीकी सारी कटुताएं बर्दाश्त कीं; केवल तुम थे जिसकी आज्ञा-पालनके लिये एक अन्यायपूर्ण ऋणका भारी बोझा अपने सिरपर लिया; अब जब तुम मुझे अकेला छोड़कर चल दिये, तो मैं इस बलासे छूटनेकी कोशिश करूँगा।

तरुण थोड़ी देर चुप रहा, मानो अपनी मुक्तिका मार्ग ढूँढ़ रहा हो। फिर उसने स्वयं प्रश्नोत्तर किया—भागना ? कहाँ भागना ? भागनेके लिये ऐसा स्थान चाहिये, जहाँ कोई मेरा पीछा न करे। लेकिन ऐसा स्थान कहाँ है ?

जवान अपनी जगहसे उठा, मानो उस स्थानके पानेका प्रयत्न कर रहा हो। उसने चारों ओर नजर डाली। विस्तृत आकाश आँखोंके सामने था। उसके मनमें लालसा हो आई, यदि मेरे पंख होते और मैं आकाशकी ओर उड़ सकता, तो पर्वतोंकी चोटियों और मेघकी गोदमें बैठ भूमि-की ओर देखता—उस भूमिकी ओर जिसने मुझे इतने कष्ट दिये और हर्षके एकमात्र साधन मेरे पिताको छीनकर घृणापूर्वक मेरी ओर देख रही है। इसी समय उसकी निगाह उस पर्वतपर पड़ी, जिसके दर्रेको दर्रानिहाँ कहते हैं। तरुण एकाएक बोल उठा—यह है वह स्थान।

तरुणने चरवाहीके समय अपने साथियोंसे दर्रानिहाँके सम्बन्धमें बहुत-सी कथाएँ सुनी थीं। उन्होंने कितनी ही बार उसकी प्रशंसा करते कहा था—यह वह दर्रा है, जहाँ पक्षी यदि पर मारे तो पर जल जाय। वहाँ हाकिमों और क़ाज़ियोंके लिये स्थान नहीं। वहाँ देव और परियाँ मनुष्योंके साथ वास करती हैं। वहाँके अधिकांश लोग परियोंके साथ प्रणय करते हैं। इसी लिये वहाँकी कन्यायें अत्यन्त सुन्दर होती हैं।

तरुण दर्रानिहाँके बारेमें सुनी कहानियोंको फिरसे यादकर मुसकुरा

उठा; मानो वह वहाँ पहुँच चुका है, वहाँके निवासियोंसे स्नेह पैदाकर चुका है। वहाँकी परी-ज़ाद देवकन्याओंमेंसे एकके प्रेमको प्राप्त कर चुका है। तरुणके लिये मुक्त होनेका वह एक अच्छा साधन था, साथ ही वहाँ जाकर किसी परीज़ादको चिरसहचरी बनानेकी अभिलाषाके पूर्ण होनेका भी अवसर था।

इस आकर्षक विचारने फिर जवानको वहाँ बैठने नहीं दिया। वह हवाकी तरह दर्रानिहाँकी तरफ चल पड़ा। उसने उस दिनको रास्तेमें बिताया। रात होते-होते दर्रेके मुंहपर पहुँच एक चट्टानपर सो गया। यह शयन-स्थान मालिकके अस्तबलसे कहीं बेहतर और सुखद था। हवेली की दीवारकी जगह यहाँ पर्वतकी गगनचुम्बी दीवार थी, जिसपर मालिक की साहबी नहीं चल सकती थी। जहाँ-तहाँ बहती जलप्रणालियाँ पाषाणके हृदयको विदीर्ण करके घर्घर-ध्वनिमें घोर संगीत गा रही थीं। सिरके ऊपर चमकते तारे प्रभाकी वृष्टि कर रहे थे।

रातको कितने ही समय तक नेत्रों द्वारा इस प्रकृति-सौन्दर्यका पान करते उसे नींद न आई। उसने अपने भविष्यपर दृष्टि डाली और वह उसे अधिक भव्य मालूम पड़ा। दर्रेके भीतर पहाड़ोंकी चोटियोंपर पहाड़ी वृक्षोंके बीच वह स्वतंत्र विचरण करेगा। वहाँ हर तरफ चश्मे, हर तरफ जलप्रणालिकायें हैं। वहाँ तरुण गान करते, कन्यायें नाचतीं। वह सारे तरुण सुशील, सारी कन्यायें दिव्य सुन्दरी।

तरुणकी जब आँख खुली तो देखा, पर्वत-शिखरपर सूर्यकी किरणें प्रतिभासित हो रही हैं। उसने अपनी जगहसे उठकर और पास बहते झरने में हाथ-मुँह धोया। कलकी राहकी थकावटके बाद भी आज वह अपने भीतर अधिक बल अनुभव कर रहा था, यद्यपि भूखके मारे अँतड़ियाँ तिलमिला रही थीं। उसे सिर्फ यही फ़िक्र थी, कि कुछ मिले और खाये। खानेकी खोजमें उसने चारों ओर नज़र दौड़ाई। उसे पहाड़ी बूटी दिखाई पड़ी। उसे उखाड़कर पानीमें धोकर उसने खाया। गन्ध अच्छा नहीं था,

तो भी उसने उसे खा लिया। थोड़ा खानेके बाद मनको सन्तोष हुआ और वह फिर आगे चल पड़ा।

अब मानो वह अपने नगर, अपने देशमें चल रहा है, ऐसे देशमें जहाँ कोई आपदा उसका पीछा नहीं कर रही है। दर्रानिहाँका दृश्य अकेले घूमने जवानको बहुत पसन्द आया। इस पतली अँधेरी राहकी भूलभुलैया उसे उतनी भयानक नहीं मालूम हुई, तो भी हर घुमावपर देव या परीके होनेका संदेह होने लगता था, किन्तु वह उनसे भय नहीं खाता था, क्योंकि वह कथानकोंमें सुन चुका था, कि यह देव और परियाँ मानवोंसे बन्धुत्व रखते हैं, अपने यहाँ आये शरणार्थियोंकी सहायता करते हैं। जब वह भागकर उनके पास शरण लेने आया है, तो क्यों उनसे डरे? समय दूर नहीं जब उनका सम्बन्धी बनेगा, कन्या लेकर दामाद बनेगा।

सँकरे, अँधेरे मार्गसे वह एक विस्तृत प्रकाशित मैदानमें पहुँचा। वहाँ जगह-जगह देवदारुके वृक्ष छाया फैलाये हुए थे। वृक्षोंकी सुन्दर पंक्तिके नीचे स्वच्छ जलकी धार बह रही थी। भूमिपर हरी घास और बूटियाँ हरे कालीनकी तरह धारा-तटसे वृक्षोंके नीचे तक बिछी हुई थीं। यह गुलिस्तान (पुष्पवाटिका) था, जिसने कब्रिस्तानसे भगे बेघर जवानकी सैलानी तबियत को मुग्धकर दिया था। वह इस नयनाभिराम दृश्यको अतृप्त दृष्टिसे देखता, आनन्दसे फूला न समाता एकाएक बोल उठा "यह है मेरा बाग"।

जवान आगे बढ़ना चाहता था, लेकिन बहुत थक गया था, इसलिये एक पत्थरपर बैठकर उसने अपने सिरको धोया। नाक-कानमें घुसी धूलको साफ किया, फिर एक घंटा प्रवाहपर नजर गड़ाये उधर देखता रहा। पानी दर्पणकी भाँति स्वच्छ था। उसने उसमें अपनेको देखा। उसे आश्चर्य हुआ। इससे पहले भी बाल बटनेके लिये दीवारपर टँगे औरतोंके दर्पणमें उसने अपनी सूरत देखी थी, लेकिन वहाँ अपने मुँहको मुर्झाया, आँखोंको निस्तेज, आकारको उदास और चिन्तापूर्ण पाया था। और इस समय!

उसका मुखमंडल सेबकी तरह लाल और भव्य, आँखें प्रातःकालीन

ताराकी भाँति प्रकाशमान थीं। उसके मुसकुराते होठोंपर हर्ष और उत्साहका नृत्य हो रहा था। उससे भी अधिक उसके अधरोंके ऊपर एक काली रेखा धनुषाकार खिंची हुई थी। अधिक ध्यानसे देखनेपर मालूम हुआ, कि वह रेखा नहीं बल्कि बहुतसे सूक्ष्म काले विन्दु, एक दूसरेके करीब-करीब लगे हुए हैं, जो पहले पहल देखनेमें रेखासे लगते हैं। यह रेखा या विन्दुसमुदाय शीतल जलसे धुले लाल ओठोंपर बहुत ही सुन्दर मालूम देते थे। तरुणको अपनी सूरत सुन्दर मालूम हुई। वह सोचने लगा, परियोंके देशमें आनेसे उसकी सूरत भी परीज़ादों जैसी हो गई है। तरुणाईकी उमंगों, मधुर विचारों और भविष्यकी आशाओंने तरुणको एक दूसरी दुनियामें पहुँचा दिया था। वह उठकर पानीके साथ-साथ आगेकी तरफ चला।

कहाँ चला? उस जगह जहाँ जल्दी ही परीजाद मानवसे उसकी मुलाकात होगी। वह उनके साथ परिचय, स्नेह और प्रेम पैदा करेगा। यदि भाग्यने साथ दिया, तो एक परीजाद कन्याको अपनी प्रेयसी बनायेगा। वह अपनेभी बुरा नहीं था, यह उसने अपना मुँह पानीमें देखकर जान लिया था; इसलिये एक परीज़ाद कन्याको अपनी प्रेयसी बनानेका अनधिकारी नहीं था। यह मधुर विचार उसके दिमागमें गूँज रहे थे, जब वह रास्तेपर जा रहा था।

आगे जाकर उसने कुछ देखा। क्या वह स्वप्न देख रहा था? एक देवकन्यासी चन्द्र-कान्ता षोड़शी निर्झरके किनारे बैठी तूंबेमें पानी भर रही थी, यह अवश्य ही स्वप्न नहीं था, वास्तविकता थी, जिसे वह अपनी आँखोंके सामने दिनके प्रकाशमें देख रहा था। पहिले वह पगको रोक अपनी जगह खड़ा हो गया। सोचने लगा, यह मेरी भाग्यदेवी है, जो अगवानीके लिये आई है; फिर पीछे रहनेकी जरूरत क्या?

वह फिर आगे चला। कन्याकी दृष्टि उसपर पड़ी। उसे आश्चर्यसे अपनी तरफ देखते देख वह सोचने लगी—यह कौन है? समीप आनेपर

कन्याने जाना कि वह वहाँका रहनेवाला नहीं है। फिर उसने पूछा—तू कौन है? कहाँसे आया?

—एक मुसाफिर हूँ। सरेजूयसे आ रहा हूँ।

कन्याको इस उत्तरसे आश्चर्य हुआ। अब तक उसने सरेजूयसे क़ाज़ीके आदमियों और हाकिमके सिपाहियोंको ही आते देखा था, किन्तु इस तरुणका रंग-रूप उनसे बिल्कुल भिन्न था। फिर यह कौन है जो यहाँ आया है? कन्याने फिर पूछा—किसलिये यहाँ आया है?

—तेरी शरणमें आया हूँ।

—मेरी शरणमें?

—हाँ, तुम्हारी शरणमें, इस दर्रेके निवासियोंकी शरणमें।

—क्या भागकर आया है?

—'भागकर आया हूँ' कहा जा सकता हूँ?

कन्याने अपने तूंबेको उठाकर चलना चाहा, लेकिन देखा कि तरुण उसकी तरफ आशा भरी निगाहोंसे देख रहा है। उसने कहा—आ, मेरे घर आ।

तरुण बिना कुछ पूछे 'अच्छा' कह उसके पीछे-पीछे चला।

कन्याकी आँखें और भौंहें, अधर और मुँह, रंग और रूप कितने चित्ताकर्षक थे? कानोंको ढँकते कन्धोंपर पड़े काले केश कितने सुन्दर थे! कन्या तेजीसे चल रही थी, किन्तु हर चन्द-कदमपर पीछेकी ओर मुड़कर देख लेती थी, मानो मेहमानकी गति-विधि जानना चाहती हो। यद्यपि तरुणका हृदय अभी षोड़शीके प्रणयमें बँधा नहीं था, किन्तु जबतब पड़ती उसकी निगाहें तरुणको अपनी ओर खींच रही थीं, या उसके दिलमें मुहब्बतके बीज बो रही थीं।

दोनों नीरव चल रहे थे, लेकिन तरुणको यह नीरवता असह्य मालूम हो रही थी। वह बात करनेका मौका ढूँढ़ रहा था, किन्तु एक अपरिचित कन्याके साथ क्या बात करे, यह उसकी समझमें नहीं आ रहा था।

बहुत सोचनेके बाद वह इतना ही कह सका—ला, तेरे तूंबेको मैं ले चलूँ। तू थकी-सी मालूम देती है।

कन्या अपने अंदर कोई थकावट नहीं महसूस कर रही थी। वह ताड़ गई, जवान इस हीलेसे बात करना चाहता है। वह जवाब देनेसे पहले जवानकी ओर निगाहकर मुसकुराई और फिर बोली—मैं थकी नहीं हूँ। रोज दस-पन्द्रह बार पानी ले जाती हूँ। हाँ, तेरे पैर जिस तरह उठ रहे हैं, उनसे मालूम होता है कि तू दूरसे आया थका-माँदा है।

जवान लज्जित हो गया। उसे जवाब देनेके लिये कोई शब्द नहीं मिला। फिर नीरवता शुरू हुई, किन्तु चंद मिनटोंमें वे घरके नजदीक पहुँच गये। चूल्हेके पास बैठी स्त्रीने "गुलनार! जल्दी-जल्दी आ, पानी बिना पतीली जलना चाहती है" कहकर लड़कीको आवाज दी।

लड़कीने जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाते दो क्षणमें चूल्हेके पास पहुँच पानीको रख दिया। मुड़कर देखा, कि तरुण चन्द कदम दूर खड़ा इधर-उधर देख रहा है। कन्याने कहा—क्यों रुक गया? यही हमारा घर है। फिर चूल्हेसे उठकर जवानको देखनेके लिये आई स्त्रीसे कहा—यह परदेसी मुसाफिर है। कहीं जानेका ठौर नहीं, इसलिये मैं इसे अपने साथ लेती आई।

स्त्रीने "अच्छा किया" कहकर प्रसन्नता प्रकट की, फिर अपनी ओर आते जवानकी तरफ निगाहकर "आ बेटे, आ, यहाँ बैठ" कहकर पास बिछी चटाईकी तरफ बैठनेका इशारा किया। फिर पूछा—"तेरा नाम क्या है?"

—यादगार

—ओ हो! बहुत अच्छा नाम है।

स्त्रीने अपनी लड़कीसे कहा—जल्दी कर, गाय दूह ले। समय न बीत जाय। मैं तेरे मेहमानके लिये क्षीर-कद्दू (लौकीकी खीर) पकाऊँगी।

कन्या गई और उसके साथ यादगारका दिल भी। अफसोस! वह इस

परिवारमें अभी अभी आया था और उतना परिचय न रखता था, अन्य-था गाय ले आनेमें मदद देनेके बहाने वह उसके साथ जाता।

२

परदेशी संध्या

पहाड़में लोमड़ीकी माँदें जैसी खुदी थीं। बगलमें अनगढ़ पत्थरोंकी दीवारें खड़ीकर उन्हें तृण-काष्ठसे ढाँक दिया गया था। यही लोगोंके घर थे। एक घरके सामने दो चटाइयाँ पड़ी थीं, जिनमेंसे एकपर यादगार और दूसरेपर एक दूसरा आदमी बैठा था। उनके बीच एक कम्बलका दस्तरखान बिछा था, जिसपर एक कठौतमें कद्दूकी खीर रखी हुई थी। उसे दोनों लकड़ीके चम्मचसे खा रहे थे। दूसरी ओर चूल्हेके सामने भी उसी तरह कठौतमें खीर रखी हुई थी, जिसे गुलनार और उसकी माँ भी चम्मचसे खा रही थीं।

मर्दोंने खाना खतम करके फातिहा पढ़ा। गुलनार कठौत और दस्तरखान उठा ले गई। मर्दने यादगारसे पूछा—बेटा! पूछनेमें गुनाह नहीं। तू कहाँका रहनेवाला है और कैसे इधर आ निकला?

यादगारने अपनी और अपने बापकी जीवन-घटनाएँ संक्षेपमें सुनाईं, लेकिन मालिककी आज्ञा बिना इधर आनेकी बात छिपा रखी। इधर आनेके बारेमें केवल इतना ही कहा—मैं एक पर्वतका पुत्र ठहरा, सरेजूयका जलवायु मेरे अनुकूल नहीं। अब बापकी मृत्यु हो गई, तो वहाँ दिल नहीं लगा, इसलिये सोचा कि किसी और जगह चलकर कोई काम पकड़ लूँ, जिसमें रोजी चले और फिर इस तरफ चला आया।

—यदि एक टुकड़ा रोटी और दही-दूधपर सन्तोष हो, तो यहाँ सारे जीवन पड़ा रह सकता है; लेकिन यहाँ कमाना और बँचाना संभव नहीं। ऐसे आदमी यहाँ बहुत कम हैं, जो मजूरीपर आदमी रखें। कुछ खाते-

पीते लोग हैं; किन्तु वह भी अपना काम आप करते हैं। कुछ ऐसे लोग हैं; जिनके पास दोचार माल (ढोर) हैं, अकेले होनेसे उनका सारा समय खेती-बारीमें लगता है। चरवाहा मिले तो वह अपने मालोंको उसके सुपुर्द कर देते हैं। यदि तू चाहे तो कल ही मैं ऐसे लोगोंके कुछ मालोंको जमाकर तुझे दे दूँ। तू उन्हें चरा। हर आदमी अपनी हैसियतके मुताबिक एक-एक प्याला खिचड़ी देगा। इस तरह तेरा गुजर-बसर हो जायगा।

यादगार अपने विचारोंमें डूबा हुआ था। मर्दने समझा कि अभी वह थका-माँदा है और उसका ध्यान उसकी बातोंकी ओर उतना नहीं है, इस लिये कहा—अच्छा, अभी दूरसे चलकर आनेसे तू भी थका है और मैं भी अभी अभी कामसे आया हूँ। कल इसके बारेमें सलाह करेंगे। इस वक्त जल्दी सो जा। चटाई लिये आ।

मर्द आगे आगे चला और घरसे कुछ पग दूर एक स्थान दिखलाकर बोला—बेटा! चटाईपर यहाँ सो जा। डर मत। मैं भी घरके सामने सो रहा हूँ। जरूरत हो तो 'चचा रुस्तम' कहकर पुकारना, मैं आ जाऊँगा।

मर्द यादगारको स्थान दिखला बीबी और लड़कीके नजदीक लेट रहा। पाँच मिनटके अंदर ही चचा रुस्तमके नथने बजने लगे।

और यादगार? संभव नहीं था, कि उसे जल्दी नींद आती। कैसे संभव था, कि माँ-बाप और वतनसे वियुक्त एक जवान एक परदेशी पहाड़में अपने भावीके लिये अनिश्चित, सन्तोषकी नींद सोये? यादगारके मनमें तरह-तरहके विचार उठ रहे थे। कितना अच्छा होता, यदि इस रातको वह गुलनारके सामने होता, उससे बातें करता, कहता-सुनता और अपने भविष्यके बारेमें सलाह लेता। वह जैसी सलाह देती, वैसा ही करता। किन्तु यह कहाँ संभव था? कन्या उसे अपनी माँके सामने ले जाकर मानो भूल ही गई। यादगारने स्वयं अपने भविष्यके बारेमें सोचना चाहा, किन्तु आगे क्या होने वाला है, इसका स्वयं उसे कोई पता नहीं था। अपने दिलमें उसने कहा—चचा रुस्तमके कथनानुसार मैं यहाँ अच्छी

तरह जीवन बिता सकता हूँ, लेकिन यदि गुलनार आज ही की तरह मुझे भूल गई, तो इस जीवनसे क्या आशा ?

यादगार जब अपने भविष्यके बारेमें कुछ न सोच सका, तो उसने अतीत जीवनपर एक दृष्टि डाली। कूलाबसे निकलना, डाकुओंके हाथमें पड़ना, माँका मरना, अज़ीमशाहकी चाकरी, अकारण बापका कर्ज़दार बनना, बापकी मौत, उसकी कब्रसे बिदाई लेना और दर्शनिहाँकी ओर भागना...एक एक घटना सिनेमाके फिल्मकी तरह उसकी मानस आँखोंके सामने फिरने लगी। यह सब एक भयानक स्वप्न था, जिसे यादगारने देखा था, नहीं तो कौन आदमी है, जो इन आफतोंको जिन्दा बर्दाश्त कर सकता। और सबके अन्तमें गुलनारसे भेंट।

किन्तु यह अन्तिम दृश्य स्वप्न नहीं यथार्थ था। ऐसा यथार्थ, जिसे यादगारने जाग्रत-अवस्थामें देखा। यह जाग्रत-अवस्था उसका सौभाग्य था, जो इतनी दीर्घ-कालके भयंकर स्वप्नोंके अन्तमें आई। उसने गुलनारके नयनाभिराम मुखमंडलको देखा, उसके अमृतवर्षी अधरोंसे स्नेहपूर्ण बातें सुनीं। वस्तुतः यादगारके लिये यह मंगल-दिन और मंगल-मुहूर्त था। अफसोस! यह मंगल-दिन, मंगल-मुहूर्त चिरस्थायी और दीर्घ नहीं हुआ। गुलनारने लाकर माँसे उसका परिचय कराया और फिर खबर तक न ली, मानो इस आदमीको उसने जीवनमें देखा ही नहीं था। यदि यही उदासीनता, यही उपेक्षा आगे भी रही, तो यादगारका भगवान ही रक्षक। यादगारको उस समय वे गजल याद आये, जिन्हें उसका बाप शोकपूर्ण घड़ियोंमें गाया करता। वह भी इस विरह-निशामें उन्हें गुनगुनाने लगा :

> परदेशीको कौन पूछे ?
> इस परदेशी सन्ध्यामें।
> सारी दुनिया बेपरवाह,
> सारा देश है बेगाना।

चक्रसमान मेरा सिर घूमे
मेरा तन बेंत-सा डोले।
मेरा हृदय अग्नि सा सुलगे
इस परदेशी सन्ध्यामें।
मेरा देश न कोई धन
नाही पूछे कोई बात।
रात-दिवस मैं रोता जाऊँ
परदेशीको कौन पूछे
इस परदेशी सन्ध्यामें ?

यादगार सोच रहा था, कि सभी निद्रामें मग्न हैं, इसीलिये वह धीरे-धीरे गुनगुनाया ; लेकिन इस बातका ध्यान रखा, कि कोई सुन न ले। उसे विश्वास था, कि सिरके नीचे रखे पत्थरके अतिरिक्त कोई और उसे न सुनेगा, किन्तु बात ऐसी नहीं थी। एक व्यक्ति दूसरा भी जाग रहा था, जिसने अपने हृदय-नेत्रको यादगारके साथ जोड़ रखा था। यद्यपि शयन-स्थानकी दूरी और रात्रिके अन्धकारके कारण वह व्यक्ति हर दस मिनट पर यादगारके पार्श्व-परिवर्तनको नहीं देख सकता था, तो भी वह उसकी इस स्थितिको महसूस जरूर कर रहा था।

जब उस व्यक्तिने यादगारके 'परदेशीकी वियोग-निशा'के करुण-क्रन्दनको सुना, तो उसका सन्देह विश्वासके रूपमें परिणत हो गया, और जानाकि अनभ्यस्त परदेसी पंछी घायल हो अर्धमृत हो चुका है। वह व्यक्ति गुलनार थी।

जिस समय दोनों तरुण-जन—यादगार और गुलनार—एक दूसरेके संमुख हुए, उनके भीतर बिजलीके दो तारोंके मिलते जैसी प्रेम-ज्वाला प्रकाशित हुई। यादगारका हृदय जितना गुलनारकी ओर आकृष्ट हुआ, उतना ही गुलनारका हृदय यादगारकी ओर आकृष्ट हुआ था। किन्तु यादगारकी वियोगाग्नि उसकी दूसरी चिन्ताओं और विपत्तियोंसे मिलकर

जल्दी अपना प्रभाव डालनेमें समर्थ हुई। वह शोक और निराशाका शिकार हुआ। जब गुलनारने उसके करुण-गानको सुना, तो उसका हृदय विकल हो गया और उस समय यदि माँ-बापके साथ न होती, तो वह भी इस करुण-क्रन्दनमें यादगारका साथ देती। हृदय रो रहा था, किन्तु उसे साँस लेनेका अधिकार नहीं; अभिलाषा विकल थी, किन्तु बुद्धिने उसे मजबूतीसे बाँध रखा था; अन्दर आग जल रही थी, लेकिन एक ठंडी साँसके निकालनेका अवसर नहीं था।

३

बदेहागोई

ग्रीष्मका समय था। भुवनभास्करने सिरके ऊपर आ बन-पर्वतको एक समान प्रकाशित और सन्तप्त कर रखा था। दोपहरका समय था, तो भी इस पर्वत-प्रदेशकी आबोहवा और मौसिम वसन्तकी भाँति कोमल और सुखद था। हरिण कभी पहाड़के डाँड़े, कभी कमरपर घूम-फिर रहे थे। मधुर-कंठ पक्षी वृक्षोंकी शाखाओंपर बैठे संगीतका अभ्यास कर रहे थे। स्वच्छ जलकी धारायें पर्वतके ऊपरसे नीचेकी ओर एक शिलापरसे दूसरी शिलापर गिरती-उछलती अपने नियमित ताल द्वारा गानमग्न विहगोंका साथ दे रही थीं। भेड़ें निद्रामें, मेमने छलाँग मारनेमें, चरवाहे-छोकरे दौड़नेमें और हरिणशावक चौकड़ी भरनेमें मस्त थे। वहाँकी प्रकृतिमें हर प्राणी, हर वस्तु अपने अंदर हर्षोत्फुल्ल दिखलाई पड़ती थी। सुबहसे दोपहर तक चराकर चरवाहोंने अपने ढोरोंको परितृप्त कर लिया था। वह उन्हें वृक्षोंकी छायामें छोड़ दो-दो चार-चार मिलकर बाँसुरी बजाने, गजल गाने, बदहागोई करने जैसे खेलोंमें निरत थे। एकने तान ली—

यार मेरा घरमें औ गिरि गिरिमें मैं रोता फिरूँ।
हृदय-बेधक क्रन्दनोंसे शिलाको रोदित करूँ।

चश्मेके पास बैठा हूँ उसके ही चश्मों सामने।
चश्मको अपने ही चश्मे-जलसे धोता रहूँ।
दिल खुश है औ फूल खुश है, बुलबुलका गीत भी खुश है ॥
वह वहाँ है मैं यहाँ हूँ विरहसे मैं रो रहा।
कौन कह सकता मुझे रोनेसे अपने दिल खुश है।

केवल यादगार इस गीत-मण्डलीमें सम्मिलित न था। वह एक मस्त चालसे चलती धाराके किनारे देवदारके नीचे बाँसुरी बजा रहा था। दूसरे चरवाहे जिन गीतों और गज़लोंको गा रहे थे, उन्हें वह बाँसुरीमें अदा कर रहा था, विशेष कर इस पदको—

वह वहाँ है मैं यहाँ हूँ विरहसे मैं रो रहा।
कौन कह सकता मुझे रोनेसे अपने दिल खुश है ॥

पदका विषय अपनी अवस्थाके अनुकूल था, इसलिये वह दूसरोंके चुप हो जानेपर भी उसे गाकर बाँसुरीमें बजाता था।

जब इस करुण-गीतसे उसे सन्तोष न हुआ, तो बाँसुरीको एक ओर फेंककर आह मारते घासपर लेट अपने विचारोंमें डूब गया। किन्तु अब उसके विचार पहलेकी तरह निराश-पूर्ण न थे; अब वह अतीतको कम याद करता और भविष्यके लिये भी अधिक चिन्तित न था। हर रोज़की ज़िन्दगी भी बुरी तरह नहीं कट रही थी। रुस्तमकी सहायतासे उसे बीस-पचीस गाय-भेड़ें मिल गयी थीं, उन्हें वह रोज चराने ले जाता था, फिर मालोंके मालिक जो कुछ साग-रोटी दे देते, वह उसके खानेसे भी ज्यादा होता। इसके अतिरिक्त दूध दही मट्ठा जितना चाहिये उतना मौजूद था। इस दर्रोमें आये दो-तीन महीने हो गये थे, अब उसके मनसे अज़ीमशाहके पीछा करनेका खतरा भी दूर हो गया था। एक तरह कह सकते हैं, कि उसका जीवन निश्चिन्त कट रहा था।

उसका ध्यान सिर्फ एक स्थानपर यानी गुलनारसे बँधा हुआ था।

पहले वह नव-यौवन-सुलभ एक मामूली आकर्षण था, किन्तु अब वह हृदय-दाहक प्रेमके रूपमें परिणत हो चुका था।

गुलनारकी छिपी सद्भावना और स्नेह-पूर्ण सहानुभूतिने प्रेमकी आगको दूना कर दिया था। लेकिन अब भी यादगारने गुलनारके सामने प्रेमको स्पष्ट तौरसे प्रकट नहीं किया था। यादगार चाहता था कि गुलनारके सम्मुख अपना दिल खोलकर रख दे, लेकिन वह डरता था, कि कहीं वह इसे पसन्द न करे। यदि पसन्द करती तो यह सौभाग्य था, किन्तु यदि नापसन्द कर दे, तो? यह सोचकर यादगार अपने आपसे बोल उठा—हाय! मेरा भाग्य! उस समय मेरी सारी आशायें निराशामें, मेरे सभी मधुर स्वप्न कटुतामें, मेरा सारा प्रेम हसरतमें परिवर्तित हो जायगा, उस समय जीवन भार हो जायगा।

आज यादगारके दिलमें बाँसुरी बजाते, गजल गाते, मालोंको चराते, बैठते या सोते हर वक्त यही विचार चक्कर काट रहे थे। बाँसुरी बजानेसे ऊबकर घासपर लेटे जब वह अपनी आँखोंको मूँदे हुए था, यह विचार और जोर पकड़ने लगे। उसके दिलने कहा—"जो भी हो आज अपने मनकी व्यथाको प्रकट करके रहूँगा" लेकिन फिर अन्देशा हुआ और तबतक धीरज धरना ठीक समझा, जबतक उसकी ओरसे इशारा नहीं होता।

इसी वक्त एक कंकड़ी यादगार की छातीमें लगी, उसने एकाएक आँखोंको खोल दिया और लेटे ही लेटे चारों ओर नज़र दौड़ाई। किसीको न देखकर फिर आँखें मूँद विचारोंके संसारमें चला गया। फिर दूसरा कंकड़ आया, लेकिन वह उसका कुछ भी न ख्यालकर अपनी जगहसे नहीं हिला। तीसरी बार कुछ बड़ासा पाषाण-खण्ड उसके पास आकर गिरा। यादगारको निश्चय हो गया, कि कोई उससे परिहास कर रहा था। उसने उठकर चारों ओर बड़े ध्यानसे देखा। देखा कि चारमग्ज़के वृक्षकी आड़में कोई छिपा हुआ है, लेकिन कौन है उसे वह पहचान न सका।

मधुर विचारोंका आनन्द लेते उसके मनको यह परिहास पसन्द न आया। वह उसे पकड़नेके लिये दौड़ा। जब यादगार वृक्षके समीप पहुँचा, तो छिपे व्यक्तिने भागनेकी जगह उसे डरानेके ख्यालसे सामने आ "वाह" कहकर अपनेको यादगारकी ओर फेंक दिया। यादगारने उसे अपने सुदृढ़ हाथोंमें थाम लिया। उन नाज़ुक नरम अंगके हाथोंमें आते ही यादगारके शरीरमें बिजली दौड़ गयी। ये नाज़ुक और नरम हाथ गुलनारके थे।

यादगारको अब भी विश्वास न था, कि वह स्वप्नकी दुनियासे दूर है, इसलिये उसने गुलनारके हाथोंको हाथमें ले आँखोंसे मलकर देखना चाहा। लेकिन इससे पहले गुलनारने कहा—क्या मेरा परिहास तुझे बुरा लगा?

—खुदा न करें कि तेरा परिहास मुझे बुरा लगे। मुझे वस्तुतः यह विश्वास नहीं हो रहा है, कि यह दौलत मुझे जाग्रत-अवस्थामें मिल रही है। अब भी शंका होती है, कि मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ?

—तो क्या तू मुझे स्वप्नमें देखकर भय खाता है?

—अधिक बात न बना, जले दिलपर नमक न छिड़क।

गुलनारने गर्व और नाज़के साथ हँसते-हँसते कहा—क्यों, तेरा दिल जल रहा है?

—अगर अब भी तुझे विश्वास नहीं, तो मेरे सीनेपर हाथ रखकर देख।

गुलनारने दाहिने हाथको यादगारके सीनेपर रखकर "आहा, मेरा हाथ जल गया" कहकर तुरन्त हाथको खींच लिया।

किन्तु गुलनारकी भीतरी अवस्था दूसरी ही थी।

यादगारका दाहिना हाथ अब उसके कन्धेपर था। वहाँ देवदारके वृक्षको तकिया बनाकर बैठी, यादगार उसके सामने बैठा था। कुछ देर तक दोनों एक दूसरेकी ओर नीरव देखते रहे।

इस नीरवताको पहले-पहल गुलनारने तोड़ा—

कबतक "मेरी अँखियाँ तेरी अँखियाँ" करके बैठे रहें। आ गज़ल या गीत गायें।

—मैं गज़ल गाना नहीं जानता। अगर तू गाये तो तेरे पीछे मैं भी गाऊँगा।

—गज़ल नहीं जानता? ना, झूठ बोल रहा है। अभी यहाँ कौन गज़ल गाता था?

—मैं नहीं जानता, तू ही बतला कौन गाता था?

गुलनारने एक कंकड़ी जमीनसे उठा यादगारकी ओर फेंकी—यही "किसने गाया" को ही गा।

—तेरे आनेपर मैं सब कुछ भूल गया। अब यदि तू गज़ल गाये, तो मैं भी अपने गज़लको याद करके सुनाऊँगा।

—खैर रहने दे। आ बदेहागोई* करें।

—अच्छा, मैं अपने वाक्योंको बदेहा करके कहता हूँ।

—कौन सी बातों को?

—यही, सुन।

—मेरा कान तेरी ओर है।

यादगारने आरम्भ किया—

मेरी अंखियाँ तेरी अंखियाँ,
गुस्सा भरी तेरी अँखियाँ।
क्या अवस्था मेरी होगी,
घायल करें तेरी अँखियाँ।

गुलनारने एक कंकड़ी यादगारकी ओर फेंकते हुए कहा—
आः तुहमतची! मैंने कब तुझपर गुस्सा किया?

---

* टोका मिलकर सवाल जवाबमें गाना।

—बात न बदल, इसका जोड़ा कह।

—अभी कहती हूँ, लेकिन यदि तू इसका जवाब न बोल सका, तो इस वृक्षसे एक कमची तोड़ तेरे पैरोंपर साट लगाऊँगी!

—ओः सरेजूयका हाकिम कहाँसे आ गया! खैर, कह, अगर मैं जवाब न बोल सका, तो जो चाहे करना।

गुलनार यादगारको इस तरह बातमें फंसा पद जोड़नेकी कोशिश कर रही थी, किन्तु कोई बात मनमें बैठ नहीं रही थी, इसलिये उसने कहा—तू और एक बार अपने गाये पदको पढ़, फिर मुझसे जवाब सुन।

यादगार—मेरी अँखियाँ तेरी अँखियाँ,
गुस्सा भरी तेरी अँखियाँ।
क्या अवस्था मेरी होगी,
घायल करें तेरी अँखियाँ।

गुलनार—तेरा हाथ औ' मेरा हाथ,
तेरा हाथ सुन्दर है यह।
क्या ही अच्छा यदि मेरे गले,
हार होए तेरा हाथ यह।

यादगार—मेरा मुखड़ा तेरा केश,
यह तेरा खुशबूय केश।
क्या ही अच्छा जो मेरे मुखड़े
पर पड़े यह तेरा केश।

गुलनारने अपने केशोंके बारेमें ये पद सुने, किन्तु उसका उत्तर उसे न सूझ पड़ा, इसलिये बदेहागोईको बदलनेका विचार करके कहा—यादगार! तू "राजकन्या"को जानता है?

—राजकन्याको यदि मैं न जानूँगा, तो कौन जानेगा?

—जानता है तो कह।

—राजकन्या तू ही तो है।

—परिहास रहने दे, सच कहती हूँ "राजकन्या" (शाह-दुख्तर) वाली ग़ज़लको तू जानता है या नहीं? आ फिर हम दोनों उसीको बदेहा (सवाल-जवाब) करके पढ़ें।

यादगार—बहुत अच्छा :

राजकन्या मधुर कन्या राजकन्यका,
भौंह अपनी दे दिखा कि मैं बनूँ गुलाम।
गुलनार—भौंहे मेरी क्यों तू देखे यार दुर्विचार,
देखा धनुष बाजार ना यह भी उस समान।
यादगार—राजकन्या मधुर कन्या राजकन्यका,
आँखें अपनी दे दिखा कि मैं बनूँ गुलाम।
गुलनार—आँखें मेरी क्यों तू देखे यार दुर्विचार,
देखा सुरमा बाजार ना, यह भी उस समान।
यादगार—राजकन्या मधुर कन्या राजकन्यका,
मुखड़ा अपना दे दिखा कि मैं बनूँ गुलाम।
गुलनार—मुखड़ा मेरा क्यों तू देखे यार दुर्विचार,
देखा कुल्चा बाजार ना, यह भी उस समान।

"यादगार! यादगार! ओ यादगार।" की आवाज़ने—जो तीस चालीस कदम दूरसे आ रही थी—दो तरुण हृदयोंके प्रेमाभिलापको उबाल खाती पतेलीपर पड़े ठण्ढे पानीकी तरह समाप्त कर दिया। इच्छा न रहते भी यादगार उठकर आवाज आनेकी जगहकी ओर गया, देखा कि चरवाहे खड़े हँस रहे हैं। एक लड़केने यादगारसे कहा—अगर आवाज़ न देता, तो शायद शाम तक बदेहागोई समाप्त न होती। हम कबके अपने मालोंको चरानेके लिये ले गये, तेरे माल भी स्वयं उठकर चरने गये। जल्दी आ, उनकी खबरदारी कर।

"अच्छा, अभी आया" कह यादगारने फिर चाहा कि बैठकर "राजकन्या" शुरू कर। किन्तु गुलनारने कहा, इस समय इतना ही

बस ! अब भी काफी देर हो गयी। मैं नवजाई गाय लेने आई थी, कि दोपहरको उसे दुहकर बछड़ेको पिलाऊँ। नहीं जानती देरके लिये माँ की कितनी झिड़कियाँ खाऊँगी और वह क्या-क्या कहेगी।

—क्या कहेगी ? कह देना कि बदेहागोई करती रही, क्यों ?

—एक बार कहकर देखूँ क्या ? शायद वह बालों तकको नोचकर रख देगी। जल्दी कर गाय पकड़कर ला दे और मैं उसे घर ले जाऊँ।

यादगार गायके लिये गया, देखा कि वह अब भी वहीं बैठी है और दूसरोंके साथ चरने नहीं गयी। वह अपने नवजात बछड़ेके लिये रुक गयी थी। यादगारको देखते ही "होः होः" करती पास आ गयी। यादगार ने उसे गुलनारके हाथमें देते हुए कहा—राजकन्याकी बाकी गजल कल गायेंगें, भूलना नहीं।

—यदि अम्मा जंजाल (झगड़ा) न करे तब।

यादगार अपने मालोंकी ओर चला और गुलनार अपनी गाय लिये घरकी ओर।

४

विरह

—रुस्तमबाय ! एक कटोरा मट्ठा ला, खलियानसे प्यासा आया हूँ—कहते अक्सकाल (चौधरी) रुस्तमके दरवाजेपर आया। रुस्तमने उसे बैठनेके लिये देवदारके नीचे लोई बिछा दी और "गुलनार ! रोटी और लस्सी ला" कहकर लड़कीको दस्तरखान लानेके लिये आवाज दी।

अक्सकालने बात अपने लड़केकी शिकायतसे शुरू की—जवाँमर्द पोलात मालोंकी अच्छी तरह देखभाल नहीं करता। भेड़ें और बकरियाँ एक मास दूध छोड़ चुकी हैं। गाय भी—जिसे ब्याये छै महिना नहीं हुआ, एक माससे बिसुक गयी। स्वयं मैं लोगोंके झगड़े झंझटमें मारा-

मारा फिरता हूँ। यदि उनके कामोंसे छुट्टी मिलती है, तो खेतके काममें लगाता हूँ। यद्यपि अपने खेतोंके अधिक भागको चारयकार-पंचयकार (बटाई) पर लगाये हुए हूँ, किन्तु यदि स्वयं देखभाल न करूँ, तो काम ठीकसे नहीं होता। आँख हटायी नहीं कि माल गायब।

—लेकिन पोलात तो हर रोज ढोरोंको चरानेके लिये ले जाता है।

—ले जाता है, लेकिन सुना कि एक चक्कर लगा छायामें उन्हें बैठा देता है, फिर ये सारे शरारती बच्चे परिहास और खिलवाड़में लग जाते हैं। जबसे इस मुसाफिर लड़केने आकर चरवाही शुरू की है, तबसे खेल और बढ़ गया है और मालोंकी कोई परवा न करता। हमराह बायके लड़केसे सुना कि यादगार हर रोज झरनेके किनारे बैठकर बाँसुरी बजाता है, दूसरे बच्चे उसका साथ देते हैं। कल यादगार और गुलनारने बदेहागोई की। दूसरे लड़के भी उनकी बदेहागोई सुननेमें लगे थे। मालोंके चरानेकी कौन परवा करता है?

गुलनार एक कटोरा लस्सीके साथ रोटी और दस्तरखान ला बाप और अक़सक़ालके सामने रखकर चली गयी, गुलनारके दूर चले जाने पर अक़सक़ालने फिर बात शुरू की—तुम्हारी लड़की रुस्तम बाय! सयानी हो गयी। लोग इधर-उधरसे मँगनीके लिये आ रहे हैं। हमराह बाय चाहता है, उसे अपने लड़केके लिये। मेरे विचारमें यदि बाय किसीको भेजे, तो इन्कार न करना। बाय एक धनी-मानी आदमी है। उसके साथ सम्बन्ध करना बहुत अच्छा होगा। वह तुम्हारी इच्छा-पूर्ति करेगा, अच्छा महर (बधूधन) देगा, तुम्हारी आबरू बढ़ायेगा।

रुस्तमने कहा—भाग्य जाने, अभी मैं शादीका ख्याल नहीं करता। माँ बेचारी अकेली और बूढ़ी है। बड़े-बड़े सारे काम गुलनार करती है। वह मेरे खेतीके कामोंमें भी हाथ बटाती है। यदि उसे शादी करके बिदा कर दिया, तो हम बेकस हो जायेंगे। भाग्य मदद करे, तो मेरी इच्छा

है, कि एक योग्य जवानको लाकर घर-दामाद बनाऊँ, जिसमें एककी जगह दो सन्तान हो, बुढ़ापेमें हमारी मदद करें।

—जवान लड़कीको योग्य दामाद पानेकी आशामें घर बैठाये रखना या उसे अपने ऊपर छोड़ रखना बिल्कुल ठीक नहीं है। चाहे वह कितनी ही सुशीला और इज्जतदार हो, किन्तु छिद्र ढूँढ़नेवालोंके मुँहको कौन बन्द कर सकता है? शायद तुमने नहीं सुना, वह चरागाहमें जाकर मुसाफिर जवानके साथ बदेहागोई करती है। अभी ही इस बातकी चर्चा बहुत है। यदि जल्दी इसे न रोका और किसीके साथ लड़कीकी सगाई करके लोगोंका मुँह बन्द न किया, तो वे झूठी-सच्ची कहानियाँ गढ़कर मुफ्तमें बदनाम करेंगे। यदि मैं जानता कि तुम उस जवानको लड़की देना चाहते हो, तो कुछ नहीं कहता; लेकिन मुझे विश्वास है, कि तुम ऐसा नहीं करोगे। अपनी गुलाब जैसी लड़कीको एक आवारा-मुसाफिरके हाथमें तुम कब देना पसन्द करोगे? बुरा न मानना, मैंने यह बात दोस्त और भाईके तौरपर कही। मैं चाहता हूँ कि एक धन-धान्य-सम्पन्न दामादको देकर तुम्हें प्रसन्न और भाग्यवान बनाऊँ। मेरे विचारमें हमराह बायके लड़केसे बढ़कर अच्छा और धनाढ्य दामाद नहीं मिलेगा। तुम इसपर खूब सोचो और अपनी स्त्रीसे सलाह करो। जो भी हो सबसे पहिले यह ज़रूरी है, कि लड़कीका मुसाफिर लड़केसे मेल-जोल बन्द करो। मैं फिर कल तुम्हारे पास आऊंगा—यह कह अक़सक्काल अपने कामपर चला गया।

× × ×

अक़सक्कालकी बातने यादगारके भाग्यको उलट दिया और फिर उसे मा-बापके देखते गुलनारसे बात करनेका अवसर नहीं मिला। अगले दिन जब रोजकी तरह मालोंको लेनेके लिये यादगार आया तो रुस्तमने उससे कहा—बच्चा! अब मेरे मालोंको चरानेकी जरूरत नहीं, खेतसे जो कुछ घास-वास लाता हूँ, वह इनके लिये काफ़ी है; जा अपना काम कर।

मानो यादगारके सिर पर आसमान फट पड़ा, लेकिन उपाय क्या था? अधमरेकी तरह वह रुस्तमके सामनेसे उठा। उसके जानेके बाद रुस्तमने लड़कीको बुलाकर कहा—गुलनार! अब तू सयानी है, खुद अपनी राहको सफ़ेद कर। इसके बाद परदेसी जवानके साथ बातचीत करना ठीक नहीं।

यादगारके लिये विरहका दिन, हृदय जलानेका दिन आरम्भ हुआ। यह ऐसा विरह था, जहाँ मिलनकी कोई आशा न थी। उसने दोनों जनोंकी दशाको दयनीय बना दी, और ज्वाला न बन भूसेकी आगकी तरह अन्दर ही अन्दर सुलगना शुरू किया।

एक सप्ताह और बीता। सारे सप्ताह दोनों प्रेमी एक दूसरेको न देख सके। विरहका यह सप्ताह उनके लिये सालसे भी बड़ा था। ऐसा साल जिसमें दिन नहीं निराशाकी एक ऐसी अँधेरी लम्बी रात थी, जिसके खतम होनेपर आशाके प्रातःकालके आनेका कहीं पता न था।

जब यादगारको हमराह बायके लड़केके साथ गुलनारके सम्बन्ध होनेका पता लगा, तो उसका धैर्य टूट गया। यही कारण था कि वह ढोरोंको छोड़कर चट्टानकी आड़से गुलनारके आनेकी बाट जोह रहा था। उसने गुलनारको इस सम्बन्धके लिये बधाई दी, स्वयं भी यसावुलका बन्दी बना।

५

सूद-महासूद

आज अजीमशाहकी हवेलीमें भोजकी तैयारी थी। आलवानका सुन्दर दस्तरखान बिछा था। गद्देके ऊपर महल्लेके मुल्ला इमाम, एक ओर अक्सक्काल और दूसरी ओर यसावुल अलीमर्दांबेक बैठे हुए थे।

अजीमशाह खुद नीचेकी ओर बैठे प्यालोंमें चाय डालकर मेहमानोंके सामने रखते बार-बार पीनेके लिये निवेदन कर रहे थे।

सभाका सरदार अलीमर्दी था, कैसे दर्रानिहा गया, कैसे बहादुरीके साथ भगोड़े चरवाहेको पकड़ा इत्यादि बातें वह खूब नमक मिर्च लगाकर कह रहा था। इसी बातके दर्मियानमें उसने एक परमसुन्दरी कन्याके दिखाई देने और यादगारके साथ प्रेमका जिक्र करते उसके सौन्दर्यकी खूब प्रशंसा की।

दमुल्ला इमामने कन्याके सौन्दर्यकी प्रशंसा सुनकर मुँहमें भर आये पानीको चाटते हुए कहा—या अल्ला, क्या यह सच है!

यसावुल—जो कहा उससे भी ज्यादा सुन्दर, मैं समझता हूँ जनाबआलीके उर्दा (अन्तःपुर)में भी इस तरहकी सुन्दरी शायद ही हो।

इमाम—एक तीरसे दो शिकार करते तो क्या अच्छा न होता?

—सिपाहीकी नजरसे सोचकर मैंने वैसा करना पसन्द नहीं किया, लेकिन इरादा कर लिया, कि इस षोड़शीको हाथ लगाऊँगा। अब तो खैर उसकी माँग बड़ी जगहोंसे हो रही है। जब मैंने उसकी प्रशंसा जनाब मीर (गवर्नर)से की, तो उनकी नजर गड़ गयी। अब उनके सामने अपने लिये मैं कैसे मुँह खोल सकता हूँ।

—और मेरा भगोड़ा भी हाथ लगा—कहते अजीमशाह भी बीचमें बोल उठे—धन्यवाद। अब उसके बारेमें सोचना है।

इमाम—इस लड़केके पास न यहाँ और न कूलाबमें ही पैर रखनेकी जगह है। यदि कोई रास्ता न निकला, तो जनाब यसावुलका खिदमताना भी मारा जायगा।

अजीमशाह—इनका खिदमताना पहिलेसे ही अलग रखा हुआ है, मेरे हककी बात कीजिये। मैं भी इस जवानसे पैसेकी आशा नहीं रख सकता, क्योंकि मैं जानता हूँ, कि वह पैसा नहीं दे सकता। लेकिन कोई

ऐसा रास्ता निकालना चाहिये, कि कुछ साल मेरा काम करे। मेरे लिये बस, इतना ही काफ़ी है।

यसावुल—इसके बारेमें आपने क्या सोचा है ?

अजीमशाह—मेरी रायमें उसे हवालातमें रखने या बुखाराके जेलमें भेजनेसे कोई लाभ नहीं। यदि अपनी राजी-खुशीसे काम करना कबूल न करे, तो इससे भी फायदा न होगा; क्योंकि कबतक हम उसके पीछे-पीछे रहेंगे। आज रहेगा और कल भागकर अपना रास्ता लेगा। मेरे ख्यालमें अच्छा यही है, कि पहिले उसे बुखाराके जिन्दान और काना खाना (खटमल-घर)में आजीवन कैद और जनाबआलीके दार-मीनार (फाँसी)का भय दिखलाना चाहिये। यह काम आप यसावुल साहब खुद और अक़सक्काल कर सकते हैं। दूसरे यह है, कि कब्र और कयामत, (नरक-यातना)से डराकर उसे कर्ज अदा करनेके लिये चाकरी करनेकी बात करें। और यह काम दमुल्ला साहब अच्छी तरह कर सकते हैं।

दमुल्लाने सीनेपर हाथ रखते—सिर आँखोंपर।

यसावुल—अच्छा, ख़िदमताना और दूसरे खर्च कौन देगा ?

अजीमशाह—खिदमतानाकी फिक्र न कीजिये। पहिले जरूरी यह है, कि लड़केको अच्छी तरह डरा-धमकाकर उसकी नाकमें दम कर दिया जाय। खिदमताना भी मेरे हाथसे लेना ठीक नहीं। इसके लिये अक़सक्काल लड़केके नाम पर खारवाजीसूद पर कुदरत समावारचीसे कर्ज़ लें। झगड़ा खतम होने पर जब लड़का मेरी चाकरी करने लगेगा, तो मैं खुद कर्ज बेबाक कर इसका भी एक और दस्तावेज लिखवा लूँगा।

× × ×

अगले दिन यसावुल अक़सक्कालको साथ ले जेलखानेके दरवाजेपर गया और अक़सक्कालसे बोला—आप लड़केके पास जा हर तरहकी बात करके उसे सुलहके लिये राजी कीजिये और सबसे पहले मेरा

खिदमताना माँगिये। यदि वह इस पर राजी न हुआ, तो मैं खुद आकर उसकी हड्डी-पसली तुड़वा आँखें निकलवाता हूँ।

अक़सक्काल जेलखानाके अन्दर जाना चाहता था, कि इमाम उधरसे आया। अक़सक्कालने उससे पूछा—हाँ, क्या ख़बर तक़सीर! नरम हुआ या नहीं?

—शरीयत (धर्म) क्या है, इसे वह बदमाश लड़का कुछ जानता ही नहीं। उसे बस इसी दुनियाके दण्ड-सासतको दिखलाना चाहिये। क़ब्र और कयामतको वह एक पैसेपर भी ख़रीदनेको तैयार नहीं।

—अच्छा तकसीर!—हँसते हुए अक़सक्कालने इमामसे कहा—चायका पैसा तो आपने हलाल कर दिया, अब जाकर वज़ू और नमाज़में लग जाइये, इस कामको मैं खुद करता हूँ।

इमामने अपना रास्ता लिया, अक़सक्कालने यादगारके पास जाकर ताना मारते कहा—ग़ाज़ी (धार्मिक-योद्धा) निरंकुश लड़का यही है! ख़ुदाने अच्छा किया जो खुद मालिक बीचमें पड़े, नहीं तो अब तक बुखाराके जेलमें भेज दिया गया होता। मैं तेरे बापकी आत्माके खातिर तेरे पास आया हूँ, कि इस कामको अच्छी तरह निपटा दूँ। लेकिन इस कामके लिये कोशिश करनेसे पहिले यसावुलको खिदमताना देना जरूरी है। कहींसे बीस तंका लेकर उसे अदा कर।

—मैं कहाँसे ख़िदमताना लाकर दूँ? फिर यसावुलने मेरी क्या खिदमती की? खिदमत यही की कि मुझे बन्दी बनाया, मेरे सिरपर कोड़े मारे।

—लड़के! अभी तू सयाना नहीं हुआ है, दुनियाँकी चाल व्यवहारको नहीं जानता। चाल यह है, कि ख़िदमताना अपराधी देता है। यदि तू न भागता तो न गुनहगार होता और न ख़िदमताना देता। अब जब तूने खुद ऐसी बेवकूफी की, तो अपने कियेकी दवा कर और इसका दंड भी अपने गर्दनपर ले।

—मेरे पास घर-जमीन नहीं है, कि बेंच कर खिदमताना दूँ, मुझे भला कर्ज कौन देगा ?

—तू खिदमताना देनेके लिये राजी हो, दूसरी बातकी फिक्र मत कर। तेरे नामसे कर्ज लेने और तेरे बापकी आत्माके लिये इस कामको पूरा करनेका जिम्मा मैं लेता हूँ। केवल इतना ही कबूल कर, कि इस झगड़ेमें जो कुछ खर्च आयेगा, उस सबको तू अपनी गर्दनपर लेनेको तैयार है।

—यादगारने जमीनकी तरफ मुँह गाड़े जवाब दिया—इसे आप ही पर छोड़ता हूँ, लेकिन जरा जल्दी मेरे हाथ-पैर में जड़े कुन्देको नरम कराइये। मेरे पास बिल्कुल ताकत नहीं है।

—तू अपना अधिकार मेरे हाथोंमें सौंप और मेरी बात मान। मैं जहाँतक हो सकेगा, कोई बात उठा न रखूँगा।

अकसक्काल जेलसे बाहर आ कुदरतके समावारखाने (चाय खाने)में गया, यसावुल भी वहाँ मौजूद था। उसने पूछा—शेर बने या बिल्ली ?

—आप और जनाब मीरकी बदौलत मैं कब बिल्ली बना, कि इस वक्त बनूँगा। अभी खिदमताना आ रहा है। कल मुकदमा भी खतम करेंगे। लेकिन कल आप भी मेरे साथ जेलखानामें रह जरा सिपाहियाना हाथ दिखलायें।

—कल नहीं तो परसों। जितना ही अधिक दिन वहाँ रहेगा, मेरा खिदमताना भी उतना ही बढ़ेगा।

अकसक्कालने कुदरतको बुलाया और खुद बीचमें पड़ यादगारके नामसे पाँच तंकापर एक तंका हररोज सूदपर पचीस तंका कर्ज लिया। उसमेंसे बीस तंका यसावुलको दे पाँच तंका अपने खीसेमें डाल लिया। दूसरे दिन अकसक्काल और यसावुल दोनों जेलमें पहुँचे। कुन्दामें कसकर बँधे रहनेसे यादगारके हाथ पैर फूल आये थे। अकसक्कालने "अफसोस"

करते यसावुलसे कहा—इस जवानकी जानपर दया करके कुन्देको जरा ढीला करवाइये।

—बहुत अच्छा, आपकी खातिर मैं इसे करवाता हूँ, लेकिन जेल-दारोगाको कुछ देना चाहिये।

—यह सेवामें खुद दिलोजानसे करूँगा।

यसावुलने जेल-दारोगाको बुला कुन्दा ढीला करनेको कहा, दारोगाने अक़सक्कालकी तरफ नजर लगायी। अक़सक्कालने जेबसे पाँच तंका निकालकर उसके हाथमें रखते हुए कहा—इस लड़केके बापकी आत्माको शान्त कीजिये।

दारोगा कुन्दाको ढीला कर अपने कामपर चला गया। अक़सक्कालने यादगारसे कहा—तेरी ओरसे यसावुल साहबसे निवेदन, किया कि जनाब मीरसे कहकर तेरे कसूरको माफ करायें। लेकिन शर्त यह है, कि तू अपने मालिकके पास दस साल चाकरी करे, उसके बाद तेरी मर्जी, जहाँ चाहे वहाँ जा।

यादगार—मैं कलतक इस बातपर सोचना चाहता हूँ।

—हर रोज क्या हर घंटा जो बीत रहा है, वह तेरे बोझको भारी कर रहा है। कल कुदरत समावारचीसे सूदपर पचीस तंका तेरे नामपर कर्ज लिया। आज पाँच तंका सूदके साथ तीस तंका हो चुका है। कल पैंतीस होगा और आगे इसी तरह बढ़ता जायगा। तूने अभी देखा, पाँच तंका मैंने दारोगाको दिया। यसावुल साहबसे भी "मैं जानता मेरा बाप जानता" कहकर इनकारी नहीं हो सकता था। जितना ही जल्दी झगड़ा मिटे, उतना ही अच्छा। तेरी भी जान छूटेगा और बायको भी अपना हक़ मिलेगा।

यसावुलने बीचमें बोलते हुए कहा—अक़सक्कालकी बातपर तू राजी भी हो, तो भी यह मालूम नहीं कि मीर साहब राजी होंगे या नहीं। हाँ, तेरे मालिक सचमुच बड़े दयालु पुरुष हैं। कल उन्होंने मेरे

पास आकर कहा "मैंने यादगारके कसूरको माफ़ कर दिया, आप भी उसके कसूरको माफ करके उसको छोड़ दें, जिसमें वह आकर मेरे घरमें बापकी जगह काम करे"। मीर साहब तो कह रहे हैं, कि इस लड़कोको बुखारा जनाबआलीके हाथमें भेज देना चाहिये, वहाँ शरीयत-शरीफ (सद्धर्म)के अनुसार चाहे दार (शूली) पर खींचेगें या मीनारके नीचे गिरायेंगे या यदि जान बख़्शा तो आजन्म बन्दी बना बन्दीखानेमें डाल देंगे। मीर साहब बहुत हठ कर रहे हैं, लेकिन तू यदि अक़सक्कालकी सलाह माननेके लिये तैयार है, तो मैं, अक़सक्काल और तेरे मालिक मिलकर किसी तरह मीरको राजी कर लेंगे।

यादगारको दार, मीनार और आजन्म बन्दीखानासे कोई भय न था, लेकिन एक बात थी जो उसे मुक्त होनेके लिये मजबूर कर रही थी, वह थी गुलनारके लिये कुछ करना और उसको एक बार फिर देखना। यादगार यदि पहले अपनी खातिर गुलनारको देखना चाहता था, तो अब खुद गुलनारके खातिर ऐसा करना ज़रूरी था। गिरिफ्तारीके दिन गुलनारने सिद्ध कर दिया, कि वह यादगारके साथ सच्चा प्रेम रखती है। यादगारने अपने मनमें सोचा—"यह नामर्दी होगी, यदि मैं उसकी खातिर मुक्त होनेकी कोशिश न करूँ। आगे जब भी मन होगा, अज़ीमशाहकी गुलामीसे भाग निकलना मेरे हाथमें है।

यादगार राजी हो गया। यसावुल और अकसक्कालने जाकर उसके नामसे डेढ़ सौ तंका और कर्ज लिया, जो हाकिम, जेलदारोगा, यसावुल, अकसक्काल और इमामके अन्दर बाँटा गया। यादगार जेलसे निकल अज़ीमशाहकी गुलामीमें पड़ा। कुदरतका पैसा सूदके साथ दो सौ तंका हो चुका था। इस रक़मको पुराने कर्जके साथ जोड़ एक हजार तंकाका करारनामा उसने बायके नाम लिख दिया; जिसमें शर्त यह थी कि वह पूरे दस चान्द्र वर्ष काम करके हर साल सौ-सौ तंकाके हिसाबसे मालिकका कर्ज़ बेबाक कर देगा।

आयने बुखारा जानेके लिये भेड़ें जमाकर रखी थीं। दूसरे दिन वह यादगारसे भेड़ें हँकवा बुखाराके लिये रवाना हो गया।

६

दो मँगनियाँ

—फ़ीरोजा! तुझे क्या हो गया है? तेरे मेहमान आ रहे हैं—कहती सलामत बीवी रुस्तमके घरमें दाखिल हुई। गुलनारके सिरहाने बैठी फ़ीरोजा आँसू बहाते बोल रही थी—बच्चीका सारा शरीर आगमें पड़े लोहेकी तरह जल रहा है। ऐसी हालतमें उसकी मंगनीका विधि-विधान करना बिल्कुल उचित नहीं। ददश (पति) एकबग्गा आदमी है। अक़सक़ालने हमराह बायकी ओरसे मँगनी माँगी, उसने 'हाँ, कह दिया और अब बच्चीकी बीमारीका कुछ भी न ख्यालकर काम करनेको तैयार है। मैं इस समय रोगीकी शुश्रूषा करूँ या मेहमानोंकी खातिरदारी?

सलामत बीबीने गुलनारके माथेपर हाथ रखकर कहा—कुछ नहीं हुआ है, सिर्फ उस दाढ़ीजार यसाबुलसे डर गयी है। मैं कल एक अलस (टोना) कर छोड़ती हूँ, फिर "तूने देखा मैंने न देखा" हो इसकी बीमारीका कहीं पता न रह जायेगा। जल्दी आ, आश (मांस-खिचड़ी) तैयार करें। मँगनीवाले आना ही चाहते हैं।—सलामत बीबी उठकर चूल्हे और देगकी ओर चली गयी।

× × ×

रुस्तम देवदारके नीचे पानी छिड़ककर कम्बल बिछा रहा था, इसी वक्त इमाम, अक़सक़ाल और दर्रेके कुछ दूसरे बड़े-बूढ़े आये। रुस्तमने मेहमानोंको स्वागतम् कह फ़र्शपर बिठाया। अभी दस्तरखान नहीं फैलाया गया था, कि शहरकी ओरसे एक गदहसवार आता दिखलाई पड़ा। पोलात मेहमानोंके जूतोंको ठीकसे रख रुस्तमके पास खड़ा था। सबसे पहले

उसकी नज़र सवारपर पड़ी। वह बोल उठा—आका कुदरत जैसा मालूम होता है।

—कौन कुदरत ?—अक़सक्कालने पूछा।

—वही कुदरत, समावारची—कहकर पोलातने खूब गौरसे देखकर कहा—हाँ वही हैं।

इमाम—खुदा बढ़ावे। कहते हैं, कुदरत बड़ा बाय हो गया है। जब दर्रासे गया था, तो उसके पास कुछ भी न था।

अक़सक्काल—क़ाज़ीखानामें पाँच तंकापर एक तंका सूद्का व्यवहार और हाकिम-खानामें चप्पी लगाना हर आदमीको बाय बना देता है।

कुदरत आ पहुँचा। सबने खड़े हो बगलमें ले उससे सलाम-दुआ की और गद्देपर लेजाकर बैठाया।

इसी बीच दस्तरखान भी बिछ गया। रोटियाँ तोड़ी गयीं। मिठाई जगह जगह रखी गयी और प्यालोंमें चाय डाली जाने लगी।

इमाम—कुदरत बाय ! बहुत अच्छे समय पहुँचे, यज्ञके शुरू होते ही आये। भगवान् करें तुम्हारा कदम मुबारक हो।

कुदरत—किस तरह का यज्ञ ?

—रुस्तम बाय हमराह बायके पुत्रको अपना दामाद बनाने जा रहे हैं—कहकर अक़सक्कालने जवाब दिया।

कुदरतके चेहरेका रंग बदलने लगा, लेकिन उसने बाहरसे हर्ष प्रकट करते हुए कहा—ओहो, खुदा मुबारक और भला करे।

अक़सक्कालने कुदरतके चेहरेको बदला देखकर उससे कहा—कुदरत ! कुछ चिन्तितसे मालूम होते हो, खुदा न करे, क्या किसी खास काममें आये हो। कुदरतने अक़सक्कालके शकको दूर करनेकी कोशिश करते हुए कहा—नहीं, कोई बात नहीं है।

अक़सक्कालकी बातसे दूसरोंका भी ध्यान उधर गया और उन्होंने भी कुदरतकी परिवर्तित अवस्थाको देखा।

दस्तरख्वानपर भोजन आनेसे पहले ही कुदरत फातिहा पढ़ आराम करनेके बहाने उठकर एक ओर चला गया और रुस्तमको भी पास आनेका इशारा किया। दोनों आगे पीछे मेहमानोंसे दूर जा एक गढ़ेसी जगहमें बैठे। कुदरतने बात आरम्भ की—आका रुस्तम! तेरे घरपर सौभाग्य-सूर्य उदय होना चाहता है, उसका संवाद लेकर मैं तेरे पास आया। लेकिन ऐसे समय पहुँचा, कि सौभाग्य-सूर्य तुझे वंचित रखकर चला जाता। तो भी भगवान्‌की दयासे अभी कुछ बिगड़ा नहीं है। अभी उसे लौटा लानेका अधिकार तेरे हाथमें है। लेकिन मालूम नहीं तू सौभाग्यको स्वागत करना चाहता है या ठुकराना।

रुस्तम—एक ओर मेरी बच्ची बीमार है। दूसरी ओर अपनी इकलौती संतानको दूसरेके घर देनेका काम; दोनोंने मुझे बहुत परेशान कर रक्खा है। ऐसी अवस्थामें तेरी पहेली बूझनेकी मुझमें शक्ति नहीं। भगवान्‌के लिये अपनी बात ताजिकी (सीधी-सादी) बनाकर कह, कि मैं भी समझूँ। बुखाराके व्यापारियोंकी तरह ज़बानबाज़ी करना छोड़।

—सीधे-सादे तौरपर बात यह है, कि पिछले सप्ताह अलीमर्दी बेक यसावुल अपने कामसे यहाँ आया था। उसने तेरी कन्या देखी। बातचीतके बीच उसने उसके सौंदर्यकी प्रशंसा हाकिमसे की। हाकिमकी दो बीबियाँ मौजूद हैं, लेकिन बड़ी बीबी बूढ़ी और बेकार है। छोटी जवान होनेपर भी सदा बीमार रहती है। इसलिये हाकिमकी इच्छा पहले हीसे थी, कि पर्वतस्थलकी एक स्वस्थ एवं सुन्दर लड़कीसे विवाह करे। यसावुलके मुखसे तेरी कन्याकी प्रशंसा सुनी, तो उसकी इच्छा और बढ़ गई। उसने यह काम यसावुलको सुपुर्द करते कहा—'इस कामके लिये कन्याको जबर्दस्ती पकड़ मँगाना बिल्कुल उचित नहीं, क्योंकि मैं यह काम वासनाके लिये नहीं कर रहा हूँ, बल्कि मैं एक जीवन-संगिनी नारीको स्वीकार करना चाहता हूँ। इसलिये दर्राके किसी निवासीको ढूँढ़, जो बीचमें पड़कर माँ-बापकी स्वीकृति हासिल करे, हम महर (वधू धन) और यज्ञ-खर्च दे

बड़े ठाट-बाटसे रीति-रिवाजके अनुसार ब्याह करेंगे।' यसावुलके साथ मेरी पुरानी दोस्ती है। उसने इस कामके लिये मुझे तेरे पास भेजा। मैं स्वयं यहाँ आकर इस जमावड़ेको देखकर हैरान हूँ। नहीं मालूम तू क्या सोचता है।

रुस्तम—प्रथम तो मैं एक गरीब आदमी हूँ। कहाँ मैं और कहाँ विलायतके हाकिम (गवर्नर) के साथ शादी-संबंध? दूसरे यह कि मेरे घरमें केवल एक ही संतान है। अगर उसे भी आँखोंसे दूर भेज दूँ, तो मेरी और उसकी माँकी क्या हालत होगी? तीसरे यह कि हमराह बाय उसपर नजर गड़ाये हुए हैं और अक़सक़ाल बीचमें पड़ा है। उन्होंने चीजें भी तैयार कर ली हैं। आज वह मँगनीके लिये आये हैं। अब किस मुँहसे कहूँ, कि मैं तुम्हें अपनी लड़की नहीं दूँगा? तू स्वयं जानता है कि इस दर्राके लोग नाखून और माँसकी तरह एक-दूसरेमें घुले-मिले हैं। अब तू बतला कि मैं क्या करूँ?

कुदरत—गरीबकी लड़की हाकिमके घर जाय, इसमें कोई दोष नहीं, यह तो बल्कि गर्वकी बात है। लड़कीके दूर जानेके लिये भी डरनेकी जरूरत नहीं। हाकिम तेरा दामाद होगा, तो तेरे पास घोड़ा और सवारी होगी। जिस दिन चाहेगा जाके लड़कीको देख सकेगा। यदि चाहेगा तो शहरमें अपना घर-स्थान बना लेगा। रही बाय और अक़सक़ालकी बात, इसकी दवा मेरे पास है। यदि तूने अपनी लड़कीकी मँगनी किसी गरीबके साथ की होती तो मुश्किल होता, क्योंकि वह न तो आसमानसे भय खाते हैं न जमीनसे। हाकिमों-काज़ियोंको वह एक पैसेपर भी खरीदनेको तैयार नहीं। लेकिन अर्बाब-अक़सक़ाल धनी-मानी हाकिमसे अलग नहीं हो सकते। उनकी सारी दौलत-व-इज्जत हाकिमकी मेहरबानीसे है। जब हाकिम उनपर अनुग्रह करता है, तो फिर वह हाकिमकी एक बातको दो कैसे कर सकते हैं? बाय और अक़सक़ाल उसकी बातपर राजी न होकर कहाँ रहेंगे? अपने काममें उन्हें हर वक्त हाकिमकी सहायता आवश्यक

होती है। फिर वह कैसे हाकिमको रुष्ट कर सकते हैं ! इस काममें सिर्फ तेरी स्वीकृति चाहिए।

—बहुत अच्छा, कुदरत ! मैं और कुछ नहीं जानता। तू ही सब ठीक-ठाक कर। लेकिन ऐसा उपाय कर कि बाय और अक़सकाल मुझपर नाराज न हों।

—इसके लिये खातिरजमा रह 'सिपाहगरीके तीस पैर होते हैं', नहीं सुना ? मैं खुद सिपाही नहीं हूँ, लेकिन चन्द सालोंसे सिपाहियोंकी पत्तल चाटता रहा हूँ। ऐसी उपाय करूँगा कि 'लाल भी हाथ आयें और यार भी नाराज न हो।'

रुस्तम और कुदरतके वार्तालापको बढ़ते देख मेहमानोंके दिलमें तरह-तरहके संदेह पैदा होने लगे। अक़सक्कालको पहिले ही कुदरतके रंग-ढंगसे शक पैदा हो गया था। वह हाल जाननेके लिये मेहमानोंके पाससे उठकर उनके पास आ मजाक करते हुए बोला—हाँ क्या बात है ? तुम लोग यहाँ अंडा देकर चूज़ा निकाल मेहमानोंके लिये कबाब तैयार करनेके प्रयत्नमें तो नहीं हो ?

कुदरतने सारी बात अक़सक्कालसे कहकर उपसंहार करते हुए कहा—यदि लड़कीका भाग्य और नसीबा हाकिमके घर जानेका है, तो तुझे भी हाकिमके अनुरूप ही भेंट-उपहार मिलेगा।

अक़सकालने उत्तरमें कहा—जो भी हो, इस बातको इस जलसेमें खोलना ठीक नहीं है, क्योंकि बात सर्व-साधारणमें फैल जायगी और आश्चर्य नहीं कि 'हाकिमको क्या हुआ है, कि हमारे दर्रासे लड़की निकालकर ले जाना चाहता है' कहकर उपद्रव करनेके लिये तैयार हो जायँ। फिर तो रुस्तम, हमराह बाय और बड़े बूढ़ोंको एक तरफ छोड़ दर्राके भुक्खड़ इज्जत मानके नामपर उठ खड़े होंगे। तब हाकिम भी हमसे नाराज होगा। हमारे शिरपर डंडे टूटेंगे और बदनामी अलग होगी। इसकी दवा यही है कि लड़कीकी बीमारीका बहाना करके इस

मँगनीकी मजलिसको स्थगित कर दिया जाय। इसके बाद अँधेरी कोठरीमें हमराह बाय और ग्राम-ज्येष्ठकों (बड़े-बूढ़ों)के साथ बात करके सारा काम ठीक कर लें। तब किसीको शिकायत नहीं रहेगी। और सर्वसाधारणमें भी गौगा नहीं फैलने पायेगा। हमराह बाय भी इस बात पर राजी हो जायगा। अगर उसे अपने लड़केकी मँगनी करनी है, तो उसके लिये यहाँ लड़कियोंका अकाल नहीं है। उसके पास पैसा है, फिर कौन उसे अपनी लड़की नहीं देगा। नहीं सुना है "पैसा हो तो जँगल में भी शोरबा।"

७

ब्याह (निकाह)

सरेजूयमें कुदरत समावारचीकी हवेली कालीन, गेलम्, अदरस और शाहीके गद्दोंसे सुसज्जित थी। कुदरत इस सारे सामानका मालिक न था। हाकिमखाना (गवर्नर-भवन)से इन सब चीजोंको लाकर कुदरतकी हवेलीको प्रासादमें परिणत कर दिया गया था। यसावुल हाकिमके सिपाहियोंके साथ हाथ-बाँधे सेवाके लिये तैयार थे। स्वयं कुदरत भी आज हाकिमके दिये हिसारी रेशमी जामाको पहने दुलहिनके बापकी तरह कभी भीतर और कभी बाहर जा सिपाहियों और यसावुलोंको कामके लिये हुक्म दे रहा था।

इससे साफ है, कि कुदरत अपने प्रयत्नमें सफल हुआ। हमराह बायने गुलनारको बहू बनानेका विचार छोड़ दिया। ग्राम-ज्येष्ठोंने गुलनारको हाकिमके हाथोंमें सौंप उसे अपना सम्बन्धी बनाना पसंद किया। उसके बाद कुदरत अक्सकालके साथ सरेजूय आ भोजके सारे सामान ले दर्राके लोगोंको एक बड़ी दावत दी। माँ-बाप और दूसरे सम्बन्धियोंके साथ गुलनारको सरेजूय लाया। असली यज्ञ और निकाह

यहाँ होनेवाला था। रुस्तमका सरेजूयमें कोई घर न था। इसलिये निकाहका प्रबंध कुदरतके घरमें किया गया था। इसीलिये आज वहाँ इतनी चहल-पहल थी।

गुलनारको कुछ समझ न आ रहा था, कि यह देना-लेना, आना-जाना, चीजोंका इधरसे उधर उधरसे इधर फेरना-फारना क्या है। यादगारके पकड़े जाने और हमराह बायके लड़केके साथ अपनी सगाईकी बात सुनकर उसके हृदयको बहुत आघात लगा और वह बीमार पड़ गई थी। वह न समझ सकी, कि किस भाग्यने पलटा खाया और यह यज्ञ उठ खड़ा हुआ, जिसके लिये वह सरेजूय लाई गई। यह अवश्य उसके लिये सौभाग्यकी बात थी। क्योंकि उसे मालूम था, कि यादगार भी सरजूयमें है, यद्यपि जेलमें है लेकिन है सरजूयमें। कहा जाता है, कि वह स्वयं अपनी भावी पत्नीको हाकिमको दे रहा है, यह खेदजनक जरूर है, लेकिन गुलनारको आशा थी, कि जैसे वह हमराह बायके लड़केसे मुक्त हुई, उसी तरह शायद हाकिमके हाथसे भी छुट्टी पाये। गुलनार भय और खेदके समुद्रमें डूबती निराशा और बेबसीके भँवरमें चक्कर काटती अपनी इच्छाके विरुद्ध सरेजूय लाई गई थी।

आजकी रात निकाहकी रात थी। शामकी नमाज़के बाद हाकिम-खानेके अमले, महल्लाके इमाम और बड़े-बूढ़े कुदरतकी हवेलीमें आये। जलपान हो चुकनेपर अलीमर्दानै इमामके सामने अपनेको निकाहमें हाकिमकी ओरसे वकील बनाया जाना दो गवाहों द्वारा सिद्ध किया। अब गुलनारकी ओरसे वकील बनाना जरूरी था। कुदरत गुलनारके बापकी ओरसे मुकर्रर हो दो गवाहोंके साथ हवेलीके अंदर आया, कि गुलनारसे इसके बारेमें स्वीकृति ले। घर एक छोरसे दूसरे छोर तक स्त्रियोंसे खचाखच भरा था। आगे-पीछे, सामने, पीठसे पीठ, जाँघसे जाँघ, कँधेसे कँधा मिलाये स्त्रियोंका बैठना उस जमानेके

बुखाराके ऐसे जलसोंका एक नमूना था; एक दूसरेकी बातको न सुनने दे उनका बराबर बोलते जाना भी उसीके अनुरूप था।

इसी समय दुलहिनकी पोशाकमें सुसज्जित गुलनारको ले आ दरवाजेके पास बैठा दिया गया। कुदरत दोनों गवाहोंके साथ दरवाजेके पास पातित-जानु बैठा था। उसने गुलनारसे कहा—कह बेटी गुलनार! कि मुझे तूने अपनी ओरसे निकाहके लिये वकील बनाया।

गुलनार—...

—जल्दी कर, वकील बननेके लिये कह। मुहूर्त बीत रहा है।

गुलनार—...

औरतें भी एक दूसरेसे 'चुप भी रहो, दम शीं, चप शीं, न दुलहिन-की बात सुनाई देती है न वकीलकी' कहती हल्ला कर रही थीं। कुदरतने पहले स्त्रियोंको डाँटकर कहा—'चुप रहिये, मैं दुलहिनकी बात सुन रहा हूँ', और फिर गुलनारकी ओर—गुलनार! मैं तुमसे बोल रहा हूँ, कहो कि मुझे निकाहके लिये वकील बनाया।

गुलनार—...

गवाहोंमें एकने कहा—बेगम, बहुत प्रतीक्षा न करावें, कहें 'वकील' बनाया।

गुलनार—...

कुदरतने ऊँची आवाजसे कहा—क्या इस घरमें कोई बरिन्दा-दरिन्दा (मारू-काटू) स्त्री नहीं है, कि लड़कीके मुँहसे बात निकलवाये? केबानी (कदबानू) कहाँ है?

कुदरतकी बीवी गुलनारकी पीठके पास बैठी हुई थी। उसने उसे दबाकर कहा—तेरा चचा ऊब गया है, जल्दी कह कि वकील बनाया।

गुलनार—...

केबानी 'ठहरो-ठहरो मैं स्वयं कन्याके पास आ रही हूँ' कहती औरतोंके बीचसे किसीकी जाँघ, किसीकी पीठ और किसीके शिरपर पैर

रखती गुलनारके पास पहुँची। उसने गुलनारकी बगलमें बैठी फीरोज़ा और सलामतको वहाँसे भगा 'मर जाय यह - रवाज, तुम क्यों नहीं जोर देती, कि बच्ची जल्दी जवाब दे, दिल टुकड़े-टुकड़े होकर निकलनेवाला है। हाकिमकी छोटी बीबी, सरेजूयकी बेगम, यह कैसी बात' कहकर खुद बगलमें बैठी और दूसरी बगलमें कुदरतकी बीबीको बैठाकर बोली—जल्दी करो, केलिनपाशा (दुलहिन बादशाह) ! कहो कि वकील बनाया !

गुलनार—...

—चक्की-चूल्हा, हाकिमकी सारी जायदाद तुम्हारी हुई, कहो, जल्दी कहो कि वकील बनाया।

गुलनार—...

—नाज-नखरा बस करो, कहो कि वकील बनाया।

गुलनार—...

केबानीने अपने हाथोंको गुलनारके कपड़ेके भीतरकर उसके शरीरको जोरसे दबाके कहा—कहो कि वकील बनाया।

गुलनारको बहुत दर्द मालूम हो रहा था, तो भी वह चुप रही।

—ओः, यह गूँगी कहाँसे आई !

गवाहोंमेंसे एक, जो कि महल्लेका मुवज्जिन् था, बोला—कुदरत बाय ! अब हो गया, ज्यादा जोर देनेकी जरूरत नहीं। कहा है, मौन स्वकृतिका लक्षण है।

गुलनारने देखा कि 'मौन स्वीकृतिका लक्षण' हो काम खराब होना चाहता है। वह एकाएक हिचकी बाँधके रोने लगी।

मुवज्जिन्—अब बात करनेकी जरूरत नहीं 'रोना बधूकी स्वीकृतिका चिह्न है।'

कुदरत—अगर मुँह खोलकर कह दे, तो और अच्छा।

मुवज्जिन्—यदि मेरी बातपर विश्वास नहीं तो, आओ चलकर दमुल्ला इमामसे पूछें।

कुदरतके साथ गवाह मेहमानखाना (बैठक)में पहुँचे और मुवज्ज़िन्‌ने इमामसे कहा—तक़सीर ! दुलहिनने पहिले मौन धारण किया, फिर वह रोई। मैं इन्हें स्वीकृतिका चिह्न कहता हूँ, लेकिन कुदरत बाय इसे स्वीकार नहीं करते।

इमाम—"सकूतुल् बक्र अलामतुरंज़ा" दुलहिनका मौन स्वीकृतिका चिह्न है, यह किताबमें आया है। दुलहिन कन्या लजाती है और साफ़ जवाब नहीं देती, इसलिये मौन धारण करती है। नहीं तो वह स्वयं चाहती है। इसीलिये मौनको शरीयतमें स्वीकृतिका चिह्न कहा गया है। और निकाहके वक्त जो दुलहिन रोदन करती है, वह हर्षका रोदन है; हर्षके साथ रोना राजी होनेका चिह्न है। वस्तुतः दुल्हा जनाब मीर (गवर्नर साहब)को दुलहिनके साथ शादी करनेका अधिकार है। अच्छा, आप लोग गवाही दीजिये, शरीयतके अनुसार सब ठीक है।

पहले मुवज्ज़िन्‌ने 'अऊज़ बिल्लाह' (भगवानकी शरण) कहकर गवाही शुरू की—लालचके लिये नहीं बल्कि खुदाके लिये मैं गवाही देता हूँ, कि बीबी गुलनार पुत्री...

कुदरत—रुस्तम बाय।

—पुत्री रुस्तम बायको वकील...

—नहीं 'पुत्री रुस्तम बाय, कुदरत बायको निकाहके लिये वकील बनाती है'—कह।

मुवज्ज़िन्—पुत्री रुस्तम बाय, कुदरत बायको निकाहके लिये वकील बनाती है।

इमामने 'नहीं इस तरह नहीं, तुझे क्या हो गया है, होशकर' कहकर गवाहीके वाक्यको फिर दुहराया। मुवज्ज़िन्‌ने इमामके मुँहसे वाक्यको सुनकर शब्दशः दुहराते 'पुत्री रुस्तम बाय, कुदरत बायको निकाहके लिये वकील बनाती है' कहकर आस्तीनसे शिर और मुँहपरके पसीनेको पोंछा।

दूसरा गवाह भी 'अऊज़ बिल्लाह' कहकर रुक गया। इमामने गवाही-

के हर वाक्यको गवाहको सिखलाया। फिर उसीके अनुसार दोहराकर 'खुदाई गवाही'की विधि पूरी की गई।

नौकरने पानीके भरे एक कटोरेको लाकर इमामके सामने रक्खा। इमामने 'अऊज़ बिस्मिल्लाह'के साथ आरंभ करके अरबीमें निकाहका खुतबा (उपदेश) एक खास स्वरमें पढ़ा। अरबी खुतबा खत्म करके इमामने कुदरतकी तरफ निगाह करके ताजिकी (स्थानीय) भाषामें कहा—तुम जो कि माननीया बीबी गुलनार सुपुत्री रुस्तम बायकी ओरसे वकील, सच्चे वकील बनाये गये हो, क्या तुम उनकी शुभात्माको मुसलमानी निकाहके लिये अमारतपनाह ईशान तुक़साबाको पत्नीके तौरपर प्रदान करते हो?

कुदरत—प्रदान किया।

इमामने—अलीमर्दा की तरफ निगाह करके कहा—अमारत-पनाहकी ओरसे क्या इन्हें पत्नीके तौरपर तुम स्वीकार करते हो?

—स्वीकार करता हूँ।

अविवाहित नौजवानोंने मंगलके विचारसे निकाहवाले कटोरेके पानीको इमामके आगेसे लेकर थोड़ा-थोड़ा पान किया।

अलीमर्दा बेकने इमाम और अर्बाब (चौधरी)को निकाहाना (ब्याहकी दक्षिणा) और 'लालचके लिये नहीं बल्कि खुदाके लिये' गवाही देनेवाले गवाहोंको भी दो-दो तंका इनाम दिया। अब गुलनार हाकिमकी माल थी।

उसी रातके सबेरे बहुमूल्य सुनहले चारजामेसे सुसज्जित घोड़ेपर सलामत बीबीके पीछे गुलनारको चढ़ा बड़ी चहल-पहलसे हाकिमके महलको ले चले। उसके आगे-पीछे बहुतसी दूसरी स्त्रियाँ भी चल रही थीं, जिससे दुलहिनकी शान-शौकत दुगुनी हो गई थी। साधारण दर्शकोंके लिये यह बरातकी चहल-पहल थी, लेकिन गुलनारके लिये यह इज़्ज़तदार मुर्देकी कब्रिस्तान-यात्रा थी।

८

मदरसा (महाविद्यालय)

बुखारा नगरमें हौज-काज़ियानके सामने दक्खिनकी ओर मुल्ला महम्मद शरीफ-मदरसा है। इस मदरसेकी इमारत पक्की ईंटोंकी है। इसके सामने दो प्रासाद और बाहरकी ओर दो-तला कोठिरियोंकी पाँतियाँ हैं। मदरसेके सामनेका फाटक बहुत ऊँचा है। उसके अंदर नीचे-ऊपर छः और पाँतियाँ हैं। फाटकके अंदर नीचेवाली बिचली जगहमें लकड़ीका दोपल्ला भारी किवाड़ लगा हुआ है। जिसपर छः, बारह, सोलह कोनोंकी आकृतियाँ खुदी हुई हैं। फाटकके किवाड़के अंदर और बाहरकी ओर मजबूत कीलें लगी हैं, जिनके नीचे लाल रंगकी छकोनी पत्तियाँ हैं। दोनों किवाड़ोंमें एक-एक बड़े-बड़े छल्ले लगे हैं, जो बंद करते वक्त हैंडल-का काम देते हैं और ताला लगाते वक्त साँकलका। दाहिनी ओरके छल्लेके नीचे घंटीकी जंजीर लटकती है। दरवाजा बंद हो जानेपर, इसे हिलाकर मुअज्ज़िन्को खबर दी जा सकती है।

दरवाजेके अंदर घुसनेपर बीचकी ड्योढ़ीमें आइये, यह मीनाकारी किये हुए तीन गुंबदोंकी पाँतीसे बनी हुई है। यह गुंबद मेहराबी गर्दनों द्वारा एक दूसरेसे संबद्ध हो और छतकी तरह मालूम होते हैं। फाटकके सामने लोहेके जंगलोंवाली एक पाँती है, जो कि गर्मीकी मस्जिदके हातेको बिचली ड्योढ़ीसे अलग करती है। दाहिनी ओर बिचली ड्योढ़ीका दूसरा भाग है, जिसके सामने सर्दीवाली मस्जिद है। मस्जिदके सामने बाँई ओर एक बड़ा रास्ता है, जिससे होकर मदरसेके भीतरी आँगनमें जाया जाता है। बाँई ओर बिचली ड्योढ़ीका तीसरा भाग है, जहाँ सामने पाठालय है। पाठालयके सामनेसे भी एक रास्ता आँगनके अंदर जाता है।

अगर आप मदरसेके फाटकके अंदर आकर बाँये पाठालयकी ओर

मुड़ें, तो पाठालय तक पहुँचनेसे पहिले आपके बाँये एक सँकरी अँधेरी सीढ़ी मिलेगी। यदि इस घुमौआ सीढ़ीसे ऊपर चढ़ें, तो अंतमें एक द्वार मिलेगा, जो कि फाटकके ऊपर वाले कमरेका द्वार है। लेकिन कमरेके इस द्वार तक पहुँचनेसे पहिले अँधेरेमें टटोलकर बाँई ओर मुड़ें, तो वहाँ एक और कोठरीका द्वार मिलेगा। अनजान आदमीको इस जगह किसी कोठरीके होनेका संदेह भी नहीं हो सकता। आप भी यदि हाथसे न टटोलें या दियासलाई न जलायें, तो नहीं मालूम कर सकते कि यहाँ कोई द्वार है।

× × ×

अक्तूबरका अंत था। अभी कड़ी सर्दी शुरू नहीं हुई थी। उक्त कमरेमें एक चालीस साला हिसारवाला मुल्ला अपने रुईदार जामेसे मुँहको ढाँके लेटा हुआ था। इसी वक्त एक दूसरा तीससाला हिसारी मुल्ला मदरसे के रिवाजके विरुद्ध बिना किवाड़ खटखटाये द्वार खोलकर अंदर आ खड़ा हुआ। मुल्लाके शिरपर बुखाराकी एक कुंदली टोपी थी और तनपर एक लंबा साटनका जामा। उसने 'हाजित्! ओ हाजित्!' कहकर आवाज दी। सोनेवालेको जरा भी न सुगबुगाते देख उसने और ऊँची आवाजसे कहा—'हाजित्! मैं बोलता हूँ ओ गुर्ग (भेड़िये)! जिंदा है या मुर्दा!' कोठरी वाला आदमी जिसे आगंतुकने 'हाजित्' और गुर्ग (भेड़िया)'के नामसे पुकारा, शिरको उठाना तो दूर मुँहको भी खोले बिना बोला—क्या कहता है? मुझे अपनी हालतपर नहीं छोड़ेगा क्या?

—आज आश (खिचड़ी) नहीं पकाया? मेरा पेट भूखसे तंबूरा बजा रहा है।

—आश किस चीजसे पकाऊँ? कल घीके मटकेको धूपमें रक्खा और एक प्याला घी बचाकर रक्खा था, उसे भी कल तेरे 'नकबत खोजा' (नेकवख्त ख्वाजा' सुभग स्वामी) के आशमें खतम कर दिया। अब आशकी जगह मटकेको तोड़कर उसके ठीकरेको खा।

आगंतुक जूतेको निकाल द्वारके पास रख हाजित्के पास आकर बैठा और उसने उसके शिरसे जामाको खींचकर दूर फेंक 'उठ-उठ' कहते उसकी बाँहको पकड़कर जोरसे उठाना चाहा।

—मखदूम! अपने बापकी आत्माओंके लिये मुझे अपने हालपर छोड़ दे। वल्लाह (भगवानकी शपथ) मैं न उठूँगा।

—उठ, मैं कहता हूँ उठ। किसी तरह भी आश पकाये बिना नहीं रहा जा सकता।

हाजित उठकर बैठ गया और अपने साथीसे बोला—अच्छा, ले उठ बैठा। बतला क्या कहता है?

—शराफ़ कसाईके पास जा, थोड़ा गोश्त और थोड़ा घी ला। चावल हमारे पास है। आश तैयार कर ले।

—ऊँहु! 'अपने स्वप्नको पानीसे कह', कल शराफ़ कसाईने कहा कि यदि पिछले उधारको न दिया तो एक बोटी गोश्त भी उधार न दूँगा।

—यदि तूने पहिले मीठी-मीठी बात की, तो देखा न 'उधार नहीं दूँगा' कहता है। अरे कोई बहाना करके लड़ जा, गर्दन पकड़कर जमीनपर पटक। मैं भी तेरे साथ आ रहा हूँ। दोनों मिलकर खूब कूटकूटकर भर्ता बना दें। इस तरह कसाई और बनियेको जो कुछ चाहो उधार देनेके लिये तैयार कर सकते हो।

—बाज़ार-ग़ाज़ियानमें कोई नहीं है, जिसने इन पिछले दस सालोंमें तगादा न किया हो, या उधार देनेसे इन्कार करनेपर मार न खाई हो। लेकिन अब अवस्था इस हद तक पहुँच गई है, कि अब वे मारसे भी नहीं डरते। उधार लौटा देना दरकार है, दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

—ख़ैर, आजके दिन किसी तरह बिता देंगे। पुलाव न सही भात पका लेंगे। लेकिन अभी वसंतके आनेमें तीन मास हैं। कोई रास्ता निकालना है। जामाको शिरपर ढाँककर सोनेसे काम नहीं चलेगा।

—यह आसान है—हाजितने कहा—कल चलो, कराकुल चलें।

वहाँ क़ाज़ीसे ख़त लेकर दोनों दो मस्जिदोंके इमाम बन जायँ। एक सप्ताह रहनेके बाद इमामकी आमदनीके अतिरिक्त इधर-उधरसे उधार लेकर वसंतमें लौटनेका वादा करके चल दें। यही काम खैराबाद और बाबकंदके तूमानों (परगनों) में भी करें। इन जगहोंमेंसे हर स्थानमें एक-एक आदमी पचाससे डेढ़ सौ तंके तक बना सकता है। यह रकम हमारे लिये वसंत तकके लिये काफी होगी। गर्मी आनेपर फिर उन्हीं इमामतोंपर चलें और हर जगहसे दो सौसे छः सौ तक हाथ लगायँ। यह रकम दोनोंके आगेके खर्चके लिये काफी हो सकती है, लेकिन यह तेरा 'नकबत ख़ोजा' बेदवाकी बीमारी है। अगर तू हर रोज उसे लाकर भोज देता रहा, तो यह सारी मिली रकम भी कुछ नहीं। अगर तू उसकी इतनी दावत न करता, तो हमारी यह हालत न होती। हमारा चावल और घी कन्या (अक्तूबर) मास तक पहुँचता। चावल और घीकी बातको छोड़, मेरा दिल तो उस पुरानी मुसल्लसी (मदिरा) की ठिलियाके लिये जल रहा है। अगर यह 'नकबत' अपने मुर्देको हमारे ऊपर न पटकता, तो हमारी मुसल्लिसी भी कन्यामास तक आती, और इमामतके लिये जाते वक्त दस सेर दाख मटकेमें डाल जाते, जो अगली वसूलीके समय तक एक दाँत तोड़ मदिरा बन जाती।

मख़दूम—हाजित्! तू सदा उस 'ख़ोजा' (सैयद या स्वामी) की शिकायत करता रहता है। जब उसके पास धन-दौलत थी, तो तू, 'ईशान जान' 'ईशान जान' (परमप्रिय स्वामी) कहते खुशामदसे उसके जूतों तकको चूमता था। रात-दिन उसके घरपर सोता रहता था। उसके पुलाव, दो-गोश्ता, कलिया, नवजात मेमनेका तन्दूरमें पका शाही कबाब, संसारमें दुर्लभ मदिराओंके साथ खाता-पीता था। तूने अतिश्रेष्ठ सुन्दरियोंको उसके घरपर देखा। सुकंठ गायकोंको वहाँ सुना। उस समय यदि तू एक बार 'ईशान जान' कहता, तो तेरे मुँहसे सौ 'ईशान जान' टपकता। यदि वह तुझे 'हाजित् गुर्ग' कहता, तो तू 'लब्बैक' (जी सरकार) कहता। आज जब वह बुरी हालतमें है, उसका जेब पैसेसे और प्याला मदिरासे खाली है,

तो 'वह नकबत् खोजा' हो गया! अब यदि वह 'दमुल्ला हाजित' कहते घरके अंदर आता है, तो तू लेटा रहता है, यह मनुष्यता नहीं है।

हाजित्—मुझसे और तुझसे मनुष्यताका क्या सम्बन्ध? कहावत है "मुल्ला दस्तरखानका झाड़ूदार"; यद्यपि इसे परिहासमें कहा गया है, लेकिन बात सच और अर्थपूर्ण है। मैं और तू मुल्ला हैं। हमारा कर्तव्य है लोगोंके दस्तरखानको चुनकर खाना, न कि जो कुछ पास है, उसे भी लोगोंकी दावतमें उड़ा देना। कुन्दलीकी टोपी सिरपर रखे "एक पैसा खीसामें नहीं, और दिमाग आसमानपर" बने क्या हम भूखे पेटसे तम्बूरा बजाते मारे-मारे फिरें?

मखदूम—अच्छा, मनुष्यताको एक ओर रख, लेकिन इसे न भूल कि एक धनी खानदानका आदमी सदा निर्धन नहीं रह सकता। मासका पन्द्रह दिन अँधेरा और पन्द्रह दिन उजाला होता है। यह आदमी आज जो 'नकबत' बना हुआ है, कल उसका भाग्य-सूर्य मध्याह्नपर चढ़ सकता है। वह मास्कोवाला बड़ा व्यापारी बन सकता है। उसकी जान-पहिचान बड़ी-बड़ी जगहों तक है। काजी, रईस, कुशबेगी, बेगी ही नहीं, अमीर तक उसको जानते हैं। उसके सम्बन्धी धनी हैं, जिनकी कोठियाँ मास्कोतकमें हैं। कोई नहीं मानेगा, कि यह आदमी सदा इसी स्थितिमें रहेगा? चन्द दिनों बाद देखेगा, कि वह 'ईशानतुरा' (माननीय राजकुमार) हो गया और तू 'हाजित् गुर्ग (भेड़िया)' ही बना रहेगा। एक शेरका मुर्दा सौ गिद्धोंका पेट भरता है। अब भी उसकी स्थिति मुझसे और तुझसे अच्छी है। कल ही हाजी अमनबाय सड़कसे आ रहा था। देखा, कि खुद माता है और हाथमें एक बोतल शराबकी है। मेरा हाथ पकड़कर हवेलीमें ले गया। मेहमानखानेमें बैठकर हम दोनोंने बोतलको चबेनाके साथ पिया। उसका नशा और बढ़ा, मैं उठना चाहा। "पाँच मिनट बैठो, मैं हवेलीके अंदरसे आता हूँ फिर जहाँ चाहो जाना" कहकर भीतर गया और दश

मिनट बाद इस (दिखलाते हुए) टोपी और जामाको लाकर मुझे पहिना दिया।

६

दैवी दान

इसी समय द्वारसे आई 'खटखट'की आवाजने मखदूमकी बातको काट दिया। हाजित्ने "खाश" कहा, जिसका अर्थ था, खटखटाने वाला अंदर आये। दूसरी बार फिर खटखटकी आवाज़ आई। अबकी बार हाजित्ने और जोरसे "खाश कृपा कीजिये, आइये" कहा।

—दमुल्ला हाजित्का कमरा यही है ?—किसीने पूछा।

हाजित्ने कहा—हाँ, यही है। कृपा कीजिये, अंदर आइये।

—मुल्ला असामुद्दीन मखदूमी हिसारी भी यहाँ हैं ?

—यहीं हैं। अंदर आइये।

हाजित्ने मखदूमकी ओर निगाहकर आहिस्तेसे कहा "यह कौन जङ्गली गुलाब है ? न अंदर आता है न हमारी जान छोड़ता है ?"

आदमीने पहिले एक किवाड़को खोल सिरको अंदरकर बैठे लोगोंपर नजर डाली, फिर वह 'बिसमिल्ला' कहते अपने पैरोंको अंदर रख कोठरीमें आया। मखदूमकी निगाह उसपर पड़ी और उसने उठकर "ऐ, मुल्ला अजीमशाह !" कहकर बगलमें आ सलाम-दुआ की। हाजित्ने भी उठकर 'साहब सलामी' की। दोनोंने अजीमशाहको बिस्तरेपर ऊपरकी ओर बैठा 'स्वागत' कहा। अज़ीमशाहने मखदूमकी ओर निगाह करके कहा—क्या आप इसी कमरेमें निवास करते हैं ?

—नहीं, मैं नीचेके कमरेमें रहता हूँ, किन्तु यह कमरा भी अपना हीसा है शायद आप इन्हें (हाजित्की ओर इशारा करके) नहीं पहिचानते ? यह भी हिसारके ही हैं। सोलह सालकी उम्रमें विद्याध्ययनके लिये बुखारा आकर फिर हिसार नहीं गये। आपने शायद पहिले इन्हें नहीं देखा ?

—देखा भी हो, तो याद नहीं, लेकिन इनके हिसारी होनेको इनके रूपरंगसे ही मैंने समझ लिया।

हाजित् चायनिकमें चाय डाल गरम करके लाने के लिये कमरेसे बाहर चला गया।

मखदूम—हम दोनों स्वदेशी और पुराने मित्र हैं। मेरा कमरा दूसरा है, तो भी चूल्हा एक है। विद्यार्थी-अवस्थामें अध्ययन करते समय यदि आदमी अपने एक घनिष्ठ मित्रके साथ एक चूल्हावाला हो जाय, तो उसे अधिक कष्ट नहीं होता। हर रोज सात-आठ पाठ लेते, आधी-आधी रात तक किताब पढ़ते, शास्त्रार्थ करते हैं। ऊपरसे वज़ू (हस्त-पाद-मुख प्रक्षालन) पाँच वक्तकी नमाज़ और जप-तप भी करना होता है। सिर खुजलानेकी भी छुट्टी नहीं मिलती, रोज-रोज खाना पकानेकी तो बात ही क्या? इसीलिये मुझे जो कुछ मिलता है, इन्हींके हाथमें दे देता हूँ। पढ़ाई इनकी मुझसे कम है। हर रोज यह भोजन बना लेते हैं, और हम दोनों खाते हैं।

मुल्ला हाजित् चाय गरम करके दो रोटी लिये आया। दस्तरखान फैला रोटी तोड़ी गई। दस्तरखान पर कुछ मिठाई और हलवा-नूर भी रख फिर मेहमानसे खानेकी प्रार्थना की गई। अजीमशाहने एक कौर रोटीके साथ एक टुकड़ा मिठाई मुँहमें डाली, लेकिन मिठाई बहुत कड़ी और पुरानी थी, वह उसे खा नहीं सके। आतिथिक देख न ले, इसलिये उसे बहुत धीरेसे निकालकर दस्तरखानके एक कोनेमें छिपा दिया। फिर हलवा नूरका एक लोंदा मुँहमें डाला और चाहा कि उसे काटकर खायें, लेकिन दाँत भला उसे क्या तोड़ेंगे? करीब था कि वही दाँतको तोड़ डाले। अज़ीमशाहको कुछ सूझ नहीं पड़ रहा था, खाना संभव नहीं था और उसको मुँहसे निकालना सभ्यताके विरुद्ध। असामुद्दीन देख रहा था, उसने लज्जा दूर करनेके ख्यालसे हाजित्से कहा—'ईशान तूरेम् (शाहजादा गुरु)का प्रसाद हलवा और मिठाई अभी भी बची हुई है?'

हाजित्—अगर खा लिया होता या सब किसीके सामने रखता, तो इसका चूरा भी न बचा होता। यह इशान नूरेमका प्रसाद है। इसलिये इसे अपने प्रिय अतिथिके सामने रखा।

अज़ीमशाह—क्या यह ईशान नूरा बुखाराके बड़े शेखों में है?

मखदूम—प्रसिद्ध मठाधीश (खानकाहनशीन) शेखोंमेंसे नहीं हैं, लेकिन एक बड़े बुजुर्ग एकान्तवासी महात्मा हैं। पहिले आप एक बड़े धनी-मानी पुरुष थे, परन्तु सभी वस्तुओंको खुदाकी राहमें खर्चकर संसारको त्याग दिया। हम दोनों इन महात्माके भक्त हैं। हरवक्त उनका आशीर्वाद लेते रहते हैं।

अज़ीमशाह—उनकी पवित्र पद-रज शिरपर! बुखारा-शरीफकी हर जगह सिद्ध-महात्माओंसे भरी है। जब-जब मैं बुखारा आता हूँ, ऐसे महात्माओंके चरणोंमें न जानेपर भी आप जैसे पुरुषोंकी दुआ लेकर मेरा दिल बहुत खुश होता है, और मेरा काम भी बन जाता है।

मखदूम—ठीक कहा "गुरुकी लाठी गुरुकी जगह"। अबकी बार क्यों इतनी देरसे बुखारा यात्रामें आये?

—शुक्र! काम सब अच्छा है। पहिलेका चरवाहा मर गया। चाहता था, कि उसके लड़केसे हँकवाकर भेड़ोंको लाऊँ, लेकिन वह नमकहरामी करके भाग गया था। उसे फिर हाथमें करनेमें दो-तीन मास चले गये, इसलिये यात्रामें भी देर हुई।

—आपके पहिले चरवाहेका नाम बाज़ार न था? बेचारा कब मरा? आदमी अच्छा था।

—तीन माह मरे हुए।

—उसके लड़केका क्या नाम है?

—यादगार।

—और यह लड़का नालायक निकला?

—हाँ, बहुत सरकश, बुरा लड़का है। सौ बार बोलिये, कुछ नहीं

जवाब देता, और जमीनकी ओर नजर गड़ाये खड़ा रहता है। आँखोंसे जान पड़ता है, दिलमें गालियाँ दे रहा है।

—आप खुद दुनिया देखे-सुने हैं, नौकर देखनेका ढंग बहुत अच्छा जानते हैं। कहावत है *"या ज़ारी या ज़ोरी या ज़र"* (*साम-दंड-दान*) वक्तपर नर्मीसे काम लीजिये, बाज़ वक्त पैसा दीजिये, कभी मीठी-मीठी बातें करके खुशामद कीजिये। यह है काम लेनेका रास्ता।

—उसके बापके मरनेके बाद एक भी कड़ी बात नहीं कही। और पैसा? आज भी उसपर मेरा हज़ार तंका कर्ज है। मीठे बोलता हूँ। नसीहत करता हूँ। मुल्ला इमामने भी बहुत नसीहत की है, इसपर भी उसकी आँखोंमें मुरव्वत नहीं। यदि वह मेरा कर्जदार न होता या हाकिम और काजी मेरे जान-पहिचानी न होते, तो कबका भाग गया होता। मैं कल उसे आपके पास भेजूँगा। आप भी उसे थोड़ी नसीहत कर दें। शायद आपके प्रतापसे उसपर प्रभाव पड़े।

—बहुत अच्छा, भेज दीजियेगा। नसीहत और चमत्कारिक कथा हम उसे कह देंगे।

अज़ीमशाहने कमरमें मजबूतीके साथ रस्सीसे बँधे और जेबमें रखे एक दोपेटी थैलीको खोलकर टटोलके उसके तंग मुँहमें हाथ डाल कुछ तंके गिने, फिर मखदूमकी ओर निगाह करके कहा—मैं तुम्हारे लिये हिसारसे एक दुम्बा लाया था। बेंचने मारनेमें तरद्दुद होता, इसलिये उसे अपने एक जान-पहिचानी कसाईको यह कहकर दे दिया कि चर्म और माँसको बेंचकर दाम दे दे और चर्बीको रख छोड़े।

अज़ीमशाहने बात समाप्त करते हाथको बाहर निकाला। उसमें तंके थे। हाजित् और असामुद्दीन मखदूम अपनी गर्दनोंको ऊँचा करके अज़ीमशाहकी हथेलीको उसी तरह आँख गड़ाकर देख रहे थे, जैसे अंडेसे निकले बच्चे चारा लेकर आई माँकी ओर पंख फड़फड़ा मुँह बाये बेकरार होते हैं।

अज़ीमशाहने "यह तंका उसी चर्म और माँसका है" कहकर मखदूमके हाथमें उसे रख दुआ करनेकी प्रार्थना की। उस समय आँखोंकि हथेलीपर गड़े होनेपर भी हाजित्का सिर और गर्दन मखदूमकी तरफ़ उसी तरह घूमा, जैसे सूर्यमुखी फूल सूर्यकी तरफ़ घूमता है या ध्रुवसूचक यंत्र ध्रुवकी ओर।

दोनोंने अज़ीमशाहकी प्रार्थना पूरी करनेके लिये यंत्रवत् दुआ करके हाथोंको मुँहपर फेरा। "अच्छा, अब मुझे छुट्टी दीजिये। कल इसी वक्त मैं लड़केको चर्बीके साथ भेजूँगा। नसीहत करना न भूलेंगे" कहकर अज़ीमशाह उठे। इस पर मखदूमने कहा—क्या इतनी जल्दी पड़ी हुई है, आज हमारे अतिथि रहें।

अज़ीमशाहने मखदूमके हाथमें पड़े तंकोंकी ओर हसरत भरी निगाहसे देखते हुए कहा—आज रात फ़तहुल्ला भेड़-सौदागरके साथ हिसाब करना है। काम खतम कर लूँ, तो अवश्य एक रात आपका मेहमान रहूँगा—फिर एक बार हाथके तंकों पर नज़र गड़ाते—खातिर जमा रहें, मदर्साका एक आश्-प्रसाद खाये बिना नहीं जाऊँगा।

जूता पहिनकर अज़ीमशाह कमरेसे बाहर निकले। असामुद्दीनने भी कमरेके द्वार तक जा "खैर खुश भले आये, सलामत रहें। हमें आनन्दित किया" कहकर अपने मेहमानको विदा किया, फिर लौटकर तंकोंको गिना। वह बीस थे। उन्हें दिखलाकर हाजित्से कहा—देखा गुर्ग (भेड़िये) इसे कहते हैं दैवी दान, जो "ईशानतूरा" या तेरे कथनानुसार "नकबत् खोजा"के पुनीत नामपर हमारे पास आये।

हाजित्—यह आदमी मुझे नहीं पहिचानता, लेकिन मैं इसे पहिचानता हूँ। यह सरेजूयके भारी मूज़ियोंमेंसे है और शैतान तककी आँखमें धूल झोंक सकता है। यह तुझपर या तेरे "ईशान तूरा"पर पैसा भर भी श्रद्धा नहीं रखता। वह हज़ार 'ईशान' और दस हज़ार मुल्लोंको एक पैसेमें बेंच सकता है। लेकिन जब काम आ पड़ता है, पैसा भी देता

है। श्रद्धा भी प्रगट करता है। यदि तू चाहे तो तेरा मुरीद भी बन सकता है। संक्षेपमें, वह जो कुछ करता है, सब अपने मतलबसे।

मखदूम—कुछ भी हो, वह हमसे क्या लालच रखता है, बता तो?

—क्या लालच रखता है? उसने स्वयं नहीं कहा कि लड़केको भेजूँगा, उसे नसीहत कर दें। मालूम होता है, किसी गरीबको फँसाकर अपने काममें जोत रहा है। अब वह जानपर आया है और चाहता है कि, भाग जाय या दूसरेके यहाँ चला जाय। यह चाहता है, कि मुझसे और तुझसे नसीहत करा लड़केको क्रीतदास बना उससे काम ले। यह शैतान और ताजिक जन-साधारण भी हमारे मुल्लों खासकर बुखारामें शिक्षा पाये मुल्लोंपर क्या श्रद्धा रख सकते हैं?

—अच्छा, मान लिया कि यही सच है, परन्तु इससे मेरा और तेरा क्या नुकसान है? हमारे लिये यह बीस तंका गनीमत है। अगर हमारे हाथ लगें तो ताजिक गरीबोंमेंसे एक-एकको बीस-बीस तंकेपर बेंच डालें। नहीं सुना, "कब्र जले और देग उबले"? खैर, उठ जाकर घी और गोश्त ले आ; आश तैयार कर, मेरा हाल बुरा है।

१०

मटकेवाला यहूदी

अज़ीमशाहने मदर्सा जानेके दूसरे दिन अपनी सारी भेड़ें बेंच डालीं और यादगारको "आ बेटे! तुझे बुखारा-शरीफ़ का दर्शन करायें" कहकर उसे साथ ले शहरके नमाज़गाह दर्वाजेमें गये। दर्वाजाके अंदर पैर रखते ही ऊँची आवाजसे 'बिस्मिल्लाह' कह यादगारको भी वैसा करनेके-लिये प्रेरित करते बोले—बुखाराशरीफ बहुत ही पवित्र नगर है। यहाँ 'बिस्मिल्लाह' कहे बिना कदम रखना ठीक नहीं। इस शहरमें बहुत ज्यादा सिद्धोंकी समाधियाँ और बुज़ुर्गोंके पूज्य स्थान हैं। मैं चाहता हूँ कि तुझे उनमेंसे कुछका दर्शन कराऊँ।

अज़ीमशाह इसी तरह कब्र और क़यामतकी बातें करते तुर्कजिन्दीके मज़ार (समाधि) पर गया । मजारके सामने जो तहारतखाना (पाद्य-आचमन-स्थान) है, वहाँ आ खुद हाथ-पैर-मुँह धो यादगारसे भी वैसा कराया। फिर अपने जूतोंको हाथमें ले यादगारसे भी वैसा करा मज़ारके अंदर गये। वहाँका पवित्र जल स्वयं आचमन किया और यादगारसे भी कराया। लेकिन, पासमें हररोज दफन होनेवाले मुर्दोंकी तरावटने मिलकर जलको इतना दुःस्वादु और दुर्गन्ध बना दिया था, कि यादगारमें उसे घोंटने की हिम्मत न थी; और उसका चेहरा बिगड़ गया। अजीमशाहने यादगारकी हालत देखकर कहा—हर्गिज़ इस जलका अपमान और इसपर सन्देह न कर, नहीं तो तेरी जान और ज़बानीको नुक़सान पहुँचेगा। दुनियामें सिर्फ तीन ही पवित्र कूप हैं। उनमेंसे एक मक्काशरीफमें चाह-ज़मज़म है; दूसरा चाह-खोजा-अदवान है, जो कि बुखाराकी बालुका-भूमिमें जिन्दानाके तुमान (पर्गना)में अवस्थित है; तीसरा यही पवित्र कूप है, जो सभी तरहके रोग-दोषको दूर करता है। लेकिन शर्त है, कि आदमीके दिलमें श्रद्धा हो। यदि संशय करे तो भारी अनिष्ट भी होता है। इन तीनों कूपोंके बीच जमीनके नीचे-नीचे राह है। एक बार एक आबखोरा (कटोरा) चाह-ज़मज़ममें गिर पड़ा, कुछ समय बाद वह चाह खोज़ा-अदवानमेंसे निकला। वहाँसे दुबारा गुम हुआ, तो कुछ समय बाद यहाँ आकर उतराया। पुराने बूढ़ोंके कथनानुसार वही यह आबखोरा है, जिससे तूने अभी-अभी आचमन किया है।

मज़ारका दर्शन करनेके बाद बाहर आनेपर अज़ीमशाहने यादगारसे कहा—"आ, तुझे बुखारा-शरीफके मदर्सोंको दिखलायें"। और उसे तुर्कजिन्दीके दूहोंसे होते "हाजी अमनबाय सड़क" पर ले गया। देखा कि आदमियोंका एक झुंड नमाज़गाह-दर्वाज़ासे हल्ला मचाते, बाजार-गाज़ियान-की ओर जा रहा है। अज़ीमशाह और यादगार इस विचित्र तमाशेको देखते राहके किनारे खड़े हो गये। जन-समूह नजदीक पहुँचा। वहाँ

आगे-आगे एक पचाससाला यहूदी चल रहा था। उसके सिरपर बुखाराके यहूदियोंके लिये निर्धारित एक चारतही टोपी थी, तनपर नीले रंगका जामा और कमरमें रस्सीका कमरबंद बँधा था—अर्थात् उसकी वही पोशाक थी जिसे पहिनने के लिये बुखाराके मुल्लों और अमीरोंने उन्हें बाध्य कर रखा था। यहूदीके पीछे-पीछे एक मुसलमान आ रहा था, जिसके हाथमें छः गोलियोंका एक तमंचा था। अँगुली तमंचेके घोड़ेपर थी, यानी गोली चलनेमें सिर्फ अँगुली दबानेकी देर थी। वह यहूदीको जल्दी-जल्दी चलनेको कह रहा था। जब लोग भीड़ लगाकर रास्तेको रोक देते, तो वह तमंचेको उनकी ओर घुमा देता, भीड़ हटकर यहूदीको रास्ता दे देती। जनसमूह चलते-चलते अज़ीमशाहके पास पहुँचा। जैसे ही अज़ीमशाहकी नजर यहूदीपर पड़ी, वह "ओहो! तू यूसुफ गुर्ग (भेड़िया) कहाँसे?" कहकर चकित हो चिल्ला उठा। यहूदीको जवाबदेने या दम मारने की हिम्मत नहीं थी, लेकिन यादगारने पूछा—मालिक! आप इसे पहिचानते हैं?

अज़ीमशाह—अरे, पहचानता हूँ। यह यूसुफ गुर्ग नामक यहूदी कसाई है। वह मुझसे भेड़ें खरीदा करता है। कल भी दो दुम्बे खरीदे हैं और अभी दाम भी नहीं दिया है।

यादगार—उसे कहाँ और किस लिये ले जा रहे हैं?

—बुखारा शरीफमें मुल्ला बहुत ज़्यादा रहते हैं। यहाँ शरीयत (धर्म-शास्त्र)का हर हुकुम जारी है। जान पड़ता है, यहूदीके पास शराब पकड़ी गई है। अब इसे दंड देने-दिलाने काजीखाना या रईसखानामें ले जा रहे हैं।

झुंड बाजार-गाज़ियाँ पहुँचा। यहाँ चौरस्तेपर इतनी ज़बर्दस्त भीड़ जमा हो गई, कि कहीं पैर रखने का ठौर नहीं था। यहूदी बुड्ढा बहुत भारी कठिनाईमें पड़ा था। उसकी पीठपर एक मशक जल भरने लायक मटका और पीछे तमंचा लिये एक आदमी तेज़ चलनेके लिये हुकुम दे

रहा था। तीन तरफको तमाशबीनों की भीड़ने बंदकर रखा था। इसी समय तमंचे वालेने यहूदीकी मदद की। उसने अपनी काली पुतलियोंको ऊपर चढ़ा तमंचाको दिखलाते हुए "हटो हटो" कहकर बायेंका रास्ता साफकर रूसी भाषाकी फौजी कमान दिया "नालेवा, मार्श" (बाईं ओर, चल)।

यहूदीने भी बुखाराके सिपाहियोंकी तरह दाहिनी ओर कदम बढ़ाकर कमानकी पाबन्दी की। तमंचे वालेने भी अमीरी सेनाके अफसरों-की तरह उसकी बाँह पकड़ बाईं तरफ घुमा "इस तरफ घूमनेको कह रहा हूँ" कहकर कमानकी पाबंदी कराई। इसी तरह दोनों मुल्ला मुहम्मद मदर्सा पहुँचे। तमंचा वालेने फिर एक बार लोगोंको आँगनसे भगाया और वह यहूदीको मदर्साके अंदरकर फाटकको भीतरसे बंद करके गायब हो गया।

मदर्साके बाहरी आँगनमें सड़कतक लोग भरे हुए थे। तमाशबीनोंकी संख्या बढ़ती ही जा रही थी। इसी समय काज़ीकलाँ (महान्यायाधीश)का एक नौकर और मीरशब (कोतवाल)का आदमी वहाँ पहुँचे और चाहा फाटक खुलवाकर देखें कि क्या बात है। तब तक तमंचेवाला यहूदीके साथ बाहर निकल आया। अब यहूदीकी पीठपर मटका न था। तमंचेवाला जल्दी-जल्दी कदम रख रहा था। हर कदम पर लड़खड़ाते दीवारसे टकराकर फिर आगे बढ़ता। काज़ीके आदमीने पीछे जा एक झपट्टेमें उसके हाथसे तमंचा छीन लिया और उसी तमंचेसे उसे डरा यहूदीके साथ आगे बढ़ाया। मीरशबका आदमी भी साथ-साथ था।

× × ×

भीड़के तितर-बितर हो जानेपर अज़ीमशाह यादगारको मदर्सामें ले गया और फाटकके हर छल्ले, पल्ले, डंडेको दिखलाकर बोले—यह मुराद पूरी करनेवाला छल्ला है, यह सौभाग्यका पल्ला है, यह शैतान भगानेवाला डंडा है। और हरेकको चुम्बन दे आँखोंसे मल यादगारसे भी वैसा ही

कराया। अंतमें यादगारसे कहा—आ, ताकशूर कसाईसे लेकर तुझे एक दुम्बेकी चर्बी देता हूँ, तू उसे लेकर मदर्सेके इस दर्वाजेके भीतर जाना और मुल्ला असामुद्दीन मखदूमीका पता पूछकर चर्बी उन्हें दे उनसे दुआ लेना। फिर मेरे पास फतहुल्ला मेड़-सौदागरकी हवेलीमें आ जाना। लेकिन, मुल्लाके पास पहुँचनेपर पहले किवाड़को खटखटा लेना, खटखटाये बिना अंदर न जाना।

अज़ीमशाह मदर्सेकी इमारतों और गृहपंक्तियोंको दिखला यादगारको लिये तकियाशूरी-बुखाराकी तरफ चले।

११

मौजका दिन

आज दो दिनसे हाजित् गुर्ग (भेड़िया)के कमरेमें पोलावकी देग बराबर गरम होती है। आगेके लिये भी बड़ी आशा है। जिस भाग्यने "मरनेके सिवा कोई चारा नहीं"के समय बीस तंका नक़द पहुँचाया और एक दुम्बा चर्बी पहुँचानेका वादा किया, आश्चर्य क्या यदि वह आगे भी जीवन-पथ प्रशस्त करनेमें इसी प्रकार सहायक हो। कमी थी तो सिर्फ एक चीजकी, यानी पासमें शराब नहीं थी। यद्यपि कुछ माल-मसाला लाकर मटकेमें डाला जा सकता था, लेकिन उसके तैयार होनेके लिये चालीस दिनोंकी आवश्यकता थी। हाजित गुर्गके अफसोस करते वक्त नक़बत खोजाका ज़िक्र आ गया, जिसपर उसने मखदूमसे कहा—नकबत खोजाके सारे काम एक ओर और मेरी साल-पुराने मुसल्लसी (मदिरा)का मटका एक ओर। यदि आज वह होती, तो हमारे मौज-मेलेमें कोई कमी न होती!

असामुद्दीन—यदि इस समय खुदा एक मटका मदिरा भेज देता तो क्या तू नकबतके ऊपरसे हाथ खींच लेता?

—एक मटका नहीं, एक बोतल भी अगर भेज देता, तो नकबत खोजाकी शिकायत न करता।

इसी वक्त सीढ़ीसे क्रमहीन पड़ते पैरोंकी आहट सुनाई दी। आनेवाले सीधे कोठरीके द्वारपर पहुँचे और उनमेंसे एकने कहा—"पीठको द्वारकी ओर करके सीढ़ीपर बैठ।" दरवाजेके पास कान लगाये असामुद्दीनने आवाज सुनकर कहा—यह आवाज तो 'ईशान तूरा' जैसी है।

हाजित्—इन बीस तंकोंपर भी पानी फेरना चाहता है क्या?—इतना कहकर हाजित् आग बगूला हो गया।

दर्वाजा बिना खटखटाये ही खोला और आगंतुकने सिरको अंदर करके कहा—हाजित् गुर्ग! इस मदिराके मटकेको ले और मेरे लिये दुआ कर।

हाजित्ने देखा कि सचमुच कमरेके द्वारपर एक मटका रखा हुआ है। वह एकाएक खड़ा होकर बोल उठा—ईशान जान! भगवान् दया करें, थाल भेंट करता हूँ।

—यह तुम्हारे लिये निछावर है। मैं फिर भी यूसुफके घर जा डटकर पियूँगा। वह कबाब भी बनाकर देगा।

आगन्तुकने "आगे आगे चल यूसुफ गुर्ग" कहकर हुकुम दिया और दोनों सीढ़ीसे नीचीके ओर उतरने लगे।

मटकेको कमरेमें लाकर जब देखा कि वह शाबिरशानवाली शराब है, तो उनके आनन्दकी सीमा न रही।

असामुद्दीनने कहा—एक मटका शराबकी जगह एक मटका अशर्फी मैंने खुदासे माँगी थी, लेकिन देवदूतने "आमीन" बोल दिया, जिससे मुँहसे निकलते वक्तकी हमारी अभिलाषा ही स्वीकृत हुई।

—मेरे नजदीक एक मटका मदिरा एक मटका अशर्फीसे तो क्या एक मटका मोतीसे भी बढ़कर है। कविने गलत नहीं कहा है—

ऐ वर्षाके बादल! सींच वसन्ते मदिरालय
जिसमें बूँद बने मदिरा है मोतीसे क्या लेना?

मखदूम—गुर्ग! गज़ल पढ़ना रहने दे। उठ जल्दी कर। आश तैयार हो कि भगवत्प्रेषित इस मदिराका आस्वाद ले शान्ति प्राप्त करें।

—तैयार ईंधन कम है, तू ईंधन ला। मैं आशके लिये घी तपाता हूँ।

आशके लिये माँस तला जाने लगा। तबतक दोनों दोस्तोंने दो-तीन प्याला निकालकर चखा। मदिरा पुरानी और जोरदार थी। असामुद्दीनने कहा—हाजित! गुर्ग (भेड़िया) की उपाधि हाथसे गई न?

—क्यों?

—जब तेरी शराब यूसुफ गुर्गकी शराबसे खूबी और जोरदारीमें बराबर होती थी, तब ईशान तूराने तुझे यूसुफवाली उपाधि प्रदान की थी। अब यूसुफकी शराब तेरी शराबसे आगे बढ़ गई। मुझे डर है, कि कहीं यह उपाधि छीनकर वह तुझे गीदड़ (शगाल) की उपाधि न दे दे।

—गीदड़ होना भी बुरा नहीं, क्योंकि वह भेड़के माँसकी जगह मुर्गेका माँस खाता है।

उन्होंने तले माँसमें चावल डालकर पकाया। इस समय भी दो-तीन बार प्याला हाथोंसे गुजरा। फिर आशको निकालकर पेट भर खाया। उसके साथ भी पानीकी जगह मदिराका दौर चला। इसी वक्त द्वार खटखटानेकी आवाज आई।

हाजित्—फुर्सत नहीं, परहेज।

—मैं सूफी (मुवज्जिन) हूँ। दरवाजेपर एक दाखुंदा (पहाड़ी) आया है, वह असामुद्दीन मखदूमके बारेमें पूछ रहा था। उसे साथ लाया हूँ।

—अच्छा, उसे यहाँ छोड़कर तू चला जा। फुर्सत नहीं, परहेज़।

हाजित्ने सूफीके चले जानेपर द्वार खोलकर "आ बच्चा" कह मेहमानको कमरेके अंदर कर लिया और दुम्बेकी चर्बीको उसके हाथसे ले एक कोनेमें रख दिया। फिर आशका थाल उसके सामने रखते पूछा—तेरा नाम यादगार है न?

—हाँ, यादगार है!

यादगार आश खाने लगा। असामुद्दीनको नसीहतकी बात याद आई

और उसने ज़ोर-ज़ोरसे उपदेश देना आरंभ किया। औजपर चढ़नेके समय हाजित्ने भी साथ दिया। अन्तमें दोनोंने एक साथ ही मुल्लाखानी पद पढ़े।

आश और नसीहतके समाप्त होनेके बाद यादगारको बिदाकर दोनोंने गजल गाना आरम्भ किया—

स्वर्ग तुझे दें, तो धोखेमें मत तू पड़ना

पैर मदर्सेसे बाहर न रख, क्योंकि है आशियाना।

इस पदको उन दोनोंने आशिकोंकी तरह दुहरा-दुहराकर गाया, लेकिन नशेका जोर इतना अधिक था, कि "पैर न मदिरालयके बाहर" की जगह "मदर्सेसे बाहर पैर न रख" कहके गाया।

१२

नृत्योत्सव

सूर्यास्त हुए दो घंटे हो चुके थे। दोनों मित्रोंका नशा भी कुछ कम हो चला था, लेकिन चित्त-वैकल्य और विलासिताने उन्हें शान्तिसे बैठने या सोने न दिया, इसलिये वे कोठरीसे निकल सैर करने और ताज़ी हवा खाकर अपनी खुमारी दूर करनेके लिये तैयार हुए। बुखाराकी संकरी अँधेरी गलियाँ उन्हें अच्छी न लगीं और हाजित्ने कहा—वल्लाह (भगवान्की शपथ)! बुखाराकी गलियोंसे कब्रें अच्छी हैं।

—ऐसा न कह, यह अँधेरी गलियाँ ही हैं, जिन्होंने मेरे और तेरे पापोंको ढाक रखा है। यदि ये प्रभासित और जनसंकुल होतीं, तो हम कबके ना बेइज्जत और बदनाम हो गये होते।

हाजित्ने सहमति प्रकट करते हुए कहा—ठीक, चलो लेकिन किस ओर?

—यदि बड़ी सड़ककी ओरसे चलें तो कैसा?

—बहुत अच्छा चलो चलें।

दोनों "विद्यार्थी" सड़ककी ओर किसी अति-अज्ञात वस्तुकी चाहमें चले। मीरकान-सड़क तक कहींसे दादरा (नाच-गाने)की आवाज नहीं सुनाई पड़ी। जब ख़ानकाह्-मीरकानसे दाहिनी ओर मुड़े, तो बाज़ार-ख़ुयाबानकी तरफसे दायरेकी ध्वनि अरङ्-अरङ् आने लगी। जितना ही वे बाजारके समीप पहुँचे, दायरेकी आवाज़ उतनी ही ऊँची होने लगी। बाजारमें पहुँचे। शबगर्द (पहरेदार सिपाही) से—जो अपनी ढोलको सिरके नीचे रखे एक किनारे लेटा हुआ था—असामुद्दीनने पूछा—"आक़ा शबगर्द! यह मजलिस कहाँ है?

शबगर्द शिरको उठाये बिना "ईशान-अमला सड़क पर" कहकर क़ुर-क़ुराने-भनभनाने लगा, जिससे जान पड़ा कि वह आराममें बाधा पड़नेसे नाराज़ है।

थोड़ी देर चलनेके बाद दोनों दोस्त मजलिसवाले घरके द्वारपर पहुँचे। घरका द्वार बहुत तंग था। वहाँ जमीनमें खोदे चूल्हों पर अधमने हण्डे रखे थे और अगले दिन आश पकानेके लिये ईंधनकी लकड़ियाँ चारों ओर फैली हुई थीं। एक तरफ एक-मशकी बड़े-बड़े समावार उबल रहे थे। नौकर लगातार घरके अन्दरसे आकर खाली चायनिकोंको रख खौलती चायनिकें उठाकर अन्दर ले जा रहे थे। समावारची खाली चाय-निकोंमें नयी चाय और गरम पानी डालकर बारह छेदवाले चूल्हेपर उबलनेके लिये रखता जा रहा था।

बेबुलाये मेहमान ईंधनके ढेरोंपर संभलकर पैर रखते किवाड़के पास पहुँचे और शिरको अन्दर डालकर तमाशा देखने लगे। मजलिस एक बड़ी दालानमें हो रही थी। आदमी एक दूसरेसे इतने चिपके-दबे बैठे थे, कि सूई रखनेकी भी जगह न थी। सिर्फ़ थोड़ीसी जगह खाली थी, जहाँ नीचेकी ओर आगसे भरी तीन अँगीठियाँ जल रही थीं। उनके आगे चारदायरावाले बैठे दायरों और ग़ज़लोंको एक ख़ास तर्ज़से गा रहे थे। मजलिसके बीचमें एक काकुलदार (ज़ुल्फ़ीवाला) निमोछिया लड़का

नाच रहा था, जो बीच-बीचमें दायरावालों (समाजियों)के साथ गाता भी था। एक पचीस-साला जवान कमरबन्द बाँधे हरा कुर्ता पहने बैठा था, जिसने दोस्तोंको खुश करनेके लिये मुँह पर अँगीठीकी राख मल रखी थी। जवानके हाथमें एक बड़ी मशाल थी, जिसे वह नर्तक लड़केके मुँहकी ओर किये था। लड़का जिस तरफ घूमता मशालची भी एक ठेहुनेको जमीनपर रख दूसरेको खड़ा किये मशालको लड़केके मुँहकी ओर से बिना हटाये खुद घूम जाता था। मसालसे टपका तेल नीचेके नम्देपर गिरता, जो सैकड़ों ऐसे जलसोंको देख चुका था, और इसीलिये तेलसे भरा था। रोशनी कम होनेपर मशालची जवान तेलदानकी टोंटीसे और तेल डाल देता और रोशनी तेज हो जाती।

बिना बुलाये मेहमान थोड़ी देर तक द्वारपर खड़े तमाशा देखते आँख मार भौं हिला बात करते मज़ा लेते रहे। वहाँ बैठे एक आदमी-को उनके मुल्ला होनेका पता लग गया और उसने अपनी जगहसे उठकर "आक़ा क़ारी—(वेदपाठी)! भीतर तशरीफ लाइये" कहकर बुलाया। माननीय मेहमान इतने ही इशारेकी प्रतीक्षा कर रहे थे और मनमें "दोस्तकी ओरसे एक इशारा और मेरा शिरके बल दौड़ना" कहते जूतेको पैरसे निकाले बिना लोगोंकी पीठों और जाँघोंको रौंदते मजलिसके अन्दर पहुँच गये। बुलानेवाले आदमीने लोगोंको थोड़ा खिसकाकर उनके लिये आगे नम्देपर जगह खाली करवा दी। मेहमान उस तेलसे काले नम्देपर इतने सन्तोषके साथ पातित-जानु बैठे, मानो वह अतलसका बिछौना है।

असामुद्दीनने हाजित्के कानमें कहा—यह बड़े भले और मुल्ला-प्रेमी लोग हैं। आँखबाजी करनेपर भी हमारा इतना सम्मान करते हैं।

—पाया न भले आदमियोंको? अरे "डंडेकी चोटसे भालू भी मुल्ला हो जाता है"। इन्होंने भी शरीफ कचरीकी हवेलीकी घटनासे शिक्षा ली है। पिछले सप्ताह उसकी दावतकी मजलिसमें कुछ दायरा-प्रेमी मुल्ला-बच्चे (विद्यार्थी) पहुँच गये, उसने उन्हें भीतर आने न दिया। एक

घंटेमें जैसे मुर्देके किनारे गीध जमा हो जायें, बहुतसे मुल्ला-बच्चे जमा होगये। और उन्होंने धावा बोल दिया। छतसे लटकते झाड़ों और लालटेनोंको तोड़ दिया, दूसगजी कालीनों और मखमलोंको जला दिया। यदि दर्शकोंने आग बुझानेमें हाथ न बटाया होता, तो सारी हवेली ही जल गयी होती। और क्या भूल गया, पिछले साल ऐसी ही घटना खुद हमारी गुज़रगाह-ग़ाज़ियान (ग़ाज़ीपथ)में भी हुई थी।

हाजित्ने ग़ाज़ियानके एक यज्ञमें गुज़री दुर्घटनाका वर्णन शुरू किया। वहाँ हवेलीका दर्वाजा बन्द देख मुल्ला-बच्चों (विद्यार्थियों)ने भारी तूफ़ान मचाया और टेलीफ़ोनके तार तक काट दिये। क़ाज़ीकलाँके आदमीने अन्तमें पहुँचकर दो-तीनको गिरफ्तार करना चाहा परन्तु "बहादुर मुला-बच्चोंने" भी—यह कहते हाजित्ने जोशमें आके अपनी आवाज़ कुछ ऊँची की, लेकिन पाससे किसीने "चुप रहो" कह दिया और हाजितको चुप रह जाना पड़ा।

मजलिस समाप्त हुई। नौकर अँगीठियोंको उठा ले गये। मशाल बुझा दी गयी। छतसे लटकती लालटेनोंकी रोशनी भी कम कर दी गयी, लेकिन हमारे मेहमान अब भी डटे थे। गद्दे पर बैठे आदमीने कहा—मेहमान भले आये, कल दोपहरको भोज करना है, इसलिये जल्द सोना जरूरी है।

असामुद्दीनने हाजितसे कहा—इतना ही सम्मान बहुत है। आ नाम पुकारनेसे पहिले ही चले चलें। रात भी आधी बीत गयी है।

जब वह अपनी जगहसे उठ रहे थे, तो एक आदमीने कहा—भले आये तक़सीर! आपका हर क़दम आँखोंपर।

एक दूसरी आवाज़ आयी—इनके ऊपर एक पत्थर फेंक।

इन सारे अपमानोंको सुनकर भी हमारे मेहमान अनजान बने हुए थे और उन्होंने उन लोगोंके इन अन्तिम अपराधोंको पहिलेके सम्मान-प्रदर्शनसे माफ़ कर दिया।

१३

बेवक्तकी अज़ान

मजलिस समाप्त होनेपर मखदूम और हाजित् मदर्सा-कौशकी ओरसे रवाना हुए। हाजित्ने कहा—वल्लाह, भूखके मारे मेरे लिये चलना मुश्किल हो रहा है।

—चाय भी प्यालापर प्याला पी रहे थे, लेकिन उससे क्या बनता? जो कहीं घरमें खानेकी बनी चीज होती—कहकर मखदूमने भी अपनी भूखको प्रकट किया।

भूखे होनेपर भी दोनों दोस्त बिना दम मारे चलते रहे। वह मदर्सा कौश बाजारमें पहुँचे। देखाकी दहबाशी (दस सिपाहियोंका अफसर) अँगीठी जला अपने शबगर्दोंके साथ बैठा चखचख कर रहा है। दोस्तोंने जाकर हुक्का माँगा। दहबाशीके कहनेपर एक शबगर्दने हुक्का दिया। दोनोंने दो-दो फूँक लगायी, इसी वक्त वहाँ एक कोनेसे आवाज़ आयी "तक़सीरजान! मुझे छुड़ाइये"। असामुद्दीनने पास जाकर पूछा:

—तू कौन है?

—क्या मुझे नहीं पहिचानते? आज ही तो मैंने मदरसा जाकर आपको चर्बी दी।

—हाँ हाँ, अज़ीमशाहका आदमी। तू यहाँ क्या कर रहा है?

—मदर्सेसे निकलकर मैं बाहर आया, तीन-चार क़दम ही चला था, कि रास्ता भूल गया। बहुत कोशिश की, मगर रास्ता न मिला। फतहुल्ला बायकी हवेली पूछी, किन्तु किसीने न बतलाया। रात आयी, अँधेरा हो गया। कूचेमें आदमियोंका आना जाना भी बन्द हुआ। रास्ता न पा इधरसे उधर दौड़ता रहा। अन्तमें इन लोगोंमेंसे एकने मुझे गिरफ्तारकर यहाँ बैठाया। मैंने बहुत बिन्ती की, कि मुझे फतहुल्लाके पास पहुँचा दें, मेरा मालिक वहाँ है, यदि मैं इस रातको न गया, तो मुझे बहुत

बुरा-भला कहेगा। किन्तु, किसीने न सुना और यहाँ बन्दी बनाकर रख दिया।

असामुद्दीनने दहबाशीसे कहा—दहबाशी! इसे छोड़ दो, यह मेरा मेहमान है।

—अच्छा, आपकी बात शिर आँखोंपर। जब इस लड़केने कहा, कि मेरा मालिक फतहुल्ला बायका मेहमान है, तो मुझे आशा हुई, कि कल पतीली गरम करनेके लिये मुझे कुछ पैसे मिलेंगे; लेकिन मालिकके धनमें हिस्सा न बदा था और आप यहाँ आ गये।

—खैर, हरज नहीं। खुदा इसका बदला दूसरी जगह देगा। यदि ईशान अमलाके मजलिसोंका रास्ता लो, तो एक नहीं कितने ही पतीलियोंके गरम करनेके लिये पैसा मिल जाय—यह कह असामुद्दीनने यादगारसे कहा "उठ बच्चा! इधर आ!"

दोनों दोस्तोंने निश्चय किया, कि यादगारको फतहुल्लाकी हवेली तक पहुँचा आएँ। रेगिस्तान और बादशाही आर्क (किला)की चारों तरफ सरबाज़ (सैनिक) रखवाली कर रहे थे, जो अनजाने आदमीको जाने नहीं देते थे। इसलिये उन्होंने मजबूर हो बाला-हौज़के पीछेसे उस्ताऊरब्ली, असकरखी और काफ़िररबातका चक्कर काटते वह गुज़रगाह (सड़क) मिर्जागफ़ूरपर पहुँचे। मिर्जागफ़ूरसे आगे मसजिद अर्बान-यादगारके सामनेके कूचेसे उन्होंने लड़केको फतहुल्लाकी हवेलीमें पहुँचा दिया और स्वयं बड़ी सड़कसे हौज़ (तालाब) चोबबाज़ार होते अपने घरके रास्तेको पकड़ा।

हाजित्ने कहा—इस भूखमें इतना बड़ा रास्ता तेरे अज़ीमशाहकी गन्दगीके लिये चलना "मुर्देके ऊपर सौ डंडा" है।

—हाजित्! सचमुच तू गुर्ग (भेड़िया) है। अज़ीमशाहके दुम्बेकी चर्बी अच्छी, किन्तु उसके आदमीको दस कदम पहुँचाना बुरा!

वस्तुतः दोनों दोस्त अत्यन्त भूखे थे। नशेके बाद एकके बाद एक

कीकी चायने पेटको धोकर साफ कर दिया था, खाली पेटमें आग लगी हुई थी, जिसने अँतड़ियोंको जलाकर आँखोंमें अँधेरा पैदा कर दिया था। रास्तेमें हर नानबाईखाने (रोटीकी दूकान)के पाससे जाते वक्त गरम रोटीकी सुगन्ध भूखको और बढ़ा देती थी। हाजित्ने कहा—पैसा है तो ला, एक रोटी ख़रीदकर खायें।

—पैसा मेरे पास नहीं है, लेकिन मुफ्त रोटी पानेका एक ढंग मेरे पास है।

—कौनसा ढंग? चोरी करें या भिखमंगी?

—नहीं, चोरी करनेकी ज़रूरत नहीं, एक सम्मानित भिखमंगी करें।

—सम्मानित भिखमंगी कैसी? जल्दी जो कुछ कहना है कर, यहाँ जान निकलना चाहती है।

—धीरज धर, पहले मेरी बात सुन। आजकल शहरमें महामारी फैली हुई है। ईशान काज़ीकलाँ (महान्यायाधीश)ने मुवाज्ज़िनोंको हुकुम दे रखा है, कि महामारी रोकनेके लिये रातको कूचोंमें जाकर बेवक्त अज़ानकी बाँग दें। कल रात मैं मदर्सेके मैदानमें था, देखा दो मुवज्जिन राहमें खड़े अज़ान दे रहे हैं, फिर देखा कि उस्ता-हमराहके एक नानबाई-खानेसे एक नौकरने लाकर उन्हें दो रोटियाँ दीं। हम भी मिर्ज़ा मुख्तारजानके नानबाईखाने (रोटीकी दूकान)के सामने एक अज़ान दें, आशा है हमें भी लाकर रोटी देंगे।

—असामुद्दीन! तदबीर तो तूने भाई गजबकी सोच निकाली। अब ज़रा जल्दी जल्दी क़दम बढ़ा, कहीं रोटीके पेटमें जानेसे पहिले ही जान न निकल जाये।

दोनों यारोंने जल्दी-जल्दी पहुँचकर नानबाईखानेके सामने ऊँची आवाज़में अज़ान खतमकर रास्तेमें दोनों पैरोंपर बैठ ऊँची आवाज़से अज़ान की दुआ पढ़नी शुरू की। इसी वक्त नानबाईखानेका दर्वाजा खुला और एक नौकर हाथमें दो गरमागरम रोटियाँ लेके वहाँ पहुँचा। दुआ अभी

खतम नहीं हो पायी थी। हाजित्‌ने धीरेसे कहा "बस कर, मतलब पूरा हो गया, तेरी दुआ अल्लाहकी दर्गाहमें कबकी स्वीकृत हो चुकी?" यारोंने जल्दी दुआ खतमकर हाथोंको मुँहपर फेरा। नौकरने हाथ-जलाती गरम रोटियोंको दे दुआ करनेके लिये प्रार्थना की। यारोंने उसके लिये छोटी सी दुआ पढ़कर अपना रास्ता लिया और एक रोटीको तोड़कर दो मिनटमें खतम किया। अब दूसरी रोटीकी बारी आयी, तो हाजित्‌ने कहा—अगर चार रोटियाँ दिये होता, तो कुछ काम भी चलता, इन दो रोटियोंसे क्या बनता है? ओठोंने कहा "आई," मुँहने कहा "भीतर आई," पेटने कहा "ऊपर क्या चीज़ थी जो नीचे नहीं पहुँची"।

—हाजित्! अगर तू चार पैर वाला गुर्ग (भेड़िया) होता, तो दुनिया में एक भी भेड़ नहीं बची रहती। एक आदमी श्रद्धा करके तुझे रोटी देता है और तू कृतघ्न बन और ज्यादा माँगता है। ये बेचारे सीधे-सादे हैं, जो कि मुझे और तुझे रोटी देते हैं, यदि हमारे सच्चे रूपको जानते, तो पत्थर देकर हमारे शिरको तोड़ देते।

—ये मूर्ख हैं।

—नमकहराम! गाली न दे। ये लोग मूर्ख हों, तो भी मेरा और तेरा पेट यही भरते हैं। दुनियाकी आबादी इन्हींके ऊपर अवलम्बित है, इसलिये पुराने आलिमोंने कहा है "लौ लल्-हिमाक़ वल्-अख़बद्‌दुनिया" (यदि मूर्ख न हों, तो दुनिया बरबाद हो जाय)।

इस तरह फ़िलसफ़ाबाज़ी और मसखरी करते दोनों यार मदर्से पहुँचे और रोटीके ऊपर एक गिलास ठंडा पानी पीकर दोनों सो गये।

दूसरे दिन आठ बजे सवेरे ही नकबत् खोजाने किवाड़को टकटक करके उन्हें जगाया। हाजित्‌ने कहा—ईशान जान! सुना था कि कल तुम्हें उन्होंने बन्दी बनाया था, फिर कैसे छूटे?

—मुझे बन्दी बनानेवाला अभी तक माँके पेटसे नहीं जनमा।

—और यूसुफका क्या हुआ?

—हम दोनोंको काज़ीखाना ले गये। ईशान काज़ीकलाँने मुझे देखा। फिर वह यूसुफसे बोले "तेरा शिर कब्रमें पड़े! तू इस्लामी बादशाहकी छत्र-छायामें जीवन बिताते शराब-फ़रोशी करता है? (फिर अपने आदमियों की ओर निगाह करके) "इस काफ़िरको ले जाकर ज़िन्दान (जेल)में छोड़ आओ और कह दो कि इसे तबतक बन्द रखें, जबतक जनाबआलीसे प्रार्थना करके शरियतके अनुसार फैसला नहीं हो जाता"। फिर नौकर को इशारा किया, कि मुझे ले जाकर क़ाजीखानेके ज़ीनखानेमें रखे। शाम होनेपर क़ाज़ीकलाँके मीर अखुरबाशी (अफ़सर)ने एक आदमीको साथ दे मुझे सही-सलामत घर भेज दिया।

हाजित्‌ने कहा—"बड़ेको रहने दे छोटेको काट" की कहावत सचमुच ठीक है।

—यदि मेरे जैसे बड़ोंको काटने लगें, तो तेरे जैसे छोटे मर जायँ। आखिर ईशान काजीकलाँका पेट भी हमारे जैसोंके ही धनसे भरता है। जाने दे इन बातोंको, जल्दी आश तैयार कर—कहते नकबत खोजा जामा उतार बिस्तरेपर पालथी मारकर बैठ गया।

१४

सैनिक (सरबाज़)

बुखाराकी शान-शौकतने शहरमें पहले-पहल आये पहाड़ीको न आश्चर्यमें डाला, न कोई आकर्षण पैदा किया। मजारों (समाधियों) और मदरसोंने भी अधिक प्रभाव न डाला। यादगारका ख्याल केवल एक जगह—दर्शनिहाँमें था, उसका दिल केवल गुलनारके साथ बँधा था। गिरफ़्तारीके समय गुलनारने जैसा प्रेम और सहानुभूति दिखलाई थी, उसने उसकी मुहब्बतको सौ गुना बढ़ा दिया था। इस बेगानी दुनियामें उसने एक व्यक्तिको पाया था, जिसके दिलमें उसके लिये दर्द था। उसे अफ़सोस

होता था, कि आज वह उससे दूर पड़ा है। वह यह भी नहीं जानता था, कि गुलनारको फिर देख सकेगा या नहीं! "दुनिया आशाकी ठौर," "जब तक जड़ पानीमें तब तक फलकी आश" कहा गया है। यदि प्रयत्न करे, तो मनुष्य अपने लक्ष्य तक पहुँच सकता है। उसकी यही अभिलाषा थी कि एक बार फिर गुलनारके नयनाभिराम सौन्दर्यको देखे; एक बार फिर उन अधरोंसे मधु-मिश्रित अक्षरोंको सुने, जिनपर गिरफ्तारीके समयको छोड़ सदा मुस्कुराहट रहती थी।

यादगार अपने दिलसे कह रहा था—गुलनारकी चेष्टा और क्रियासे स्पष्ट है, कि वह मुझसे प्रेम करती है, वह कभी किसी दूसरेको अपना दिल न देगी। उसने अंतिम दिन कहा था "तुझे छोड़ मैं किसीसे ब्याह न करूँगी"। यसावलकी बन्दूकके सामने उसने जो बहादुरी दिखलाई थी, उससे साफ है, कि वह किसी दूसरेकी बीबी आसानीसे न बन सकेगी। स्त्री होते भी उसने इस तरहकी मर्दानगी और वफ़ादारी दिखलाई, लेकिन अफ़सोस, मैंने उसके पास पहुँचने तककी कोई कोशिश न की।

लेकिन कोशिश तभी की जा सकती थी, यदि अजीमशाहके हाथसे मुक्त होनेका कोई रास्ता ढूँढे। और रास्ता क्या है? भागना! कहाँ और किसके दर्वाजेपर, इस प्रश्नका उत्तर अनुभवहीन, अल्पवयस्क तरुणके पास न था।

यादगार फतहुल्ला बायकी हवेलीवाले कूचेकी छोरपर पुश्त-आर्क नामक मार्गमें दीवारसे पीठ लगाये इन्हीं विचारोंमें मग्न था, इसी वक्त किसीकी आवाज़ आयी—दाखुन्दा! तू कहाँका है?

आवाज सुनकर यादगार जैसे सोतेसे जाग उठा। उसने उस तरफ निगाह करके देखा कि वहाँ अमीर का एक सरबाज़ (सैनिक) उत्तरकी प्रतीक्षा में है।

यादगारने कहा—हिसारका।

—खास हिसारका।
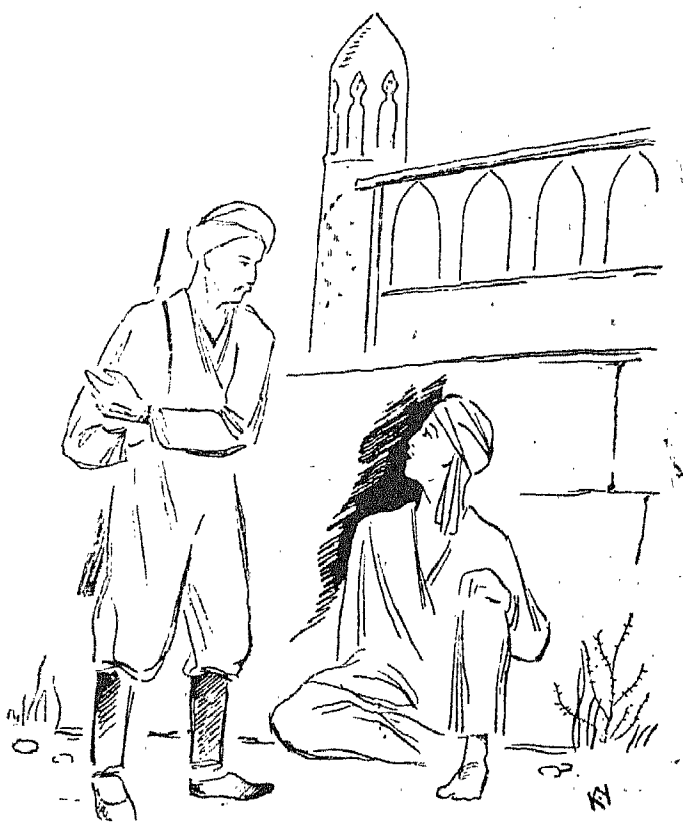
"अगर मैं सरबाज़ (सिपाही) बनना चाहूँ तो" पृष्ठ १८६

—नहीं, असली निवासी मैं कूलाबका हूँ, लेकिन इस वक्त सरेजूय हिसारमें रहता हूँ।

—वहाँकी जगहें आबाद हैं?

—आबाद जगहें भी हैं और ना-आबाद भी।

—अंगूर, खरबूजा (सरदा) और दूसरे मेवे वहाँ होते हैं?

—हाँ, हर तरहके मेवे वहाँ होते हैं।

—मैं वहाँ जा रहा हूँ, इसलिये तुझसे पूछ रहा हूँ।

—व्यापारके लिये जा रहे हैं, या नौकरीके लिये?

—दोनोंमेंसे किसीके लिये नहीं, हम जनाबआलीके सरबाज़ हैं, सदा उनकी सेवा करते हैं। जनाबआलीका फर्मान (आज्ञा) है, कि मेरा दस्ता (पल्टन) कोहिस्तान (पर्वतभूमि)की तरफ जाय। कायदेके मुताबिक वहाँ शायद दो साल रहना पड़े। यह पहिली बार है, कि मैं उस तरफ जा रहा हूँ।

"आदमी कैसे जनाबआलीका सरबाज बनता है" एकाएक यादगार पूछ उठा। अभी पहलेके विचार-मालासे उसका सम्बन्ध टूटा न था। उसने सोचा शायद सरबाज़ बनकर कोहिस्तान जानेमें आसानी हो।

—जो भी चाहे, हर वक्त अमीरका सरबाज़ बन सकता है।

—अगर मैं सरबाज बनना चाहूँ तो?

—तू भी बन सकता है।

—यदि मेरा मालिक न बनने दे तो?

—अगर तू चाहे, तो फिर तेरा बाप, माँ, मालिक या दूसरा रोक नहीं सकता है।

—यदि मैं कोहिस्तान जाने वाले दस्तेमें भर्ती होना चाहूँ, तो क्या भरती हो सकती है?

—हाँ, भरती हो सकती है।

—मैं तुम्हारे दस्ते (पल्टन)में आना चाहता हूँ, मुझे उपाय बताओ।

—इस वक्त मैं यहाँ ड्यूटीपर हूँ, एक घंटा बाद मेरी जगह दूसरा आदमी आयेगा और मुझे छुट्टी मिलेगी, फिर हम दोनों जुजबाशी (कप्तान) के पास चलेंगे, वह तुझे शाही सरबाज बना देंगे।

—बहुत अच्छा। मैं इस जगहसे ही नहीं टलूँगा।

एक घंटा बाद सरबाज ड्यूटीसे छुट्टी पा यादगारको साथ लिये काफ़िर रावत सड़कसे होते जुजबाशीके मकानपर पहुँचा। दरवाजेके पास यादगारको रहनेके लिये कहते बोला—मैं अन्दर जुजबाशीसे निवेदन करता हूँ, जबतक मैं आऊँ तब तक तू यहाँ बैठ।

सरबाज अन्दर गया। वहाँ जीनखानेमें एक चालिससाला आदमी—जिसके पैरोंमें बेड़ियाँ पड़ी थीं—बैठा आँसू बहा रहा था। सरबाजने उसकी तरफ देखकर कहा—कुर्बान! कब तक इस हालतमें बैठा रहेगा?

—जमीन कड़ी, आसमान ऊँचा, मेरे लिये उपाय क्या, बैठूँ नहीं तो क्या करूँ!

—जल्दी एक आदमीको खरीदकर दे और इस आफतसे छुट्टी पा जा। इस जगह आकर किसीने महीना नहीं देखा। जल्दी कर।

—मैं कहाँसे आदमी खरीदकर लाऊँ? एक आदमीके लिये इतने तंके चाहिये और मेरे पास क्या है!

—मेरी बात सुन। या तो अपने भाईको लाकर दे या उसकी जगह एक आदमीको दे, या खुद सरबाज बन। यह छोड़ मुक्तिका दूसरा उपाय नहीं है।

—काश! यदि वह जवाँमर्द मेरा असली भाई होता! मेरे बापने सिर्फ़ उसकी माँ से शादी की थी। बाप और अपनी माँके मरनेके बाद वह चला गया, फिर खुद आकर सरबाज बना और खुद ही भाग गया। मेरा क्या कसूर है, कि मैं उसकी जगह आदमी खरीद कर दूँ।

—जो कुछ भी हो, वह तेरा दादार (भाई) कहा जाता था, यदि तू न होता तो उसकी जगह उसके गाँववाले एक आदमीको पकड़कर सरबाज (सैनिक) बनाते। बादशाही काम हँसी-ठट्ठा नहीं है। एक बार सरबाज बन जिसने जनाबआली की तनख्वाह खायी, वह मरते दम तकके लिये सरबाज़ बन गया। अगर वह भागे, तो उसके घरवाले, घरवालों नहीं तो पड़ोसियों या गाँववालोंको सरबाज बनना पड़ेगा। यदि आदमी खरीदकर नहीं दे सकता, तो खुद सरबाज बन, दूसरा रास्ता नहीं।

—मेरे ऊपर दया कीजिये। मेरे तीन छोटे-छोटे बच्चे हैं और एक काले बालोंवाली परी सी स्त्री है। घरमें दो तनाब (एकड़) जमीन और इन हाथोंके सिवाय मेरे पास कुछ नहीं है। यदि एक दिन न हिलूँ-डोलूँ, तो बच्चे भूखे मर जायँ। यदि मैं सरबाज बनूँ, तो उनकी क्या हालत होगी ?

—तेरे बच्चोंकी कोई जिम्मेदारी नहीं ले सकता। बादमें वह जिन्दा रहेंगे या मरेंगे यह दूसरी बात है।

—क़ुर्बान ! तू चाहता है कि इस रोने-धोनेसे मुक्त हो जाय; लेकिन अच्छी तरह समझ ले, कि रोने-धोनेसे जनाबआली की रोटी नहीं हजम हो सकती। यदि तू धोखेबाज नहीं है, तो क्यों तीन सौ तंका जमाकर एक आदमी नहीं दे सकता ?

—तीन सौ पर कोई आदमी सरबाजीके लिये राजी नहीं हो सकता, कमसे कम हज़ार तंका माँगते हैं। यदि तीन सौ तंकेसे काम चल जाता, तो कब न आपनी जमीनको किसी सूदखोरके हाथमें गिरौं रख आदमी खरीदकर ला देता और इस आफतसे अपनेको छुड़ा लेता ?

—तीन सौ तंका लाकर देनेकी करारकर, मैं अभी आदमी ढूँढ़ लाता हूँ।

—मैं हजार बार राजी हूँ, आप आदमी लाइये।

—मैं आज ही आदमी लाकर तेरी जगह देता हूँ, जब तू पैसा दे देगा, तो मुक्त हो जायगा।

—आज मेरे गाँवका अर्बाब (चौधरी) आनेवाला है, मैं उससे कहता हूँ, कि किसी सूदखोरके पास मेरी जमीन गिरौं रखनेका प्रबन्ध करे। लेकिन इसके बाद भी मेरा काम न हुआ और मुझे मुक्ति न मिली, तो फिर मुफ्त ही में कर्जदार बनकर रहना पड़ेगा।

—"खुदा एक, बात एक" कह कर सरबाज साईसखानेसे निकलकर मेहमानखानेमें जुज़बाशीके पास पहुँचा। जुज़बाशी अपनी घरू पोशाक—सीना खुले एकहरे कुर्त्ते—को पहने गद्देपर बैठा एक सोलह-सत्रहसाला सरबाज लड़केके साथ ताश खेल रहा था। जुज़बाशीने ताशोंसे आँखको बिना हटाये "क्या बात है दहबाशी!" कहकर सरबाजसे पूछा।

—कोई बात नहीं, आपकी मेहरबानी। कुर्बानका काम भी मैंने ठीक कर दिया।

जुज़बाशीने पहिले ही की तरह बे-परवाहीसे कहा—किस तरह ठीक कर दिया?

—तीन सौ तंका भी देगा और खरीदकर आदमी भी।

जुज़बाशीने एकाएक ताशको हाथसे फेंककर आश्चर्यके साथ कहा—पैसा भी देगा और आदमी भी! यह तुमने क्या जादू किया? सच कहो।

—मैंने आजतक कभी आपके सामने झूठ नहीं कहा, अब बतलाइये कि इन तीन सौमेंसे मुझे कितना दीजियेगा।

—यदि आदमी भी लाकर दो, तो तुम्हें पचास तंके मिलेंगे।

—यह कम है, कुछ और ज्यादा होना चाहिये?

—पचास तंका भी बहुत होता है। सरकर्दा (करनल)को कुछ दिये बिना इस रक़मका आश नहीं पकाया जा सकता। कमसे कम सौ तंका वहाँ चला जायगा। फिर मेरे लिये क्या रह जायेगा? जल्द बताओ, क्या ढंग निकाला? अब भी मुझे विश्वास नहीं होता।

—मुझे एक जवान मिला, वह सरबाज बनना चाहता है। बिना उसे बताये मैंने कुर्बानके हाथों उसे तीन सौ तंकेमें बेच दिया। अब बात यह है, कि आप रजिस्टरमें कुर्बानकी जगह उसका नाम दर्ज कर दीजिये। जब कुर्बान तंका लाकर दे दे, तो उसे मुक्त कर देंगे।

—जवान कितने सालका है?

दहबाशीने नीची निगाह करके बैठे ताश खेलनेवाले लड़केकी ओर देखकर कहा—यही बीस साल या कुछ ज्यादा; लेकिन इतना सुन्दर नहीं है।

—बहुत अच्छा, कबतक सब काम ठीक हो जायगा?

—काम सब ठीक हुआ-हवाया है। जवान भी आपकी हवेलीके फाटकपर मौजूद है।

—नमूर नौरोज़! व्यर्थ ही तुम्हें नौरोज़ ज़ोर नहीं पुकारते। हर ज़ोर (कठिनाई)के कामको तुम बड़ी आसानीसे ठीक कर देते हो। (लड़केकी ओर इशारा करके) उठ, अपने आक़ा (स्वामी)को हुक्का भरकर दे।

लड़केने चिलममें तम्बाकू और आग डाल हुक्कापर रख, पहिले युज़बाशी (कप्तान)के आगे रखा। उसने दो-एक फूँक खींचकर लड़केसे कहा—"हुक्काको जगाकर दहबाशीको दे। इस पैसेमेंसे तेरे लिये भी एक ताकी टोपी खरीद देंगे"। लड़केने दो-चार दम लगा हुक्केको चलताकर नौरोज़के सामने किया। नौरोज़ हुक्का पीकर बाहर गया और ज़रा सी देरमें यादगारको लिये फिर हाजिर हुआ। युज़बाशीने यादगारसे नाम और पता पूछकर नौरोजसे कहा—इसे सरकर्दा (कर्नल)के मिर्ज़ाखाने (क्लर्कखाने)में ले जा नाम रजिस्टरमें लिखवा आओ। जामा और पैजामा भी लेकर दो। फिर यहाँ लाओ, जिसमें काम शुरू करने तक हमारे घरमें ख़िदमत करे।

× × ×

अब यादगार सरबाज़ (सैनिक) था और बहुत ही प्रसन्न सरबाज़। अमीरके बारह हजार सरबाजोंमें अमलदारों (अफसरों)को छोड़ शायद ही कोई इतना प्रसन्न था। उसके मनमें तरह-तरहके विचार पैदा हो रहे थे—मैं जल्दी ही कोहिस्तान जाऊँगा। अज़ीमशाह मुझसे कुछ नहीं कह सकता, क्योंकि मैं अमीरका सरबाज हूँ। कोहिस्तान पहुँच जानेपर आगेका काम आसान है। या तो गुलनार मेरे पास आयेगी या मैं गुलनारके पास।

एक दासके लिये मुक्ति और एक प्रेमीके लिये मिलनसे बढ़कर प्रिय और क्या चीज हो सकती है? यादगार दास भी था और प्रेमी भी। वह अब दासतासे मुक्त था और कोहिस्तानकी यात्राके बाद जल्दी ही उसे मिलनका भी सौभाग्य प्राप्त होगा।

इसके बदले सप्ताहमें तीन दिन उसे दो-दो घंटा परेड और एक दिन चाँदमारी करनी पड़ती। प्रतिमास खजानेसे बीस तंका पाता, जो कि उसके लिये बड़ी दौलत थी। यदि छुट्टीके दिनोंमें कोई और काम करके चार-पाँच तंका और पैदा कर लेता, तो वह "नूरके ऊपर नूर" था।

दस्त (पल्टन)के सफरका दिन निश्चित हुआ। सफ़रके लिये लोगोंके अराबे (घोड़े, ताँगे) और ऊँट बेगारमें पकड़े जाने लगे। अपने बन्धु-बान्धवसे मिलने-जुलनेके लिये सरबाजोंको परेडसे एक हफ्तेकी छुट्टी मिली। इसी समय सरकर्दा (कर्नल)के नाम लश्करबाशी (प्रधान-सेनापति)का फ़र्मान आया—"अपने दस्तेमें पता लगाओ कि कौन-कौन ऐसे सरबाज हैं, जिनका घर चकचकी बुज़गल्लाके उस तरफ़ है। ऐसे सरबाजोंको दूसरे दस्तेमें बदल दें, उस दस्तेसे आपको दूसरे सरबाज मिलेंगे।"

इस फर्मानके अनुसार यादगारको अपना दस्ता छोड़ दूसरे दस्तेमें जाना पड़ा। यादगारके दिलको भारी आघात लगा, उसकी सारी आशायें मिट्टीमें मिल गयीं।

१५

नया संगीत (१६१०)

यादगार अब दूसरे दस्तेमें था। कोहिस्तानका जाना अब खतम हो गया था। भाग्यपर सन्तोष करनेके सिवाय और क्या उपाय था? मदरसा-कोकलताशके उत्तर ताक-शूरकी सरायमें दूसरे सरबाजोंकी तरह उसने भी पाँच तंका माहवारपर एक कोठरी किराया ली थी। अब उसे बुखारामें रहना था। अभी भी अज़ीमशाहके पीछा करनेका भय उसके दिलसे हटा न था। एक भेड़-सौदागर बाजारके बाद प्रतिदिन इस सरायमें आ हिसाब करके जाया करता था। उससे यादगारको मालूम हुआ, कि उसके भाग आनेपर अज़ीमशाहने कुछ दिन इधर-उधर पूछ-ताछ की। सरबाज हो जानेकी बात सुनकर चाहा, कि फिर उसे हाथमें लानेकी कोशिश करें, लेकिन फतहुल्लाने मना करते कहा—"यदि जुज़बाशी या सरकर्दाने जान लिया, कि तुम यादगारके मालिक हो, तो वह उससे तुम्हारे ऊपर वेतन रोक रखनेका दावा करा देंगे। यदि कहीं वह सरबाजी छोड़ भागा, तो तुम्हें उसके बदले आदमी देना होगा। तुम्हारे लिये अच्छा यही है, कि इस तरहके नौकरसे नाता तोड़ लो।" मालिकने भी इस सलाहको मानना ही बुद्धि-संगत समझा।

कोहिस्तान जानेकी आशा तो टूट गयी, लेकिन सरबाज़ीकी कृपासे अज़ीमशाहके चंगुलसे छूट निकलना यादगारके लिये कम सन्तोष-प्रद न था। अब वह दिल खोलकर परेड और चाँदमारी सीखनेमें लग गया।

एक रोज बृहस्पतिके दिन परेड समाप्त होनेके वक्त जुज़बाशीने सारे सरबाजोंको एक जगह जमा करके कहा—आज तुम लोगोंको छुट्टी है। कल सूर्यके उदय होते ही मेरी हवेलीपर आ जाओ। जनाब लश्करबाशी (प्रधान-सेनापति) एक चार-बाग (मेवाबाग) लगाना चाहते हैं।

तुम लोगोंको वहाँ बेगारमें काम करने जाना होगा। जो कोई इस कामसे आनाकानी करेगा, उसे परेडसे आज्ञा-भंग करने जैसा कड़ा दंड मिलेगा।

दूसरे दिन यादगार जुज़बाशीकी हवेलीपर गया। दूसरे सरबाज़ भी एक-एक, दो-दो करके आने लगे। उनमें कोई आदमी खाली हाथ न था।—किसीके पास एक बोरा सर्दा, किसीके हाथमें दो टोकरी अंगूर, किसीके हाथमें एक बोरा जौ तो किसीके हाथमें एक बोरा बादाम, किसीके पास एक मटकी गायका पीला घी था। अपनी-अपनी चीजें जुज़बाशीको भेंटकर बेगारसे मुक्त हो सबने अपना रास्ता लिया। यादगार और कुछ दूसरे खाली हाथ आये सरबाज बेगारपर काम करनेके लिये भेज दिये गये।

बेगार महीनों चली, किन्तु चारबागका काम कब खतम होगा इसका कुछ पता नहीं। चारबाग कुछ छोटा-मोटा नहीं, बल्कि प्रायः सौ तनाब (बीघा) ऊँची-नीची जमीनमें बनाया जा रहा था। इस जमीनको अकरम् बेगी तोपचीबाशी (तोपखानेका जनरल) हाथमें करके चाहता था, कि वहाँ ज़ोर (जबर्दस्ती)के साथ एक चारबाग तैयार करे। चारबागका नाम भी उसने जोराबाद रखा, किन्तु वहाँ काम करनेवाले सरबाज़ इसे ज़ुल्माबाद (अत्याचार-बस्ती) कहते थे, और यही नाम पीछे सर्व-साधारणने स्वीकृत किया।

यादगारके पास बीस तंका मासिकके अतिरिक्त और कोई आय न थी। इसमें पाँच तंका कोठरीका चला जाता, एक तंका मिर्ज़ा (क्लर्क)को कातिबाना देना पड़ता, बाकी पैसा खुराक-पोशाकके लिये काफ़ी नहीं पड़ता था। इसलिये यादगार बाध्य हुआ, कि एक सप्ताह बेगारीमें न जाय, और पल्लेदारी या कुलीका काम करके अपनी कमीको पूरा करे।

× × ×

लश्करबाशी (प्रधान-सेनापति) की बेगारमें अनुपस्थित होना भारी अपराध था। मंगलका दिन था। इस अपराधमें यादगारको पकड़कर

परेडके मैदानमें ले गये। उसके बदनका कपड़ा उतार लिया गया। एक फौजी कम्बल बिछाकर उसे उसपर लिटा दिया गया। एक सरबाज उसके दोनों हाथों और दूसरेने उसके दोनों पैरोंको दबा रक्खा। बिगुल द्वारा कमान दी गयी। तमाम पल्टन सलामी देनेकी तरह बंदूक लिये खड़ी हो गई। सैनिक बाजेवालोंमेंसे एक ढोलको गर्दनमें डाले यादगारके सिरके पास खड़ा हुआ और यसावुल हाथमें बेंत ले यादगारके दोनों तरफ। जुज़बाशीने "सावधान" कहकर कमान दिया। बेंत हवामें उठे। ढोलची भी ढोल और लकड़ी ले तैयार हुआ। जुज़बाशीने भी "मार" कहा। ढोलचीने भी ढोलपर लकड़ी मारनी शुरू की, जिसकी आवाज़के साथ यादगारकी नंगी पीठपर बेंत सटासट पड़ने लगे। सरकर्दा (कर्नल) जुज़बाशी और दूसरे अफ़सरोंके मुंहपर हर्षके चिह्न दिखलाई पड़ने लगे, लेकिन उस जगहकी ओर किसीने नहीं देखा, जहाँ यादगारका मुँह था, कि वहाँ हर्ष है या विषाद। उसकी आवाज सुनाई नहीं दी। इस 'नये संगीत'के साथ वह बेहोश हो चुका था। नगारे की 'गुम्-बुर गुम्-बुर' आवाज़में यादगारका हृदयविदारक क्रन्दन छिप गया था।

यह संगीत-अनुष्ठान देरतक होता रहा। सरकर्दा और अफसर अभी उसके सुननेसे तृप्त नहीं हुए थे, लेकिन यसावुलोंके हाथ दुखने लगे थे और वह बार-बार सरकर्दाकी ओर निहार रहे थे। सरकर्दाने समझ लिया और उसने जुज़बाशीको इशारा किया। जुज़बाशीने 'इस्मेनों' (ठहरो) कहा। नगारा बंद हो गया और साथ ही बेंतकी सटसट आवाज भी। जुज़बाशीने 'मुक्त हो' की कमान दी। सरबाज़ अपनी जगह छोड़कर इधर-उधर बिखर गये, लेकिन यादगार क्ूबकारी (भेड़ नोचनेकी घुड़दौड़) के मैदानमें गिरी भेड़की लाशकी तरह शरीरके अंग-अंगमें खूनसे लहूलुहान वहीं पड़ा रहा।

सरकर्दा और अफसरोंके चले जानेपर सराय-ताकशूरके रहनेवाले

सहवासी सरबाज खटोला लाये और उसमें डालकर यादगारको रहनेकी जगह ले गये।

× × ×

सराय-ताकशूर प्रायः बीस वर्ग-गज लम्बी चौड़ी थी। उसके नीचेकी कोठरियाँ गलीके धरातलसे दो हाथ नीचे थीं। शहरमें आनेवाले किसान यहाँ अपने घोड़ों और गधोंको बाँधा करते, इसलिये वहाँ चारों ओर लीद भरी रहती थी। इसी गंदगीके बीच कोठरियोंकी पाँती थी, जिनमें यादगार और दूसरे सरबाज रहा करते। यादगार पहाड़के स्वच्छ और विशुद्ध जलवायुका आदी था। उसके लिये यह स्थान स्वास्थ्यवर्धक नहीं हो सकता था, लेकिन अब बेंतकी सजासे घायल होनेके बाद तो और बुरा प्रभाव पड़ने लगा और उसकी स्थिति दिन-दिन बिगड़ने लगी। सरायका ठीकेदार रहीम रोगनगर (तेली) तनखाहसे खरच काट लेनेकी करारपर यादगारकी दवाके लिये अशूर जर्राहको बुला लाया। अधिक मोटा और चर्बीवाला होनेकी वजहसे अशूर अपने पेटसे एक हाथ पीछे-पीछे चलता था। खैर, यह कोई बात नहीं, लेकिन जब अशूर यादगारकी कोठरीमें जानेके लिये सीढ़ियोंपर चढ़ने लगा, तो मालूम हुआ कि ऐसा होना असंभव है। अशूरके पेटको छोटा नहीं बनाया जा सकता था, इसलिये वह अन्दर नहीं जा सका "गधेको भारके पास नहीं ले जा सकते, तो भारको गधेके पास लाया जा सकता है" के अनुसार यादगारको जर्राहके पास लाया गया। अशूरने लिटाकर घावको देखा, फिर मलहम बनानेके लिये देग और चूल्हा तैयार करनेको कहा। रहीम रोगनगरने अपनी भातवाली देगको लोहेके चूल्हेपर रखकर मलहमकी सामग्रीको जमा कर दिया। जर्राहने देगमें पावभर तेल डालकर गर्म किया। फिर उसमें खास परिमाणमें बंगदाना, जक्करकोल, कनगुलाबी, दहनफिरंग और कम्बुलको डालकर लेईकी तरह नरम और गाढ़ी हो जाने तक उबाला। सहने लायक हो जानेपर इस "लुकमानी मलहम"को यादगारके सारे घावोंपर लगा

दिया। यादगारकी पुरानी, बहुत गंदी अस्तरकी रुईसे ढाँककर दर्ज़ी-मिर्ज़ाँमें हाथ बाँधनेके काम आये पुराने साफेसे खूब जकड़कर बाँध दिया और "यह मेरा नहीं, लुक़मान हकीमका हाथ है, यदि आयु अवशिष्ट है, तो जरूर अच्छा हो जायगा" कहकर रहीमसे फीस लेकर चला गया।

पाँच मिनट बाद यादगारको रोने चिल्लानेकी भी शक्ति नहीं रही। उसने 'हाय-हाय' करते हुए रहीमसे कहा—भगवानके वास्ते घावको खोलकर शरीरको पोंछ दो। रहीम नसीहत देकर भी आध घंटेसे ज्यादा नहीं रोक सका और पट्टी खोलकर मलहमको पोंछना पड़ा। सब जगह दानेदाने निकल आये थे।

कहावत है "आदमी गुलाबसे भी कोमल और पत्थरसे भी कड़ा है"। कभी हवाका एक ठंडा झोंका जीवन-प्रदीपको बुझा देता है और कभी असह्य यातनायें भी अधमरे पुरुषको नहीं मार सकतीं। यादगार भी भारी सासतमें एक मास काटनेके बाद कुछ अच्छा हो पैरों पर खड़ा होने लगा। लेकिन अभी भी बंदूक उठानेकी उसमें शक्ति न थी, तो भी वह कार्तूसी पेटीको लगाये रेगिस्तानमें माहवारी तनखाह लेनेके लिये सरबाजोंकी पाँतीमें जा खड़ा हुआ। कुशबेगी (मंत्री)के सामने वेतन तो उसे मिल गया, किन्तु एक माहतक वह परेड और चाँदमारीमें अनुपस्थित रहा, इसलिये जुज़बाशीने दहबाशीको पीछे लगा दिया। लखलपुलसे जब यादगार रेगिस्तान पहुँचा, तो दहबाशीने तनख्वाह माँग ली। यादगार खाली हाथ लौटा। रहीम रोगनगरकी आशा पर भी पानी फिर गया।

१६

हिन्दूका कर्ज

यादगारके लिये जिन्दगी बिताना दूभर हो गया। भूख बहुत तेज थी, लेकिन खानेके लिये कुछ न था। शरीरमें शक्ति न थी, कि पल्लादारी-मजूरी करता। इसके अतिरिक्त रहीम रोगनगरके पैसोंको भी लौटाना था। क्या

करे, यादगारको कुछ सूझ नहीं पड़ रहा था। उसने अपने पड़ोसी सरबाजसे राय माँगी। पड़ोसीने कहा—यह बहुत आसान है। ऐसा कौन सरबाज है जो पैसोंकी दिक्कतमें न पड़ा हो। ऐसी स्थितिमें हमारे सहायक सूदखोर हिन्दू हुआ करते हैं। यदि चाहता है, तो आ मेरे साथ; मैं तुझे एक हिन्दूके पास ले चलता हूँ। मेरी उससे जान-पहचान है। मैंने कई बार उससे उधार लिया है।

"चलो चलें" कहकर यादगार अपने साथीके साथ सराय-हिन्दूमें भाई मोती (बायमुत्ती)के कमरेमें गया। भाई मोतीने अपने पूर्व परिचितको देखकर बड़े जोशके साथ कहा—क्या किसी आफतमें पड़ा नियामत! जो मेरे पास आया?

नियामतने यादगारका नाम, दस्ता, और रहनेकी जगह बतलाकर कर्ज देनेको कहा।

भाई मोती—हम जनाबआलीके सरबाजोंके साथ बड़ी रियायत करते हैं। बिना जमानत या गिरोंके और बिना काजीके कागदके पैसा देते हैं। लेकिन जो सरबाज अपना वादा पूरा नहीं करता, उसे दुबारा करज (क़र्ज़) नहीं देते। यादगार बाय! यदि तुम हमारे कायदे (क़ायदे)को भूल न जाओ, तो हमारी सनदूक (सन्दूक़) तुम्हारे लिये सदा खुली है। अच्छा कितना तंका चाहिये?

—बीस तंका।

—नहीं ऐसा नहीं। आपकी सारी तनखाह बीस तंका माहवार है। यदि बीस तंका करज लोगे, तो मेरे पैसेका सूद कहाँसे दोगे? पंद्रह तंका लो, प्रति सप्ताह पाँच तंकाके हिसाबसे बीस तंका देना होगा, जिसमें पाँच तंका सूदका है। इस तरह हिसाब बराबर हो जायेगा।

यादगार चाहता था, कि प्रतिसप्ताह पाँच तंका न दे महीनेमें एक ही बार बीस तंका देना पड़े, लेकिन नियामतने यह कहकर उसे राजी कर दिया, कि कोई रास्ता निकाल लेंगे। भाई मोतीने ताकमेंसे एक चौकोर

लकड़ीकी पट्टी निकाली। उसकी एक ओर यादगारका नाम, कर्जकी रकम, तारीख, मियाद आदिको हिंदी अक्षरोंमें लिख लिया; फिर सन्दूक खोलकर पाँच तंके सफेद (चाँदीके) और दस तंकोंके ताँबेके पूल (पैसे) यादगारके ऊपर लाद दिये।

भाई मोतीके कमरेसे निकलनेपर नियामतने कहा—यदि उसकी शर्तोंको कबूल नहीं करता, तो वह पैसा न देता। आज पैसेको हाथमें लेकर अपने दर्दकी दवा कर, कल अदा करनेके बारेमें सोचनेका बहुत समय है।

× × ×

अगले सप्ताहके आरम्भमें बहुत सवेरे जब अभी यादगार जगा भी नहीं था, उसकी किवाड़पर 'टक टक' हुई। यादगारने बिस्तरेपर बैठकर किवाड़की दरारसे देखा, कि कोई आदमी बाहर खड़ा है, जिसके शरीरपर बुखाराका साफा काला जामा और कमरमें रस्सीका कमरबंद है। उसने खड़ा होकर दरवाजा खोल दिया। सामने भाई मोती खड़ा था। उसके ललाटपर लगा लाल टीका अभी सूखा नहीं था, जिससे स्पष्ट था कि सवेरे स्नान करके बिना कुछ खाये ही पैसा उगाहने आया है। यादगारको देखते ही लकड़ीकी पट्टियोंसे भरे थैलेमेंसे यादगारका 'काष्ठपत्र' निकाला। यादगार उसके कुछ कहनेसे पहले ही बोल उठा—मालिक! मैं पैसा नहीं पास का। आज तैयार करूँगा, कल आकर ले जाना।

—जनाबआलीका सरबाज होनेकी खातिर आज मान जाता हूँ, लेकिन वादा पूरा करना होगा। यादगारने 'हाँ' कहा और हिन्दू चला गया।

दूसरे दिन बहुत भोर ही फिर हिन्दू हाजिर हुआ, लेकिन यादगार आज भी पैसा न जुटा सका था। उसने फिर अगले दिनकी मुहलत चाही, किन्तु हिन्दूने आपेसे बाहर हो "कल भी बाकी (बाक़ी) आज बाकी, अगले कल भी बाकी। कब तक बाकी मानूँ? मेरे पैसेको ला" कहकर यादगारके गलेको पकड़कर खींचा। झगड़ा उठ खड़ा हुआ। दूसरे सरबाज भी जागकर आ पहुँचे और रहीम रोगनगर भी। "क्या बात क्या बात"

पूछकर सरबाजों और रहीमने खुशामद की, धमकी भी दी और किसी तरह हिन्दूको राजी किया, कि वह दूसरे सप्ताह तक सब्र करे। उसके बाद हर सप्ताह उसे पाँच तंके मिला करेंगे। रहीम रोगनगरने "यदि वह न देगा तो मैं दूँगा" कहकर जिम्मेवारी ली।

यादगारने प्रतिदिन परेडके बाद पल्लादारी-मजूरी करके हर सप्ताहके शुरूमें वादाके अनुसार कर्ज अदा किया और तनखाह मिलनेके दिन तक पन्द्रह तंका बेबाक हो गया।

१७

सट्टावाला हिन्दू

एक दिन यादगारके परेडसे लौटनेपर रहीम रोगनगर (तेली)ने कहा—यादगार ! खुशखबरी नहीं सुनी ?

—क्या खुशखबरी ?

—भाई मोती मर गया !

—नहीं ?

—क्यों नहीं ? अभी उसके मुर्देको जलानेके लिये शहरसे बाहर ले जाने वाले हैं।

—कल ही मुझसे मिला था और बाकी पाँच तंकोंके लिये ताकीद की थी। क्या हुआ जो एक ही रातमें मर गया ? मजाक न कर।

—मौतके बारेमें मजाक करनेकी जरूरत नहीं। खुदा काफिरोंको बीमार करके नहीं मारता, जिसमें कि पहलेसे जानकर तोबा (पश्चात्ताप) करके मुसलमान बन जायँ, फिर उनके सारे पाप बिना दंड हीके माफ हो जायँ और वे मुफ्त ही 'जन्नत' (स्वर्ग)में दाखिल हो जायँ।

"मैं जब तक अपनी आँखोंसे न देख लूँ, नहीं मानूँगा" कहकर

यादगार हिन्दुओंकी सरायकी ओर दौड़ गया। सरायके दरवाजेपर बच्चे हाथों-में डाँडियाँ लिये "रामराम सत्, बेगुनाह रफ़्त" गाते नाच रहे थे। वह गानेके तालपर डाँडियाँ भी बजाते जा रहा थे। यादगार जरा देर बच्चोंका खेल देख सरायके अंदर गया। हिन्दुओंकी सारी कोठरियाँ बंद थीं। सारे हिन्दू बुखारी काला जामा पहने, रस्सीका कमरबंद बाँधे, सिरपर नई पगड़ियाँ और टोपियाँ रखे, माथेपर टीका लगाये भाई मोतीके द्वारके सामने खड़े थे। यादगारने कभी किसी हिन्दूको 'काष्ठ-पत्र' रखनेवाले थैलेके बिना नहीं देखा था, किन्तु आज वह उसके बिना थे। यादगार कुछ देर तक इस विचित्र तमाशाको देखता रहा। इच्छा रहते भी उसने अपने महाजनके जिन्दा या मुर्दा होनेकी बात किसीसे न पूछी। इसी वक्त एक हिन्दू भाई मोतीके कमरेसे बाहर निकला। उसके सिरपर बिखरे बाल थे, एक लुंगी कमरसे बँधी थी और दूसरी दाहिने कन्धेसे बायें बगलके नीचेसे सीनापर होते पीठकी ओर पड़ी हुई थी। उस हिन्दूके पास दो लुंगीके सिवाय कोई पोशाक न थी। पाँतीमें खड़े हिन्दुओंने उसको विशेष सम्मानकी दृष्टिसे देखा। थोड़ी देर चुप रहकर उसने दूसरे हिन्दुओंकी तरफ निगाह करके हिन्दी भाषामें कुछ पढ़ा। उसके बाद सारे एक स्वरमें बोल उठे—"राम राम सत्त।" फिर उक्त हिन्दूने भाई मोतीके कमरेमें बोरेमें रखी डाँडियोंमेंसे दो-दो हरेक हिन्दूके हाथमें थमाई और फौजी बैन्ड वाले फरमान-दाताकी तरह हाथ उठाकर इशारा किया। सारे हिन्दू अपनी अपनी डाँड़ियोंको एक खास तालमें बजाते बोलने लगे—'राम राम सत्त'। इसी समय चार दूसरे केशधारी हिन्दू अरथीपर लिटाई कपड़ोंमें लिपटी किसी चीजको कन्धेपर रखे, कमरेसे बाहर आ सड़कपर पहुँचे। हिन्दू कुछ पढ़ता आगे आगे चला। दूसरे उसके पीछे "राम राम सत्त" कहते हुए चले। सरायसे निकलकर जत्था राहपर इस प्रकार चल रहा था, जैसे हमारे यहाँ वरको वधूके घर या वधूको वरके घर ले जाते हैं। यादगार तमाशा देख रहा था, किन्तु अब भी उसे मालूम नहीं हो सका, कि भाई

मोती मरा है या ज़िन्दा। वह इतना ही जान सका, कि इन हिन्दुओंमें भाई मोतीका कहीं पता नहीं।

इसी वक्त सरायबानने आकर यादगारका कपड़ा पकड़ दरवाजेकी ओर घसीटते हुए कहा—सरायमें इस वक्त तू क्या कर रहा है, जब कि यहाँ कोई नहीं है?

यादगार उसकी धमकी और तोहमतसे घबड़ाकर बोल उठा—मु-मु-मुझे भाई मोतीसे काम था।

—भाई मोती उस दुनियामें गया। यदि उससे काम है, तो तू भी जल्द उसके पास चला जा।

यह कहकर सरायबानने यादगारको ढकेल दिया।

अब यादगारको कोई सन्देह नहीं रह गया, कि भाई मोती मर गया। पहले सरायबानपर उसे गुस्सा आया था, लेकिन उसके मुँहसे यह खुशखबरी सुनकर उसे अपार हर्ष हुआ।

× × ×

यादगार वस्तुतः अति प्रसन्न था। उसे पाँच तंका देनेसे ही मुक्ति नहीं मिल गई, बल्कि उससे बढ़कर मुक्ति यह मिली, कि अब उसे 'काष्ठपत्र' वाला मनहूस थैला देखनेको नहीं मिलेगा। और, सबसे बढ़कर "कल भी बाकी, आज भी बाकी" जैसा कान पकाने वाला भ्रष्ट उच्चारण सुननेको नहीं मिलेगा और इस महीनेकी सारी तनखाह भी अपने जेबमें रहेगी। इसी आनन्द और आकस्मिक सौभाग्यके आनन्दमें निमग्न हो उसने सारा दिन गुजारा। रातमें भी सुखकी निश्चिन्त नींद सोया और दूसरी रातोंकी तरह "कल भी बाकी आज भी बाकी" की मनहूस आवाज स्वप्नमें सुनाई नहीं पड़ी।

दूसरे दिन परेडमें वह शौकसे गया। लौटनेपर बंदूकको कोठरीमें खूँटीपर टाँग सरबाजीकी वर्दी उतारकर उसे झाड़नेके लिये द्वारपर गया। देखा कि एक बड़ा रोबदार आदमी बनारसी जामा और बड़ा सल्ला

(पगड़ी) डाँटे सरायके अंदर आया। चकित हो यादगारने अपने मनमें कहा—इस सरायमें अब तक किरायादार सरबाजों और किसानोंके गधोंके सिवा और किसी प्राणीको आते देखा नहीं गया, फिर यह रोबीला आदमी कैसे यहाँ पहुँचा। इस आश्चर्यमें उसे बर्दी झाड़नेका ख्याल भूल गया और उसने आगन्तुकपर गौरसे नजर डालकर देखा कि उसकी बगलमें हिन्दुओं का 'काष्ठपत्र' वाला थैला लटक रहा था। यादगारका आश्चर्य और बढ़ा। वह सोचने लगा—भाई मोती मर चुका है। यदि जिन्दा भी होता तो इस तड़क-भड़ककी मुल्लाई पोशाकमें नहीं घूम सकता था। मुल्लाकी पोशाककी तो बात ही क्या बुखारामें कभी नहीं देखा गया, कि हिन्दू सिरपर सल्ला पहने। दूसरे यह कि भाई मोतीकी आँखें काली, चेहरा साँवला-सा, ओठ मोटे और दाढ़ी छोटी थी, और इस आदमीकी आँखें नीली, चेहरा सफेद, ओठ रक्तहीन पतले और दाढ़ी लम्बी। इसके चेहरेपर थोड़ा-थोड़ा चेचकका दाग भी है।

यादगार सोचने लगा—हो सकता है, बिना बीमारी भाई मोतीके मरनेके समय खुदाने उसके तालेको खोल दिया, फिर वह इमामको बुला ईमान लाकर मुसलमान बन गया। तब खुदाने खुश हो उसको मुसलमान मुल्लाओंकी शकल-सूरत प्रदान की और अब वह इस सूरतमें दुनियामें लौटा है। आखिर वह भाई मोतीके मरनेके दिन बच्चोंको "बेगुनाह रफ्त" (निष्पाप सिधारा) कहते भी तो सुन चुका था। मानो खुदाने ही बच्चोंके मुँहमें यह वाक्य डाल दिया था, नहीं तो कोई मुसलमान पुत्र 'बेगुनाह रफ्त' कैसे कह सकता था ?

इस सोच विचारने यादगारपर प्रभाव डालना शुरू किया। उसे सल्ला वाले हिन्दूकी ओर देखनेकी हिम्मत नहीं रही, और कोठरीके अंदर चला गया। सल्ला वाला 'हिन्दू' जरा देर खड़ा रहनेके बाद आगे बढ़कर बोला—रहीम, जल्दी आकर मुझे पता दे।

रहीम रोगनगरने "जी, तकसीर ! हाजिर हुआ" कहकर, उसके साथ

आ यादगारकी कोठरीके द्वारपर खड़ा हो "यही है भाई मोतीका कर्जदार" कहते यादगारकी ओर इशारा किया। सल्ला वाले 'हिन्दू'ने बगलके थैलेमेंसे 'काष्ठपत्रों'को एक-एककर देख उनमेंसे एकको निकालकर यादगारकी ओर देखते हुए कहा—तूने भाई मोतीसे बीस तंका कर्ज लिया था न ? उस कर्जको कब देगा ?

—मैंने उससे पन्द्रह तंका लिया था, जिसपर मुझे पाँच तंका सूद देना था। मूल मैं दे चुका हूँ, सिर्फ सूदका पाँच तंका बाकी है।

—बात बनानेसे काम नहीं चलेगा। अगर तूने कुछ दिया होता, तो इस 'काष्ठपत्र'पर चिह्न होता, किन्तु यहाँ कुछ नहीं है।

—संभव है, यह काष्ठपत्र किसी दूसरेका हो और मेरा पत्र दूसरे चिह्न किये पत्रोंमें हो।

—यह संभव नहीं। हरेक काष्ठपत्रपर अलग-अलग नाम भाई मोतीने खुद अपने हाथसे हिन्दी हरफमें लिखा है। मैंने बाय अरजी (भाई अर्जुन) हिन्दूसे, जो कि मुसलमानी हरफ (फारसी) भी खूब जानता है, इसका अनुवाद करके लिखा लिया है। यह बिना चिह्नका काष्ठपत्र यादगारका है। तेरा नाम यादगार है न ?

—उसकी कब्र जले! मोतीने चिह्न नहीं लगाया, इसलिये मुझे न जलाइये तकसीर!

—कब्रकी बात अलग, खुद मोती भी जलकर खतम हो गया। उसकी सारी जायदाद और रुपया-पैसा अब बादशाही माल हो जनाबआलीके हाथ चला आया। अब तेरा महाजन मोती नहीं है कि इन्कारी हो अँगूठा दिखा छुट्टी पा जायगा। जनाबआलीकी ओरसे ईशान काजीकलाँ (महान्यायाधीश) इस रकमको तुझसे माँग रहे हैं। जनाबआलीका माल आज तक न कभी किसीके यहाँ डूबा न डूबेगा। पैसा इधर ला, वस्सलाम; बात बढ़ानेकी जरूरत नहीं।

इस वक्त तक और भी कितने सरबाज़ आकर जमा हो गये थे।

यादगारने सरबाजों और रहीम रोगनगरकी तरफ इशारा करके कहा—मैंने भाईको पैसा अँधेरेमें नहीं दिया। मेरे हर बारके देनेको ये लोग भ जानते हैं।

लोगोंने भी "सच कहता है" कहकर यादगारकी बातका समर्थन किया।

सल्ला वाले 'हिन्दू'ने आग-बगूला होकर कहा—है-है, तुम लोग शरीयतकी बात जानते हो, तो भी इतना तक नहीं जानते कि तुम्हारे जैसे बेनमाज़ियोंकी गवाही शरीयतमें कोई मूल्य नहीं रखती। मालूम होता है, तुम सब मिलकर चाहते हो, कि जनाबआलीके मालको हड़प जाओ। यह झूठी गवाही देनेके लिये तुमको सजा मिलनी चाहिये।

रहीमने देखा कि उसकी भी गर्दन फँस रही है। उसने यादगारसे कहा—आ, राजी हो जा। एक मासकी तनख्वाह चली जायगी, इसकी पर्वाह न कर। यदि देह-जाँगर बाकी रहा, तो पैसा फिर आ जायगा (फिर सल्ला वाले 'हिन्दू'से कहा) अच्छा, तकसीर! तनखाह पानेके दिन दे देगा।

—बहुत खूब! मैं तुझे जानता हूँ रहीम! लेकिन यदि तनखाहके दिन नहीं दिया, तो तेरी सरायको बादशाही माल बना जनाबआलीके हाथोंमें सौंप दूँगा।

रहीमने हँसते हुए कहा—कोई हर्ज नहीं, लेकिन यह सराय तो खुद ईशान काज़ीकलाँकी मिल्कियत है। मैं तो एक सरायबानकी तरह इसे ठीकेपर चलाता हूँ।

—सराय न सही, तेरा घर, घरका असबाब या जो कुछ भी तेरे पास होगा, सबको जनाबआलीका माल बनाऊँगा, यदि यादगारने उस दिन अपना कर्ज बेबाक नहीं किया।

सल्ला वाला 'हिन्दू' चला गया। यादगारने रहीमसे पूछा—लेकिन क्या भाई मोतीका कोई वारिस नहीं है, जिससे बात करके मैं कर्जसे छुटकारा पा जाऊँ?

—वारिस हो भी, तो वह अपने देश हिन्दुस्तानमें होगा। जो भी हिन्दू बुखारामें मरता है, उसकी जायदाद शाही हो जाती है। शरीयतके अनुसार दाय-भाग (मीरास) मुसल्मानाबाद (मुस्लिम-देश)से काफिराबाद (काफिर-देश)को देना विहित नहीं है। यदि तेरे भाग्यसे उगाहनेके कामपर कोई दूसरा आदमी आया होता, तो इतनी कड़ाई न होती। हम सब नहीं तो कुछ पैसा कम करा लेते, लेकिन इस आदमीके साथ बात करना बेकायदा है। इस आदमीका नाम इबादुल्ला मखदूमी तरक्ची है। यह भारी ज़ालिम है। यतीमों (अनाथों)की जायदादको इन्तिज़ाम करनेके बहाने सब हजम कर जाता है। यदि कोई आदमी नाबालिग़ लड़का छोड़कर मर जाता है तो "वारिस प्रमाणित नहीं हुआ" कहकर सारी जायदादको बादशाही माल बना देता है। यदि कोई बीचमें रोड़ा अटकाये, तो अभियोग लगाकर उसे बलामें फँसा देता है। नहीं देखा, अभी वह मुझे और सरबाजों पर तुहमत लगाकर तेरे साथ काजीखाना तक घसीटना चाहता था।

—ईशान काजीकलाँ क्यों ऐसा अन्याय करनेका हुकुम देते हैं?

—ऐ दाखुन्दा! अभी तू बहुत भोला है। नहीं जानता, कि पानी कीचड़के ऊपर होता है। ऐसा काम कलानों (बड़ों)को बहुत पसन्द है। इसीसे उनकी आमदनी है।

यादगारको बात समझमें आ गई और एक महीनेकी तनखाह मुफ्त ही हाथसे निकल जानेका बहुत अफसोस नहीं हुआ।

१८

ज़िन्दान

तरक्चीको सारे महीनेकी तनखाह देकर "सब कुछ हार आये जुआरी" की तरह यादगार कोठरीके कोनेमें बैठा चिन्तामग्न हो सोचने

लगा—मैं किन-किन आशाओंके साथ सरबाज बना था और यहाँ आकर कैसी-कैसी बलाओंमें फँसता गया। "वर्षासे भगा नाबदानमें गिरा" की तरह मैं अज़ीमशाहके हाथसे भागकर अमीरके जालमें फँसा। समझा था सरबाजीकी बीस तंका तनखाहसे दिन अच्छे कटेंगे; पल्टनके साथ कोहिस्तान जाऊँगा, और किसी तरह अपनी प्रेयसीसे मिलूँगा। अफसोस, कीचड़से निकलकर कीचड़खानेमें आ गिरा।

इन चिन्ताओं और निराशाओंपर विचार करते बन्द राहको खोलनेका विचार करते उसे फिर वही राह—भागना—दिखाई पड़ी। सरबाजीसे यह फायदा ज़रूर हुआ, कि अब वह बंदूक चला सकता था। सोचा, क्यों न बंदूकको भी साथ ले चलूँ, शायद काम आये। वह वर्दीको कोठरीमें छोड़ बंदूक लिये सरायसे निकला। बुखाराके सल्लाहखाना दरवाजेसे बाहर निकलकर से:पूला, कफ्तरखाना, फ़ासून, खूर्मानके गाँवोंसे ऊपर-ऊपर क़रशीकी ओर चला। सरायसे निकलते वक्त दूसरे सरबाज (सिपाही) घरपर न थे। एक दूसरा सिपाही-साथी यादगारकी चिन्ताके बारेमें जानने आया। यादगारको न देखकर उसने रहीम रोगनगरसे उसके सम्बन्धमें पूछा।

रहीमने कहा—सबेरे बिना वर्दीके बंदूक लिये जाते देखकर मैंने पूछा, तो उसने कहा—मिस्त्रीके पास बंदूक मरम्मत कराने जा रहा हूँ। और यह भी कहा कि सारे महीनेकी तनखाह तो भाई मोतीके हिसाबमें चली गई, अब इस मरम्मतके लिये भी कमसे कम दो तंकेका मिस्त्रीका कर्जदार बनूँगा, यह जलेपर नमक है।

सबको विश्वास था, कि वह मिस्त्रीके यहाँ गया है। रात हुई, लेकिन अब भी यादगारका कहीं पता न था। रहीमको संदेह होने लगा, कि कहीं बेवकूफ़ी करके भाग न गया हो; यदि बंदूक छोड़ जाता, तब भी बुरा था; किन्तु बंदूकके साथ भागना तो बहुत ही बुरा है। उसने दूसरे सरबाज़ोंसे कहा—यादगारके साथ हम भी आफतमें पड़ेंगे, इसलिये ज़रूरी है कि इस बातकी खबर जुज़बाशीको दी जाय।

रहीमकी राय लोगोंको पसन्द आई और यादगारका पड़ोसी सरबाज खबर देने कुशबाशीके पास भेजा गया। घंटा बीतते-बीतते कुशबेगीके सवार यादगारको गिरफ्तार करनेके बारेमें क़ाजियों और हाकिमोंके नाम खुला आज्ञापत्र लेकर घोड़ोंपर चढ़ चारों ओर दौड़ पड़े। अभी यादगार करशीके बयाबान (निर्जन स्थान)में क़रावुलके पड़ाव तक नहीं पहुँच पाया था, कि एक सवारने वहाँ पड़ी पल्टनके सरकर्दा (कर्नल)के हाथमें आदेश-पत्र दिया। सरकर्दाके आदमी भी दो-दो चार-चार करके चूल (बयाबान)में फैल गये। यादगारका दो बंदूक वाले सिपाहियोंसे सामना हुआ। उसने बच निकलनेके लिये बंदूक दागी, लेकिन दूसरे कार्तूसको भरनेसे पहिले ही वह उनके काबूमें था। यादगारके हाथोंको पीठकी ओर बाँध चोरीकी बंदूकको उसकी गर्दनमें लटका सरकर्दाके समक्ष उन्होंने पेश किया। सरकर्दाने यादगारको बुखारा भेज दिया।

× × ×

अगले दिन यादगार बुखारामें था। उसे कुशबेगीके यहाँ ले चले। क़न्दलत-फरोश (हलवाई) बाजारके रास्तेसे—जहाँ कि आजकल बिजलीका स्टेशन है—होते मदर्सा-अयाज़के सामने बाईं ओर घूमे। जब उसे क़ाज़ी-उर्दा सड़कसे ले चले, तो यादगारको फतहुल्ला भेड़-सौदागरकी हवेलीमें भागकर अपनेको दुबारा अज़ीमशाहके हाथोंमें सौंपनेका विचार आया; लेकिन वहाँ तक पहुँचनेका मौका ही न मिला और कूचा मीरशबखाना (कोतवाली) पर पहुँचते ही दाहिनी ओर घूमकर एक टीलेपर पहुँचे। दो किवाड़ोंवाले दरवाजे पर—जिसके बाहर सिपाही पहरा दे रहे थे—लेजा अंदरकर एक छोटी कोठरीमें रोक उसके हाथ-पैरमें जंजीर और गर्दनमें जेल (तौक़ या तख्ती) डलवा दिया। यहाँसे लानेवाले सिपाही लौट गये। अब जंजीर और जेल डालनेवाले दो आदमी सँकरे और अँधेरे रास्तेसे यादगारको एक ऐसे अँधेरे घरमें ले गये, जहाँ एक दूसरेकी सूरत दिखलाई नहीं पड़ती थी।

वहाँ जेल और जंजीरकी आवाज ज्यादा थी, जिससे मालूम होता था, कि वहाँ बहुत अधिक बंदी हैं। लानेवाले नये कैदीको एक कोनेमें छोड़ दरवाजेमें ताला लगा चले गये।

कुछ क्षणके बाद यादगारकी आँखें उस अंधकार स्थानसे अभ्यस्त हो गईं और उसने वहाँके निवासियोंको देखा। उनमेंसे कुछ जेलके साथ कुछ जंजीरके साथ और कुछ यादगारकी भाँति जेल और जंजीर दोनोंके साथ लेटे थे। कुछके हाथों और पैरोंको काठमें डाल कुन्दा किया हुआ था, कुछके हाथ-पैर खुले भी थे। वह इस घर या जीवितोंकी कब्रमें—जहाँ कुछ बारीक छिद्रोंसे विधवाके दीपककी भाँति हलकी रोशनी आ रही थी—घेरकर बैठे थे। उनमेंसे कुछ तलवारका मियान सी रहे थे, कुछ मोजा बुन रहे थे और कुछ दस्तकारीके किसी दूसरे काममें लगे हुए थे। करीब-करीब सभीके कपड़े फटे और गंदे थे। किसीके नीचे बैठनेके लिये बिस्तरा या चटाई न थी। उनके लम्बे बढ़े बाल बतला रहे थे, कि सालोंसे उन्होंने हज्जामका मुँह नहीं देखा।

यादगार कुछ देर तक एक-एकको ध्यानसे देखता रहा, फिर उसने अपने पास लेटे बंदीसे पूछा—यह कौनसा स्थान है?

बंदीने आश्चर्यके साथ उसे पैरसे सिर तक देखते कहा—क्या तू दाखुन्दा (बुद्धू) है और पहाड़से अभी-अभी आया है, कि स्वयं बंदी होते हुए भी नहीं जानता कि यह कौन स्थान है? इस जगहको लोग जिन्दान कहते हैं। यह अमीरके बंदीखानोंमेंसे एक है।

—क्या अमीरके और भी बंदीखाने हैं?

—अमीरके पास असंख्य चीजें हैं। उसके पास दार (शूली) है, मीनार है, नक्कारखाना है: जिन्दान, आबखाना और कानाखानाके कारागार हैं। आदमीको मरवानेके लिये दारपर चढ़वाता है, मीनार या नक्कारखानेसे गिरवाता है, कि भूमिपर पहुँचते-पहुँचते पानीसे भरी मशककी तरह चिंदी-चिंदी उड़ जाय। या आबखानामें डलवाता है, जो

कि यथानाम बिलकुल पायखाना जैसा ही है। या कानाखानामें रखवाता है, जहाँ कि कानों (खटमलों)को पालकर रखा गया है। ये काने आदमीको काटकर जल्द ही मौतके घाट पहुँचा देते हैं। या यहाँ डलवाता है, जिसका नाम ज़िन्दान—गोरे-ज़िन्दाँ—ज़िन्दोंकी कब्र है।

दिन बीता शाम आई, लेकिन ज़िन्दानके लिये दोनों ही बराबर थे; सूर्यकी किरणें वहाँ तक नहीं पहुँच सकती थीं। दरवाजा खुला, दो सिपाहियोंने आकर तैयार दस्तकारीकी चीजोंको एकत्रित किया और हर-एकके हाथमें एक-एक सूखी रोटी दे दर्वाजेपर ताला मार दिया। रोटी खानेके बाद सब सो गये, लेकिन यादगार ने घंटेमें सौ बार इधरसे उधर करवट बदलते भविष्यकी चिन्ता करते "क्या है जो नहीं बीत जाता" कहकर मनको सन्तोष दिया।

रात बीत गयी। छेदोंसे रोशनीकी चमक देखकर बन्दी भी नींदसे जागे, और उन्होंने सोनेकी जगहके पास ही जाकर गढ़ोंमें पाखाना-पेशाब किया। दस्तकार फिर अपने कामोंमें लगे। जेलके सिपाहियों का अभी पता नहीं था। पेटमें भूखकी आग जोरसे जल रही थी और सबकी दृष्टि रोटीकी ओर लगी हुई थी। एक बन्दीने कहा—आधा दिन बीत चला और इस खुदासे बेपरवा सिपाहीका कहीं पता नहीं।

दूसरेने कहा—किवाड़ खटखटाना चाहिये, नहीं तो जब उसकी मर्जी होगी तब आयेगा। मेरे तेरे जैसे भूखोंकी उसे क्या "भर पेटेको भुख पेटेकी क्या परवा"?

—अरे! किवाड़ खटखटाना जरूरी है।

आदमियोंने जाकर किवाड़ खटखटाना शुरू किया। जेल-दारोगाने आकर दर्वाजा खोला "नाश्ता तक धीरज भी नहीं धर सकते" कहकर उसने आदमियोंको हुकुम दे कुछ बन्दियोंको लम्बी जंजीरमें बँधवा दिया।

एक आदमीने स्वयं आकर कहा—मुझे भी बाँध दो।

—नहीं, तू कल ही आया है, दो दिन और ठहर, फिर तेरी भी बारी आयेगी।

जेल-दारोगाने लंबी जंजीरमें बँधे बंदियोंको जिन्दानसे बाहर टीलेसे नीचे ला सड़कके किनारे पाँतीसे खड़ा कर दिया, और जंजीरके छोरको कुछ और जंजीरोंसे जोड़कर दर्वाजेसे घुसा जिन्दानके अंदर बाँध दिया। बंदी खड़े हुए आने-जाने वालोंसे दुआ देकर भीख माँगने लगे। लोग औकातके अनुसार रोटी या पैसा देते। दो घंटा बाद दारोगाने आकर बंदियोंके सामने पड़े पैसों और रोटियोंको इकट्ठाकर उन्हें फिर जिन्दानके अंदर पहुँचा दिया और आजकी मिली रोटियोंमेंसे कुछ उनमें बाँट दी। एक बंदीने मुँह-फट हो कह दिया—

—नगद पैसा तो खैर तुम्हारा माल है, किंतु रोटियोंमेंसे तो कुछ और हमें पेट भरनेके लिये देते।

—रातकी रोटी क्या तुम्हारे बापके घरसे लाकर दूँगा? अभी भी आधीसे अधिक रोटियाँ दे चुका, और क्या चाहता है?—कहकर दारोगाने बाहर निकलकर द्वारमें ताला लगा दिया।

१६

"मुक्तिकी तावीज"

"आज मैंने स्वप्न देखा, कि हम सभी जिन्दानसे मुक्त हो गये" कहकर एक बंदीने दूसरे बंदीको जगाया। लेकिन दूसरेने सिरको उठाये बिना हँसी उड़ाते कहा—"मुक्तिका स्वप्न देखा, तो उसे पानीसे कह।"

तीसरा बंदी—लेकिन पैसा हो, तो मुक्त होना बहुत आसान है, सारी बात पैसेकी है।

चौथेने ठठाकर हँसते हुए कहा—बहुत आसान दवा खोज निकाली। यदि पासमें पैसा होता, तो हम और तुम बंदी ही न होते! यही पैसा

सहायक नहीं था, इसलिये बंदीखानेमें पड़े और इस जीवितोंकी कब्रमें लम्बे पड़े हैं। गिज्दुवानवाले अब्दुल्ला बाय-बच्चा (बायपुत्र)को नहीं देखा? उसने कितने घरोंको बर्बाद किया, गिज्दुवानके चर्मगरान (चमार) गाँवमें लोगोंके सामने तलवारसे एक आदमीका पेट चीरकर मार दिया। लेकिन उसके पास पैसा था, इसलिये गिरफ्तार होनेपर भी बहुत जल्द मुक्त होकर चला गया। मैंने और तुमने क्या पाप किया? मेरा पाप यही है, कि दस साल चाकरी करके एक पैसा मजूरी भी न पाई, तो गिज्दुवानवाले जलालुद्दीन अमीनीके घरसे भाग गया। इस घर-जलेके काज़ी, हाकिम सभी दोस्त हैं। उसने चोरीका अपराध लगाकर मुझे यहाँ पहुँचा दिया। काश! कहीं थोड़ा-मोड़ा पैसा मिलता, कि यहाँसे मुक्ति पाता।

—मैंने एक उपाय सोच निकाला है, और बहुत थोड़ेसे पैसेसे काम...

अभी वह अपनी बातको पूरा नहीं करने पाया था, कि दूसरे बंदीने कहा—कह फ़र्मान! कौनसा ऐसा सस्ता उपाय खोज-निकाला है?

फ़र्मानने कहा—खोजा-अस्पगर्दां सड़कपर दमुल्ला कुतुबुद्दीन नामके एक जंतर-मंतर जाननेवाले ईशान रहते हैं। वह मेरे गाँव दिल-कुशा-बैरूनमें आया-जाया करते हैं। एक दिन जब वह वहाँ थे, तो मेरी माँने उनसे मेरी हालत बतलाकर दुआ और तावीज़ (जंतर) माँगी—यह मेरे कुर्तेके नीचे बाँहपर उन्हींका दिया तावीज़ बँधा है। माँने कृतज्ञताके तौरपर दो तंका भेंट चढ़ाई। ईशानने स्वीकार किया और प्रसन्न होकर कहा—"यह भी न देती, तो हर्ज न था, जब लड़का छूटकर आता, तो खुद देता। अपने लड़केको खबर कर दे, कि बंदीखानेके दूसरे बंदी भी दुआ और जंतर चाहते हों, तो मैं दे दूँगा। उसकी भेंट इस वक्त हो सके तो देवें, नहीं तो छूट जानेके बाद भी देनेमें कोई हर्ज नहीं, मैंने सेवा करनेका व्रत लिया है। यदि बंदी चाहें तो मैं खुद जिन्दान (जेल)में आ जंतर लिखकर उन्हें दे सकता हूँ। कुशबेगी (युद्ध-मंत्री)

मीरशब् (कोतवाल) मेरे मुरीद (चेला) हैं, इसलिये मेरे ज़िन्दानमें आनेमें कोई रुकावट नहीं।" तुम लोगोंका ईशानकी दुआ-जंतरपर विश्वास है या नहीं, यह न जानते मैंने यह बात तुमसे नहीं कही। आज बात चल पड़ी, तो कह दिया। अगर चाहते हो, तो माँको कह दूँ, वह मुझे देखनेके वक्त अपने साथ ईशानको भी लेती आयेगी।

एक बंदी—माँको कह दे, कि ईशानको लेती आये। जब पैसा नहीं देना है, तो हमारा क्या बिगड़ता है "यदि लालची न हुआ तो पानी होगा;" यदि दुआ ने फायदा न किया, तो हम कुछ न देंगे।

दूसरा—सूखे और खाली हाथ भी नहीं होना चाहिये। ज्यादा नहीं तो थोड़ा भी सगुनियोंके सामने रखना चाहिये।

—जेल-दारोगासे छिपाकर बचकानी एक दो टोपी, जूता या दूसरी चीजें तैयार करके रख छोड़ें, जब ईशान आये, तो इन्हीं चीजोंको सगुन विचारते वक्त भेंट कर दें। यदि दो चीज ईशान को दे दिया, तो हमारी क्या हानि? हमको एक सूखी रोटी थमा सारी चीजोंको बेंचकर दारोगा खा जाता है—कहकर दूसरे बंदीने भी ईशानको लानेपर जोर दिया।

× ×

ईशानने तावीज़के प्रभावसे चालीस दिनके अन्दर जेलसे छूटनेका वादा किया था, लेकिन छ माह हो गये, और मुक्तिका कहीं पता न था। बंदियोंने ईशानको गाली देना शुरू किया। यादगारने भी उनका साथ देते कहा—जंतर-मंतर वाले मुल्लापर मेरा कभी विश्वास न था, लेकिन यारोंकी पाँतीमें हो मैंने भी एक तावीज लेकर अपनी टोपीमें टाँक ली है। यदि मेरी मानो, तो मुक्तिका रास्ता है, मौतके लिये तैयार हो जाना।

ज़रंगरवाले कलन्दरने क्रुद्ध होकर कहा—तूने कैसे जाना दाखुन्दा! कि हम मौतसे डरते हैं। पहले बंदियोंमें आधे बुखाराके आस-पास के हैं, दूसरे आधे ग़िज्दुवान तूमान (पर्गने)के। मौतसे न डरनेकी वजहसे ही तो आज हम इस हालत (जेल-जंजीरको हिलाते)में पहुँचे। हम

गिज्दुवानियोंको "अराबा-सवार ज़नबार-नशीन" कहा जाता है। जानता है, इसका अर्थ क्या है? हम क़ाज़ियोंके फंदेमें नहीं पड़ते, हाकिमोंसे धोखा नहीं खाते, बाय और ईशानका रोब नहीं मानते; यदि ज्यादा बढ़-बढ़ करते तो चार हाकिमके आदमियोंको पकड़कर पीट देते हैं। हाँ यह जरूर है, कि एक न एक दिन हाकिम हमें पकड़कर हाथ-गर्दन बाँध अराबा (ताँगा)में सवार करा बुखारा भेज देते हैं। यहाँ अमीर हमें मरवाता है, फिर हमारे घरवाले आकर हमारी लाशको ज़न-बार (डोली)में रखकर ले जाते हैं। इसीलिये हमको "अराबा-सवार ज़नबार-नशीन" कहते हैं। मौतसे हम कितने निर्भय हैं, इसका पता इसीसे मालूम होता है, कि आज हममेंसे कुछपर ऐसी बीतती है, और उसी कामको कल दूसरे करते हैं। तू दाखुन्दा! यदि हममेंसे होता, तो मौतके भय और अगर-मगरकी बात छोड़ अपनी बात सीधे तौरसे कहता। बतला, तुझे क्या मुक्तिका उपाय सूझा है?

दाखुन्दा—यदि मुझे एक आरा, कुल्हाड़ा, छिनी और सुंभा ला दो, तो मैं सबको छुड़ा सकता हूँ। गुस्सा न करो आक़ा कलन्दर! सबको अपने या ग़िज्दुवानियों जैसा न समझो। बहुतसे हैं जो मौतको स्वप्नमें भी देखकर डरके मारे काँपते हैं। डरके मारे उन्होंने हमारे कामकी खबर पहिलेसे जाकर यदि कर दी, तो हमारा जीना और कठिन हो जायेगा।

कलन्दर—तेरी यह बात ठीक है दाखुन्दा! लेकिन हम सावधानी रखेंगे। यहाँ हमारे बीस पक्के दोस्त हैं, जो "सर दे देंगे, किन्तु सिर (भेद) न देंगे"। दूसरे जो डरपोक या कच्चे हैं, वह प्राणके भयसे स्वयं हमारे साथ होंगे। यदि एक बार हम धमका दें, तो वह स्वप्नमें भी इस भेदको मुँहपर लानेकी हिम्मत नहीं करेंगे। तू क्या कहेगा, हम सब अपने सिरोंको दावपर रख चुके हैं। मैं तेरी बात मानता हूँ और आरा वगैरह लेकर तुझे दूँगा।

सब इस रायपर सहमत हुए।

× × ×

एक दिन सूर्यास्तके समय ज़िन्दानके पीछेवाले कूचेसे पश्चिमवाली सड़कसे आकर एक अज्ञात आदमीने बंदूकधारी पहरेदारसे पूछा—आक़ा दहबाशी! ग़ालिबख़ाना कहाँ है?

पहरेदारने बंदूक पकड़े हाथ उठानेकी जगह सिरको सूर्यकी ओर घुमाकर कहना चाहा, कि वह सामने रहा; लेकिन इससे पहले ही अज्ञात पुरुष उसके हाथसे बंदूक छीनकर रफ़ूचक्कर हो गया। पहरेदार-ने—"चोर! पकड़ो-पकड़ो" कहकर हल्ला मचाते हुए पीछा किया। जगह-जगह खड़े दूसरे सिपाही भी पीछे दौड़े। करीब था कि पकड़ा जाता, इसी वक्त आदमी बंदूक फेंककर टेढ़ी-मेढ़ी गलियोंमें गायब हो गया। सिपाहियोंने देखा, बंदूक मिल गई और चोर भाग गया, इसलिये पहरा छोड़ पीछा करना उचित न समझ वह अपनी जगह लौट गये।

जिस समय पहरेदार अपनी जगह छोड़ चोरका पीछा कर रहे थे, उसी समय एक दूसरा अपरिचित पुरुष गड्ढेकी तरफसे आया। राहको बिना पहरेदारकी देख एक छलाँगमें पुश्ता (खाँवा) पारकर कोनेमें दुबक रहा। वह पहर रात तक अपनी जगहसे नहीं हिला। जब रात बहुत बीत गई और पहरेदार पिनक लेने लगे, तो अपनी जगहसे निकलकर ज़िन्दानकी छतपर चढ़ गया। हवा और रोशनीके लिये बनाये सूराखसे एक घासकी लूँड़ी फेंक सूराखपर कान लगा प्रतीक्षा करने लगा। इसी समय "सफरू!" कहकर किसीने ज़िन्दानके अन्दरसे पुकारा। अज्ञात पुरुषने जवाबमें कहा—हाँ, मैं ही हूँ।

—एक-एक करके गिरा।

अज्ञात पुरुषने 'अच्छा' कहकर पहले सुंभा, फिर आरा, बादमें दूसरी चीज़ें गिरा दीं।

—सफदर! सब गिरा दिया?

—गिरा दिया।

—अपने लिये भी सावधानी रखना।

'खातिर जमा रह' कहकर अपरिचित पुरुष वहाँसे हटकर छतसे नीचे उतरा और उसी कोनेमें जा छिपा। पासके हम्माम (स्नानगृह)से धुँआँ निकलने लगा और कूचेमें लोगोंकी आवाजाही शुरू हुई। 'भोर' समझ पहरेदार भी निश्चिन्त सो रहे। अपरिचित पुरुष भी धीरेसे कूचेमें पहुँचे साधारण राहीकी तरह पहरेदारोंके पाससे होता चला गया।

× × ×

काम शुरू हुआ। प्रतिदिन शामसे सुबह तक बंदी सेंध मारनेमें लगे रहते। अधिकतर बंदियोंके पैरोंमें बेड़ी थी, लेकिन मिट्टी फेंकनेमें उससे कोई बाधा न थी। बंदी सेंधके मुँहसे पुराने जमानेमें आदमियोंके रखनेके लिये बनाये गये कुएँके किनारे तक पाँतीसे बैठ जाते। सेंधसे निकली मिट्टीको एक जामामें रख हाथों हाथ उसे कुएँके अन्दर गिरा देते। यादगारका अंदाज बहुत गलत नहीं सिद्ध हुआ और बीस दिन बाद सुरंगका मुँह ज़िन्दानके पिछवाड़ेके कूचेके क़रीब पहुँच गया। अब दीवारसे कान लगाकर लेटनेपर आने-जाने वाले घोड़ों गधोंके खुरोंकी खट-खट सुनाई पड़ती। इस वक्त काम रोक दिया गया, और कूचेकी हालत देखनेके लिये सिर्फ़ एक छोटा-सा झरोखा काटकर वे उचित अवसरकी प्रतीक्षा करने लगे। यादगारने हर्ष प्रगट करते हुए अपने दोस्त फर्मानसे कहा—यह है मेरी ओरसे मुक्ति की दुआ।

२०

इफ़्तार (रोज़ा खोलना)

रमजानका दिन था। सूर्यास्तमें एक घड़ी बाकी थी। बुखाराके रोजादारोंके कानोंमें न कोई दूसरी बात, न दिलोंमें कोई दूसरे विचार थे।

उनका सारा ध्यान, सारी वृत्तियाँ एक बिन्दुपर केन्द्रित थीं, यानी कब शामकी नमाज़ होगी और इफ्तार (पारणा) में क्या-क्या खायेंगे। इसलिये मिनट-मिनटपर घड़ीकी सुइयाँ देखी और नई-नई न्यामतें खरीदी जा रही थीं। ज़िन्दानके पिछले कूचेमें पहरा देनेवाले दहा (दस आदमी) के सिपाही भी इस आम बीमारीसे मुक्त न थे। दहबाशी (दसका अफसर) अपने आदमियोंसे इफ्तारके खर्चके लिये पैसा जमाकर रेगिस्तान गया और वहाँसे दो कटोरा निसल्ला (शर्बत) दो खमीरी रोटियाँ, दस दाना खजूर, एक पुड़िया शामी नस, एक पुड़िया क़रशीका दुखतरपेची तम्बाकू खरीदकर लौट आया।

सूर्यास्त होनेमें अब आधी घड़ी बाकी रह गई थी। सिपाहियोंके कोनेमें अपनी साँसोंके सिवा कुछ सुनाई न देता था। उनकी आँखोंके गिर्द स्याही दौड़ गई थी। सोलह घंटेका उपवास और पहरेदारीकी जगाहट विशेषकर सुँघनी और चिलमकी खूमारीके बीच, यह आसान काम नहीं था। इस सारी तकलीफ और परेशानीमें सिर्फ़ एक चीज देखनेकी थी—इफ़्तार। उन्हें विश्वास था, कि सोलह घंटेकी यह तकलीफ पन्द्रह मिनटके इफतारसे दूर हो जायेगी।

कूचेकी एक तरफ एक अनुकूल और समतल स्थानको साफकर वहाँ क़रशीकी लोई बिछाई गई थी, जिसपर दस्तरखान फैला रोटी, निसल्ला और खजूर रक्खी थी। दहबाशी हुक्का ताजा करते बोल उठा—'आज छाँटकर तम्बाकू लाया हूँ। हुक्का भी खुद ताजा कर रहा हूँ। फिर मालूम होगा कि करशीका दुखतरपेची तम्बाकू कैसा होता है।' उसके सिपाहियोंकी नजर भी शामी हुक्केकी तरफ खिंच गई थी।

दक्खिनकी ओर ज़िन्दानके फाटकके पास भी यही हाल था। वहाँ जेल-रक्षकों (वार्डरों) ने पहरेवाले सिपाहियोंसे मिलकर अपने रमज़ानी दस्तरखानको और भी अधिक सजाया था। लेकिन जिन्दानके भीतरकी हालत और ही थी। वह आज बीस रोज सेंध लगानेके परिश्रमका फ़ायदा

उठाना चाहते थे, इसलिये उन्होंने हाथों और पैरोंके कुन्दोंको आरेसे काट डाला था। जेल और जंजीरको रेतीसे रेत-रेतकर सड़ी रस्सीकी तरह अलग कर दिया था। आगे खड़े बंदियोंकी आँखें रोज़ादार सिपाहियोंके दस्तरखानपर पड़ रही थीं।

शामकी नमाजकी अजान सबसे पहिले आर्क (किला)के दर्वाजेके नक्कारखानेसे बुलंद हुई। एक सेकंड बाद मीनारके भी सात मुवज्जिन एक ही साथ आर्कके मुवज्जिनसे आवाज मिलाते बाँग देने लगे। एक सेकंड और बाद बुखाराके सारे मदर्सों और मस्जिदोंके मुवज्जिनोंने फरियाद शुरू की। शहरमें एक विचित्र हल्ला-गुल्ला मचा, लेकिन उसके खतम होते ही श्मशानकी नीरवता छा गई। कूचोंमें कहीं आदमियोंके पद-संचारकी आहट सुनाई नहीं देती थी। कहीं भी बातचीत सुननेमें न आती थी। यहाँ तक कि जो दस्तरखानपर बैठे थे, वह भी मुँहसे कुछ न बोलते जबान बंद किये सिर्फ अपने मुँह और हलकको खोले हुए थे। आर्क (किला)से अजानकी आवाज सुनकर दहबाशीने हुक्केको हाथमें ले बड़े जोरसे दो तीन दम खींचा और वह वहीं अचेत पड़ रहा। दूसरे सिपाही भी उसके हाथसे हुक्का ले दम लगाकर उसी स्थितिमें पहुँचे। दस मिनटमें ही सरबाज (सिपाही) मुर्देके मानिन्द पड़ रहे और अन्तमें अन्तिम दम लगाने वालेके हाथसे हुक्का एक ओर गिरा और खुद गिरकर उसने गिरने वालोंकी संख्या ग्यारह कर दी।

इसी समय कलन्दर जरंगगीने एक चोटमें सुरंगके अन्तिम पर्देको तोड़ डाला। पिंजड़ेके चिड़ियोंकी तरह बंदी बड़ी फुर्तीसे सुरंगके बाहर निकल आये और कबूतरोंके झुंडपर बाजकी तरह वह रोज़ादार सरबाजोंपर टूट पड़े; उन्हींकी कमरपेटियोंसे हाथ-पैर बाँधकर उन्हें जमीनपर डाल दिया। फिर उनकी बन्दूकें हाथमें ले कूचों और गलियोंसे होते किलेकी दीवारको फाँद दर्वाजा-हमाम और दर्वाजा-समरकंदके बीचकी तरफसे भागे।

जबतक इस खबरको पाकर कुशबेगी (युद्ध-मंत्री)के आदमी पिंजड़ा चीर, जंजीर तोड़ निकल भगे इन शेरोंके पीछे दौड़ें, तबतक वे शहरसे बाहर दूर जा चुके थे। एक ओर और एक जगह जाना या एक जगह ठहरना उन्होंने ठीक नहीं समझा, इसलिये सभी बिखर गये। रातके अँधेरेसे फायदा उठा एक-एक दो-दो करके जाकर शहरसे दूरके नरकट-बारियोंमें छिप गये।

अमीरके जिन्दानमें सिर्फ वही थोड़ेसे बंदी बचे रहे, जिन्हें भागनेकी हिम्मत नहीं हुई या क़िलेकी दीवार फाँदते वक्त जिनके हाथ-पैर टूट गये थे, इसलिये क़ुशबेगीके आदमी उनपर काबू पा सके।

२१

मुक्तिकाका कारण या बन्धनका ?

"बर् मुहम्मद सलवात्" (नमो मुहम्मदाय) जनाब-आलीका फर्मान...

धनी-गरीब जो कोई भी हो, पीछे तुम न कहना कि मैंने (ढिंढोरा) नहीं सुना ! ज़िन्दानसे भगा कोई भी बंदी अगर किसीके हाथ पड़े या कोई अज्ञात आदमी एकाएक दिखाई पड़े, तो उसे तुरन्त पकड़कर क़ाज़ीखाना या मीरशबखाना (कोतवाली)के सुपुर्द करें। जो आदमी इस फर्मानकी हुक्म-अदूली करेगा और अज्ञात आदमीको हाकिमखानामें नहीं पहुँचायेगा, उसका सिर बादशाही और माल ज़ब्त होगा।

बर् मुहम्मद सलवात्"

बंदियोंके भागनेके दो रोज बाद बुखाराराज्यके सभी बाजारों और गुमानोंमें ढंढोरचियोंने उक्त प्रकारसे ढिंढोरा पीटा। अपरिचित और

संदिग्ध आदमियोंसे काजीखाने और मीरशबखाने भर गये। हर रोज हाथ-गर्दन बँधे उनके गिरोहके गिरोह शहर बुखाराकी तरफ भेजे जाने लगे।

× × ×

यदि आप बुखारासे निकलकर तुमान (परगना) वाबकंदकी तरफ जायें, तो वाबकन्द-बजरियाके नजदीक पाव मीलपर बड़ी सड़कसे एक छोटा रास्ता अलग होता है। इस रास्तेसे हजार कदम आगे बढ़नेपर सामने नहरके किनारे एक आबाद गाँव है, जिसका नाम है काफिरबात। एक अँधेरी रातको पह फटनेसे कुछ पहले नहरके किनारेवाले एक घरके फाटकसे एक आदमी बाहर निकला। आदमीका सिर बुर्क़ा (फ़रंजा) वाली औरतोंकी तरह ढँका और सारा शरीर भी जामेसे खूब आच्छादित था। आदमी नहरके किनारे आया। वहाँ किसी प्राणीकी छाया देखकर चौंक पड़ा और एक कदम पीछे हटा। फिर हिम्मत बाँध किन्तु काँपती आवाजमें बोला—तू कौन है?

—...—जवाब कुछ नहीं।

—कह, कौन है तू मुये!

—...

—पराया या अपना, क्यों नहीं मुँह खोलता मुये?

—...

आदमी लौटकर मकानके अंदर गया और एक बड़ी लाठी ले तुरन्त बाहर आया। एक बार प्राणीकी छायाके और समीप जा, लाठीको एक हाथमें लिये, दूसरे हाथसे जामाको पहिलेसे भी ज्यादा मुँहपर खींचकर बोला—तू कौन है? बतलायेगा या नहीं? अगर नहीं बतलायेगा तो इतनी मार मारूँगा, कि तेरा नाम-निशान भी न रह जायेगा!

—'बटोही' कहकर छायाने जवाब दिया।

—कहाँका रहनेवाला है और क्या काम करता है?

—...

—कहाँका रहनेवाला है, पूछता हूँ, सुनता है या नहीं ?

—बाबकन्दी।

—मैं सात सालसे सत्तर साल तकके हरेक बाबकंदीको पहिचानता हूँ। तू कौन है, मालूम हो गया। आ मेरे साथ।

जिस वृक्षके सहारे बैठी थी उसे पकड़कर छायाने उठना चाहा, लेकिन वह वैसा न कर सकी। पर्दादार आदमीने लाठीसे एक-दो बार अपरिचित व्यक्तिको टटोलकर जामासे अपना मुँह ढाँक, बायें हाथमें लाठी थाम, दाहिने हाथसे अपरिचित व्यक्तिको उठनेमें मदद दी। फिर उसे बाँह पकड़े हवेलीके अंदर ले जा साईसखानेमें बैठाया। घरके अंदरसे चिराग जलाकर वहाँ ला मुर्दा जैसे चेहरेको देखकर बोला—क्यों साफ-साफ नहीं बतलाता कि तू कौन है ?

—मैं बीमार भी हूँ और भूखा भी। कोई बात याद नहीं आती कि बतलाऊँ।

आदमीने घरके अंदर जा 'आचेश' कहकर बीबीको आवाज दी। लब्बेक क्या कहते हो ?—कहकर बीबीने जवाब दिया।

—एक कटोरा पानी और एक रोटी दे। असमय एक अभ्यागत आया है।

बीबी रोटी और पानी लेकर पास आई। देखा कि पतिके सिरपर अब भी जामाका घूँघट है। आधी हँसी और आधी गुस्सासे वह बोली—तुम्हारा मुँह सूखे ! तुमने अब भी मुँह नहीं धोया और रोटी थामना चाहते हो ? क्या हो गया है तुम्हें ? और मुँह अपना ढाँक लो कि कोई देख न ले।

मर्दने अपने सिरको और भी ज्यादा ढाँककर कहा—बहुत बात न मार। बातोंके लिये समय नहीं। रोटीको एक लत्तेसे बाँधकर दे, कि मेरे हाथसे न छू जाय।

रोटी और पानी लाकर मर्दने अभ्यागतको खिलाया। पूछकर और कुछ पता न पा सका, लेकिन पीठपर गिरे लम्बे बाल और शकल-सूरतसे

जान गया, कि आदमी भगोड़ोंमेंसे है। इसलिये नहरमें हाथ-मुँह धोनेके बाद अपरिचित आदमीके हाथोंको बाँध, घोड़ेपर सवारकर बावकंदकी ओर रवाना हुआ।

× × ×

बड़े भोर ही बावकंदके काजीखानाके दरवाजेपर छिड़काव हुआ था और मुलाजिम पाँतीसे खड़े थे। काजी भी मुलाजिमोंसे सलामी ले रास्तेकी ओर देखता बैठा था। एक मुलाजिमने बाहरसे आकर काजीसे निवेदन किया—काफ़िररबातका अक़सक़ाल किसीको बाँधकर लाया है। यदि आज्ञा हो तो उसे शरीयतपनाह (धर्मरक्षक)के सम्मुख ले आऊँ ?

—ले आ—काजीने कहा

अक़सक़ाल बंदीको आगे किये अंदर आया।

बंदीको क़ाजीके सामने बिठाकर कहा—फर्माने-आलीके अनुसार इस अपरिचित व्यक्तिको मैंने गिरफ़तार किया। गिरिफ्तार करते वक्त मुझे मारकर भाग जानेकी इसने कोशिश की, लेकिन खुदाकी मेहरबानी, दौलते आलीके प्रताप और शरीयतपनाह (काजी)की अनुकम्पासे मुझे कोई भी हानि नहीं पहुँचा सका।

काज़ीने जवानकी ओर कड़ी निगाहसे देखते कहा—तू जिन्दानके भगोड़ोंमेंसे है ?

—नहीं, मैं एक गरीब आदमी हूँ।

—कहाँका रहने वाला है ?

—ग़िज्दुवानका।

अक़सक़ालने झुककर सलाम करते कहा—रात मुझसे अपनेको बावकंदी बतलाता था।

काजी—रातको काफिर-रबातमें क्या करता था ?

—मजदूरी खोजने शहर जा रहा था। रातको राह भूलकर उस गाँवमें

जा पड़ा। चाहता था, सुबह तक वहाँ सो रहूँ । इसी बीच इस आदमीने मुझे गिरफ़्तार कर लिया।

—तेरा और तेरे बापका नाम क्या है ?

—मेरा नाम हसन और बापका महमूद है।

काजीने सामने पड़े एक कागजको उठाकर नीचेसे ऊपर तक देख बंदीसे पूछा—सच बतला, तेरा नाम क्या है ?

—सच कहता हूँ, मेरा नाम हसन है।

काजीने बंदीके पीछे खड़े एक नौकरसे कहा—पीट इस झूठेको।

मुलाजिमने हाथको खींचकर हाथ-बँधे जवानकी गर्दनपर जोरसे मारा। चोटसे जवानका सिर एक ओर झुक गया और उसकी टोपी उछलकर काजीके सामने जा गिरी। काजीकी नजर उसपर पड़ी। हाथ बढ़ाकर काजीने टोपीको उठा लिया और वहाँ सिली तावीजको देखा। फाड़कर तावीजके अंदरके कागजको पढ़ने लगा। पढ़नेके बाद वह जोरसे बोल उठा—"यह तावीज यादगार वल्द बाजारके नाम कारागृहसे मुक्ति पानेके लिये लिखी गई थी," और फिर जवानकी तरफ निगाह करके कहा—"अब बता।"

—आपका अख्तियार है, मेरा भाग्य ही ऐसा !

यद्यपि तावीज मुक्तिके लिये लिखी गई थी, किन्तु वह गिरफ्तारीका कारण हुई—कहकर काजीने जवानपर कड़ी निगाह रखनेका हुकुम दिया।

तृतीय खण्ड

अमीरी राजकी अंतिम साँस

१९१७–२० ई०

१

स्वच्छन्दता

(मार्च-अप्रेल १९१७)

एक माससे ज़िन्दानमें तरह तरह की विचित्र बातें उड़ रही थीं।

—स्वच्छन्दता (हुर्रियत) हो गई है।

—स्वच्छन्दता क्या हुई है ?

—स्वच्छन्दता यही हुई है, कि कोई किसीको "इस जगहसे उठो, उस जगह बैठो" नहीं कह सकता।

—यदि ऐसा है, तो हम भी ज़िन्दान (जेल)से स्वच्छन्द हो चल दें क्या ?

—अवश्य !

—लेकिन मुसलमानी भी हाथसे निकल रही है।

—क्यों ?

—क्योंकि स्त्रियाँ फरंजा (बुर्क़ा) फेंककर स्वच्छन्द हो रही हैं। यहूदी भी तेल्पाकी टोपी और रस्सीके कमरबन्द फेंककर मुसलमानोंके बराबर हो गये हैं।

—खाक़ ! अब क्या मेरी और तेरी औरतें स्वच्छन्द नहीं हैं ? हम कितने सालोंसे यहाँ पड़े हैं; कौन जानता है, हमारी स्त्रियाँ अपने स्वच्छन्द मार्गपर नहीं गई होंगी ? क्या हमारा यह जीवन यहूदियोंसे बेहतर है ? मैं और तू बन्धनसे आज़ाद हो जायँ, चाहे जो भी होता रहे ! "जबतक शहर नहीं जलता, तबतक दर्वेश (साधू) का कबाब नहीं पकता।"

—मेरी समझमें अमीरके इस काममे उसके अमलदार (अफसर) और मुल्ला राजी न होंगे, क्योंकि यदि हरेक आदमी स्वच्छन्द हो जायेगा, तो अमीरको पैसा कौन देगा? वह इस तरह ऐश-जैश किसके ऊपर करेगा? अमीरके अफसर "जनाब आलीकी आज्ञा" से लोगोंका घर लूट ले जाते हैं। स्वच्छन्द होनेपर लोग कहेंगे, हमें न तेरी जरूरत न तेरे अमीरकी। मुल्ला आजकल अमीर और वजीरके बलपर सबके ऊपर साहबी करते हैं। वह काजी बनते हैं, रईस बनते हैं, मुफ्ती और मुदर्रिस बनते हैं; हर तरहसे पैसा जमाकर खाते-पीते मौज करते हैं। यदि कुछ ज्यादा बोलो तो 'सब्ब-नबी' (पैगम्बरका निन्दक) होनेका अभियोग लगाकर काजीखाने (अदालत)में पकड़ ले जाते हैं। पथराव कराकर मरवाते हैं। कुछ साल पहिलेकी बात है, कुदरत अराबाकस (ताँगेवाला) किरायेके लिये झगड़ पड़ा। इसके लिये उसे काजीखाना घसीट ले गये और अमीरसे हुकुम दिलवा ऊँटपर सवार कर "सब्ब-नबी हुआ है" कह शहरसे बाहर ले जाकर उसे संगसार (पथराव) कर दिया। हर आदमी यदि स्वच्छन्द हो जाय, तो इन मुल्लोंकी गप्पें कौन सुनेगा? कौन उनकी शान-शौकत बर्दाश्त करेगा? हर आदमी यदि स्वच्छन्द हो जाय, तो ये भूखे मर जायेंगे। इनके हाथसे कोई काम नहीं हो सकता। ये न मजदूरी कर सकते हैं, न पल्लादारी, न किसानी। यदि लोग भी इन्हें पैसा न देंगे, तो इनकी क्या हालत होगी? इसलिये जबतक जानमें जान है, तबतक ये मुल्ला-मुजावर (पंडा-पुजारी) इस बात पर राजी न होंगे।

—हाँ, ठीक। लेकिन यदि यह काम अमीर, वजीर, मुल्ला और सैनिकोंके हाथमें हो तब न? यह काम तो कर रहे हैं जदीद (नवीन)।

—जदीद कौन हैं?

—यहूदी जो मुसलमान हो गये हैं, उन्हींको जदीद कहते हैं क्या?

—नहीं, वह नहीं है। कल दारोगा अपने सिपाहियोंसे जदीदोंके बारेमें

बात कर रहा था। मैंने किवाड़के पीछेसे सुना। दारोगाके कथनानुसार गजेट (अखबार) पढ़कर काफ़िर हुए मुसलमान, ईरानी (शिया), और कुछ यहूदी एक हो अपनेको जदीद कहते हैं। वही स्वच्छन्दताकी बात करते हैं।

—बेकारकी बात है। वह कुछ नहीं कर सकते। उनके पास न तोप है न तुफंग, न सरबाज। उनसे क्या बन सकता है? कैसे वह अपनी बात अमीर और वजीरसे मनवा सकते हैं? अमीर सबको एक दिन पड़ककर शूलीपर चढ़वा देगा, मीनारसे गिराकर मरवा डालेगा या बदरक़ा (देशनिर्वासित) बना इनके सिरपर पानी डाल देगा।

—नहीं, जदीद अकेले नहीं है। रूसी मजूर और सिपाही भी उनकी पीठपर हैं।

—रूसी मजूरों और सैनिकोंका ज़ोर अमीरपर नहीं चल सकता।

—निकोला जैसे चार बादशाहोंमेंसे एकको उन्होंने तख्तसे उतार दिया, फिर तेरा अमीर उनके सामने क्या है? वह तो एक गुबर्नातर् (गवर्नर)के बराबर भी हैसियत नहीं रखता। बछड़ा खूँटेके बलपर फाँदता है। कुन्सुर (कौन्सिल, रूसी रेजीडेंट) निकोलाके बलपर फाँदता था। अब उसकी बातको कौन पूछता है?

× × ×

—स्वच्छन्दता हो गई है।

—सच?

—अभी-अभी दर्वाजेके पीछे खड़ा होकर मैंने दारोगाको सिपाहियोंसे कहते सुना—"अमीरने अख्तियार छोड़ा, स्वछन्दताको स्वीकार किया। सम्भव है कि वह सारे बंदियोंको मुक्त कर दे। इसलिये मुक्त होते वक्त ख्याल रखना, कहीं यह हमारे सामानको न खराब कर दें।"

आज रात भर स्वच्छन्दताकी खुशीमें बंदियोंको नींद तक न आई। सबेरा हुआ। अभी भी स्वच्छन्दताका कहीं पता नहीं। नौ-दस बजनेको

आये, किन्तु अभी भी कोई खबर नहीं। किवाड़की आड़से सुननेवालेने फिर लोगोंको "हम अभी आजाद होने जा रहे हैं" कहकर विश्वास दिलाया। ग्यारह बजे दर्वाजा एकाएक खुला। "मैंने कहा था न, कि अभी हम आजाद होने जा रहे हैं?" कह वह आदमी खुशीके मारे फूला न समाया। दूसरे बंदी भी अपनी चीजें समेटने लगे।

अपने सिपाहियोंके साथ अंदर आकर दारोगाने द्वारमें भीतरसे ताला लगा दिया। इसपर एक बंदी ने कहा—"क्या आजाद करनेके लिये द्वारको और मजबूतीसे बंद करनेकी भी जरूरत होती है?" दारोगाने बंदियोंके तौक़ और जंज़ीरको एक-एक करके देखा, फिर उनकी गर्दनों और पैरोंमें भी तौक़ और जंज़ीरें डलवा दीं, जो उनके बिना थे।

दारोगा अपने सिपाहियोंके साथ बाहर चला गया। बंदियोंने स्वच्छन्दताका अच्छा मज़ा चखा। एक कह रहा था, "मैंने कहा न कि इन जदीदोंसे कुछ होने-हवानेवाला नहीं"। दूसरा बोल उठा, "क्या मैंने नहीं कहा था, कि कुन्सुर (कौन्सल) अमीरका दोस्त है। वह अपनी जानको जब्बारके हाथोंमें देकर उसकी मदद करेगा?" तीसरा बोला, "मैंने भी कहा था कि बे-तोप-तुफंगवाले जदीदोंको अमीर एक दिनमें नेस्तनाबूदकर देगा?" पीछे बोलनेवाले बंदीने कहा :

—आजके बाद कल भी होता है। यदि निकोलाका हटाया जाना सच है, यदि जदीद निकोलाको तख्तसे उतारनेवाले रूसी मजदूरोंके साथ एक हुए हैं, तो वह काम यहाँ भी होकर रहेगा और आज न सही कल किंतु वह अमीर और उसके वजीरकी भी जड़ खोदकर रख देंगे।

इसके उत्तरमें एक बंदी ने कहा—तो कोई चमत्कार तू भी दिखा दाखुन्दा!

× × ×

एक मास बाद बंदी आजाद होने लगे, लेकिन स्वतंत्र होनेके लिये नहीं, बल्कि चोरों डाकुओंसे बने "शेर-बच्चा" नाम वाले दस्ते (पल्टन)में

भर्ती होनेके लिये। यादगार एक बार सरबाजीका मज़ा चख चुका था, इसलिये वह इस तरहकी 'आजादी'के लिये राजी न हुआ। उसने सैनिक वर्दीसे जेलकी पोशाकको ही बेहतर समझा। लेकिन, यादगार जेलमें अकेला नहीं रहा। 'आजाद' हुए बंदियोंकी जगह नये बंदी—जदीद—लाकर भर दिये गये।

२

कसाईखाना

(मार्च १९१८)

ज़िन्दान दुबारा खाली होने लगा। जिनपर जदीद (नवीन) होनेका आरोप था, वह ज़िन्दानके कुएँमें डाल दिये गये। कुछ बंदियोंको अमीरके खास अफसर "सेवा"के लिये ले गये। जेलमें यादगार और लंगड़े-अपाहिज रह गये। एक दिन खास अफसरने जेलमें आ एक-एकको देखकर दारोगासे कहा—यह नहीं हो सकते।

दारोगाने यादगारकी ओर इशारा करके कहा—और यह ?

"यह ठीक है, लेकिन दब्बू सा मालूम पड़ता है" कह यादगारके समीप आकर पूछा "सेवा करेगा दाखुन्दा ?"

—कैसी सेवा ?

—कैसी सेवा इसे पीछे समझेगा जब कि उसके प्रतापसे आज़ाद हो जायगा।

—अच्छा, क्या सेवा है, बतलाइये; यदि कर सकूँगा तो करके आज़ाद हो जाऊँगा।

अफसरके इशारेपर यादगारके हाथ-पैरके बंधन खोल दिये गये। वह उसे जेलसे बाहर ले चला। पीछे-पीछे चार सैनिक चल रहे थे।

पाँच सालकी कैदके बाद यादगारने आज दिनकी रोशनी देखी।

शहरकी अवस्था बदली हुई थी। दूकानें बंद थीं। झुंडके झुंड आदमी इधरसे उधर दौड़ रहे थे। उनके हाथोंमें तलवार, माँस काटनेका छूरा, भाला और लाठी जैसे हथियार थे। अफसर यादगारको साथ लिये रेगिस्तानमें पहुँचा। आदमियोंकी भीड़के मारे वहाँ सुई रखनेकी भी जगह नहीं थी। रेगिस्तानका मैदान ही नहीं बल्कि मस्जिद पायन्दा और मदर्सा दारुश्शफाकी छतें तक लोगोंसे भरी थीं। अफसरने यादगारसे कहा—देखा न गाज़ियोंको ? ये सारे जनाब-आलीकी सेवामें अपने सिरको हथेलीपर लिये तैयार हैं। इसी समय सिपाहियोंने हाथ-गर्दन बँधे एक आदमीको ला खड़ा किया। बंदीका सिर कई जगहसे फटा, चेहरा लहूलहान और पोशाक चीथड़े-चीथड़े थी। उसमें हिलने-डोलनेकी शक्ति न थी, इसलिये उठाकर लाया गया था। वह क्या कह रहा है, इसे सुने बगैर आँधीपर भूकनेवाले कुत्तोंकी तरह आदमियोंने एक साथ 'उल्लाग्'का नारा बुलंद किया। रक्षक-सेनाके सरदारोंने हर तरफ घोड़ा दौड़ा आर्क (किला)की तरफ़का रास्ता साफ़ किया। खास अफसर भी उक्त बंदीके पीछे-पीछे यादगारको अपने आगे किये आर्ककी ओर चला। आर्कके फाटकसे जामामस्जिदके आगे तक दर्बारके अफसर दोनों तरफ पाँतीसे खड़े थे। उनकी कमरोंमें ज़रीवाला मीनाकारी कमरबन्द, ज़रबाफ़-आबरवाँके जामोंपर बँधे थे। आर्ककी जामामस्जिदकी दालानमें मुल्ला लोग कतारसे बैठे थे। बीचमें एक पातितजानु मुल्ला बैठा हुआ था, जिसके सिरपर एक बड़ा पग्गड़ था। उसकी दाढ़ी बकरी सी, रंग मटमैला और आयु पचासके करीब थी। मुल्लाकी जाँघके पास एक नंगी तलवार और दोनों बगलोंमें दो तमंचे रखे हुए थे। यादगारको यह मुल्ला कहीं देखा सा मालूम पड़ा, लेकिन जोर देनेपर भी स्मृतिने सहायता न की। सिपाहियोंने घायल बंदीको ले जाकर उस मुल्लाके सामने खड़ा कर दिया।

पग्गड़वाले मुल्लाने "देखा न शरीयत-शरीफ (सद्धर्म)की ताकत ?" कह घायल बंदीको डपटकर अपने आजू-बाजू बैठे बड़े पग्गड़वाले

दो दूसरे मुल्लोंपर नजर डाली। उन दोनोंने सिर हिलाकर समर्थन किया। नंगी तलवारवाले मुल्लाने सिपाहियोंको हुकुम दिया—"ले जाओ, इस मुर्तिद (पतित) बागीको मीरगजब (जल्लादोंके अफसर)को सपुर्द करो, कि इसे इसके 'निश्चित स्थान'पर पहुँचा दे। "निश्चित स्थान" सुननेपर एक आदमी धीमे स्वरसे बोल उठा—'ऐ बेचारा" यादगारने देखा कि उसकी आँखोंसे आँसू गिर रहे हैं, जिन्हें छिपानेके लिये वह अपनी आँखें जल्दी-जल्दी पोंछ रहा है। यादगारने उससे पूछा—इस आदमीके लिये निश्चित स्थान क्या है ?

उस व्यक्तिने आश्चर्यसे यादगारकी ओर निगाह डालकर कहा—दाखुन्दा ! क्या आज ही पहाड़से आया है ? इसका निश्चित स्थान कब्र है कब्र ! इसे वध्य स्थानपर भेज रहे हैं।

यादगार अब भी तलवारवाले मुल्लाको पहचाननेकी कोशिश कर रहा था। एकाएक ख्याल आया "हाँ-हाँ, यह वही मुल्ला है, जिसने पाँच साल पहिले भाई मोतीका हिसाब दिखला मुझसे तीस तंके वसूल किये"। फिर उसने आँसू बहानेवाले आदमीसे मुल्लाकी ओर इशारा करके पूछा—क्या यह मुल्ला वही नहीं है, जो पहिले हिन्दुओंका कर्ज उगाहता फिरता था ? फिर क्या हुआ कि एकदम आदमियोंकी जान लेनेका हुकुम देनेवाला बन गया ?

—दाखुन्दा ! धीरेसे बातें कर, नहीं तो अपने सिरपर भी आफत लेगा और मेरे ऊपर भी। हिन्दुओंके करज उगाहनेकी बात मुझे नहीं मालूम, मुझे इतना ही मालूम है, कि इसका नाम इबादुल्ला मखदूमी तरक्ची है और पहले काजीकलाँके यहाँ तरक्ची (तरका या दायभागका काम करनेवाला) था। (यादगारके कानके पास मुँह ला कर) काजीकलाँके तरक्ची होने और हिन्दुओंके करज उगाहनेमें कोई अन्तर नहीं है। यदि अन्तर है तो यही, कि हिन्दू सच्चा कर्ज या उसपर कुछ पैसा बढ़ाकर वसूल करता है; जब कि तरक्ची मरे आदमियों विशेषकर

विधवा-बच्चोंके मालको बेईमानीसे लूटकर खाते और उसमेंसे काजी-कलाँको भी देते हैं।

इसी समय अफसर अपने सिपाहीको हुकुम दे "आ दाखुन्दा ! सेवाके लिये चलें" कहकर उसे ले चला।

× × ×

अफसर आर्ककी जामामस्जिदके पीछेसे होता एक छोटी-सी हवेलीमें पहुँचा। यादगार भी उसके पीछे-पीछे चल रहा था, लेकिन जैसे ही उसने ड्योढ़ीके अन्दर पग रखा, आगेका दृश्य देखते ही "हाय !" कह अपने पैरोंको पीछे हटा लिया। वह इतना भयभीत हो गया था, कि यदि उसकी बगलमें हाथ डालकर थामा न गया होता, तो वह वहीं गिर पड़ता।

"क्या तू इस सेवाको नहीं करेगा ?"—कहकर अफसर यादगारके जामाकी गर्दनको पकड़े हातेके अंदर ले गया। यादगार अपनी आँखोंको जोर से मूंदे जमीनपर गिर पड़ा। एक आदमी के "पकड़ गर्दन" कहने पर दूसरोंको ठहाका लगाते सुन, यादगार को आँख खोलने की हिम्मत हुई। उसने देखा कि हातेके बीचमें खूनसे भरी खाई है, जिससे तीन कदमपर सिसकते बीस मुर्दे चिने हुए हैं। यादगारको ख्याल आया, कि वह स्वप्न देख रहा है। उसने अपने विचारोंको आगे पीछेकी घटनाओंपर दौड़ाना शुरू किया। अफसरके साथ जेलसे चला। फिर रेगिस्तानमें भारी जमावड़ा, आर्ककी इमारत, अमीरके दर्बारियोंकी तड़क-भड़क, व मुल्लोंका दबदबा, घायल बन्दी, तलवारवाले मुल्लाका मारनेका हुकुम और अन्तमें यहाँ सामने सरकटी लाशें, और फिर इस समय भी खूनसे निकलती असह्य दुर्गन्ध कसाईखानेकी दुर्गंधकी तरह नाक फाड़ रही है। यह स्वप्न नहीं हो सकता। यह थी एक वास्तविकता और बहुत ही भीषण वास्तविकता। उसने सोचा "मैं इसे एक बार देखकर अपनेको सँभाल नहीं सका। यह आदमी कैसे यहाँ हँसते, ठहाका लगाते बैठे हैं ?"

इसी समय यादगारके कानोंमें अफसरकी आवाज आई। वह वहाँ बैठे लोगोंसे कह रहा था—यह जनाबआलीकी आज्ञासे शरीयतके अनुसार मारे गये हैं। यह खून अन्याययुक्त नहीं है कि तुमपर पड़े।

एकने जवाब दिया—हमसे नहीं हो सकता। यह ठीक है कि हममेंसे हरेकने नाहक खून किया है, लेकिन उस समय हमारा मन इतना खिन्न नहीं हुआ था। खुद मैं आज रात न सो सका। जैसे ही आँखें झँपतीं, यही सरकटे मुर्दे कन्धेपर सिर रखे, गर्दनसे खून बहाते मुझसे उलझने लगते। मेरी ही नहीं, मेरे साथियोंकी भी यही स्थिति है। अब हमारे पास ताकत नहीं, कि आदमियोंकी गर्दनपर छुरे चलायें। वह अमीर है, यह काजीकलाँ है, वह कुशबेगी (युद्धमंत्री) है और यह मुल्ला। वह लोग जानें और आप जानें। आप दूसरे जल्लादोंको लाइये, और हमें फिर जेलमें भेज दीजिये। या चाहें तो हमें भी मारकर इन्हींके पास सुला दीजिये। जो चाहें, सो करें। अब हममें यह काम करनेकी शक्ति नहीं।

उसकी बातका समर्थन करते दूसरेने कहा—आक़ा मजीद ठीक कहता है। हमारे अंदर सबसे ज्यादा शेरदिल यही है। बुखाराके सात तुमानोंमें मजीद कहकशाईका नाम कौन नहीं जानता? अगर वह यह काम करनेकी शक्ति नहीं रखता, तो दूसरोंके बारेमें पूछना ही क्या? जल्लादी करके आज़ाद होनेकी बात कहकर आप इस आदमीको साथ लाये, देखा न, इस दृश्यको देखते ही इसकी क्या दशा हुई?

यादगारको इस वार्तालापसे साफ हो गया, कि यही सेवा है, जिसके लिये वह यहाँ लाया गया है। उसने अपनेको और भी अधिक बेहोश प्रदर्शित किया, जिसमें अफसर समझ ले, कि वह इस कामके योग्य नहीं।

इसी समय एक लम्बा-चौड़ा आदमी हातेके अन्दर आया। उसकी दाढ़ी बड़ी, मूँछें लम्बी और मुँहपर चेचकके दाग थे। उसने कहा—आखिर मजीद! तुमने क्या निश्चय किया?

मजीद—"खुदा एक बात एक" जो सेवाकर चुके, वही बस, अब और ताकत नहीं है।

—बहुत अच्छा, कोई हर्ज नहीं। इस कठिनाई को ईशान काजीकलाँ ने आलिमोंकी रायसे हल कर डाला है। आलिमोंका कहना है, कि रेगखानाके कुएँ पर एक गड़गड़ा (चर्खी) बैठाया जाय। जिस किसीको जनाबआलीके लिये सदका (बलि) करना हो, उसे रेगखानामें ले जा गर्दनमें फन्दा डाल, रस्सेके दूसरे छोरको गड़गड़ेके ऊपरसे बाहरकी ओर रख देना चाहिये। बाहरकी ओरसे रस्सेको जब खींचा जायेगा, तो आदमी कुएँके अन्दर टँग जायगा और उसका दम घुट जायगा। इस तरह बिना खून निकले ही आदमी पलक मारते-मारते मर जायेगा। "न सीख जलेगी न कबाब" न खून गिरकर तुमपर पड़ेगा न अपराधी ज़िन्दा रहकर जनाबआलीके हुकुममें दखल देगा।

मजीद—ऐ वल्लाह! चमत्कार। ईशान काजीकलाँ के बाप भी बड़े दिमागवाले आदमी थे। वैसे पिताका ऐसा पुत्र होना ही चाहिये। कहावत है "गोश्त अच्छा तो शोरबा भी अच्छा"।

बड़ी दाढ़ीवाला आदमी नर-घातके नये सिद्धान्तसे जल्लादोंको परिचित करा चला गया। मजीदने अपने सहकारियोंसे कहा—यह हिकमतबुज़ है, बड़ा अनुभवी आदमी है। इसीलिये तो काजीकलाँके मामूली सिपाहीसे तरक्की करते-करते बुखाराका मीरशब (कोतवाल) बन गया। नरघात कितना कठिन है, इसे वह खूब जानता है। इस स्थितिसे वह भी कई बार गुजरा है, इसलिये उसने हमारे उज़रको उचित बतला-कर ऊपरवालोंको समझाया और फिर यह नई तदबीर निकाली गयी।

सवाल हल हो चुका था। अब यादगारकी सेवाकी कोई जरूरत नहीं थी। इसलिये अफसरने 'सेवा'का शब्द मुँहसे निकाले बिना "उठ दाखुन्दा!" कह उसे ज़मीनसे उठनेको कहा और फिर उसे एक सिपाहीके साथमें दे रेगखानाके पास आबखाना दोयम नामके जेलमें भिजवा दिया।

३

आबखाना (पायखाना)

रेगिस्तानसे आर्क (किला)के फाटक तक की जमीन नीचेसे ऊपरकी ओर ऊँची होती भी समतल है। वह फाटकसे अमीरके गद्दीघर, उसके रनिवास और कुशबेगी (युद्धमन्त्री)का महल, पहले पूर्वोत्तरकी तरफ फिर पूर्वकी तरफ, तब वहाँसे दक्षिणकी तरफ बराबर नीचेसे ऊपर ऊँची होती जाती है। यह ऊँचाई इस प्रकार क्रमशः है, कि अमीरके साईसखानेका धरातल आर्कके फाटककी छतके बराबर है।

आर्कके फाटकके अन्दर आनेपर पचास क़दम लम्बी एक दालान आती है। अन्दर दाहिनी ओर दो हाथ ऊँचा एक चबूतरा है, जहाँ हर सुबह परेडके वक्त केवल कुशबेगी और सरकर्दा (जनरल) बैठते हैं। इसीके पास पचहत्तर बेंत मारनेका तख्तपुल है। जहाँ बेंत खानेवाले "अपराधी"के शरीरसे उड़ती माँसकी चिद्दियाँ कुशबेगी और अफ़सरोंके पास तक पहुँच सकती हैं। मृत्युदण्ड पाये आदमी भी यहाँ ही कुशबेगीके सामने तख्तपूल पर आगेकी ओर हाथ बँधवाये जनाबआलीके लिये दुआ कर बाज़ार रेसमा (डोरीबाज़ार)की तरफ सिर कटवानेके लिये भेजे जाते हैं। कुशबेगी इस चबूतरेपर बैठा-बैठा इसका भी तमाशा देखता सैनिकोंके परेड खतम होनेपर आर्कके फाटकका तोपचीबाशी (तोपखाना अफसर)—जो कि आर्कके द्वार-रक्षकों और अमीरके गुप्त-समाचार लेखकोंका सर्दार भी है। इसी चबूतरे पर बैठता है।

चबूतरेके पीछेसे दालानके छोरतक छोटे चबूतरों जैसी कोठरियोंकी पाँती हैं। यहीं द्वारपालोंके मीरगन (अफसर) रहते हैं। दालानमें बाईं ओर मीरगनों की चबूतरियों और कोठरियोंके सामने छोटे-छोटे घरोंकी एक और पाँती है, इसे ही आबखाना कहते हैं। यह अमीर-बुखाराका सबसे दृढ़ और कठोर बन्दीखाना है। आबखानाकी हर एक कोठरी चार

या पाँच वर्ग हाथ है, जिसमें हवा रोशनीके लिये एक छोटी-सी खिड़की है जो कि फाटकवाली अँधेरी दालानमें खुलती है। दालानमें प्रायः मोटा ताला लगा रहता है। आबखानाकी छत शाही साईसखानेके फ़र्शसे बराबर और उससे लगी है। इसीपर अमीरके घोड़ोंकी लीद और पेशाब जमा होती रहती है और कुछ दिनों बाद किलेकी दीवारके एक सूराखसे नीचे फेंक दी जाती है।

आबखानेका फ़र्श है केवल एक छोटा-सा बोरिया (टाट)। बेंत लगानेके बाद खून टपकती पीठके बल बन्दियोंको इसी बोरिया पर लिटा देते हैं। दूसरे वक्त भी बन्दियोंके सोने-बैठनेके लिये वह बिस्तरेका काम देती है। हर एक कोठरीमें दो छोटे-छोटे ही गड्ढे हैं, जिनमें एक आग जलानेके लिये और दूसरा पेशाबखानेके लिये उपयुक्त होता है। पेशाबखानेका गढ़ा इतना भरा रहता है, कि सारी कोठरीमें कीचड़ और गन्ध उछलती रहती है, जिसे कि हफ्ता या दस दिनमें साफ किया जाता है। कोठरियोंके छतके ऊपर पाखाना है, उससे भी गन्दा पानी छन-छनकर नीचे टपकता रहता है। आबखाना नाम पड़नेका यही कारण है कि यह आबखाना (पायखाना)की भाँति सदा दुर्गंध और गन्दे पानीके पिच्च-पिच्चसे भरा रहता है। खटमल, पिस्सू और जुएँ तो बन्दियोंकी तरह ही इस घरके वासी हैं। इस सहवासने दोनोंमें काफी स्नेह पैदा कर दिया है।

दालानके नीचेकी ओर तोपचीबाशीके मकानकी बगलमें आबखानेका अन्तिम भाग है, जिसको रेगखानाके नामसे पुकारते हैं। यहाँ हमेशा रेग जमाकरके रखते हैं। वर्षासे कीचड़ उठनेपर दालान और गद्दीभवनके रास्तेपर इसे डालकर सुखा देते हैं, जिसमें घोड़ेका पैर न फिसले और अमीर गिरकर अपनी गर्दन न तोड़ लें।

× × ×

यादगारको रेगखानेकी बगलमें इसी आबखानामें रखा गया। उसने

जीवनके सबसे कड़वे दिनों विशेषकर १९१८ के मार्च और अप्रैलके महीनोंको यहीं बिताया। यहाँ जीवित रहते क्षण-प्रतिक्षण जो दिल दहलाने वाली घटनायें घट रही थीं, उनको देखनेकी शक्ति हर एक आदमीमें नहीं हो सकती थी। उस वक्त पहलेकी तरह बन्दी आबखानामें बराबर रहनेके लिये नहीं लाये जाते थे। हर बन्दीको दिनमें वहाँ लाते और रातको खाखनामें रख उसका गड़गड़ा (फाँसी) खींचते। ऐसे बहुत कम बन्दी होते, जो दो-तीन दिन यहाँ जिन्दा रह पाते। पुराना और जिन्दा बच रहने वाला बन्दी वहाँ केवल यादगार था, जो मारे जानेवाले बन्दियोंके करुण-क्रन्दनको हसरतके साथ सुनता, उनके दर्दमें हमदर्दी दिखलाता उनकी हालत देख उसका हृदय विह्वल हो जाता। इससे ज्यादा उसके हाथमें क्या था? वह उनकी क्या सहायता कर सकता था। जरा उस अवस्थाकी तसवीर खींचिये। उसे ऐसे लोगोंके साथ रहना पड़ रहा था, जो एक घंटा बाद अत्यन्त निकृष्ट ढंगसे मारे—गड़गड़ापर खींचे—जाने वाले थे और इस बातको वे जानते थे। यादगार भी जानता था कि ये अभागे बेगुनाह हैं, फिर भी उसे दिलमें फड़फड़ानेके सिवा कुछ भी सहायता करनेकी आज़ादी नहीं थी। उसकी रातें दिल मसोसने और अफसोस करनेमें बीततीं।

कुछ रात गुजर गयी थी। इसी समय दो तीन आदमियोंके आनेके पैरोंकी आहट सुनाई पड़ी। बन्दी भेड़ियोंके घेरेमें पड़े हरिनोंकी तरह कान खड़े किये खड़े थे। आबखानेका दरवाजा खुला, किसीने कहा—हमीद खोजा!

—...

फिर दुबारा कड़कती आवाज़से कहा—हमीद खोजा कह रहा हूँ, ओ बदमाश, क्या जवाब न देनेसे तू समझता है कि मौतसे बच जायेगा? सौ जान भी पासमें हो, तो भी तुम मुर्तिदों (पतितों)की एक जान बचकर नहीं निकल सकती।

हमीद खोजाने लाचार हो जवाब दिया। एक सिपाहीने मुर्गेपर लोमड़ीकी तरह झपटकर हमीद खोजाकी गर्दनको पकड़ बाहर घसीटा। सारे बन्दी चुपचाप रोते जल्द-से जल्द मौत आनेकी इच्छा रखते थे, जिसमें फिर ऐसा दृश्य देखना न पड़े। पाँच मिनट बाद आबखानासे रेगखानामें पहुँचनेके छिद्रसे गड़गड़ा खींचनेकी आवाज आई। जिसके बाद आदमीके गला घुटनेकी खर-खर आवाज़ सुनाई दी। फिर जरा देरमें रेगखानाकी छतसे किसी भारी चीजके गिरनेकी धमसी आवाज आयी और किसीने पुकारा—दूसरेको ला।

पाँच मिनट बाद फिर आबखानेका द्वार खुला। अबकी हाजी अब्दुस्सत्तारको लाये और दूसरोंकी तरह उन्हें भी गड़गड़ेपर खींचा। बादमें यही बात मिर्ज़ाशाह, हाजी सिराज [ग्रन्थकर्त्ता ऐनीके बड़े भाई], मिर्ज़ा अहमद, मिर्ज़ा रहमतुल्ला, मिर्जा फ़याज़, अज़ीमजान और दूसरोंके साथ भी हुई।

दिनका वक्त था, रेगिस्तानका बड़ा मैदान ही नहीं मदर्सा और मसजिदकी छतों तक तमाशबीनोंसे भरी थीं। गाजियोंने उल्लास"के नारेसे आसमानको गुँजा दिया। हजारों मुखोंसे "ले आये"की आवाज़ निकली, जिसकी प्रतिध्वनि मदर्सा और मसजिदोंकी ताकों तथा गुम्बदोंसे उठ शहर तक फैल गयी। रेगिस्तानकी तरफ खुले आबखानाके छिद्रपर आँख रखकर आदमियोंको हाथ बाँधकर लाते यादगार देख रहा था। एक "गाज़ी"ने कहा—मिर्जा शमशी और उसके बेटे मेहदीको ले आये। इसने बोलशेविकोंसे मिलकर जनाबआलीके विरुद्ध तलवार उठायी। औरोंको शिक्षा देनेके लिये लोगोंके सामने इनका शिर भेड़की तरह काटना चाहिये।

सचमुच उन्हें आर्ककी तरफसे कुछ दूर ले जाकर फिर लौटा बाजाररेसमाँमें ले गये और ऐसी जगह उनका शिर काटा, जहाँपर उसे अमीर अपने सलामखानेकी खिड़कीसे देख रहा था।

फिर हल्ला मचा—मुल्ला शरीफ़ क़र्नूनी, यह साठ साला बूढ़ा भी जदीद (नवीन) है ?

मुल्ला शरीफका भी शिर भी उसके चौदह और सोलह साला दो लड़कोंके साथ रेगिस्तानमें लोगोंके सामने काटा गया। यही बात फतहुल्ला खोजा और दूसरोंके साथ हुई।

दालानकी ओरसे कोई क्रोध-पूर्ण स्वरमें कह रहा था—जंग और धर्म-युद्धमें बहादुरी दिखलानेवालोंको पहिले जमानेके बादशाह दर्बारके बड़ेसे बड़े पद और इनाम देते थे। मैंने अपनी की हुई सेवाओंको कुशबेगीसे अरज करना चाहा, लेकिन यसावुल-बाशीने आज्ञा न दी। ऐसा होनेपर कौन बहादुरी दिखलानेकी कोशिश करेगा,

जवाबमें दूसरी आवाज आयी—तूने क्या बहादुरी दिखलाई ?

—जब कोलेसोफ और जदीद हारकर भगे थे और प्रथम क्रान्तिमें पचहत्तर बेंत खाकर मिर्ज़ा नजरुल्ला जदीद मर गया, तो उसके लिये जदीदोंने कागान-कुहना और कागान-नोके बीच समाधि-गृह बनवाया था। मैंने उसे ढाह दिया और उसकी नींव तक न छोड़ी।

—नहीं, झूठ बोल रहा है, इस कामको मैंने मुल्लागाज़ियोंके साथ किया। जब कागानसे कर्मूनको भगे मिर्ज़ा मुस्तफाकुलको हम लूटनेके लिये गये थे, उस समय यह आदमी हमारे साथ नहीं था, बल्कि मैंने सुना है कि जिस वक्त मीरशब (कोतवाल)के साथ मज़ारके नायबने मुस्तफा और उसके आदमियोंको मारा, उस वक्त मुस्तफाकी बहुत सी चीजें इस आदमीने घर दबाई। इसके बाद भी खैरखाही जतलाते दौलत-आलीसे इनाम लेना चाहता है। यदि मिर्ज़ा नजरुल्लाकी कब्र बर्बाद करनेके लिये सरकारी खजानेसे कुछ दिया जाय, तो वह हक मेरा है। मैंने इस जेहाद (धर्म-युद्ध)में अपना जान संकल्प करके काम किया। फजलदीन मखदूम और मिर्ज़ा शम्शके चारबागों (मेवाबागों)में मैंने आग लगाई। लेकिन इसके लिये एक भी पैसा न पाया।

—आग लगानेसे पहिले ढूँढ़ क्यों न लिया, पहिले चीजोंको लेकर पीछे आग लगानी चाहिये थी ?

—नहीं, खुदाकी कसम जो एक भी चीज मैंने ली हो। मैंने चाहा कि मिर्जा शम्शके बागसे एक बोरा गेहूँ हाथ लगाऊँ, लेकिन मुल्लोंने यह कहकर मना किया "जदीदोंका गेहूँ हराम है"। मेरे देखते-देखते तीन सौ मन गेहूँ जलकर राख हो गया।

× × ×

यादगार दो मासके दीर्घकाल तक इस तरहकी भीषण-घटनाओंको अपनी आँखोंसे देखता रहा।

यद्यपि नरघात कम हो चला था, किन्तु उसकी मानसिक विकलता दूर नहीं हुई थी। मारे जानेवाले बन्दियोंसे आबखाना कभी खाली न हुआ। कभी-कभी उसकी चार आदमीके रहनेवाली कोठरीमें बीस-तीस आदमी भरके दिये जाते। हर रोज मीरगज़ब आकर उन्हें पीट-पीटकर अधमरा करके पूछते—"बुखारासे भगे जदीदों और रूसी-बोलशेविकोंके साथ तू क्या लिखा-पढ़ीकर रहा था ? उन्होंने तेरे पास क्या हुकुम भेजा ? सच सच बता।" ये बन्दी मुँह नहीं खोलते। मीरगज़ब फिर उन्हें मारने लगते। उनके घुटनोंमें लकड़ी बाँध जाँघोंपर पत्थरसे मारते। मृत-प्राय हो जानेपर या तो रेगिस्तानमें लेजाकर उनका काम तमाम कर देते या इसी आबखानामें मरनेके लिये छोड़ जाते। बादशाही तरफसे इन बन्दियोंको एक कौर रोटी देनेकी तो बात ही दूर, पानी देनेमें भी किफ़ायत की जाती। जिन बन्दियोंके सम्बन्धी बाहर होते, वे उनके लिये खाना भेजते, लेकिन इस खानेका भी अधिक हिस्सा बन्दीबान उड़ा लेते। जो कुछ अन्दर पहुँचता, उसे वे आपसमें बाँटकर खाते।

४

सुलगती आग

कुछ दिनोंसे आबखाना खाली था और यादगार अकेला रह गया था। इस डेढ़ महीनेके अन्दर उसने जो रोमांचक घटनायें देखी थीं, वह सिनेमाके फ़िल्मकी तरह एक-एक करके सामनेसे गुज़रने लगीं। आँखोंके सामने ये घूमती तसवीरें असली घटनासे भी अधिक भयावनी मालूम होती थीं, क्योंकि उस वक्त वह अकेला उनको नहीं देख रहा था और वह थोड़ी-थोड़ी करके सामने आती थीं; लेकिन अब इस एकान्त-वासमें वह उसके सामने बड़े विशाल रूपमें आती थीं। वह जिधर भी ख्याल दौड़ाता, बीती घटनायें सौ गुना होकर उसके सामने आतीं। वहाँ कोई न था जो उसके दिलके भारको कम करनेमें सहायक होता।

आबखानेका दरवाजा खुला। जैसे कूबकारी (बकरी-नोचकी घुड़दौड़) में नोचनोचकर मारी बकरीको लाकर पटकते हैं, उसी तरह एक आदमीको आबखानेके एक कोनेमें लाकर पटक दिया गया। सचमुच इस आदमीका शरीर भी कूबकारी वाली बकरी जैसा ही घायल, छिन्न-भिन्न और लहूलुहान था। अन्तर इतना ही था, कि इसमें उसके सर कटे साँपकी तरह छटपटाते जीवनका चिह्न दिखलाई पड़ता था। एक घंटा बाद आदमीने आँख खोलकर चारों ओर निगाह डाली और यादगारको देखकर फिर आँखें मूँद लीं।

यादगार उसके साथ सहृदयता दिखलाने या अपने एकान्तवासकी वेदनाको हलका करनेके लिये पास जाकर सोते आदमीको जगानेकी तरह बड़े कोमल स्वरमें "आका आका" कहकर बोला। आदमीने बेहोशी या नींदसे जागेकी तरह जवाब दिया—क्या कहते हो?

—कुछ भी नहीं, हाल कैसा है?

—धन्यवाद।

—किस लिये बन्दी हुऐ ?

—मरनेके लिये।

—बन्दी बननेका कारण क्या है, पूछता हूँ।

—खुद तू कौन है, और तेरे बन्दी बननेका कारण क्या है ?

यादगारने संक्षेपमें आपबीती कहनी शुरू की। उसे खतम करते करते बन्दी भी ताक़त संभालकर अपनी जगह बैठ गया था। यादगारकी जीवनी सुनकर उसपर विचित्र प्रभाव पड़ा और एक घड़ी पहले उसकी वह मुर्दा-जैसी आँखें अँधेरे घरमें शुक्रताराकी तरह चमक रही थीं। उसने कुछ क्षण यादगारकी आँखोंकी तरफ देखकर कहा—मैं मर रहा हूँ यानी वे मुझे मार डालेंगे, किन्तु तू आज़ाद होगा; अकेला तू ही नहीं बल्कि, वे सारे आज़ाद होंगे, जो आज अपने घरोंमें रहते भी बन्दी हैं। इसलिये मुझे अपने मारे जानेका तनिक भी अफसोस नहीं।

इसी वक्त पैरकी आहट आई और आबखानाके द्वारको खोल किसीने शिरको अन्दर करके कहा—अब्दुल्ला खोजा !

—क्या खिदमत—कहकर बन्दीने बड़ी निश्चिन्ताके साथ जवाब दिया, मानो अपने घरमें किसी दोस्तने आकर उसे आवाज़ दी हो।

—इधर आ—आदमीने कहा।

—किस लिये ? जो कुछ करना चाहते हो, यहीं कर डालो।

—इधर आ कह रहा हूँ, मादर...

अब्दुल्ला खोजा उठा और आगन्तुकने उसे साथ ले द्वारको फिर बन्द कर दिया। घंटा बाद फिर द्वार खुला और फिर किसीको बोरेकी तरह अन्दर फेंककर द्वार बन्दकर दिया गया, यह अब्दुल्ला खोजा ही था। लेकिन अब पहलेकी तरह वह शंकित न था और पाँच मिनट जमीनपर पड़े रहनेके बाद उठ बैठा। उसने "दाखुन्दा !" कहकर बात शुरू की। —दाखुन्दा कहनेसे नाराज़ न हो, यह चाल चली आई है, कि कोहिस्तान (पर्वत) से आनेवाले हर गरीब मजदूरको बुखारावाले दाखुन्दा कहते हैं। दाखुन्दा कहकर

मैं तुझसे घृणा नहीं करना चाहता, बल्कि तुझे यह बतलाना चाहता हूँ, कि वह समय बहुत समीप है, जब कि दाखुन्दे—नंगे भूखे कमकर—विजयी होंगे और यह नाम जो आज निर्धनता और निस्सहायताका प्रकाशक होनेसे घृणाका कारण है, वह सम्मान-सूचक बनेगा।

यादगार समझ रहा था, मृत्युकी पहली घड़ीमें होनेसे वह अकबक बोल रहा है, इसीलिये उसकी बातोंको महत्त्व नहीं दे रहा था। अब्दुल्ला खोजाने मानो उसके भावोंको भाँपकर कहा—दाखुन्दा! जान पड़ता है, तू मेरी बातोंको समझ नहीं रहा है, इसलिये मैं चाहता हूँ, कि उन्हें और स्पष्ट करके बतलाऊँ। अभी यहाँसे ले जानेके वक्त मैंने कहा था, कि वे जल्दी ही मुझे मार डालेंगे। मारे जानेसे पहले मैं तुझे कुछ बातें बतला देना चाहता हूँ, और चाहता हूँ कि हाल ही में बीती और आनेवाली घटनाओंसे तुझे खबरदार कर दूँ, जिसमें पहले हीसे जानकर तू अपना आगेका रास्ता ठीक करे। पहली बात तेरे जाननेकी यह है, कि जो भीषण घटना तेरे शिरपर गुजरी, वह केवल तेरे ही शिरपर नहीं गुजरी; बुखारा रियासतके अधिकांश गरीब और खासकर कोहिस्तानके गरीब ऐसी आफतोंको हर दिन झेल रहे हैं। जिन लोगोंको तूने अपनी आँखोंके सामने निर्दयतासे मारे जाते देखा, वे वही आदमी हैं, जिन्होंने तुम्हारे जैसोंपर होते अत्याचारोंपर असन्तोष प्रकट करते अमीरसे शासनमें सुधार करनेके लिये कहा। अमीरने कोलीसोफकी चढ़ाई को ले पकड़कर उनके साथ जो चाहा किया और समझा कि मैंने सारे असन्तोषको दबा दिया, इसके बाद निश्चिन्त हो शासन करूँगा। लेकिन अमीरका यह समझना गलत है। अमीरने जिस असन्तोषकी आगको बुझाना चाहा, वह बुझी नहीं। वस्तुत: वह भुसौलेके अन्दर ही अन्दर सुलगती आग जैसी है। वह छिपी आग क्षण-प्रतिक्षण बढ़ती जा रही है और वह समय समीप है, जब कि वह विकराल रूप ले अमीरके तख्त-ताज और उसके सहायकोंको भी जलाकर खाक कर दे।

अब्दुल्ला यह कहते-कहते नशेके अन्तमें आई नींदकी तरह एक क्षणके लिये चुप हो अपने विचारोंमें डूब गया। वह होशमें बोल रहा है या अक-बक कर रहा है, यह जाननेके लिये उससे यादगारने पूछा—एक सालसे ज्यादासे मैं यहाँ देख रहा हूँ, कि अमीर लोगोंको मरवा रहा है। बन्दियोंकी बातोंसे यह भी मालूम होता है, कि अमीरके राज्यमें दूसरी जगहोंमें भी नर-हत्याका बाजार गर्म है। फिर कौनसी ऐसी जबर्दस्त ताकत है, जो कि अमीरके साथ मुक़ाबिला करनेकी हिम्मत करे ?

विचारमग्न अब्दुल्ला खोजाने आँखें खोलकर यादगारकी तरफ तेज निगाहसे देखा, मानो वह जानना चाहता था, कि यादगार उसकी बातोंको समझ रहा है या नहीं। उसने देखा कि वह पहलेकी तरह बेपरवाही नहीं दिखला रहा है, और बातोंको समझना चाहता है।

अब उसने समझानेकी कोशिश करते अपने सारे विचारोंको एकत्र करके कहा—निस्सन्देह, यदि दुनिया पहलेकी दुनिया होती और बुखारा अब भी पुराना बुखारा बना रहता, तो इस काट-मारसे अमीरका काम बन जाता। लेकिन अब दुनिया बिल्कुल बदल चुकी है। क्या तूने सुना है, रूसमें क्रान्ति हो गयी और निकोलाको, जो कि अमीरका पुष्ट-पोषक और सहायक था—तख्तसे उतार दिया गया।

—हाँ, तीन साल हुआ, इस बातको मैंने जिन्दानमें सुना था। उस वक्त बन्दियोंने "अमीरने आजादी दे दी, हम भी आजाद होनेवाले हैं" कहके बड़ी प्रसन्नता प्रकट की थी; लेकिन थोड़े ही समय बाद हमारी हालत पहलेसे भी बुरी हो गई।

—उस घटनाको सुना था, तो ले अब मेरी बातोंको भी अच्छी तरह सुन। निकोलाको हटाने भरसे रूसमें काम समाप्त नहीं हुआ। रूसके कारखानों मिलोंके मजदूरों, और किसानों तथा सिपाहियोंने विद्रोह किया, जिसके बलपर निकोलाको तख्तसे उतार दिया गया। लेकिन उन्होंने सिर्फ़ निकोलाको हटाये जानेपर ही सन्तोष नहीं किया, बल्कि बोलशेविक

(कम्युनिस्ट) पार्टीके नेतृत्वमें क्रान्तिके कामको आगे बढ़ाया; जिसका परिणाम यह हुआ, कि २५ अक्तूबर (७ नवम्बर १९१७)को, यानी निकोलाके हटाये जानेके आठ महीने बाद उसके पिछलग्गुओंको भी निकाल बाहर किया गया। निकोलाके हटाने पर बाय, जमींदार, कारखानोंके मालिक शासनको हाथमें ले पहले ही के कामको आगे रखे हुए थे। मजदूरों और किसानोंने उन्हें निकालकर अपनी हुकूमत क़ायम की। उन्होंने सिर्फ़ हुकूमत ही नहीं, बल्कि कारखानों, मिलों, बेङ्कों और देशके सारे दूसरे सरकारी गैर-सरकारी कार्यालयोंको अपने हाथमें ले, धनियोंको बेदाँतका भेड़िया बे-चंगुलका बाज बनाकर रख दिया। इस घटनाको अक्तूबर-क्रान्ति कहते हैं। अब रूसमें वह ताकत नहीं रह गयी है, जिसके बलपर अमीर अपने तख्त और ताजकी रक्षा कर सके। इसमें शक नहीं, कि पुराने युगके अवशेष अब भी रूसमें मौजूद हैं, लेकिन वे ऐसी अवस्थामें नहीं हैं, कि अमीरकी कोई बड़ी मदद कर सकें।

—यानी तुम कहना चाहते हो कि अब जदीद (नवीन) खड़े होकर अमीरका मुकबिला कर सकते हैं ?

अब्दुल्ला खोजाने कुछ गरम होकर कहा—जदीद ! जदीद कोई काम नहीं कर सके और आगे भी कोई काम नहीं कर सकेंगे। वस्तुतः उन्होंने एक भी काम ठीकसे नहीं किया। "बिल्ली की दौड़ मुखौल तक", उनका सारा उद्देश्य तीन बातोंमें खतम हो जाता था—"मकतबों (प्रारम्भिक पाठशालाओं)का सुधार, मदरसों (विद्यापीठों)का सुधार और अमीरके शासनका सुधार"। सुधारका मतलब है उस चीज़को खतम नहीं, बल्कि उसे ठीक करके और मजबूत करना। यह ठीक है, कि अपनी छोटी माँगोंके लिये जदीदोंने अमीरके हाथों बहुत जुल्म सहा और बड़ी यातनाओंके साथ मारे गये। वे अमीर और उसके

दरबारियोंसे असन्तुष्ट थे, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वे अमीरी (अमीरका राज्य)को खतम करना चाहते थे।

—पिछले साल सुना था कि जदीदोंने बोलशेविकोंसे मिलकर अमीरके विरुद्ध तलवार उठायी, क्या यह बात सच है ?

—सच है। यह सच है कि जदीदोंने कोलीसोफ़से मिलकर उसकी सहायतासे अमीरपर हमला किया। लेकिन इसै काममें वह एक-दिला न थे। उन्होंने ख्याल किया था कि एक सैनिक घुड़कीसे अमीर डर जायगा, जदीदोंके विरोधियोंको दरबारसे निकाल देगा और स्वयं जदीदोंके प्रभावमें आ जायगा, इस तरह हुकूमत उनके हाथमें आ जायगी। फिर पूर्वोक्त त्रिविध-सुधारोंको कार्य रूपमें परिणत करके वे अमीरकी शान-शौकातको और बढ़ायेंगे। उनका यह उद्देश्य उनकी ओरसे छपी पुस्तिकासे मालूम होता है। यही वजह थी, कि कोलिसोफ़-काण्डके वक्त एक क़ुशबेगी (वज़ीर) मिर्ज़ा उर्गंजीको निकाल उसमान बेगके क़ुशबेगी बनाये जानेपर अपनी सफलता समझ जदीदियोंने बड़ी खुशियाँ मनायीं। लेकिन जब अमीर उनकी घुड़कीसे भयभीत न हो लड़ाई पर उतर आया, तो भी कितने ही जदीदोंकी दो-दिली दूर न हुई। एकने कहा कि गोली-गोला शहरपर नहीं आयेगा, अमीर खाली तोपकी आवाजसे डराना चाहता है। दूसरे इस बातके लिये तैयार थे, कि अमीरके साथ बातचीत करके शान्तिसे काम कर लें। उनके दिलमें विद्रोह करनेका विचार भी न था। उन्होंने लोगोंमें इसके बारेमें न कोई प्रचार किया और न शहरमें रहनेवाले जदीदों और उनके साथ सहानुभूति-रखनेवालोंको ही इस बातकी खबर दी, कि कोलिसोफ़-काण्ड जैसे एक भारी खतरेके समय किस ढंगपर चला जाय। इसका परिणाम यह हुआ, कि शहरके जदीद, अमीर और उसके जल्लादोंके हाथमें पड़कर नेस्त-नाबूद हुए। ऐसी बेतैयारीके वक्त ही "तीस हजार हथियारबन्द इनक़लाबची (क्रान्तिकारी) बुखाराके अन्दर तैयार हैं" कहकर उन्होंने कोलिसोफ़को धोखा दिया।

दाखुन्दाने बीचमें बोल दिया—मैंने कुछ बन्दियोंको "हम जवान" या "जवान बुखारी" कहकर आपसमें बात करते सुना, ये लोग कौन हैं ?

—ये भी जदीद हैं। वे अपनेको जवान-बुखारी भी कहते हैं। बुखाराके जदीदोंपर तुर्कों और तातारोंका असर ज्यादा है। उसमानी (तुर्कीके) तुर्क अपने जदीदोंको "जुन्तुर्क" कहकर पुकारते हैं, जिसका अर्थ है "जवान तुर्क"। तातार अपने जदीदोंको "युश्लर" कहते हैं, इसका भी अर्थ है जवान। बुखाराके जदीद उन्हींकी नकल करते और अपनेको "जवान बुखारी" या "जवान" कहते हैं।

—अच्छा यह तो मालूम हुआ कि जदीद या जवान-बुखारी क्या करना चाहते हैं, लेकिन यह बतलाओ कि अमीरके साथ संघर्ष करनेमें इनके कामोंका नेतृत्व और सरदारी कौन करता है ?

—मैंने पहले कहा था, कि रूसी मजदूरोंने बोलशेविक पार्टीके नेतृत्वमें रूसी क्रान्तिको पूर्णतापर पहुँचाया। कोलिसोफ़-काण्डके बाद बुखारासे भगे कुछ जदीद ताशकन्द और समरकन्द पहुँचे और कम्युनिस्ट पार्टीमें शामिल हो बोलशेविक बन गये। उन्होंने **कमेटी मर्कज़ी कमूनिस्तान बुखारा** (बुखाराके कम्युनिस्टोंकी केन्द्रीय समिति) क़ायम की। उसकी शाखायें समरकन्द, कागान और चारजूय आदिमें खोली गयीं। बुखारा शहरके अन्दर भी कम्युनिस्टोंके गुप्त गरोह बने। कमीटी मर्कज़ी कमूनिस्तान बुखारा रूसी कम्युनिस्ट पार्टीके नेतृत्वमें अमीरके खिलाफ़ क्रान्तिकारी आन्दोलन कर रही है और सभी विरोधियों—खासकर मजदूरों-को एकता-बद्धकर अमीरके मुकाबलेमें खड़ा कर रही है। अब जब कि बुखाराके क्रान्तिका नेतृत्व कम्युनिस्ट पार्टी जैसे एक फ़ौलादी पार्टी—जिसने रूसी क्रान्तिको सफल बनाया—कर रही है, तब जदीदोंकी दो-दिलीसे कोई भय नहीं। मुझे आशा है, कि अबकी बार हम सफल होंगे और अमीर तथा अमीरीको खतम करके रहेंगे। सिर्फ़ अमीर और

अमीरीको ही नहीं बल्कि उन परिस्थितियों और व्यवस्थाओंको भी खतम कर देंगे, जो कि अमीर और अमीरीको पैदा करते हैं।

अब यादगारकी नज़रोंमें अब्दुल्ला खोजा मरणासन्न अकबक बड़बड़ानेवाला आदमी नहीं मालूम होता था, बल्कि वह ऐसा नर-सिंह था, जिसके रोएँ-रोएँ से उस अवस्थामें भी वीरताकी अग्निज्वाला निकल रही थी। ऐसे नरसिंहके इस लोहेके पिंजरेमें पड़नेसे उसे अफ़सोस हुआ, और उसने उसकी होशियारीपर सन्देह करते पूछ दिया—तो तुम खुद समरकन्द या ताशकन्दकी तरफ न भागकर क्यों इस जालमें आ फँसे?

—मैं कम्युनिस्ट हूँ, ताशकन्दकी मर्कज़ी कमेटी (केन्द्रीय-समिति)से सम्बन्ध जोड़कर अब काम करनेके लिये बुखारा आया था और शहरके अन्दर बहुत काम किया, प्रचार किया, सेल (प्रारम्भिक संगठन) कायम किये। अन्तमें भेद खुल गया और मैं गिरफ़्तार हुआ। अब ये चाहते हैं कि मुझसे सारे भेद लें। यही वजह है कि आज दो बार इन्होंने सासत दे-देकर मुझसे पूछा, लेकिन वे मुझसे कुछ नहीं पा सकते। वे शायद एक दो दिन और मुझे घोर यन्त्रणा दें। इसी बीचमें चाहे मैं चोटसे मर जाऊँगा, या मुझसे निराश हो वही मार डालेंगे। हर हालतमें मेरा जीवन अब अन्तको पहुँच गया है, और मेरे दिन इने-गिने हैं। लेकिन तू सावधान रहना। ऐसा करना कि सही सलामत उस दिवस—विजय दिवस—को पहुँच जाये जिसे हम न देख सकें; और क्रान्तिके लिये काम करनेवालोंके साथ मिलकर काम करना। यदि उस मंगल-दिवसतक ज़िन्दा रह जाना, तो कम्युनिस्ट पार्टीमें दाखिल हो जाना, जिसमें पार्टीके नेतृत्वमें क्रान्तिके मार्गमें महत्त्वपूर्ण भाग ले सके। मैं मरता हूँ तो क्या? जिन्दाबाद इनक़लाब।

यह कहते अब्दुल्ला खोजाने अपनी बात खतम की। बेतोंकी मारसे उसके शरीरके मांसकी चिद्दी-चिद्दी उड़ गयी थी और घावमें

जामाका कपड़ा चिपककर सूख गया था, जिससे जरा भी हिलने-डुलनेसे भारी कष्ट होता था। तो भी वह हिम्मत करके यादगारकी मददसे बोरिया पर लेट गया।

× × ×

अब्दुल्ला खोजाकी बात ठीक निकली। दूसरे रोज उसे ले गये और वह फिर लौटकर नहीं आया। लेकिन उस दिनके दो रोज बाद ही रेगखानाकी तरफके सूराखोंसे "जिन्दाबाद इनकलाब"की पहले-पहल आवाज़ आयी, फिर गड़गड़ा खींचनेकी खरखराहट, फिर गला घुँटनेकी खिरखिराहट और अन्तमें एक भारी चीजका धमसे गिरना सुनाई दिया।

यही था अब्दुल्ला खोजाका अन्तिम दिन।

५

दबदबा और तैयारी

(अगस्त १९२०)

१९२०के अगस्तका महीना था। अमीरके दरबारमें बहुत जोश-खरोश था। यादगार आबखानामें अब अकेला रह गया था। वह अपना बहुत सा समय रेगिस्तानके तरफवाले छेदसे बाहर देखनेमें लगाता था। एक दिन भोरमें सूर्योदयसे पहले ही चार-चार की पाँतीमें हो **बाजार सावनी रेगिस्तान** और मसजिद-पायन्दाके पच्छिमसे लोग आते दिखाई पड़े। उनके पीछे-पीछे एक सवार था। जिसके बदनपर ज़र्दोज़ी (फूलपत्तेवाला) जामा और सिरपर ज़रीके कुल्लेके ऊपर बड़ा पग्गड़ था। सवारके ओठ मोटे, नाक चौड़ी, रंग सफेद, चेहरा मांसल, शरीर मोटा और आँखें छोटी थीं। आँखें जन्मना छोटी नहीं थीं, बल्कि चेहरेपर अधिक मांस हो जानेसे यह शकल हो गयी थी। उसकी मूछें बिल्ली जैसी और दाढ़ी कम और थोड़ीदूर तक थी। मांससे भरे चेहरेके

बीचमें छोटी आँखें और नीचे छोटी दाढ़ी उसे कुरूप-शिरोमणि बना रही थीं। उसका घोड़ा बड़ा, स्याह मुश्की रंगका था, जिसपर मखमली चारजामा और ज़रीके बेल-बूटेवाला ज़ीनपोश था। घोड़ेकी लगाम भी सुनहली अगाड़ी-पिछाड़ी भी सुनहली याक़ूत-जटित और कलाबत्तू-वाली थी।

सवारके पीछे-पीछे दो पियादे दौड़ रहे थे, जिनकी शकल-सूरत भुखारियों जैसी नहीं मालूम होती थी। उनके पैरोंमें सोनेके कामवाले काबुली चप्पल, तनपर सटा हुआ अदरसी जामा और शिरपर नोकदार टोपी—नोंक आध बित्ता ऊँची पीठकी तरफ झुकी हुई थी। उनकी कमरमें शालका कमरबन्द था, जिसकी दोनों ओरसे घुँघरू लटक रहे थे और जाँघोंमें भी घुँघरूकी पट्टियाँ बँधी थीं। उनके दौड़ते वक्त आवाज, होती, मालूम होता था, कि ऊँटोंकी पाँती आ रही है।

उस गिरोहके पीछे एक सौ आदमियोंका एक और गिरोह आया, इसके पीछे भी एक दब-दबेवाला सवार था। यह सवार यद्यपि अपनी पगड़ी, पोशाक और घोड़ेकी सजावटमें पहलेसे अधिक अन्तर नहीं रखता था, तो भी शरीरकी बनावटमें बहुत अन्तर रखता था। इसके शरीरपर मांस कम दाढ़ी बकरी जैसी और रंग साँवला था। दूसरा अन्तर यह था कि इसकी अगल-बगलमें घुँघरू बाँधकर दौड़नेवाले आदमी न थे। उनकी जगह चार सवार आदमियोंकी पाँतीके आगे-आगे और चार पीछे-पीछे अपने घोड़ोंको दौड़ा रहे थे। सवारोंकी बगलसे एक-एक दर्रा (कोड़ा) लटक रहा था—जो कि एक गज लम्बा ऊपर कड़े चमड़ेसे बखिया किया हुआ था और मुठिया एक हाथ लम्बी अखरोटकी लकड़ीकी थी।

जिस समय ये दोनों सवार अपने-अपने गिरोहके साथ आगे पीछे चलते आर्कके तख्तपुलके पास आ घोड़ेसे उतरे, उस वक्त आर्कके फाटकसे आवाज आई—दौड़, मीर क़ुशबेगी (महामन्त्री)के पास खबर दे, कि ईशान काज़ीकलाँ और ईशान रईसकलाँ पधारे हैं। आवाज सुनकर

एक आदमी ऊपरकी ओर दौड़ा। इन सवारोंके बाद और कुछ दबदबावाले बड़े अफ़सर दिखलाई दिये, जिनमेंसे कोई-कोई ज़र्दोजीके जामों, सलवार पहने हुए थे और उनके पैरोंमें अमरीकन बूट थे। किसीके शिरपर सोसारी टोपी, किसीके शिरपर कलाबत्तूवाला पगान और छातीपर अमीर तथा इम्पेरातर (ज़ार)के तमगे थे। कुछ थे जिनके जामे कुन्दल और कमखाबके थे, सिरपर ज़र्दोजी कुलाहके साथ पगड़ी और पैरोंमें बूट थे। कुछ और लोग भी इसी पोशाकमें थे किन्तु उनके पैरोंमें बूटकी जगह देशी जूते थे। लेकिन इन सभी सर्दारोंके घोड़ोंकी सजावट, डोरी, जीनपोश, जुल्फीदार लगाम, अगाड़ी, गर्दनबन्द एक दूसरेसे बहुत कम अन्तर रखते थे।

बादमें कुछ और लोग प्रगट हुए। इनकी पगड़ियाँ कुछ बड़ी थीं। इनके घोड़ोंपर और सजावटके साथ एक-एक जायनमाज (नमाज़ पढ़नेका कालीन) भी लटक रही थी। हरेकके पीछे दो-दो प्यादे दौड़ रहे थे, जिनके देखनेसे डर लगता था कि अपने लम्बे जामेके घिरावेमें फँसकर कहीं गिर न पड़ें। इनकी पगड़ियोंमें स्वामियोंसे इतना ही अन्तर था, कि वह कुछ छोटी थीं।

बादमें एक जमात फिर आई। इनके जामे क़रशी, हिसार या कज़ाकके बने शाहीके थे। इनकी पगड़ियाँ शलगमी और पहलेवालोंसे कुछ छोटी थीं। घोड़े सजावटमें कुछ कम किन्तु मोटे-ताजे और सुडौल थे। सर्दारोंके घोड़ोंसे उतरनेपर साईस घोड़ोंपर सवार हो मदर्सा दारुश्शाफाके सामने दीवारकी तरफ़ पीठ किये पाँतीसे खड़े होते गये और अंतमें यह पाँती बढ़ते बढ़ते बालायहौज़ तक पहुँच गयी।

इसके बाद सवार-सैनिकोंके दस्ते आने लगे। हर दस्तेने रेगिस्तानमें आकर थोड़ा परेड करके नगाड़ेके साथ सलामी दी। आर्कके ऊपरसे जर्दोजीके जामा-सलवारवाला आदमी—जो सबेरे आर्कमें आया था—दस्ताके सामने आ, रेगिस्तानसे बाहर चला गया। सैनिकोंमेंसे कुछ

पन्द्रहसे सत्रह साल तकके थे, जिनकी ओर देखनेवालेकी नज़र अधिक आकृष्ट होती थी। उनकी पोशाक ऐसे कपड़ों और काटसे सिली थी, कि वह सैनिककी अपेक्षा सरकसकी लड़कियोंसे अधिक समानता रखते थे।

सवार सैनिकोंके बाद प्यादा और तोपखानाके सैनिक भी उसी तरह परेड करके सलामी दे अपने अफसरोंके साथ चले गये। उनके बाद कुछ दस्ते नौकरोंके आये। ये मामूली साफा और जामामें लेकिन कुर्त्तोंके नीचे, भेड़की खालोंकी पोस्तीन डाल लेनेसे बहुत मोटे-ताजे मालूम दे रहे थे। इनके हाथके हथियार चित्र-विचित्र थे। किसीके हाथमें अंग्रेजी कार्तूस वाली बंदूक, किसीके पास टोपीवाली बंदूक और किसीके पास पलीता-वाली शाखदार पुरानी बंदूक थी। किन्तु जिस वक्त वे रेगिस्तानमें आये, म्यानसे तलवारोंको निकालकर हर तरफ हवामें चला रहे थे, मानो किसीपर वार कर रहे हों। उनकी सरदारी करनेके लिये आर्कसे ज़रबफ़्ती जामा और पगड़ीवाला आदमी आया और वह उन्हें रेगिस्तानसे अपने साथ ले गया।

इसके बाद पाँच सौ सवार और आये, जिनकी आयु सोलहसे सतरह सालकी थी। हरेकके बदनपर जामा और पगड़ी थी, और हाथमें फिरंगी कारतूसी बंदूक। वह रेगिस्तानमें आर्क (किला)के सामने पाँतीसे खड़े हुए। ऊपर (आर्क)से एक पचीस-सताइस-साला आदमी आया, जिसके तनपर कुंदली जामा, शिरपर ज़रदोज़ी कुलाहके ऊपर छोटी पगड़ी थी। वह घोड़ेपर सवार हो आगे आया। उसकी दोनों बगलोंमें किंतु एक कदम पीछे चार-पाँच मध्य वयस्क-सवार थे, जो कि हर निगाहपर शिरको घोड़ेके शिरकी तरफ इतना झुकाकर सलाम करते, कि उनका शिर और सीना घोड़ेकी जान तक पहुँच जाता था। उनकी तरफ देखने हीसे मालूम पड़ जाता था, कि वे बुखाराके सौदागर हैं; और उनका सरदार भी एक सौदागर है।

उस दस्तेके चले जानेपर आदमियोंकी एक बड़ी भारी भीड़ आई

जिसने बालाय-हौजसे आर्क दरवाजा तक सारे रेगिस्तानको भर दिया। उनका रंग उड़ा, आँखें फीकीं, दाढ़ी जंगलसी और शरीर निर्बल था। उनका लंबा जामा जमीन तक लटकता, ऊल-जलूल साफा गर्दनपर कुलावाकी मानिंद था। कमरमें उन्होंने रूमाल बाँध रखी थी। हरेकके हाथमें ग्यारह गोलियोंकी अंग्रेजी कारतूसी बंदूकें थीं। पैरोंमें बगैर तस्सेवाले जूते थे, जिनके पास तक नाड़ा लटक रहा था।

इनकी सरदारीके लिये एक व्यक्ति आर्कसे आया, जिसकी दाढ़ी बड़ी, जामा किमखाबका और कमरबंद सफेद था। कमरबंदसे तलवार लटक रही थी। अपने दस्तेके पास खड़ा हो उसने हाथोंको उठा दुआ पढ़ी और मुँहपर हाथ फेरा।

इसके बाद कुशबेगीके आदमियोंने थैलोंमें मसहियों (ताँबेके सिक्कों) को ला उन भुक्खड़ोंमेंसे हरेकके हाथमें एक-एक मसही दे तख्तपूलपर बैठे कुशबेगीके सामनेसे गुजारा। इस रसमके पूरा होनेके बाद तलवार-धारी कमखाबपोश आदमीने कहा—हम मुल्ला जनाबआलीकी सलामती और शरीअत (इस्लाम)की रक्षाके लिये अपनी जानको न्योछावर करेंगे। उमीद है कि जनाबआलीके प्रतापसे हम जदीद (नवीन) और बोलिशेविकका नाम तक दुनियासे नेस्त-नाबूद कर देंगे—यह कह वह जायनमाजसे ढकी ज़ीनवाले घोड़ेपर सवार हो दस्तेके आगे-आगे रेगिस्तानसे चला गया।

कुशबेगीके एक आदमीने कहा—जनाबआलीके सारे फौजी अफसरोंमें दमुल्ला कुतुबुद्दीन बहुत बहादुर हैं। भगवानने चाहा, तो अब बुखारापर किसी मुसीबतके आनेकी आशंका नहीं है।

सबके चले जानेपर आर्कसे उतरकर जिस दबदबेसे आये थे उसी दबदबसे काज़ीकलाँ और रईसकलाँ भी चले गये। काज़ी अपनी हवेलीकी तरफ रवाना हो गया और रईस इंतिजामके लिये खानकाह बालाय-हौजमें जा खानकाह (मठ)के सहनमें बैठा। उसके दुर्रे (कोड़े) वाले आदमियोंने बाजार-रेगिस्तानमें जा दो किसानोंको पकड़ा। एक

खरबूजा कच्चा निकल जानेसे खरबूजाफरोशको भी सारे खरबूजोंके साथ वह रईसके सामने ले गये। रईसने किसानोंसे इस्लामी नित्य-कर्मके बारेमें पूछा। वह न जानते थे। इसपर हुक्म दिया, कि उनकी पीठ नंगीकर उनतालीस दर्रे मारे जायँ। फिर खरबूजाफरोशको भी उनतालीस दर्रे लगवाये। अंतमें जनाबआलीके लिये दुआ करवा उन्हें छुट्टी दी।

६

फौजी परेड

बाहर चाहे जितनी चहल-पहल हो रही हो, किंतु आबखानामें अब कोई बंदी न रह गया था, जिससे कि यादगार बातचीत करता। छेदसे कुछ देर बाहरका तमाशा देख वह बोरियापर पड़ रहा—उसी बोरियापर जिसपर पचहत्तर बेंत खाये बंदियोंके शरीरका रक्त-मांस चिपककर सूख गया था। कुछ देर बाद उसने आँखें खोलीं, तो एक बीस-साला जवानको आबखानेके कोनेमें बैठे रोते देखा। यादगारने उसके पास जाके पूछा—तू कौन है?

—एक अभागा।

—शुक्र कर, तू अभागा नहीं है। मैंने यहाँ तुझे ही पहला आदमी देखा, जिसका शरीर और शिर घायल नहीं है। फिर नाशुक्री क्यों करता है।

—इस देशमें सबसे अभागा आदमी वह है, जिसपर 'जदीद' या 'बोलशेविक' होनेकी तुहमत लगाई गई हो। मुझे जदीद कहकर यहाँ लाये, इसलिये मेरे दिन गिनतीके हैं। फिर मैं किस बातका शुक्र करूँ?

यादगारने जवानकी विपदाको महसूस किया। फिर उसको तसल्ली देनेके लिये कहा—'दर्द दूसरा मौत दूसरी' शिरपर न आई मुसीबतके लिये चिंता

करना जिंदगीको बेकार खोना है। सच बता, किसीने तुझपर जदीद होनेकी तुहमत लगाई या तू सचमुच जदीद है?

—नहीं, मैं हरगिज जदीद नहीं हूँ, लेकिन यूसुफ बाय और करशी बेक (गवर्नर) ने मुझपर यह तुहमत लगाई है।

—वह क्या काम करते हैं और क्यों तेरे साथ दुश्मनी रखते हैं?

—यूसुफ बाय बाय (सौदागर) लोगोंके दस्ते (पलटन) का अफसर है। करशीबेक उसका सम्बन्धी और बायोंका मददगार है। वह अमीरका भी रिश्तेदार है। अब तक मेरे और उनके बीच कोई दुश्मनी न थी। मैं एक मामूली दलाल हूँ, फिर उनसे दुश्मनी क्या करता? लेकिन आज एक बात हुई और मैं इस बलामें फँसा। आजकल बाय लोग अमीरके हुक्मसे जंगकी तैयारीके लिये परेड कर रहे हैं। आज बायोंका दस्ता दरवाज़ा-कराकुलसे निकल शहर-इस्लाम गाँवोंमें जाकर परेड करनेवाला था। चाँदमारीके वक्त उन्होंने मुझे यहकर खंदकमें बिठा दिया, कि निशानपर लगनेवाली हर गोलीको बतलानेके लिये मैं हाथकी झंडीको झुका दूँ, जिससे सफल निशानचियोंका नाम रजिस्टरपर लिखा जाय, और जनाब-आलीकी कृपाके वह पात्र बनें। सभी बंदूक हाथमें लिये पाँतीसे खड़े हुए। मैं भी गोलीके रास्तेसे शिरको नीचे किये खंदकमें जा बैठा। इसी समय करशीबेक घोड़ा दौड़ाते मेरे पास आया और बोला, कि हर आठवीं आवाज़पर चाहे गोली निशानपर लगे या न लगे झंडीको गिरा दूँ। मैं इस बातका मतलब नहीं जानता था। किंतु मैं करशीबेककी आज्ञा-पालनको तैयार था। लेकिन बेकके मुँहसे निकले आठ (हश्त) को मैंने सात (हफ्त) सुना, इसलिये मैं हर सातवीं आवाजपर झंडी गिराता रहा। यद्यपि आठवीं आवाजकी गोली कभी निशानापर न लगी, लेकिन मैंने झंडी न गिराकर अपराध किया।

परेड खत्म होनेपर मालूम हुआ कि आठवाँ नंबर दस्ताके अफसर यूसुफ बायका था, और इसीलिये करशीबेकने मुझे वैसा करनेको कहा था।

बेक और बाय मुझपर बहुत नाराज हो गये और मुझे कुशबेगी सिपाहियोंके हाथमें यह कहकर सौंप दिया—'जो कुछ हमने सुना है, उससे मालूम होता है, कि यह जदीदों और बोलशेविकोंकी ओरसे भेद लेने आया है। जब तक तहकीकात पूरी न हो, इसे आबखानामें ले जाकर बंदकर दो।
—अपनी बात खत्मकर जवानने फिर रोना शुरू किया।

लेकिन जवानका भय और यादगारकी आशंका ठीक न निकली। थोड़ी ही देरमें बंदी-बान (जेल सिपाही)ने आकर मुक्तिके लिये बधाई देते हुए कहा—कारवांबाशी (कारवांके नायक)ने तुम्हारा अपराध मीर कुशबेगीको समझाया। मैंने भी जोर लगाया। मेरे खिदमतानाको न भूलना, हाँ ?

जवान उसके साथ आबखानासे चला गया।

७

धर्म-युद्ध (जहाद) का निश्चय

(२० अगस्त १९२०)

आज अवस्था असाधारणसी दिखलाई पड़ रही थी। घंटे-घंटेपर गार्ड और यसावुल सितारा-मुखासा उद्यानसे, जहाँ कि अमीर उस वक्त ठहरा हुआ था, घोड़ा दौड़ाते कुशबेगी (मंत्री)के पास आर्कके ऊपर आते और जबाब ले घोड़ा बदलकर लौट जाते। ऐल (स्वजातीय) नौकरोंने पलीतावाली बंदूकोंको आर्कमें जमाकर वहाँसे ग्यारह गोलियों वाली कारतूसी बंदूकें ले ली थीं। अमीरकी खोकंदी घोड़ागाड़ियोंको तुरंत-तुरंत आर्कके ऊपर ले जा बोझ लादकर लौटा रहे थे। आर्कके फाटककी बाँई तरफ आबखानासे भी बाँयें अवस्थित कूरखाना (अस्त्रागार)से नई अंग्रेजी तोपोंके साथ-साथ मुँहसे भरी जानेवाली बड़ी-बड़ी तोपोंको भी पचासों घोड़ोंसे बाँधकर दो ले जानेमें लगे थे।

आज यादगारके तमाशाका बाज़ार गर्म था। वह कभी छेदपर आँख रखकर रेगिस्तानकी तरफ देखता और कभी किवाड़की दरारोंपर कान रखकर आर्ककी दालानसे आने-जानेवालोंकी बातचीत सुनता। रात हुई। आर्कका फाटक बंद हो गया। अमीरके आदमियोंकी दौड़-धूप भी बंद हो गई। नक्कारखानेसे रातकी अज़ानके बाद फाटकके तोपचीबाशीने स्वयं इमाम बनकर दालानमें जायनमाज़ (नमाजकी दरी) डाल द्वारपालोंको नमाज पढ़ाई। फिर अपने शयन-स्थान, दालानके पास वाले हातेमें चला गया। द्वारपाल भी अपने जूतों और पोशाकको उतार कोनेमें रख बिस्तर बंदसे निकालकर गद्दा और तकिया बिछा सोनेके लिये तैयार थे। इसी समय सुनाई दिया—गुम्-गुम्-गुम्-गुम् गुम्-गुम्-गुम्-गुम्-तिङ्-गुम्-तिङ्-तिङ्-गुम्-गुम्। यह खतरेके ढोलकी आवाज थी, जो कि तख्तपूलके सामनेसे आई और उसने सिपाहियोंमें खलबली मचा दी। सब तुरंत खड़े हो दुबारा पोशाक पहन कमरबंद बाँध ड्यूटीके लिये हाजिर हुए। अधिक समय नहीं बीता, कि तोपचीबाशी भी फाटकके पीछे जाकर बोला—कौन है?

—मैं मीरशब् (कोतवाल), खुलवायें।

फाटककी खिड़की खोली गई और मीरशब्के अन्दर आनेपर फिर बंद कर दी गई।

—अस्सलाम् अलेकुम्।

—व अलेकुमुस्सलाम।

आपके आदमी तैयार हैं?—मीरशब्ने तोपचीबाशीसे पूछा।

—दोको कल शाफिरकामके काज़ीने भिजवाया था, उन्हें ठीककर रखा है।

इसी समय कुशबेगीके महलकी ओरसे लंबी दाढ़ी, श्वेत-केश, दीर्घाकार स्वर्णकटिबंध बाँधे एक आदमी सामने आया।

मीरशब्—सलाम अलैकुम्, यसावुलबाशी ! आप पुराने अनुभवी हैं। आपके लोगोंमें कितने तैयार हैं ?

—दो आदमी पुराने काम करनेवाले हैं। वह सदा जनाबआलीके चरणोंके साथ चलनेको तैयार हैं। लेकिन दो आदमी जिन्हें जनाब शरीअत-पनाह ईशान काज़ीकलाँ (श्रीमान् धर्म-रक्षक महामान्य महान्यायाधीश) ने भेजा था, बड़े डर गये हैं। चौबीस घंटेसे उन्होंने रोना नहीं छोड़ा। स्वयं पाश्शा बीबी (राजमाता) ने बहुत समझाया-बुझाया तो थोड़ा सा शांत हुए। शामके बाद हम्माम (स्नान) करवा उन्हें खास पोशाक पहनवाई।

खोकंदी घोड़ागाड़ी—जिसके ऊपर छत और आगे-पीछे नमदा सीकर पर्दा किया गया था—ऊपर आ फाटकके पीछे खड़ी हुई। दो सिपाहियोंने तोपचीबाशीकी हवेलीसे पन्द्रह-सोलह साला दो लड़कोंको लाकर गाड़ीके सामने खड़ा किया। अब आज्ञाकी प्रतीक्षा थी।

मीरशब्ने यसावुलबाशीसे पूछा—लड़कोंकी गाड़ी कहाँ है ?

—शाही गाड़ीखानेमें इन्हें छोड़ और गाड़ियाँ नहीं रह गई हैं। सभी गाड़ियोंको लादनेके लिये सैनिक अस्त्रागार ले गये। दससे अधिक ऊपरसे ढँकी उर्दाकशी (रानियोंको ले जानेवाली) गाड़ियाँ थीं। उन्हें भी कल गोला-बारूद लादकर कागान-कुहना ले गये।

मीरशब्—इबी ! अब क्या करूँ ? लड़कोंको कहाँ लादूँ ?

गाड़ीवानने बीचमें बोलते हुए कहा—मीरशबबेक ! आप ठीक नहीं समझ रहे हैं। यह भी (गाड़ीके अंदरकी ओर इशारा करके) उर्दा (रानियाँ) हैं और यह (बच्चोंकी ओर इशारा करके) भी उर्दा हैं। इन्हें भी यदि इसी गाड़ीमें सवार कर दूँ, तो क्या हर्ज है ?

मीरशब—मसखरी मत कर कलेकुल !

यसावुलबाशी—कलै कुरबान सच तो कह रहा है। इस समय जब कि धर्मयुद्धके लिये अस्त्र-शस्त्र ढुलाई जैसा एक शरई (धार्मिक) प्रश्न

उठ खड़ा हुआ है, एक गाड़ीमें मर्द-औरतको सवार करानेमें हर्ज़ क्या है ? यदि आपका दिल इस बातको स्वीकार नहीं करता, तो ईशान आलिम (पंडित महाशय)से पूछ लें।

इसी वक्त गाड़ीके अंदरसे आवाज आई—हर्ज नहीं। सितारा-मुखासा पहुँचते तक हम इन्हें 'हजरत सलामत रहें' वाली गजल भी याद करा देंगी। यदि संगीत-महोत्सवका हुक्म होगा, तो हम एक साथ गाकर पार्श्वलिंगित हो हजरतके समयको बहुत आनंदसे कटा देंगी।

मीरशब—बेगम ! यदि आप राजी हैं, तो हम भी राजी हैं। कुछ भी हो पीछे जनाबआलीसे 'मीरशबने हमें मिलनानुचितोंके साथ एक गाड़ीमें चढ़ाकर भेजा' कहकर मुझे बरबाद न करवाइयेगा।

—खातिरजमा रहें—भीतरसे जवाब आया।

पीछेसे नमदेको हटाकर लड़कोंको भी बेगमोंके साथ चढ़ा दिया गया।

कोचवान हाँकते हुए बोल उठा—'बघाड़नेका मतलब है मांस खाना'—किसी तरह भारको लेकर सितारा मुखासा पहुँचा देना। ऐसा हो कि बेड़ा पार लग जाय।

—हाँ, अभागे कल्ले ! मुझे दलाल कह रहा है—कहकर मीरशबने मजाक किया।

गाड़ीवान—खुदा न करे, मैं आपका गुलाम हूँ। आपकी ओरसे सेवा करता हूँ।

बड़ा फाटक खुला। मीरशबने तख्तपूल (राजचत्वर)के पास खड़े अपने सवार सैनिकोंसे कहा—इमाम दरवाजा तक सड़कको आदमियोंसे खाली करवाओ, चिरागोंको बुझवा दो और रास्ताको बंद कर दो।

सवारोंने घोड़े दौड़ाये। महाढोलक भी—गुम्-गुम्-गुम्-गुम् तिङ्-तिङ्-गुम्-गुम्' करता रास्ते पर चला। उसके पीछे मीरशब (कोतवाल) और मीरशबके पीछे 'माननीय उर्दा' की गाड़ी रवाना हुई।

भय और आशा

उर्दाकी गाड़ीके चले जाने और फाटकके बंद होनेके बाद कुशबेगी (महामंत्री)का यसावुलबाशी और तोपचीबाशी दालानकी ऊपरकी ओर चले, लेकिन लंबी बात करनेके लिये रेगखानेके सामनेके चबूतरे पर जा बैठे। तोपचीबाशीने आशंकित-हृदयसे कहा—आखिर क्या होने वाला है ?

—पक्की खबरें जो मेरे पास हर रोज आ रही हैं, उनसे मालूम होता है, कि हमारा काम उतना अच्छा नहीं है। सबसे बुरी बात तो यह है, कि सैनिकोंकी आँखें बदल गई हैं। इन चंद महीनोंमें बहुतसे सैनिक अपनी बंदूकें लिये भागकर ताशकंद और समरकंदमें जा बोलशेविक हो गये। गुप्त चिट्ठियों और संदेशोंके द्वारा वह दूसरे सैनिकोंको भी फोड़ रहे हैं। लोग भी हमसे स्नेह नहीं रखते। किसान पिछले दो सालोंमें और भी तंग हुए हैं। यदि इस अवस्थामें जदीद और बोलशेविक रूसी बोलशेविकोंके साथ एक हो चढ़ आयें, तो हमारे लिये अच्छा न होगा। इन थोड़े पेटू बायों और चापलूस मुल्लाओंसे क्या बननेवाला है ? तुम्हें एक विश्वासपात्र अनुभवी वृद्ध पुरुष और अपने बाप जैसा जानकर इन बातोंको बतला रहा हूँ, नहीं तो यह बातें किसी और से कहने लायक नहीं हैं। निराश न हो जायें, इस विचारसे इन बातोंको हजरतके पास भी नहीं लिखता। नहीं मालूम आखिरमें क्या होनेवाला है ?

—क्या होनेवाला है पूछते हैं ? हजरत बहाउद्दीन।* (पीर नक्शबंद) यार और दूसरे पीर मददगार रहें, फिर बुखाराके ऊपर कोई आफत नहीं आ सकती है। कल हजरत बहाउद्दीनकी भविष्यवाणीको

---

*अजमेरके पीरकी तरह बुखाराके सबसे प्रतिष्ठित और पुराने पीर।

मुल्ला कुतुबुद्दीनने मीर कुशबेगीको पढ़कर सुनाया। हजरतने अपनी किताबमें लिखा है—'जबतक मेरे कब्रकी एक ईंट भी बाकी है, बुखाराके किलेकी एक मुट्ठी मिट्टी भी खराब न होगी'। आप मत समझें कि आज जो बातें हो रही हैं, उनसे जनाबआली और दूसरे बड़े लोग अनभिज्ञ हैं। रोजके समाचारोंको चाहे आप न भी लिख भेजें, किंतु सारी बातें हमारे हजरतके लिये सूर्यकी तरह प्रकाशमान हैं। कहावत है 'बादशाहोंका दिल सत्यका दर्शन-स्थान है', साथ ही ताशकंद और समरकंदके समाचार-को मीरबाबा और दूसरे वकायानवीस (समाचार लेखक) लिखकर भेज रहे हैं। जनाबआलीकी सर्वदर्शी आँखोंसे नगर और वनकी कोई बात छिपी नहीं है। काम आगे बढ़ रहा है। अपनी बहादुरीके लिये प्रसिद्ध बड़े-बड़े डाकुओंसे बनी "शेर-बच्चा" पलटन पर पूरी उमीद रखनी चाहिये। खासकर अफगानोंका दस्ता जिनमेंसे एक-एक आदमी अनुभवी और समर देखे हुए हैं; उनका हरेक आदमी सौ बोलशेविक मूज़िकों (रूसी-किसानों)को पीस सकता है। इनके अतिरिक्त दुआ-पाठी दुआ पढ़नेमें, शेख और तांत्रिक अपनी ऋद्धि-सिद्धि दिखलानेमें लगे हुए हैं। कुछ ही दिन हुए ईशान काज़ीकलाँने जनाबआलीसे निवेदन किया था—'सही परंपराओंसे मालूम होता है कि सही-बुखारी (प्रसिद्ध धर्म-पुस्तक) को शिर पर लेकर चलना दुश्मनके आक्रमणसे रक्षा करता है। इसलिये मैंने सही-बुखारीकी कुछ प्रतियोंको लेकर चंद मुल्लोंको तैयार किया है। यदि जनाबआलीकी आज्ञा हो, तो वह सही-बुखारीकी एक-एक प्रतिको शिरपर रख शहरकी चारों ओर और सितारा मुखासाके भी गिर्दा-गिर्द परिक्रमा करें। भगवानने चाहा तो हजरतकी सरकारको कोई भी आँच न आयेगी।' जनाबआलीने भी आज्ञा दे दी है। कितने ही दिनोंसे मुल्ला लोग इसी काममें लगे हुए हैं। इतने महाप्रयत्नके बाद भी दिलमें यदि भय और संदेह आवे, तो यह ईमान (धर्म-विश्वास)की कमजोरी है। आप तोपचीबाशी इस तरहकी शंका दिलमें न लायें। इस बीचमें एक

और भी बड़ा काम हुआ है। जनाबआलीने मास्कोमें एलची (राजदूत) भेजे हैं। एलचियोंमें एक है नौरोज़ ज़ोर। है तो वह निरक्षर, लेकिन बड़ों-बड़ोंके कान काटता है। वह मास्कोसे खाली हाथ नहीं लौटेगा। जो कुछ उपद्रव यहाँ हो रहे हैं, वह सब बुखाराके बेदीन जदीद और बोलशेविक समरकंद-ताशकंदके रूसी-मूजिकों (भुक्खड़ किसानों)से एक होकर कर रहे हैं। लेकिन मास्कोमें जनाबआलीकी बड़ी इज्जत करते हैं और नहीं चाहते कि थोड़ेसे जदीदों और बोलशेविकोंके कहनेपर एक बादशाह—जो कि तैमूरका उत्तराधिकारी है—के साथ बिगाड़ करें।

यसावुलबाशी और तोपचीबाशीके चले जाने पर द्वारपाल भी सो गये। यादगार भी—जो अब तक कान लगाये दोनोंकी बातें सुन रहा था—अपनी बोरिया पर आ लेटा, लेकिन नींद न आ रही थी। कभी-कभी स्वप्नकी तरह देखता—जंग हो रही है, वह जंगके मैदानमें है, लेकिन कहाँ जाय यह नहीं जानता। एक बार उसने देखा कि अमीरके आदमी भगे, वह भी बंदीसे आजाद हो दर्रानिहाँ पहुँच गया, और उसी चट्टान पर बैठा पहाड़से आती धाराके कलरवको सुन रहा है। उसकी नजर कभी-कभी गुलनारकी झोपड़ीकी तरफ लग जाती है। फिर सारे ख्यालोंको दूर हटाकर वह इरादा करता है, कि यदि वह शुभ दिन आये और वह अमीरसे लड़नेवालोंके पास पहुँचे, तो उनके साथ मिलकर अमीरके शासन-रूपी जेलखानेको नष्ट करनेमें हाथ बटाये और बोलशेविक बनकर क्रांतिको अंतिम स्थानपर पहुँचाये।

९

महाप्रस्थानका दिन

एक बड़ी ही भयानक "गुंबुर-गुंबुर"की आवाजने यादगारको जगा दिया। पहले इतनी भीषण आवाज उसने नहीं सुनी थी। परेडके वक्त

अमीरके तोपचियोंके तोप दागनेकी आवाज अनेक बार उसने सुनी थी। इस आवाजमें उससे कुछ समानता अवश्य थी, परन्तु भीषणतामें यह कई गुना अधिक थी। जब-जब आवाज निकलती, आबखानाकी दीवारें काँप उठतीं। यादगारको डर लगने लगा, कि कहीं आर्क (किला) अपने कंगूरों और गुम्बदोंके साथ जमीनपर न आ गिरे। आर्कके निवासी किंकर्तव्य विमूढ़ हुए इधरसे उधर दौड़ते हाथ मल रहे थे।

दिन हुआ; "गुंबुर-गुंबुर" की आवाज और तेज हुई। आज रेगिस्तानमें परेड न हुई, लेकिन सैनिकों और गाजियोंके दस्ते आ-आकर आर्कके फाटकपर हाज़िरी दे चले गये। घड़ी-घड़ी शहरवालोंकी परेशानी बढ़ती जा रही थी। कभी-कभी तोपका गोला आर्क पर गिरता और आस-पास धुआँ और धूलका तूफान वर्पा कर देता। धुआँ और धूलके साफ होनेके पहले दूसरा गोला आ गिरता। तोपोंकी गड़गड़ाहट और गोलोंके धमाकेसे ऐसा भीषण भूकम्प पैदा होता, जिससे आर्क अपनी सारी शानोशौकतके साथ तूफानमें पड़ी नावकी तरह काँप रहा था। खिड़कियोंकी किवाड़ियाँ टूट रही थीं, जालियाँ गिर रही थीं। इमारत के चित्र और पच्चीकारियाँ उड़ रही थीं। आर्कके कंगूरे और बुर्ज दह रहे थे।

एकाएक कुछ चिड़ियाँ हवामें उड़ने लगीं, जिन्हें इससे पहले यादगारने कभी देखा न था। उसने आबखानाके छेदसे उनपर नज़र डाली। पहले उसने उन्हें चिड़ियाँ ख्याल किया था। जरा देर बाद उनमेंसे एक लोटन-कबूतरकी तरह कलाबाजी करती नजदीक आ गई। यह पक्षी यद्यपि पंखोंमें चिड़ियों जैसा थी, लेकिन पूँछ इसकी मछली जैसी थी। सबसे बढ़-कर यह कि उसका आकार यादगारकी देखी चिड़ियों और मछलियोंकी अपेक्षा बहुत ही बड़ा था और उसकी जैसी आवाज उसने किसी पंछी या मछलीकी न सुनी थी। तुलनाके लिये उसको दर्रानिहाँकी धाराकी आवाज याद आई, जिसको आज ही स्वप्नमें सुना था। एकाएक उस पंछीके छोटे-छोटे पर जमीनपर गिरने लगे। यादगारको अफसोस हुआ

कि यह सुंदर उड़नेवाला पंछी बेपंख हो जमीनपर गिरनेवाला है। लेकिन जब वह पङ्ख भूमिके समीप पहुँचे, तो मालूम हुआ कि वह पङ्ख नहीं बल्कि कागजके पत्ते हैं। तख्तफूल (राजचत्वर)के आगे खड़ा हो तमाशा देखनेवाले एक द्वारपालके हाथमें एक कागज आया और वह उसे लेकर आर्कके ऊपरकी ओर दौड़ा। दालानमें उसके हाथमें कागज देखकर कुशबेगीके यसावुलबाशीने पूछा—यह क्या है?

—कागज।

—मैं देख रहा हूँ, कागज है। पूछ रहा हूँ, कैसा कागज है? तेरे सिरसे मेरा सिर बड़ा है।

—मैं नहीं जानता। एरोप्लानसे गिरा।

यसावुलबाशीने झपटकर उसके हाथसे कागज छीन लिया और "जा अपना काम कर" कह उसे फाटककी तरफ खदेड़ आबखानाकी सीढ़ियोंपर बैठकर कागज पढ़ने लगा :—

> "ऐ बुखाराके मेहनतकशो! ऐ बुखाराके किसानो! तुम्हारा स्वतन्त्रता-दिवस, सौभाग्य-दिवस, विजय-दिवस और आनन्द दिवस आ पहुँचा। जल्दी ही तुम शताब्दियोंके अत्याचारसे मुक्त हो रहे हो। जल्दी ही अपने सक्षम हाथों अपने सामान अपने भाग्य अपने भविष्यके स्वयं स्वामी बनोगे। रूसी मेहनतकश मजूर-किसानोंकी लाल-सेनाके साथ हम तुम्हारी सहायता करने, अमीर और उसके पिट्ठुओंके चंगुलसे तुम्हें छुटकारा देनेके लिये, अमीरी सरकारके विरुद्ध मैदानमें उतरे हैं। तुम अमीरके आदमियों और मुल्लोंके बहकावेमें न पड़ो—इन मुल्लोंके, जिन्होंने सैकड़ों वर्षों से शरीयत (धर्म)के नामपर तुम्हारा खून बहाया, तुम्हारे जान-मालको लूटा, तुम्हारी इज्जत

आबरूको बरबाद किया। लाल फौजसे जरा भी भय न खाओ। वह तुम्हारे मेहबान भाई हैं।

ऐ बुखाराके सैनिको! ऐ बुखाराके मजदूरों व किसानोंके पुत्रो! समझो और सावधान हो जाओ, कि अमीरके महाप्रस्थानका दिन आ पहुँचा है। उसका महल ध्वस्त, आर्क धराशायी, नियति नत-शिर और उसका मुकुट तथा सिंहासन रुधिराप्लुत होनेवाला है। तुम हमारे मददगार बनो, लाल फौज पर गोली न चलाओ; क्योंकि वह तुम्हारे मेहरबान भाई हैं, और इसलिये आये हैं कि तुम्हें निरवधि बंदीजीवन—अमीरकी सरबाजी—से मुक्त करें। तुम निःशंक हो अपने भाइयोंकी ओर चले आओ।

ज़िन्दाबाद—बुखाराके मेहनतकश!
ज़िन्दाबाद—बोलशेविक पार्टी!
ज़िन्दाबाद—सोवियत सरकार!
नेस्तबाद—अमीर और उसकी सरकार!

यसावुलबाशीने कागजको आखिर तक पढ़ चुकनेके बाद अफसोस करते कहा—मैं सोच रहा था, क्यों ये नमकहराम सिपाही जंगके लिये नहीं जाते? क्यों ये दरबारी अमीरको बर्बाद कर रहे हैं?

यसावुलबाशीने कागजको जेबमें डाल खड़ा हो अपने हाथको माथेपर फेरा। एक क्षण बाद उसने अपनी लम्बी दाढ़ी मरोड़ते हुए उसे मुँहमें डाल दाँतोंसे चबाना शुरू किया, मुँहको फाटककी ओर करके दो कदम आगे बढ़ फिर मुड़कर ऊपरकी तरफ जाना चाहा। अभी तीन कदम भी आगे नहीं बढ़ा था, कि तोपचीबाशी अपनी हवेलीसे निकल आया। यसावुलबाशी अपने विचारोंमें इतना मग्न था, कि वह तबतक तोपचीबाशी को न देख सका, जबतक कि समीप आकर उसने उसे सलाम नहीं किया।

सलामकी आवाज सुनकर चिहुँक सा उठा और सलामका जवाब दिये बगैर बोला—सब खैरियत है न ? क्या खबर ?

—खबर उतनी अच्छी नहीं। इलाही उसे झूठ करे। पासमें आई खबरोंसे मालूम होता है, कि ताशबुकामें तुर्कदस्ताके सैनिकोंने—जिनपर हमारी सबसे ज्यादा उमीद थी—बायों और 'गाजियों'को नंगा करके उनके कपड़ों, घोड़ों और हथियारोंको छीन लिया। बाय लोगोंके अफसर यूसुफ बाय तथा करशीबेक और हाजी आलम बाय सिरसे पैर तक नंगे पैदल शहर की ओर भागे आ रहे थे। रास्तेमें ईशान काजीकलाँसे भेंट हो गई, और उन्होंने उन्हें एक-एक कपड़ा पहनाकर शहरमें भेजा। जारोवबन्दमें कुछ सैनिकोंने खुद ईशान काजीकलाँ और रईसकलाँ पर गोलियाँ चलाईं। खैर, गोलियाँ खाली गईं और वह जल्दी भागकर शहर चले आये। सबसे आश्चर्यकी बात यह है, कि यूसुफ बायने भागते वक्त करशीबेकसे कहा था—बोलशेविकोंसे भयभीत होकर हमने अपनेको इस बलामें डाला। अच्छा हुआ होता, यदि हमने जदीदोंसे झगड़ा न किया होता। अब भी मुझे उमीद है, यदि जनाबआलीने कहीं हार खाई, तो शासनकी बागडोर जदीदोंके हाथमें जायगी; उस वक्त फिर एक-आध पद लेकर हम निश्चिन्त हो जिन्दगी बसर करेंगे।" यूसुफ बायकी इस बातचीतसे मालूम होता है, कि यद्यपि हमारे बाय लोग बोलशेविकोंके विरोधी हैं, किन्तु उतना ही विरोध उनका जदीदोंके साथ नहीं है। यही नहीं बल्कि उनसे वह पद और धनकी भी आशा रखते हैं।

यसाबुलबाशी—नहीं।

तोपचीबाशी—'नहीं' न कहिये। यह बात एक पक्के विश्वासी समाचार-लेखकने अभी-अभी मेरे पास आकर बतलाई। उसे मैंने बायोंके दस्तेके अंदर रख छोड़ा था।

—जो भी हो, ऐसी अनुत्साहवर्धक खबरें न दुहराते फिरें। यह कह यसाबुलबाशी आर्कके ऊपर चला गया। यादगारने कागजके लेख

और यसाउलबाशी-तोपचीबाशीकी बातको कान लगाकर सुना था। अब उसे विश्वास होने लगा था, कि अमीर और उसके अफसरोंके महा-प्रस्थानका दिन अब आ पहुँचा।

१०

क्रान्ति और स्वतन्त्रा

—काम खराब हुआ। गुलाबियाँ गाँवके किसान बोलशेविकों और जदीदोंसे मिलकर दर्वाजा-शेखजलालसे अन्दर घुस शहरको घेरे हुए हैं।

—थोड़ेसे किसान क्या कर सकते हैं? उस दरवाजाकी मीरशब (कोतवाल) बड़ी तत्परतासे रक्षा कर रहा है। उसे हिकमत-बुज़ (बकरी) कहते हैं, क्योंकि वह अपनी बकरदाढ़ीकी एक हिलानसे सौ किसानोंको हवामें उड़ा सकता है।

—अभी तुझे दुनियाकी कोई खबर नहीं। तू यह भी नहीं जानता, कि आनेवालोंका सबसे पहले जिसने स्वागत किया, वह था हिकमत-बुज़।

—क्या? क्या हिकमत-बुज़ दरवाजाको छोड़कर भाग गया?

—काश, भाग सका होता, तो शायद फिर कहीं काम आता। उसने उस दुनियाकी ओर नजर करके स्वागत किया। समझा? यानी मारा गया!

—किस तरह?

—जब किसानोंने आक्रमण किया, तो मीरशबने समझा "यह वही किसान हैं न, कि सौ किसानोंको एक कान्स्टेबुल अपने डंडेसे हाँककर जेलमें पहुँचा देता है। यह क्या बेअदबी है, कि आज उन्होंने जनाबआलीके खिलाफ तलवार खींची और यहाँ आक्रमण करने आये, जहाँ कि मैं स्वयं खड़ा हूँ!" यही सोच उसने तुच्छ समझकर मुँहसे गाली निकालनी चाही, पर इसी वक्त एक गोली आकर कंठसे पार हो गई।

द्वारपाल इस तरह आपसमें बातचीत कर रहे थे, इसी समय शोर उठा "आ गये आ गये"। सभीकी आँखें उस तरफ लग गईं। बाजारकाह (घासबाजार)की ओरसे हाथ-गर्दन बाँधे चार किसानोंको रेगिस्तानमें लाकर डंडोंसे मारने लगे। फिर उन्हें लाकर तखतपूलके नीचे खड़ा किया। पाँच मिनट न गुजरने पाया था कि कुशबेगीके यसावुलबाशीने दौड़ा-दौड़ा जा तब तक दम न मारा, जब तक कि आर्कके बाहर निकल उनके पास न पहुँच गया। उसने तुरंत हुकुम दिया—इन नमकहराम बागियोंको बाजार-रेसमाँमें ले जाकर जनावआलीके सिरके सदके करो।

दो जल्लाद मीरशबके आदमियोंके साथ हुए और दर्वाजासे पचास कदम ले जाकर उनके शिरोंको भुट्टेकी तरह काट दिया। मीरशबके आदमी "सेवा" बजा लानेके बाद दर्वाजापर आ सलाम करके यसावुल-बाशीके सामने खड़े हो गये।

—मीरशबके कत्ल करनेवाले यही बाग थे न? यसावुलबाशीने पूछा।

मीरशबके आदमियोंमेंसे एकने जवाब दिया—नहीं, तक्सीर (क्षमानिधान!) गुलाबियाँके किसानोंने बोलशेविक लश्करके साथ होकर एक बार आक्रमण किया था। उसीमें मीरशबको घातक गोली लगी। फिर पीछे वह गुलाबियाँकी तरफ लौट गये। हमने सावधानीके लिये किलेसे दर्वाजाकराकुल तक देख भाल की। दर्वाजा-कराकुलके पास ये चार किसान हाथ लगे, इन्हें हम गिरिफ्तार कर लाये।

—बहुत अच्छा किया। अगर इनके हाथमें भी हथियार होता और इन्हें अवसर मिलता तो शहरपर हमला करनेसे बाज न आते। कहावत है "दुश्मन सिरकटा बेहतर"

× × ×

सोमवार, मंगल, बुध (३०,३१ अगस्त और १ सितम्बर १९२०) इन तीन दिनोंमें सारा बुखारा उलट-पलट गया। शहरके कोने-कोनेमें

खाक और धुएँके बीचमेंसे आगकी लपट उठ रही थीं। झुंडके-झुंड नागरिक दरवाजा-इमाम उद्दालानकी तरफ जा रहे थे। बुधके भोर ही कुशबेगीके यसावुलबाशीने आर्कके फाटकपर आ घोड़ा माँगा और तोपचीबाशीको ताकीद की—आप दरवाजेकी खूब देख-भाल करें। खुद मैं जंगमें शामिल न होऊँ, यह कैसे हो सकता है?—यह कह घोड़ेपर सवार हो वह दर्वाजा-इमामकी ओर रवाना हुआ।

—ओ यसावुलबाशी! जंग इस तरफ है—कहकर तोपचीबाशीने दरवाजा-क़वालाकी ओर इशारा किया।

यसावुलबाशी घोड़ेको बिना रोके या मुँहको बिना उस तरफ फेरे सिरको ऊँचे-नीचे हिलाते "जानता हूँ जानता हूँ" कहता अपने रास्तेपर चला गया।

बुधकी शामको आर्कके बाकी बचे निवासी भी "अमीर भाग गया, अब हम यहाँ रहकर क्या करेंगे? जल्दी अपना रास्ता लेना ही ठीक है" सोचकर दो-दो चार-चार करके आर्क छोड़कर चले गये।

× × ×

आज गुरुवार और सितम्बरकी दूसरी तारीख थी। दालानमें आने-जानेवाले पैरोंकी आहट सुनाई देती थी, लेकिन रेगिस्तानकी चारों ओरके बाजारों 'आर्कके चक्करकी सड़कों' और उसके नीचेकी हवेली—जहाँ कि अमीरका माल-महकमा था—आर्कके अन्दर हर जगह खासकर अमीरके गद्दीघर और रनिवासमें आगकी ज्वालायें लपलपा रही थीं।

यादगारने देखा कि सारी बातें बदल चुकी हैं, लेकिन अब भी आबखानाके द्वारमें मोटा ताला लगा हुआ है। अब तक उसे बंदी होनेका भय नहीं था, लेकिन अब आगमें जलकर बिना नामोनिशानके दुनियासे उठ जानेका भय सामने आया। इस आगके समुद्रसे अपनेको उबारनेके बारेमें उसने बहुत सोचा, लेकिन कोई रास्ता नहीं सूझा। लोहेके पिंजड़ेमें

बंद शेरकी तरह वह व्यर्थ ही चारों ओर नजर डालता और सारी शक्ति लगाकर किवाड़ोंको धक्का दे रहा था। उसने बहुत कोशिश की, कि छतके नीचेके छेदको बड़ा करे, लेकिन बेकार। दीवारकी ईंटोंको हटानेका प्रयत्न किया, लेकिन नाखूनोंको तुड़ा डालनेके सिवा कोई लाभ नहीं हुआ। और जोरसे चिल्लाया, पर किसीने नहीं सुना। वस्तुतः वहाँ उसकी चीख-पुकारको सुननेवाला कोई प्राणधारी रह नहीं गया था।

दालानसे फिर पैरकी आहट आई। यादगारने दौड़कर किवाड़के दरारोंसे देखा एक बूढ़ा जिसके हाथमें बड़ी-बड़ी कुंजियोंका गुच्छा है, नीचेकी ओर जा रहा था। यादगारने चिल्लाकर कहा—"ओ चचा! भगवानके वास्ते मुझे निकाल दो। इस समय मैं यहाँ किसके हाथ और अधिकारमें बंदी रहूँ?" लेकिन सत्तर-साला बूढ़ेने शायद बुढ़ापेसे या बदहवासीसे यादगारकी आवाज न सुनी या सुनकर भी एक बंदीको आगसे बचानेकी आवश्यकता नहीं महसूस की। आबखानाकी तरफ उसने निगाह-तक नहीं डाली और चला गया।

मिनट-मिनट बीतते जा रहे थे और आगकी ज्वाला आबखानाके नजदीक आ रही थी। छेदसे धूल और धुआँ भरी हवा अंदर आ रही थी। यादगारको विश्वास होने लगा, कि चंद मिनट या घंटेमें उसके प्राण जानेवाले हैं। वह हसरतके साथ सोचने लगा—"हा अफसोस! सद अफसोस! स्वतन्त्रताके दिनके नजदीक आनेपर भी मैं उसे देखे बिना ही जलने जा रहा हूँ! अब्दुल्ला खोजाकी वसीयतको पूरा न कर सका। दरोनिहाँमें जा वफादार गुलनारको देखनेसे हमेशाके लिये महरूम हो रहा हूँ :

> यदि यह भीषण अग्नि तन जलाये मेरा,
> ले जा ऐ वायु, प्रियाके पास मेरी राख उड़ाकर।'

कहते पूर्वी कवियोंकी तरह हवाको दूत बना उसके हाथमें वसीयत की। इसी वक्त किसीने "चिन्ता न कर, तुझे जीवित और अक्षत तेरे

इच्छित स्थानपर पहुँचाता हूँ" कह कुल्हाड़ीकी एक चोटसे आबख्वानाके द्वारकी जंजीरको तोड़ फेंका और फिर अंदर आकर "ज़िन्दाबद इन्किलाब और आजादी"का नारा लगाया। एक मिनटके अंदर ही उसने यादगारको पीठपर उठा बाहर रख दिया।

कुछ मिनट पहले यादगारको छोड़कर चले गये बुड्ढेको—जिसके हाथमें अब भी कुंजियाँ मौजूद थीं—दो आदमियोंने गिरिफ्तार कर रखा था। यादगारको मुक्त करनेवाले आदमियोंने बुड्ढेकी ओर निगाह करके "मीर क़ुशबेगी! खजानेकी कुंजीको इधर मुझे दे दीजिये और कृपा करके इस घरमें आ इस बंदीका स्थान लीजिये। जीवनको अन्तमें कमसे कम एक दिन तो अपने बनाये इस प्रासादकी हवाका तजर्बा करके देखिये, जिसमें कि दुनियासे हताश होकर न जाना पड़े"—कह कर उसे आब-खानामें बंद कर दिया।

यह थे बुखाराके बोलशेविक जो लाल फौजके साथ सबसे पहले अमीरके आर्कमें दाखिल हुए।

११

पुराने मित्र

यादगार अब स्वतन्त्र था और स्वतन्त्रतापूर्वक हर जगह जा सकता था। लेकिन कहाँ जाय इसका उसे पता न था, खासकर बेगाना शहरमें, जिसकी अवस्था इन चन्द दिनोंमें बिल्कुल दूसरी हो गयी थी। वहाँ अब भी जगह-जगह आग जल रही थी, जिससे गलियोंमें चलना मुश्किल था। वहाँ सैनिकोंको छोड़ हर अपरिचित आदमीकी बहुत खोज-पूछ होती थी, लेकिन यादगारके हाथमें एक पास था, जिसपर लिखा था "इस पासको रखनेवाला यादगार बाज़ारज़ादा अमीरके जेलसे मुक्त किया गया है, हर सैनिक या नागरिक सिपाहीको चाहिये, कि इसकी गति-विधिमें रुकावट

न डालें और आवश्यकता पड़नेपर किसी तरह की सहायता देनेमें उठा न रखें"। पासपर महकमेंकी मुहर और हस्ताक्षर थे। यदि यह पास न होता, तो यादगार अवश्य पकड़ा जाता।

दिन तो यादगारने किसी तरह घूमते-फिरते काट दिया, संध्या आयी, किन्तु शिर रखनेके लिये कहीं जगह न थी। घूमते-फिरते वह दरवाज़ासे बाहर गया। नगरके बाहरकी कब्रें उसके सामनेसे गुजरीं। फिर लौट कर शहरमें आना चाहा, लेकिन दरवाजेके पासबानने रोक दिया। यादगारने जेबसे पास निकालकर दिखलाया। पासबानने अच्छी तरहसे हस्ताक्षर और मुहरको देखा और फिर कहा—साथी! तुम जहाँ चाहो जा सकते हो।

यादगार पासको जेबमें रख सड़कपर जा रहा था, कि इसी समय कानोंमें आवाज आई "हाँ-हाँ, दाखुन्दा! अभी तू जीवित है?" आवाज सुनकर यादगारने पीछे फिरकर देखा। एक आदमी अपना पास पासबानको दिखला रहा था और उसकी नज़र यादगारकी तरफ थी। यादगार पहिचान न पाया, इसपर उस आदमीने फिर कहा—क्या मुझे नहीं पहिचानता, दाखुन्दा?

—पहिचाना सा मालूम होता है, किन्तु कहाँ, याद नहीं आता।

—क्या ज़िन्दान और वहाँसे भागनेको भूल गया?

—हाँ-हाँ, अब याद आया, तू फ़रमान तो नहीं है?

—हाँ वही (पासबानसे पास लेकर) आ घर चलें।

—घर कहाँ है?

—यहाँ ही नज़दीक, दिलकुशा, बैरून गाँवमें।

—खूब, चलो चलें।

दोनों शहरके दरवाजेसे बाहर निकल बायीं तरफ घूमकर उस मैदानके किनारेसे निकले, जहाँ दस साल पहिले यादगारने परेड की थी और बेंत खाये थे। मैदानके बाद वे गाँवमें पहुँचे। बादशाही चारबागके

सामने एक छोटी हवेली मिली, जिसके आगे फाटक और हौज था। यह फरमानकी हवेली थी। दोनों अन्दर दाखिल हुए। फरमानने हौजके किनारे कालीन बिछा अपने पुराने मित्रको बैठाया, फिर भोजन, जल ले आ भूखसे तड़फड़ाते यादगारके पेटको तृप्त किया। अन्नने शक्ति दी और यादगारका मुँह खुलने लगा। पहिले उसने माँके बारेमें पूछा।

—बेचारी डोकरी मर गयी—फरमानने कहा।

—ऐ वाय! कब मरी—कहकर यादगारने शोक प्रकट किया।

—उन्हीं दिनों मरी, जब तुम लोगोंके साथ भागनेका दिल न कर मैं जेलमें बैठा रहा। इस वफ़ादारीके बदलेमें मुक्त करनेकी बात तो दूर उन्होंने ले जाकर मुझे कानाखानामें डाल दिया।

—कानाखाना क्या?

—रेगिस्तानसे आकर तखतपूल होते आर्क जाते हैं। इसी तखत-पूलके नीचे एक बन्दीखाना है, जिसका नाम है कानाखाना। इसका द्वार पुराने क़ूरखाना (अस्त्रागार)—जिसे आज कल क़ब्तूनखाना कहते हैं—की ओर खुलता है। इस कोठरीमें न हवाका रास्ता है, न रोशनीका। सीड़ इतनी, कि एक घंटामें हड्डी पार कर जाती। ज़िन्दान और आबखानामें पिस्सू हैं, इसमें जितने उतने ही काना (खटमल) हैं।

—कानोंने तुझे नोचा नहीं?

—क्यों नहीं नोचा, एक रातमें शिरसे पैरतक काटकर शरीरको चींटीका घर बना दिया। गर्दन, शिर और चेहरा फूलकर पेट और कंधेसे एक हो गया।

—कब तक वहाँ रहा?

—बहुत देर नहीं रहा। यदि वहाँ एक सप्ताह भी रह जाता, तो जीता न निकलता।

—तो फिर कैसे वहाँसे छुट्टी मिली?

—वहाँसे उन्होंने मेरी माँको खबर देकर डरवाया—"अगर तुमने

लड़केको जल्दी न छुड़ाया तो मर जायगा"। माँ चारों ओर दौड़ी, लेकिन बिना पैसेका काम कैसे चलता? लाचार इस चारबाग (मेवाबाग)का आधा एक क़ाज़ीके हाथमें बेंचकर पैसेको यसावुलबाशी, तोपचीबाशी, मीरशब और मीरग़ज़बमें बाँटकर मुझे छुड़ाया।

—ख़ूब, और माँ मरी कब?

—जब मैं छूटकर घर आया तो माँ की अवस्था ऐसी ख़राब थी, कि वह मुझे पहचान न सकी। मेरी हालतको सुनकर वह अफ़सोसमें बीमार पड़ गयी थी और उसमें ज़िन्दा न उठ सकी। नहीं जानता, मेरी मुक्तिने उसे शादी-मर्ग (अतिहर्षकी मृत्यु), या मुझे बुरी हालतमें देखकर ग़ुस्सा-मर्ग (चिन्ताकी मृत्यु) हुई।

—और वह धोखेबाज़ जंतर-मंतरवाला क्या हुआ?

—पीछे उस शैतानकी इतनी प्रसिद्धि हुई, कि अमीर, वज़ीर और दूसरे हाकिम उसके मुरीद और भक्त बन गये। ग़रीब अजान आदमियोंमें भी उसकी इज़्ज़त बड़ी बढ़ी। जिस किसीके शिरमें दर्द होता या माल चोरी जाता, वह उसके पास दौड़ता। नर-नारियोंको वह लूटता, बाँझ औरतोंको सन्तानके लिये जंतर देता। क्या बतलाऊँ, उसने अमीरके बड़े हाकिमों और मास्को जानेवाले सौदागरोंकी तरह बहुत धन जमा कर लिया। जदीदोंके झगड़े और क्रान्तिके आरम्भ होनेपर उसका प्रभाव और बढ़ा। वह मुल्लाओंका मुखिया बन गया। अगर उसे मालूम हो जाता, कि तुम जदीदों और बोलशेविकोंके बारेमें अच्छा ख्याल रखते हो, तो अमीरसे कहकर मरवाता। अगर किसीको देखता, कि उसके पास धन-दौलत है, तो उसपर जदीद और बोलशेविक होनेकी तुहमत लगाकर उसकी सम्पत्तिको अपने हाथमें करता। जब अवस्था और गम्भीर हो गयी, तो "मैं ऐसा तावीज लिखकर दूँगा कि बोलशेविकोंकी तोप और तुफंगका कोई असर न होगा" कहकर, अमीरके दिलको भी भर दिया। खुद कमरमें तलवार बाँधकर चापलूस मुल्लोंको अपने पीछे दौड़ाते जंगी

परेड भी कराता फिरा। कल सुना कि वह अमीरके भागनेपर हजारों धोखोंसे जोड़ी दौलतको हसरतके साथ छोड़ शिर-पैरसे नंगा शहरसे भाग गया।

—उसका नाम क्या था?

—मुल्ला कुतुबुद्दीन।

× × ×

"भाइयो! आइये चलिये, शहरमें चलनेकी जरूरत है। शहरमें कई जगह ताजा आग लगी हुई है। नई सरकार हर आदमीसे आग बुझानेमें सहायताके लिये पुकार करती है" इस आवाजको सुनकर यादगार और फर्मान जाग उठे। यह आवाज गाँवके चौकीदार (पायकी)की थी।

यादगारने पूछा—कल तोपके गोलोंसे जगह-जगह आग लग गयी थी, आज यह ताज़ा आग कैसी?

—क्या तू समझता है, कि अमीर भाग गया, तो उसके सारे पिट्ठू भी खतम हो गये? नहीं, अब भी अमीरके कितने ही पिट्ठू और पक्षपाती फटे कपड़े पहन, गरीबों जैसा बन शहरमें हर जगह आग लगाते फिर रहे हैं।

—तो आओ, हम भी आग बुझानेके लिये चलें—यादगारने कहा।

—पहले हाथ-मुँह धोकर चाय पीते हैं, तब तक लोग भी जमा हो जाते हैं, फिर उनके साथ हम भी चलेंगे।

एक घंटा बाद क़ुर्बून और संगसब्जका रास्ता आग बुझानेके लिये जानेवालोंसे भर गया।

क़ुर्बून, मुर्गासून, जवाजकागज, संगसब्जा, बुलामखोरान और दूसरे गाँवोंसे आये किसान शहरकी ओर जा रहे थे। यादगार और फरमान भी दिलकुशावालोंके साथ आग बुझाने गये।

१२

जनताका बदला

साधारण क्रान्तिकारियों, लालसेना और खासकर शहरके पड़ोसके मजूरों-किसानोंके सम्मिलित श्रमसे आग बुझा दी गयी। नये और पुराने संसारके संघर्ष और भयानक अगलग्गीके बाद बुखारा नगरने ध्वंसावशेषका रूप धारण किया था, तो भी स्वतन्त्रताके आनन्दोत्साहने शहरमें विजयोत्सवका रंग लिया था। हर मकानके ऊपर एक लाल झंडी लगी थी और हर कूचेके छोर पर नारे लिखे कपड़े लटक रहे थे। पाँती पाँती और झुण्ड-झुण्डमें लोग "ज़िन्दाबाद आज़ादी" "पायन्दाबाद सोवियत-सरकार", "नैस्तबाद अमीर व अमीरी"के नारे लगाते हर तरफ घूम रहे थे। हरेक आदमीकी बाँहमें एक टुकड़ा लाल कपड़ा और हरएककी छातीके ऊपर एक लाल गुलाब—स्वतन्त्रताका प्रतीक लगा हुआ था और इस तरह शहर लाल और लालाज़ार हो गया था। हाँ, बुखारा शहर लालाज़ार बना था और आँधी बिजलीके समाप्त होते ही वह खिल उठा था।

यादगार बहुत खुश था। उस खुशीमें और वृद्धि हुई थी—स्वतन्त्रता-दिवसमें जन-कोषसे उसे पोशाक और जूता दिया गया था। वह प्रसन्न हो चारों तरफ घूम और हर चीज़से आनन्द-अनुभव ले रहा था। यादगारको इस विजय-दिवसकी खुशी मनानेका सबसे अधिक हक़ था। उसने अपनी उम्र दासता, अत्याचार और अपमानमें बिताई थी। अपनी मेहनतकी कमाईको वह कभी न पा सका था। आज उसके लिये सभी चीज़ें खुली थीं, उसे आज सबसे अधिक खुशी करनेका हक़ था। उसने अपनी जिन्दगीकी हरियाली और यौवन-बसन्तके इन पिछले दस सालोंको हवा और दरवाजासे रहित ज़िन्दान और प्रकाशहीन आबखानामें गुजारे थे। उसे सबसे ज्यादा हक़ था, कि स्वतन्त्रताके स्वच्छ प्रातः समीरका

आनन्द ले। आखिर खानेका मजा भूखके बाद और पानीका रस प्यासके पश्चात् मालूम होता है।

× × ×

"दौड़ो-दौड़ो, काज़ीकलाँ और रईसकलाँको गिरफ्तार करके लाये हैं" इस आवाज़को सुनकर शहरकी गलियाँ और सड़कें भर गयीं और जन-समुद्र रेगिस्तानकी ओर उमड़ पड़ा। यादगार आबखानामें रहते वक्त काजी और रईसके रोब और दबदबेको खुद देख चुका था; उनकी निर्दय हत्याओं और पाशविक अत्याचारोंको क्रान्तिकारी बन्दियोंके मुखसे सुन चुका था। उसकी इच्छा हुई, कि आज उनके गिरफ्तारीको भी आँखोंसे देखे; इसलिये वह भी आगे-आगे दौड़ चला। फिर आवाज आई "यह ला रहे हैं"। दौड़नेवालोंने कदम रोक दिया। यदि रेगिस्तानके *आस-पासके मकानोंको जलाकर आगने मैदानको विशाल न कर दिया होता,* तो तमाशबीनोंकी भीड़में कुछकी मौत हुए बिना न रहती। रेगिस्तानके मैदानमें सूई रखनेकी जगह न थी।

पुलिसने नर्मी लेकिन चतुराईसे रास्ता बनाया। लोग दोनों ओर दोहरी पाँतीमें खड़े हो गये। अगली पाँतीमें बूढ़े और अत्याचार-पीड़ित लोग खड़े थे, जिनमें अधिकतर बेवायें, यतीम बच्चे, पुत्रोंको खोये माता-पिता थे। एक बेवा स्त्रीने कहा—इन्होंने मेरे पतिको कत्ल किया, घर और मालको छीनकर छोटे बच्चोंके साथ मुझे बाटकी भिखारिन बना दिया।

एक सत्तर साला बुढ़ा कह रहा था—ये मनुष्यके रूपमें वही भेड़िये हैं, जिन्होंने मेरे तरुण पुत्रको मारा और खिदमताना कहकर मेरा सारा माल हड़प लिया।

इसी तरह दूसरे भी उनके अत्याचारोंकी करुण-गाथा सुना रहे थे।

"यह है काजीकलाँ बुरहानुद्दीन"—कहकर किसीने उसकी ओर अंगुली उठायी।

यादगारको अपनी आँखोंपर विश्वास नहीं हुआ, क्योंकि उसने काज़ीकलाँको ज़रबफ़्तके ज़ामामें जरदोज़ीके ज़ीन और चौदह जुल्फोंवाली सुनहली लगाम लगाये स्याह मुश्की घोड़ेपर सवार देखा था। और अब वह सिर-पैरसे नंगा पगड़ी गर्दनमें लटकाये पैदल चल रहा था। हाँ, आज भी काज़ीकलाँने अपने पद और दर्जेकी मर्यादा अपने हाथमें रखी थी। वैभवके ज़मानेमें भी वह दूसरोंके आगे आगे चला करता था और आज हिसाब और इन्साफ़के दिन भी गिरिफ़्तार करनेवालोंके आगे-आगे चल रहा था।

"यह है रईसकलाँ मुसन्निफ़"—किसीने कहा।

—ईशान रईस ! तेरे नायब और दर्रा (चाबुक) वाले कहाँ हैं ? अब क्यों नहीं लोगोंको पिटवाता ?—यह आवाज़ एक दस बरसके बच्चेके मुँहसे आ रही थी, जो मानो उस दिन जनताके भावोंको प्रकट कर रही थी।

"यह है यूसुफ़ बाय ! यह क़ुरशबेक, यह मिर्ज़ा उस्मान" कहकर लोगोंने बन्दियोंकी ओर इशारा किया। आज बुखाराके लोग अन्तिम बार शहरके महानों और "मनु-पुत्रोंके स्वामियों" की अगवानीके लिये आये हुए थे; लेकिन अबकी बार वह पहलेकी तरह सीनापर हाथ बाँधे डरते-काँपते सलाम और कोरनिश नहीं कर रहे थे; बल्कि सलामकी जगह घृणा और कोरनिशकी जगह अपमान प्रकट कर रहे थे। यदि हथियारबन्द सैनिक अपराधियोंको चारों ओर घेरकर न बचाते, तो जनताकी बदलेकी आग एक क्षणमें उन्हें जलाकर ख़ाक कर दिये होती।

१३

लोभ

"क़ाज़ीकलाँ, रईसकलाँ, अमीरके दूसरे बड़े दरबारी और सरकारी

अफसरोंकी पूछ-ताछ खतम हुई। आज या कल फैसला और सजा होगी" यह आवाज लोगोंको उस हवेलीसे दूर करनेमें सफल न हुई, जहाँ कि क़ाज़ीकलाँ और उसके साथी कैद थे। सभी अधीर हो प्रतीक्षा कर रहे थे, कि जल्दी इन ज़ालिमोंका बेड़ा गर्क हो, जिन्होंने कि हजारों बेगुनाहोंका खून बहाया, खान्दानोंको बरबाद, घरोंको उजाड़ और घरवालोंको आश्रय-हीन कर दिया। वह उन्हें अदालतके द्वारपर हाथ बँधे परेशान देखना चाहते थे और ये चाहनेवाले वही अत्याचार पीड़ित नर-नारी थे, जो चन्द रोज पहिले मनाया करते थे "हे भगवान्! यह काज़ी और मुफ्ती, शाह और वजीर हाथ बंधे कब अदालतके सामने परेशान देखे जाँयगे।" आज उनकी यह अभिलाषा आखिर कमकरोंके प्रयत्न और वीरतासे पूरी हुई।

क़ाज़ीकलाँको बन्द रखनेकी जगहसे निकाल सीधे उसकी हवेलीमें ले गये—उसी हवेलीमें जहाँसे वह और उसके बाप-दादा शासन करते आये थे। लोगोंको ख्याल आया, कि उसे उस जगह ले जाकर साबित कराना चाहते हैं, जहाँसे उसने हजारों बेगुनाहोंको मारनेका हुक्म दिया था। लोगोंने उस हवेलीको घेर लिया। सिपाही लोगोंके भीतर आनेमें कड़ी कड़ी रुकावट डाल रहे थे, तो भी कुछ तमाशबीन अन्दर घुस गये, जिनमें एक यादगार भी था।

लेकिन वहाँ कोई अदालत या कचहरीका इजलास नहीं था। सिर्फ थोड़ेसे नई हुकूमत—हुकूमत शोराई—के अधिकारी थे, जो कि हवेलीकी चीजोंका नाम कागजपर दर्ज करनेमें लगे थे। उनमेंसे एकने—जो कि उनका सरदारसा मालूम होता था—कुञ्जियोंका एक गुच्छा क़ाज़ीकलाँके सामने रखते हुए कहा—लीजिये, सन्दूकों और खजानोंको अपने हाथसे खोलकर पचास सालसे यहाँ जमा होती बहुमूल्य-वस्तुओंको एका-एक करके बतलाइये।

क़ाज़ीने कार्य-आरम्भ करनेसे पहिले निवेदन करते हुए कहा—दादर (भैया)! यदि एक सिगरेट हो, तो दया कीजिये।

सरदारने एक सिगरेट दे दिया। क़ाज़ीकलाँने लेकर पीना शुरू किया और सरदारकी ओर निगाह करके कहा—दादर! आपने अपनी आँखों देखा, कि मैं सिगरेट पीता हूँ। अब मेरे जदीद (नवीन) होनेमें कोई शक-सुबहा नहीं हो सकता। भगवानको देखता-सुनता जानकर सच्चाईपर पर्दा न डालियेगा और ऊपरके अधिकारियोंको बतलाइयेगा, कि मैं जदीद हूँ, सिगरेट पीता हूँ। शायद इससे मेरी सजा कुछ हल्की हो जाय। इलाही सलामत बाशीद!

सरदारने क़ाज़ीकलाँके निवेदनके जवाब में "बहुत अच्छा" कहते यह भी कहा—आगे आइये, किवाड़ोंको खोलिये।

क़ाज़ीकलाँने छोटे मेहमानखानाकी देहलीके द्वारका ताला खोला। सरदारके भीतर जानेके बाद खुद पहुँचकर देखा कि एक ओर एक जोड़ा पुराना जूता पड़ा है। उसने सरदारसे कहा—दादर! भगवान आपकी दौलतको इससे भी ज्यादा बढ़ाये। इस जूतेको बख्श दीजिये। देख रहे हैं न, मेरा जूता चिद्दी-चिद्दी उड़ गया है, राह चलते पैरसे निकलकर मुझसे भी एक कदम आगे चलता है।

सरदारने देखा कि उसका जूता सचमुच फट गया है और उसके पंजे जूतेकी नोकसे निकले हुए हैं, "खूब पहन लीजिये" कहकर उसने इजाजत दी। क़ाज़ीने अशर्फी भरा घड़ा पाये भिखारीकी तरह अत्यन्त प्रसन्न हो जूतेको पहिना और फटे जूतेको भी अपनी बगलमें दबाकर दोनों हाथोंको ऊपर उठा सरदार और उसके बच्चोंको दुआ की।

पहिले गंजीना (निधि)को खुलवाया। इसका द्वार देहली के अन्दर और पीठ मेहमानखानेके अन्दरसे लगी हुई थी। यहाँ सन्दूकोंमें सोनेकी अशर्फियाँ, सिल्लियाँ, रेत और चाँदीकी ईंटें भरी थीं।

चीजोंके कागजपर दर्ज कर लेनेके बाद सरदारने ताला बन्दकर अपने हाथसे मुहर की और फिर कुंजीको क्रान्तिकारी सरकारके अनुसन्धानकके हाथमें दे दी।

इसके बाद बड़े मेहमानखाने (बैठक)से अन्दर घुसे। वहाँ जमीनपर बिछे बहुमूल्य कालीनों, गद्दों और मसनदोंके सिवा और चीजें न थीं, सिर्फ ऊपरी द्वारके पास सिरहाने एक लकड़ीकी लिखनेकी सन्दूक थी। क़ाज़ी-कलाँने गुच्छेमेंसे एक छोटी कुञ्जी निकाल ताला खोलकर ड्रायरोंको बाहर खींचा। ऊपरी ड्रायरमें निकोलाकी सरकारके रूसी नोट भरे थे और निचलेमें बुखाराके तंके।

उपस्थित लोगोंमेंसे एक बोल उठा—यह वही सन्दूक है, जिसमेंसे होकर बुखाराके कमकरोंकी पसीनेकी कमाई पचीस साल तक अमीरके खजाने और काजीकलाँके गंजीने (निधि)में जमा होती रही।

—हाँ यही सन्दूक है, जिसपर बुखाराके गरीबोंके भाग्य, धन, प्राण, प्रतिष्ठा, मान, स्त्री और बच्चोंकी लूटपर हस्ताक्षर किया जाता, मुहर लगा करती—कहकर दूसरे आदमीने पहलेकी बातका समर्थन किया।

सन्दूककी चीजोंकी लिखा-पढ़ी होने और मुहर लग जानेके बाद तहखानेका ताला खोला गया। यहाँ फर्शसे लेकर छत तक चमड़ेके सूट-केस और लोहेके ट्रंक भरे हुए थे। इनमेंसे कुछमें सोने और चाँदीके थाल कटोरे; तश्तरी, प्याले और सुराहियाँ थीं, जिनपर बुखाराके कारीगरोंने हीरा, पन्ना, पोखराज जैसे बहुमूल्य पत्थरोंको जड़कर अपनी आश्चर्यकर शिल्प-चातुरीका परिचय दिया था। उनमेंसे कुछपर लिखा था "यह सामान महाइम्पेरातोर (ज़ार)के महादरबारमें जनाबआलीकी यात्राके लिये निर्मित"। कुछ सन्दूकोंमें सुन्दर छोटे-छोटे बक्सोंके अन्दर स्त्री-प्रसाधनके सामान थे, जिनपर लिखा था "सम्माननीय महाइम्पेरातोरकी गृहिणीके लिये"। एकपर लिखा था "बराय सैर व सियाहते-जनाबआली दर इशरतगाह यालुता बर्गसब्ज़गोयान् तैयार करद:"।

सूटकेसोंमें तरह तरहके बहुमूल्य जामे व पोशाकें थीं—हिसारवाले इलाचा अब्र, मुल्ला कर्शीवाले शाही, कज़ाकी लिबास, बुखारी और फिरंगी गुले-मखमल, मास्कोके कुन्दल और कमखाब इत्यादि इत्यादि, जिनकी

संख्या हजारसे भी ज्यादा थी। कुछ सूटकेसोंमें बारीक ढाका (मलमल) थे, जिनसे बंधी एक पगड़ी भी तैयार थी। बंधी पगड़ीको देखकर क़ाज़ीकलोंने सरदारसे प्रार्थना की—दादर! मेरे साथ एक और नेकी कीजिये, इस बंधी पगड़ीको देनेकी कृपा कीजिये, मेरा सल्ला बहुत मैला हो गया है।

सरदारने उसकी भी इजाजत देदी। क़ाज़ी पगड़ीको शिरपर रख सल्ले (साफ़ा)को भी कमरसे लपेटने लगा। वह बीस गजसे भी ज्यादा था, जिसको लपेटनेके लिये वह जल्दी-जल्दी चक्कर काटने लगा। नयी पगड़ी मिलने और सल्लाके भी हाथमें रहनेसे काजी इतना खुश होकर चक्कर काट रहा था, कि देखनेवाला समझता, वह नाच रहा है।

सारे कामके पूरा हो जानेपर रक्षक क़ाजीकलांको हवालात-घरकी ओर ले चले। घरसे बाहर निकलनेपर क़ाज़ीने फिर सरदारसे एक सिगरेट लेकर पिया और इसे अपने जदीद होनेके प्रमाणके तौरपर कलके इजलासमें कहनेके लिये सरदारसे अर्ज किया।

सरदारने चीजोंकी सूची अपने लेखकके हाथमें दे उनमेंसे कुछको अलग रखनेके लिये कहा। लेखकने सूचीपर सरसरी तौरसे नजर दौड़ा चकित होते कहा—इस कूलाबी (कूलाबवाले)ने बहुत जखीरा जमा कर लिया था।

किसीने उसे टोकते हुए कहा—कूलाबी और जखीराका कोई सम्बन्ध नहीं। मैं भी कूलाबका रहनेवाला हूँ, लेकिन आजतक कभी पेटभर खानेको रोटी नहीं मिली।—यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि यह टोकने वाला था यादगार या बुखारियोंके कथनानुसार दाखुन्दा।

एक दूसरे आदमीने भी बातमें सम्मिलित होते कहा—जखीरा किया सो किया, जो भी हो, अब यह जखीरा असली मालिकके हाथमें गया; लेकिन मुझे आश्चर्य इस बातपर होता है, कि कल इसका मुकदमा है। कमकरोंकी अदालतसे सौ जान होनेपर भी यह एक जानको भी नहीं

बचा सकता, यह वह खूब जानता है; फिर किस लिये यह जूता और पगड़ी ? और बगलमें दबाये पुराने जूते को क्या करेगा !

सरदारने जवाब दिया—"गाय मरे भी तो भी उसकी आँखकी मैल नहीं जाती", वह लोभ हिर्स है। इस हिर्सने काजीकलोंसे इतनी चीजें जमा करवायीं। इसी हिर्सने उसे लोगोंके खून बहाने, उनके मालको लूटनेके लिये प्रेरित किया। इसी हिर्सने इसे आजका दुर्दिन दिखलाया और यही हिर्स है, जो इसे कब्रकी तरफ खींचे लिये जा रही है। फिर कैसे हो सकता है, कि यह उस हिर्ससे जुदा हो।

१४

वकील-मुख़्तारके कारवाँके साथ (१९२१)

—किसके साथ तेरा काम है दाखुन्दा—गद्दे पर पल्थी मारे बैठे आदमीने दरवाजेके अन्दर और बाहर सिर करके झाँकते हुए दूसरे आदमी से पूछा।

—वकील-मुख्तारके साथ।

—क्या ! काम है ?

—मैंने सुना है, कि जो चाहे सो वकील-मुख्तारके साथ कोहिस्तान जा सकता है। मैं भी कोहिस्तान जाना चाहता हूँ।

पल्थी मारे आदमीने दाहिने पैरको सीधाकर बायेंपर बैठ एक कागजको बायें हाथमें ले दाहिनी जांघको लिखनेकी मेज बना हाथमें कलम लेकर पूछा—तेरा नाम क्या है ?

—यादगार।

—बापका नाम ?

—बाज़ार।

—कहाँका है ?

बुखारा।

—कितने सालोंसे यहाँ रहता है ?

—दस सालसे ज्यादा।

—क्या काम करता था ?

—सैनिक बना, भगा, जेलमें पड़ा, फिर भगा, फिर ज़िन्दान और आबखानामें डाला गया, अन्तमें क्रान्तिके दिन मुक्त हुआ।

—बहुत अच्छा, अक्षर लिख-पढ़ सकता है ?

—नहीं।

लेखकने अपने पासमें बैठे आदमीके कानोंमें आहिस्तासे कहा—अच्छा है जो लिख-पढ़ नहीं सकता, नहीं तो अपने इस हसब-नसबसे मेरे स्थानपर वकील-मुख़तारका मिर्जा (कातिब) बन गया होता। मैं और तुम सालों कुशबेगी और क़ाज़ीकलाँके मिर्ज़ाखानोंमें चपत खाते-खाते इस जगह पहुँचे। अगर इन्होंने काम सीख लिया, तो ये हमारे मुँहकी रोटी छीन लेंगे और ऊँटकी पूँछ जमीन तक पहुँच जायेगी। अपना काम करते चलो।

कातिबने फिर आदमीकी ओर मुँह करके पूछा—पार्टीमें दाखिल हुआ ?

—आपके कहनेका मतलब नहीं समझा, क्या कह रहे हैं ?

—कम्युनिस्ट पार्टीमें दाखिल हुआ कि नहीं ?

—हुआ हूँ, कम्युनिस्ट बोलशेविक हूँ।

कातिबने फिर अपने सहवासीके कानमें आहिस्तासे कहा—उस सारे "फज्ल व हुनर"के बाद बोलशेविक भी हैं, इलाही तोबा !

सहवासीने कहा—पहिले तो यह, कि बुखारामें बोलशेविकोंकी इतनी चलती बनती नहीं है, दूसरे यदि सारे बोलशेविक बन जायें, तो फायदा क्या है ?

—नहीं, ऐसा न कहो शरीक ! तुम जदीदोंके रोबदाबका खयाल कर रहे

हो, उनके अब्री-जहकलानी-अस्तरशाही जामों, शाही पोस्तीनोंकी पोशाकों, टेढ़े-मेढ़े सँवारे बालों, सिरपर मलमली पगड़ियों या ताशकी टोपियोंके साथ शासक होनेके दावाको देख रहे हो; लेकिन यह बहुत दिन तक नहीं चलेगा। अन्तमें सारा काम बोलशेविकोंके ही हाथमें जायेगा, क्योंकि उन्हें क्रान्तिकारी कामोंका भारी अनुभव है। इस दाखुन्दाकी ओर अवहेलनाकी दृष्टिसे मत देखो। यह ठीक नहीं है। "तिनकाको तुच्छ न समझ, कहीं वह तेरी आँखोंमें न गिरे"। असली बोलशेविक इन्हीं भूखे-नंगोंमेंसे पैदा होते हैं। रूसियाको इन्हीं भूखे नंगोंने तहोबाला किया। इन्होंने ही निकोला जैसे बादशाहको तख्तसे बेतख्त किया, करेन्स्की और उसके अनुयायियोंको मुल्कसे भगाया।

कातिबने फिर दाखुन्दाकी ओर निगाह करके कहा—तू क्या काम कर सकता है?

—जो भी देहकी मशक़्क़तका काम होगा, करूँगा।

—साईस या घसियारेका काम कर सकता है?

—कर सकता हूँ।

—दो-तीन दिन बाद आकर यहाँसे खबर ले जाना। मैं तेरी बातको वकील मुख़तारके कारपर्दाजसे कहकर जवाब ले रखूँगा।

× × ×

१९२१की जनवरीका आरम्भ था। मौसम बहुत सर्द था। बरफ़ पड़ रही थी। बरफ़की ढेरने क़रशी शहरके घरोंको छतों तक ढाँककर बरफ़की पहाड़ी बना दिया था; लेकिन क़रशीके जिस मेहमानखानोंमें हाकिम ठहरे हुए थे, वह इतना गर्म था कि वहाँ बैठे लोगोंको बाहरकी सर्दीका कोई ख्याल नहीं हो सकता था। मेहमानखानाके सामने साईसों, ताँगावालों और सवारोंका एक गरोह था, जो गीले ईंधनको फूफू करके जलाते उसके किनारे बैठ कर हाथ-पैर गरम करनेकी कोशिश कर रहे थे।

"उठ जाओ, जनाब आग़ालक़ आफ़न्दी आ रहे हैं"—यह आवाज़ मेहमानखानाके द्वारसे एक खिदमतगारके मुँहसे आई। वहाँ बैठे लोग घबड़ाकर सीनापर हाथ रखे "जनाब आग़ालक़ आफ़न्दी"के सम्मानमें खड़े हो गये। वहाँ सिर्फ एक आदमी था; जो नहीं खड़ा हुआ। वह पैरमें सर्दी लग जानेसे लेटा था। इसी वक्त और ज़ोरकी आवाज आई—ओ दाखुन्दा, आदमी है या जानवर! तुझसे कह रहा हूँ 'जनाब आग़ालक़ आफ़न्दी' आ रहे हैं, उठ।

खिदमतगारकी आवाज़पर दाखुन्दाने खड़ा होना चाहा, किन्तु पैरके दर्दके मारे गिर पड़ा। तब तक "जनाब आग़ालक़ आफ़न्दी" शेरकी पोस्तीन पहने दालानसे मेहमानखानाकी तरफ चले गये और खिदमतगारको फिर आवाज दुहरानेकी जरूरत न पड़ी।

एक साईसने दूसरेसे पूछा—यह "तरहून" कौन था?

—पहचाना नहीं? यह वही नूरदीन खोजा आग़ालक़ है जो अमीरके जमानेमें भी कर्शीके गरीबोंके जीवन और मृत्युपर अधिकार रखता था।

—कहा जाता है अमीरके जमानेके कलानो (हाकिमों)के लिये इस हकूमतमें जगह नहीं, फिर इस आदमीको कैसे जगह मिल गई?—दाखुन्दाने पूछा।

—बात करनेमें बड़ी-बड़ी बातें मारते हैं, लेकिन बात और काममें बहुत अन्तर है। कहा जाता है, यह हुकूमत कमकरोंकी है, किन्तु मेहमानखानामें पाल्थी मारकर बैठे इन आदमियोंका कमकरोंसे क्या सम्बन्ध?—कहकर ताँगावालेने दाखुन्दाको सन्तोषजनक उत्तर दिया।

थोड़ी देर बाद कुरग़ान (महल)के बावर्चीखानासे आश-पुलाव भरे थाल मेहमानखानाकी ओर आने शुरू हुए। साईस और ताँगावाले बहुत भूखे थे। मुर्ग-माँसके गरम आश-पुलावसे निकलती भाप और सुगन्धिने उनकी भूखको और बढ़ा दिया। एकने कहा—क्या हमको आश नहीं देंगे?

—बड़ोंका पेट भरना चाहिये, हमने आपका दर्शन कर लिया, यही बस—ताँगावालेने कहा।

—"पैसेवाला कबाब खाता है और बेपैसेवाला धुआँ"की कहावत सच है।

—सच्ची बात तूने कही—कहते तीसरेने समर्थन किया।

उनकी बात चलती रही। घंटा भर बाद "यहाँ हमारी ओर भी निगाह हो" कहकर एक साईसने मेहमानखानाकी ओर इशारा किया। सबकी नजर उधर गयी। उन्होंने देखा, सचमुच खिदमतगार खाकर छोड़े आशको उनकी ओर ला रहे हैं।

आश आया। यद्यपि वह ठंडा था और ऊपर घी बरफ़की तरह जम गया था। तो भी साईसों और ताँगावालोंने पेटभरकर खाया "पेट भरा गम गया" कहकर उन्होंने धन्यवाद दिया।

—पानी लेकर पीऊँ—कहकर उनमेंसे एक खड़ा हुआ।

—हाथ धोनेके लिये मैं पानी चाहता था, जब नहीं मिला तो अन्तमें बरफ़से धोया, तू भी पानीकी जगह बरफ पी—कहकर दूसरेने रास्ता बतलाया।

—नहीं, ऐसी सर्दीमें बरफ आदमीको बीमार कर देती है। मेहमान-खानामें जा, वहाँ शायद पानी हो—कहकर तीसरेने सलाह दी।

प्यासा आदमी मेहमानखानाके द्वारपर गया, लेकिन उसे अन्दर जानेकी हिम्मत न हुई और वहाँ खड़ा रहा। अन्दर महफिल गरम थी—तुक़साबा आफ़न्दी! इन्तुखीन (इस तरह) आप भी हिसार और कुलाब वालोंके बारेमें इन्तुखीन बहुत जानते हैं—मेहमानखानामें प्रमुख स्थानपर बैठे आदमीने कहा।

—खुश, आपके सिरकी कसम तक़सीरजान आफ़न्दी, तुक़साबा न कहिये।

—लेकिन क्यों आप, इन्तुखीन, तुक़साबा कहे जानेसे इन्तुखीन रंज होते हैं।

—तुक़साबासे रंज नहीं होता, लेकिन जमाना बुरा है। "अमीरके जमानेमें ईनाक़ था, तुक़साबा था, यसाबुलबाशी था" यह कहकर पुराने अमलदारोंसे घृणा करते हैं, "जमीनको पानी और आदमीको गप बरबाद कर देती है" की मसल मशहूर है; यदि इस तरहकी बात चल गयी, तो खुद आप भी मुझे धत्ता बतलायेंगे।

—नहीं, खुदा न करे! शोरायबुखारा इन्तुखीन हकूमत खल्क-बुखारा इन्तुखीन है, इन्तुखीन बातोंको इन्तुखीन अपने दिलमें जगह न दीजिये। हमारी हकूमत पुराने अमलदारों और बाय लोगोंसे भी लाभ उठाना चाहती है। जो कोई भी, इन्तुखीन, हकूमतकी सच्चे दिलसे सेवा करता है, इन्तुखीन सर्व-साधारण विशेषकर कमकरोंके लाभको, इन्तुखीन, सामने रखता है; वह हमारी हकूमतका, इन्तुखीन, शिरोमणि होगा। इन्तुखीन मिर्जा इस्माइल दीवानबेगीको इन्तुखीन नहीं देखा। यद्यपि अमीरके जमानेमें वह दरबारका समीपी दरबारी था, इन्तुखीन अमीरका सारा आमद-खर्च उसके हाथों होता था, यहाँ तककी युद्धके समयमें भी इन्तुखीन सेनाके हथियारोंका वही वकील था; लेकिन जब उसने अपनी साफदिलीका हमें सबूत दिया, तो उसे शहरसब्ज जैसी एक बड़ी विलायत (प्रदेश) का इन्तुखीन वकील (गवर्नर) बनाकर भेज दिया।

—हकूमत-शोराई-खल्क-बुखारा (बुखाराजन प्रजातन्त्रकी सरकार) पर हमको और आपको सन्देह नहीं होना चाहिये—कहकर एक दूसरे पुराने अमलदारने तोक़साबाको समझाना शुरू किया।

—दौलत शोराई खल्क बुखाराकी तरफसे हम पुराने अमलदारोंको एक नई उपाधि दी गयी है। अमीरके जमानेमें हमको "तोक़साबा" "दीवानबेगी" "ईनाक़" की पदवियाँ मिलती थीं, लेकिन अब हमें "जेनाब

तोक़साबा आफन्दी", "जनाब दीवानबेगी आफ़न्दी" और "जनाब ईनाक़ आफ़न्दी" कहकर पुकारा जाता है।

बैठकके अग्रस्थानसे कोई उठने लगा। दूसरे उससे पहले ही अपनी जगहसे उठ हाथ बाँधे अपनी जगह खड़े हो गये। खिदमतगार झाड़ू हाथमें ले दौड़ा घरसे बाहर आया, वहाँ किसीको खड़ा देख बोला—हट जा दाखुन्दा, वकील आफ़न्दी आ रहे हैं।

—मैं पानी पीने आया था, अगर हो तो एक गिलास दो।

—यहाँ बेकारका पानी नहीं है, एक मशक मीठा पानी है, लेकिन वह खास करके जनाब वकील-मुखतार आफ़न्दी और उनके सहयात्रियोंके लिये है। अगर तू प्यासा है, तो क़ाजीकलाँके सामने सरदाबा अब्दुल्ला खाँके वहाँ जाकर पानी पी—खिदमतगारने कहा।

दाखुन्दा मेहमानखानाके द्वारसे जब दूर चला गया, तो खिदमतगारने फिर आवाज दी और आने पर उसके हाथमें झाड़ू देकर कहा—यहाँसे पाखानेके द्वार तक बर्फको बराबर कर, वकील आफ़न्दी शौचके लिये आनेवाले हैं।

वकील-मुख्तारके पाखानाकी तरफ जानेके बाद नूरदीन आग़ालिक करशी (भूतपूर्व करशी-बेक) ने मेहमानखानेसे बाहर आ अपना जूता पहना और अपने पुराने नौकर और आजकल खिदमतगारके कानमें धीरेसे कहा—जदीदोंके बारेमें हमारा खयाल गलत था। हमने नाहक मुफ्ती महमूद, खोजा बहबूदी और उनके साथियोंके पीछे पड़ उनको बर्बाद किया—कहकर प्रसन्न होते हुए लज्जा भी प्रगट की।

१५

कालीनवाला कमरा

शहर बाइसूनके गली-कूचे और हवेलियाँ नाना रूपके रंग-बिरंगा पोशाकवाले आदमियोंसे भरे थे। बड़ी टोपीवाले कद्दावर एल-नौकर

(राजभृत्य) कार्बास पगड़ीवाले शाह-बच्चे, लकड़ीके खड़ाऊँवाले लाठी और कमानधारी दरवार्जी, तलवार और पलीताकी बंदूकवाले हिसारी—इसी तरह कूलाब, करातगिन आदिके अफसर वहाँ दिखाई पड़ रहे थे। इन पहाड़ी कबीलियोंके बीच अबरी जामा, सुनहरा कमरबंद पहने बुखारी सैनिक, खासकर भगोड़े अमीरके दरबारी, ऐंठ और दिखलावमें दूसरोंसे बढ़ चढ़कर थे।

बाइसूनके हाकिम-मुख्तार जानी नानबाईने इतिहासकी बाजीसे लाभ उठा अमीरको अपना मेहमान बनाया था और उसकी प्रसन्नता प्राप्त कर अपना धन और दर्जा बढ़ानेकी कोशिश कर रहा था। वह सोच रहा था यदि खुदाने बुखाराके राजसिंहासन पर फिर अमीरको बैठा दिया, तो इस सेवाके लिये मुझे बाइसूनकी हाकिमीसे और बड़ा पद प्राप्त होगा। यद्यपि एक ओर उसे अमीरके पराजय और तख्तसे हाथ धोनेके लिये अफसोस था, लेकिन भविष्यकी आशासे प्रसन्न हो वह सेवामें लगा था। उसने पोशाक और नगदसे लेकर घोड़ा, लड़का, लड़की सबको नौ-नौकी संख्यामें अमीरके सामने भेंटकी थी। कुशान बाइसूनसे उत्तर अपने जलवायुके लिये प्रसिद्ध चारचिनार गाँवमें अमीरके विश्रामके लिये उसने विश्रान्तिगृह तैयार किया था और डेरा-शामियाना गाड़, चादर-चंदवा तानकर भारी दावतका प्रबन्ध किया था।

हाकिमने अपनी भेंट अमीरके सामने रखकर प्रधान दरबारी इमाम-कुलसे अर्ज किया—यदि हजरत सैर-गश्त और विश्राम करनेकी इच्छा रखते हैं, तो चारचिनार श्रीचरणोंकी प्रतीक्षामें है।

—अलबत्ता, जनाबआलीके दिलको बोलशेविकों और बेदीन जदीदोंकी अभद्रताके कारण बहुत दुःख और मलाल हुआ है। ऊपरसे बुखारासे यहाँ तक एक सवारीमें आनेसे रास्तेके कष्टने भी श्रीमान्को पीड़ा पहुँचाई है। ऐसी स्थितिमें सैर-व-सियाहत और विश्रामकी बड़ी आवश्य-

कता है, लेकिन विश्राम शुष्क नहीं होना चाहिये। बज्म (संगीतक) की भी तैयारी करो।

—लेकिन इस शहरमें श्रीचरणोंके योग्य बज्म करनेके लिये गायक और तंबूरी नहीं हैं। मेरी इस असमर्थताको श्रीचरणों तक पहुँचाइये। —हाकिमने बड़ी नम्रतासे निवेदन किया।

—मामूली बज्मकी जरूरत नहीं। मेरा मतलब कालीनवाले कमरेकी बज्म (बज्म, ताक-कुर्पगी)से है।

—इसके लिये यद्यपि सारी चीजें तैयार हैं, लेकिन मेरी समझमें अच्छा यह है, कि इसे शाम तक स्थगित रखा जाय। क्योंकि जहादके जमानेमें दिनको एक गाँवमें गाजियोंकी आँखोंके सामने इस तरहकी बज्म करना अच्छा न होगा।

इसी समय हिसार, कूलाब, बल्जुआन, दरवाज़, और करातगिनके गाजियोंको—जो कि अगवानी और सहायताके लिये आये हुए थे—कुरगान बायसूनमें उपस्थित रहनेका हुक्म दे अमीर घोड़े पर सवार हो चार-चिनारकी ओर रवाना हुआ। इमामकुल और हाकिम भी 'बज्म-ताक-कुर्पगी' के बारेमें किसी निश्चय पर पहुँचे बिना अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो हाकिम अमीरके आगे और इमामकुल पीछे रवाना हुए।

× × ×

फौजी अफ़सर, शाह-बच्चे, अमलदार, और एल-नौकर दस्तरख्वान पर बैठे खाना खा रहे थे। हिसारी सरकर्दों (फौजी अफसरों)में से एक ने कहा—अफसोस कि जनाब-आली निराश हो हट आये। अगर हमारे पहुँचने तक रुके होते, तो अपनी तलवारसे अकेला मैं बोलशेविकों और जदीदोंको जवाब देता।

दूसरे सरकर्दाने कहा—अकेले जनाब-आली क्या करें? दरबारके जितने नमकख्वार थे, सभी शरीर-पोषक और ऐशो-आरामके बंदे निकले। अब जब कि हमारे हज़रत दरबारके सरकर्दों और अमलदारोंके विश्वास-

घातसे इस तरफ आये हैं, तो हमें बहादुरी दिखानी चाहिये और बादशाही दबदबाको दुबारा कायम करके खुद सुरखुरू और दरबारमें प्रमुख बनना चाहिए।

अभी आशका थाल आधा भी न खत्म हुआ था, कि हल्ला हुआ 'जनाब-आली आये'। जहादके प्रेमी मेहमान चाहते थे, कि खाना छोड़ 'वली-नियामत'की अगवानीके लिये उठें। लेकिन हाकिमके दस्तरखानची (परोसक)ने 'श्रीचरणोंकी आज्ञा है कि कोई अपनी जगहसे न हिले और सब निश्चिंत हो भोजनमें लगे रहें' कहकर उन्हें दस्तरखानसे उठने नहीं दिया।

अमीर अपने आदमियोंके साथ आकर कुरगान (महल)में उतरा, लेकिन उतरने और फिर चढ़नेमें देर न लगी। सिर्फ इतना ही समय मिला कि हाकिम बायसूनको पदच्युत कर उसकी सारी बहुमूल्य चीजों और नकद-असबाबको हाथमें कर साथ न चलने लायक कुरगानकी चीजोंको जगह-जगह फेंककर जल्द सवार हो जाय।

—मैंने कहा नहीं कि (बज्म-ताक-कूर्पगी) जरूरी है? देखा न, तुम्हारी इस कमीसे जनाब-आलीकी तबीयत कितनी नाखुश हुई। खूब, कोई हरज नहीं। इस कामसे तुम्हें और दूसरोंको भविष्यमें शिक्षा मिलेगी—कहकर इमामकुलने पदच्युत हाकिमको तसल्ली दी।

दस मिनट बाद कुरगानमें जहादी मेहमानोंके सिवा कोई आदमी न रह गया। इसी समय बायसूनके पच्छिमकी ओरसे—कोह्पा-सुर्खसे तत्तत्-तत्तत्की आवाज आनी शुरू हुई, इसलिये जहादी बहादुर भी खाना खानेकी इच्छा आधी ही पूरा करके उठे और अपने अमीरको मदद देनेके लिये उसके पीछे भागना चाहे। लेकिन उनके घोड़े और सवारियाँ वहाँ न रह गई थीं, उन्हें अमीरके अमलदार—जिनके घोड़े मर या बेदम हो चुके थे—लेकर रवाना हो गये थे। इसलिये इन बहादुरोंने अपनी तलवार, पलीतेवाली बंदूक और तीर-कमानका जौहर

युद्ध-क्षेत्रमें बोलशेविकोंसे लड़नेमें दिखलानेकी जगह किसानोंपर दिखलाया और बेचारे गरीबोंके घोड़ोंको लेकर अमीरके पीछे-पीछे चले ।

× × ×

लाल-सेनाके असली जवान बंदूक और मशीनगनसे लैस कोहपा-सुर्खसे नीचे उतर शहरमें आये । किंतु वहाँ कोई प्राणी न मिला, और घर अपनी चीजोंके साथ सूने पड़े थे । यही नहीं, कितनी ही जगह दस्तरख्वान फैले, आश-पुलावसे भरे थाल और गरम आशसे भरे देग मौजूद थे । एक जगह अमीरके मध्याह्न-भोजनके लिये घी-पानी तैयार कर चावल डालनेके लिये पड़ा हुआ था ।

लाल-सेनाने रसायनिक विश्लेषण द्वारा खानेकी चीजोंको खाने लायक समझ भोजन-निमंत्रणको स्वीकार किया । फिर लोगोंकी खोजमें आदमी भेजे । बड़ी कठिनाईसे एक दो आदमी मिले । लाल सैनिकोंने मीठी और मैत्रीपूर्ण बातोंसे उनके दिलमें विश्वास पैदा कर उन्हें यह समझाया कि क्रांति क्या करना चाहती है, जनता क्यों अमीर और उसके अमलदारोंके खिलाफ खड़ी हुई है । समझानेमें उन्होंने बहुत सीधी-सादी भाषाका प्रयोग किया । समझाकर कुरगानमें मिली चीजोंमेंसे कितनी ही को 'यह तुम्हारा अपना माल है' कहकर उन्हें दिया और अंतमें बतलाया :

—हम सिर्फ अमीरका पीछा करनेके लिये आये हैं । किसानों और गरीबोंके हम दुश्मन नहीं हैं । हम तो उनके सहायक और मुक्तिकर्त्ता हैं । हम अब लौटकर अपने कैंपमें जाते हैं । तुम लोग जाकर गरीबोंको समझाओ कि शहरमें आकर अपनी चीज़ोंको सम्हालें और अपना काम देखें ।

लाल सैनिक कैंपमें लौट गये । उनके भले बर्तावकी बातें सुनकर लोग भी शहरकी ओर लौटने लगे । लेकिन उनके आनेसे पहले ही डाकुओं और भगोड़े अमीरके अमलदारों (हाकिमों) ने शहरकी एक

एक चीजको लूट लिया था, और किसीके घरमें बोरियाका टुकड़ा भी न बच पाया था।

१६

पालकीवाला आदमी

बायरूनसे दोशंबे तक रास्तेके कस्बों और गाओंमें कोई आदमी न रह गया था। अमीरके भागनेसे लोगोंमें भारी आतंक छाया था। और भागनेवालोंने भी जहाँ तक हो सका माल-असबाबको नष्ट कर दिया था।

—दोशंबे (आधुनिक स्तालिनाबाद)में भी कोई नहीं रह गया। अमीर अफगानिस्तानकी ओर भागनेके लिये कुरगान-तप्पाकी ओर चला गया।

हिसार और दोशंबेके इलाकोंके शहरी और दीहाती लोग इसी तरहकी बातें करते देशके भविष्यके बारेमें चिंतित और भयभीत मालूम होते थे।

—देशकी शांति और अमीरके लुटेरोंके हाथसे मुक्ति पानेके लिये जल्दी बोलशेविकों और "जदीदों"को अगवानी करके उन्हें यहाँ लाना चाहिए—यह बात मध्य-वित्त किसानोंकी ओरसे उठी, जिसे उपस्थित जनताने स्वीकार किया। उन्होंने भेंटके लिये कुछ चीजें और सफेद झंडा भी तैयार कर लिया।

"महम्मद नज़र कुछ-कुछ रूसी भाषा जानता है, उसीको इसके लिये आगे करना चाहिए"—यह बात भी स्वीकृत हुई और महम्मद नज़रने भी कबूल किया।

"बोलशेविक इस वक्त कहाँ हैं ?"—अगवानीमें जानेवालोंमेंसे एकने पूछा।

—अमीरके आदमियोंके कहे अनुसार सरे-आसियामें हैं।

—नहीं, मैंने सुना है कि देहनोमें हैं।

—यह झूठी बात है। अमीरके आदमी हमारी चीजोंको लूटनेके लिये लोगोंमें झूठी खबरें फैलाकर डरा रहे हैं। पक्की खबर यह है, कि लाल सैनिकोंका एक दस्ता बायसून आकर फिर दरबंद लौट गया।

—ठहरो ठहरो, देखो ये कौन लोग हैं—एक आदमीने कहा।

सब खड़े हो उस तरफ देखने लगे। वहाँ हथियारबंद आदमियोंका एक दस्ता आ रहा था। उनके आगे-आगे दो घोड़ों पर एक पाल्की लदी हुई थी।

—सचमुच यह कौन हैं, और पालकीमें किसे सुला रक्खा है—दूसरे आदमियोंने आश्चर्यसे पूछा।

—यह भी अमीरके गुंडोंमेंसे हैं, और अपनी सरकारके अंतिम दिनोंमें एक बार फिर हमें लूटना चाहते हैं, अपनी गुंडागर्दीसे मुल्कको भी पामाल करना चाहते हैं। यह पालकीवाला अवश्य या तो मुर्दा है या बीमार।

दस्ता नजदीक आया। उनका एक आदमी आकर इस बैठकका अभिप्राय पूछकर लौट गया। पाल्कीवालेने, जिसे लोग अभी भी न समझ सके थे, कि वह मुर्दा है या जिंदा, अपने शिरको बालिशसे हटाये बिना हाथ उठा कर इशारा किया। इशारा पाते ही हथियारबंद दस्ता भेड़ोंके रेवड़ पर भेड़ियोंकी तरह टूट पड़ा, और शांति-सुलहके इच्छुक उन लोगोंको मारने लगा। आध घंटामें कुछ कत्ल, कुछ घायल हुए और बाकी इधर-उधर भाग गये। उनकी जमा की हुई चीजें पालकीवालेको भेंट की गईं।

१७

वसीयतनामा

"मिर्ज़ा उर्गन्जीकी ओरसे दूत आया है"—यह सूचना पाकर

कुरगानतप्पासे होकर अफगानिस्तान भागनेके लिये तैयार अमीर रुक गया। उसने खबर लानेवालेसे पूछा—मिर्ज़ा उर्गन्जी कहाँ है।

—दरबंदमें लालसेनाके सामनेसे पहाड़में भागते वक्त घोड़ेसे गिर गया, जीनकी काठी उसके पेटमें धँस गई और घायल हुआ। उसे पालकीपर लादकर दोशंबा लाये हैं।

अमीरने मिर्ज़ा उर्गन्ज़ीके निवेदन-पत्रको लेकर पढ़ाः

"बोलशेविक बायसून आकर लौट गये। अब दरबंदके उस तरफ़ हैं। सैनिकोंपर जरा भी विश्वास नहीं करना चाहिये। क्योंकि वह संदेहमें पड़े श्रीचरणोंके साथ वफादारी नहीं कर सकते। गरीबोंपर भी विश्वास नहीं किया जा सकता। दोशंबे और हिसारके गरीब श्रीचरणोंसे नमकहरामी कर बोलशेविकोंकी अगवानी करना चाहते थे, किंतु मैंने पहुँचकर सबको भगा दिया। मुल्ला लोग श्रीचरणोंके आशीष-पाठक अवश्य हैं, लेकिन उनसे 'बलेगोई' (जी हाँ) छोड़कर और किसी चीजकी आशा नहीं। इस वक्त सिर्फ प्रसिद्ध डाकुओंपर ही भरोसा किया जा सकता है, जैसा कि बार-बार मैंने श्रीचरणोंमें निवेदन किया था। यदि उसकी क़ब्र जले, नसरुल्ला कुशबेगी मेरी बातोंको माने होता, तो मैंने १९१७ में सारे जदीदोंको डाकुओंके द्वारा श्रीचरणोंकी बलि करा 'खास खाक दुनिया साफ' किया होता, फिर इतना फसाद न पैदा होता। बाहरी सरकारोंमें सिर्फ अँग्रेज़ोंसे आशा रखना ठीक है, क्योंकि वे हमेशासे रूसियोंके हाथसे तुर्किस्तानको छीनना चाहते हैं। अफगान सरकार भी है, किन्तु उसमें उतनी शक्ति नहीं है। जब श्रीचरणोंके बुरे दिन आये, तो उसने वादा की हुई चीजें भी नहीं दीं और वह "पीछे मदद देंगे" कहकर धोखा देती आ रही है। अमानुल्लाके जदीद (नवीन) होनेमें कोई शक-शुबहा नहीं। इसलिये जनाबआली

अपने मुल्कके नामी डाकुओंको जमाकर तथा फरग़ानाके बसमाचियों (डाकुओं)से भी मदद ले दोशम्बे लौट आवें और सल्तनतकी नींव कायम रखें। फिर हिन्दुस्तानमें अपना वकील भेज अंगरेज सरकारसे जो चाहें, ले सकते हैं। इन्शा-अल्लाह (यदि भगवान्ने चाहा) ! दौलत-आलीपर कोई आफ़त न आयेगी। मैं ख़ुद भी इस्लामकी राहमें सख्त घायल हुआ हूँ, देर नहीं कि मर जाऊँ। श्रीचरणोंमें मेरी यह वसीयत है। बाक़ी बाद दौलत-आली (श्री सरकार बनी रहे)"

अमीरने निवेदन-पत्र पढ़कर इमाम कुलसे कहा—लेकिन क्या ख़ुद मिर्ज़ा उर्गन्जीपर विश्वास करना ठीक है? मैं समझता हूँ, नहीं। बाप-दादोंसे मेरी हकूमतका नमकख़ार औलिया कुलबेकने क्या किया, जो यह करेगा? औलिया कुलबेकने मुझे डरवाकर इधर खदेड़ दिया और ख़ुद सारी चीज़ें लेकर कुलाबकी ओर चला गया। देर नहीं कि ख़ुद उर्गन्जी धोखा दे, दोशम्बेमें लेजा मुझे पकड़कर बोलशेविकोंके हाथमें दे दे। लेकिन यह बात उसकी ठीक है, कि सिर्फ डाकुओंपर ही भरोसा किया जा सकता है। डाकुओंका पेशा चोरी है। यदि मेरे नामसे चोरी करेंगे तो वह कृतज्ञ हो मेरी सेवा भी करेंगे। डाकुओंके बाद सौदागरोंपर भी विश्वास किया जा सकता है, क्योंकि बोलशेविकोंके सबसे कट्टर दुश्मन सौदागर हैं। इसलिए मिर्ज़ा उर्गन्जीसे धोखा न खाने ठीक-ठीक बात जाननेके वास्ते पहले अलीम बाय सौदागरको दोशम्बे भेजना चाहिए।

अमीरने कुछ देर सोचकर फिर कहा—इस समय मिर्ज़ा उर्गन्जीको भी नाराज़ नहीं करना चाहिये और उसके नाम "तुमको हिसार और दोशम्बेका हाकिम नियुक्त करते हैं, जबतक हम आते हैं तबतक देशका प्रबन्ध करके रखो" इस विषयका एक फर्मान लिखा जाय, यदि उसका धोखा मालूम हुआ तो उसे सजा देंगे।

× × ×

हाजी अलीम बाय जब दोशम्बे पहुँचा, तबतक मिर्जा उर्गन्जी मर चुका था। उसने वहाँके बड़ोंसे पूछा—यहाँ कौनसे नामी डाकू हैं।

—सबसे मशहूर डाकू हैं चक्कबाय तूक़साबा लाक़ैका बेटा इब्राहीम गल्लू और अब्दुल खालिक़ उसका दाहिना हाथ है—लोगोंने बतलाया।

× × ×

एक घंटा बाद इब्राहिम गल्लू और अब्दुल खालिक़ बोलशेविकोंकी पक्की खबर जाननेके लिये बाइसूनकी ओर रवाना हुए और अलीम बाय दोशम्बेमें प्रतीक्षा करता रहा।

१८

दुबारा सल्तनत

"बूरी-बतासी डाकू और करशीवाला शराफ बाय हज़ार जंगी आदमियोंको जमाकर दरबंदकी रखवाली कर रहे हैं। इसलिए दौलत-आलीके रास्तेमें कोई बाधा नहीं।" यह खबर हाजी अलीमने भेजी। अमीरने उसे जल्द दोशम्बेमें दुबारा सल्तनतका प्रबन्ध करनेके लिये लिखते हुए कहा—"बूरी-बतासी डाकू और शराफ बाय करशीवाला दोनों दो वर्गों—डाकुओं और सौदागरों—के प्रतिनिधि हैं। उनपर विश्वास और भरोसा करना ठीक है। यह अच्छा सगुन है। अब दुबारा सल्तनत हासिल करनेकी उमीद होती है। अफसोस! इस हिकमतका निकालने वाला (मिर्जा उर्गन्जी) चल बसा। अच्छा, हर्ज नहीं "पीरकी जगह पीरका सोटा" उसकी जगह उसके लड़केको दोशम्बे और हिसारका हाकिम मुक़र्रर करते हैं।

× × ×

अमीर दोशम्बे लौटा। फिर चारों ओरसे एल-नौकर (राजपरिचारक) और सैनिक जमा होने लगे। अमीर उन्हें अमलदार बनाने लगा। सैनिकों और राजपुरुषोंकी तरफसे तारतिक (उपायन) पर तारतिक आये और अमीरकी ओरसे यारलिक (फर्मान) पर यारलिक निकलने लगे। यहाँ तक कि यारलिक लिखनेवाले और कागजी नोट छापनेवाले खरचन्चीमें होड़ लग गई। दोनों कागज खरच करनेमें एक दूसरेसे पीछे नहीं रहना चाहते थे।

उदेची, सजावल, मुहरम, यसावुल, मुन्शी, दफ्तरदार, दरबान, शखतदार सभी पदाधिकारी नियुक्त हुए और दोशम्बेके क़ुर्गान (महल) ने बुखाराका रंग लिया।

—काम खूब इच्छाके अनुसार चल रहा है, अफसोस, तंका और तिल्ला (अशर्फी) कम है—कहकर अमीरने खेद प्रगट किया।

—इसके लिए जनाबआली दिलमें जरा भी अन्देशा न करें। आपके इस दासने इस कमीकी भी दवा सोच ली है—इमाम कुलने तसल्ली दी।

—सचमुच तू मेरे लिये अद्वितीय जाँबाज़ है, बतला तो ज्यादा तंका और तिल्ला प्राप्त करनेका क्या उपाय सोचा है?

—दोशम्बेमें यहूदियोंके अस्सी घर हैं। उनके नगद और जेवरको ले उन्हें हिसार भेजकर उन्हें जेलमें डाल दिया जाय। इस एक तीरसे कई निशाने लगेंगे। पहले यह कि तंका, तिल्ला और जेवरका सिक्का ढालनेसे खजानेमें तंका तिल्ला खूब हो जायगा। दूसरे यह कि उनके घर, जमीन और रोजगारके सामानको दरबारके लोगोंमें बाँट दिया जायेगा; जिससे वह बेखरके न रह जायँगे। तीसरे यह कि दोशम्बे और हिसारके गरीबों भुक्खड़ों—जो हर वक्त बोलशेविकोंकी बाट जोहते रहते हैं—को शिक्षा मिलेगी और वे चुपचाप जनाब-आलीके हर हुकुम और फर्मानको शिरोधार्य करेंगे। सल्तनतको दृढ़ हुई जान डरकर आवश्यकता

पड़नेपर बेरोकटोक अपने माल-असबाब, लड़का-लड़की हमें सुपुर्द करेंगे ।

एक दिन ये सारे उपाय कार्यरूपमें परिणत किए गए। यहूदी अपनी सारी चीजों, घर-जमीनसे वंचित हो नंगे सिर नंगे पैर छोटे बच्चोंको उठाये पैदल हिसारके जेलमें भेज दिये गये। इमामकुलने इस बातको उदाहरणके तौरपर जिक्र करते लोगोंसे कहा—जो कोई भी जनाबआलीके फरमानसे सरकशी करेगा, उसकी वही हालत होगी जो यहूदियोंकी हुई है। यदि प्राण और घरबारका मोह है, तो जो कुछ भी नकद और असबाब तुम्हारे पास है, चुपचाप सब सरकारी खजानेमें दाखिल कर दो; नहीं तो यदि कोई आफ़त सिरपर आये, तो उसके लिए जनाबआलीसे शिकायत न करना, उसे अपने दुष्कर्मोंका फल समझना ।

यह काम भी चल पड़ा। लोग डर गये। समझने लगे कि यदि हुक्म-अदूली करेंगे तो दुबारा सल्तनतके अमलदार—जिन्होंने अपनी पलीतावली बंदूकोंको कार्तूसी बंदूकोंसे बदल लिया है—जबर्दस्ती हुक्म तामील करायेंगे ।

अब खजानेमें काफी पैसा आ गया था और अमीरके भोग-विलासकी समस्या हल हो गई थी। औलिया कुलबेककी जवान बीबी पतिके भागनेके वक्त नवप्रसूता होनेसे खानक़ाह गाँवमें छूट गई थी। पतिने ज़ाहिद मिंगबाशीके पास अमानतके तौरपर उसे रख दिया था। अमानतदारकी ओरसे अर्पित हो। अब वह नये केलिभवनको अलंकृत करने लगी। काजी होलदिलसे मर गया देहनाके काजीकी बीबी—"बोलशेविक आये" की खबर पाकर अमीरके अन्तःपुरमें थी। तीसरी बेगम थी बुखाराके इब्राहीम खोजाकी लड़की और चौथी खानक़ाहवाले अलीमर्दकी लड़की। इसके बाद तो एकके बाद एक सुन्दरियोंका ताँता लग गया और दोशम्बेकी हरमसरा (रनिवास) भी बुखाराके उर्दके लगभग पहुँच गई अर्थात् भीतरी बाहरी दोनों तरफसे शाही व्यवस्था कायम हो गई ।

अमीर नया महल बनवाने और दुबारा सल्तनतसे अधिक लाभ उठानेके विचारसे हिसार जानेके लिए घोड़ेपर चढ़ा। उस समय रिकाब पकड़े दोशम्बेके हाकिमसे कहा—इन स्त्रियों और लड़कियोंमें उतना मजा नहीं, एक अधिक जवान लड़कीको मेरे पीछे हिसार भेजो।

—"बहुत अच्छा तक्सीर (क्षमानिधान!)" कह हाकिमने करीब-करीब दण्डवत् (सिज्दा) करनेकी तरह झुककर तीन बार सलाम किया।

हाकिमके लिये उच्च पद पानेका अवसर हाथ आया था। उसने जरा भी देर किये कुटनियोंसे मालूम किया कि लूदा-हिसारके तैमूरशाहकी लड़की बहुत सुन्दरी है। तुरन्त तैमूरशाहको बुलाकर लड़की भेजनेका हुक्म दिया।

—"मेरी लड़की अभी बहुत छोटी, सिर्फ आठ सालकी है।" कहकर तैमूरशाह बहुत गिड़गिड़ाया, लेकिन सब बेकार। "बादशाही काम हँसी-ठट्ठा नहीं है, चुपचाप बातको कबूल कर" कहकर हाकिमने अपने हथियारबन्द आदमीको हुकुम दे इस सवालको हल कर दिया। उसी रात आठसाला कन्या हिसारके महलमें अमीर आलमखाँके विलासभवनमें भेजी गई।

दूसरे ही दिन अमीरके हिसारसे दोशम्बे आनेपर हाकिमने खबर देनेवाले यसावुलसे पूछा—इतनी जल्दी क्यों?

—तैमूरशाहकी कन्या शाहीप्रताप सह न सकी और श्रीचरणोंमें बलि हो गई। इस बातको सुनकर हिसारके नमकहरामोंने गड़बड़ मचानी चाही। यह श्रीहृदयको रुचा नहीं और जल्दी लौट आना पड़ा।

—अफसोस! मेरी यह महासेवा व्यर्थ गई! मैंने सोचा था, इस सेवाके फलस्वरूप दरगाहमें ऊँचा पद पाऊँगा, लेकिन शोक, भाग्यने सहायता न की। तैमूरशाह मादर······ने अपनी लड़कीको भलीभाँति शिक्षित नहीं किया था।

अमीरने दोशम्बे लौट आनेपर "तेरे ज़ुल्फ पर नहीं तो दूसरे हीके ज़ुल्फ पर सही" कहते "अल्पवयस्कता"का बहाना करके राजी न हुए अब्दुल हफ़ीजको फौजका अफसर बनाकर वायसून भेज दिया और उसकी लड़कीको मँगाकर अपने मनके अवसादको दूर किया।

× × ×

"विजय-पर-विजय" हिसार और दोशम्बेके आदमियों और बुखाराके भगोड़ोंमेंसे छब्बीस आदमियोंको जदीद और बोल्शेविक होनेके गुनाहमें अमीरने कत्ल करवाया। इसी समय युद्ध-क्षेत्रसे भी दो लाल सिपाही बन्दी बनाकर लाये गये। अमीरने उन्हें अपने समक्ष बुलवा मँगवाया, धर्मयुद्ध (जिहाद)के पुण्यमें वैयक्तिक रूपसे भाग लेते अपने हाथसे एक कोड़ा मारा और हुकुम दिया कि दोशम्बेकी बाजारमें दार (शूली) खड़ाकर उसपर उन्हें चढ़ा दिया जाय।

इसी समय फरगानाके चार सौ बसमाची अमीरकी सहायताके लिए पहुँच गए, जिन्हें वायसून भेज दिया गया। यह भी विजयके सुदृढ़ होनेका चिन्ह समझा गया।

× × ×

अमीरने प्रसन्नता प्रकट करते हुए इमामकुलसे कहा—अब हमारा दोशम्बा भी बुखारासे कम नहीं। केवल इतनी ही कसर है, कि यहाँ सैर-सपाटेकी जगह कम है। लाचारी है, कि दो रात कुर्गानमें बिताऊँ और दो रात द्वारेत्स*में। लेकिन बुखारामें एक रात सितारा-मुखासा तो दूसरी रात शेरबदनमें। वहाँसे दिल उकताता, तो चारबाग-गुल, तल्चा, नयमुंचा या आर्कमें चला जाता। कभी-कभी शहरके भीतरी मुहल्लोंकी सैर करता। महीनेमें एक दिनकी भी बारी न आती।

*दोशम्बामें एक ही यूरोपीय ढंगकी इमारत 'दोस्तरखाना' थी। अमीरने उसका रूसीनाम 'द्वारेत्स' (प्रासाद) रख लिया था।

काजीकलाँ और कुशबेगीकी दावतें, उनका लड़का-लड़की भेंटकर मेरे ऊपर तंकोंकी वर्षा करना—अफसोस! इन बातोंकी स्मृतियाँ आज दुःसह मालूम होती हैं।

—खुदा चाहेगा तो जल्दी ही फिर वह नियामतें मिल जायेंगी। जनाबआलीके चित्तको प्रसन्न करनेकेलिए यहाँके सारे दरबारी भी बारी-बारीसे दावत दे सकते हैं। लड़का-लड़कीका यहाँ भी अकाल नहीं। हाँ, तंका लोगोंके हाथमें कम हैं, लेकिन यह कमी सरकारी खजाना पूरा कर सकता है—जो इस वक्त भरा-पूरा है। यहाँ से दो-तीन सौ तंका दे दिया जाय, कि दावत देनेवाले उन तंकोंको सरे-मुबारक (श्रीशिर) पर बिखेरें।

अमीरको यह बात बहुत पसन्द आई और तुरन्त इसे कार्य रूपमें परिणत करनेकी आज्ञा दी। एक बार बारी यारमुहम्मद बीके सिर आई। अपनी हैसियतके मुताबिक तैयारी करके वह अमीरको अपनी हवेलीमें ले गया। खजानेसे मिले तीन सौ तंकोंको हवेलीके फाटकसे मेहमानखानेके द्वारतक अमीरके सरेमुबारक पर बिखेरा। उन्हें राजभृत्यों और यसावुलोंने जमीनसे उठाकर फिर खजानेमें भेज दिया। अमीर भी खुश हुआ और दरबारी भी। लेकिन बिना लड़कीकी दावत, अमीर और दावतके प्रबन्धक इमामकुलको नापसन्द हुई। अंतमें इमामकुलने मुँह खोलकर यार-मुहम्मदसे कहा—तुम्हारे यहाँ एक बहुत सुंदर भांजी, है जो जनाब-आलीके ही योग्य है। श्रीहृदयको प्रसन्न करनेके लिये इसी कन्याको अर्पित करो।

—उसकी मेरे लड़केके साथ सगाई हुई है।

—हजरतको सलामत रहना चाहिये। तुम्हारा लड़का बिना स्त्रीके नहीं रहेगा। इस वक्त श्रीजीको खुश करना बहुत जरूरी है।

—यहाँ एक और भी बात है। इस लड़कीकी माँ—मेरी बहन—स्वर्गीय जनाबआली (अमीरके पिता)के द्वारा अनुगृहीत हुई थी,

बहुत संभव है, यह कन्या जनाबआलीकी बहन हो। ऐसी स्थितिमें यह काम शरीयतके विरुद्ध होगा।

"शरीयतकी दिक्कतको दूर करना बहुत आसान है"—कह इमामकुलने सल्तनतके सैनिक मुफ्ती हकीम सोलतको बुलवा फ़तवा तलब किया। मुफ्तीने "शरीयतसे कोई बाधा नहीं" लिख, मुहर करके दे दिया।

यारमुहम्मद इसपर भी राजी नहीं हुआ। अमीर उसके घरसे नाराज हो क़ुर्गान लौट गया और इस शरई (धर्मानुमोदित) कामको दर्बारी बहादुरों द्वारा पूरा करानेकी सोच रहा था: किन्तु अफसोस, इसी समय खबर मिली, कि लाल सेना और बुखाराके क्रान्तिकारी दोशम्बेके नजदीक आ गये हैं। अमीरको मजबूर हो "अमीर हमदानी" के मज़ार (समाधि)के दर्शनके लिए कूलाबके सफरका निश्चय करना पड़ा।

१६

पगली

(फरवरी १६२१)

रात अँधेरी थी। बर्फ पड़ रही थी। बर्फ और यख मिली कीचड़ दोशम्बेके कूचोंमें आदमियों और घोड़ोंके कमर-कमर तक थी। अमीरकी दुबारा सल्तनतके दरबारियोंमें अब हड़कम्प मची हुई थी। फर्राशों और राजपरिचारकोंसे लेकर सेनापति और स्वयं अमीर तक काम कर रहे थे और बहुमूल्य वस्तुओंको अलगकर बोझ बाँध रहे थे। लेकिन यह सारा काम बड़ी सावधानीसे चुपचाप हो रहा था, जिसमें किसीको पता न लगे। सरकारी खज़ानेके नक़दी और बहुमूल्य वस्तुओंके एक भागको घोड़ोंपर लादकर भेज दिया गया था। अब दूसरी वस्तुएँ बाँधी जा रही थीं। बाहर शहरमें भी हलचल कम न थी। तरह-तरहके

हथियारोंवाले झुंडके झुंड आदमी हिसारसे आकर हर तरफ बिखर रहे थे। ये लूटते ही नहीं थे, बल्कि लूटी चीजोंके बाँटनेमें रास्तेमें इनमें कभी-कभी मारपीट हो जाती थी। जिनके पास अपने साथियोंसे कम चीज होती, वह किसानोंके घरोंकी चीजें लूटकर अपनी कमी पूरा करते थे।

जहादके मैदानसे भगे ढाईसौ बसमाचियों (डाकुओं)की अमीरके पहिले कारवाँसे भेंट हो गई। उन्होंने कहा— "यार घरमें और मैं दुनियामें मारा-मारा फिरूँ", "पानी सुराहीमें और मैं प्यासा मरूँ?"; हम क्यों पहाड़ों-पहाड़ों जंगलों-जंगलों लूटनेके लिये डोलते फिरें? अमीरकी यह बँधी दौलत भगवानकी भेजी हमारे पास पहुँच गई है। इसको हाथमें करना हर तरहकी डकैतीसे बेहतर, और आसान है।

आध घंटेके अंदर इस विचारको कार्यरूपमें परिणत किया गया और "गंदा पानी मोरीमें" कहावतके अनुसार अमीरका माल फरगानाके बसमाचियोंके हाथमें चला गया। इसी समय लालसेनासे हारकर मैदानसे भगा इब्राहीम गल्लू अपने डाकुओंके साथ वहाँ पहुँचा। वह "जुक़ामकी दवा गरम पानी" कहकर फरगानाके बसमाचियोंपर टूट पड़ा और उनसे अमीरका माल छीनकर कोकताश (नीलगिरि) ले गया। इसीसे उसके भविष्यकी "सल्तनत"के खजानेका आरंभ हुआ। उसने "चोरको कमची मारा" कहते प्रसन्नता प्रकट की।

क़ुर्गानके अंदर अब भी काम जारी था। अंतिम भार रवाना करनेके बाद अमीर स्वयं भी घोड़ेपर सवार हुआ। उसने अपने खास सिपाहियों और अफ़ग़ान मददगारोंको "आवाज़ न निकालो, खबरदार रहो, देखो तुम्हारे घोड़े न हिनहिनाये" कहकर ताकीद की।

एक भारी हल्ला हुआ, मानो हजारों आदमी एक साथ चिल्ला रहे हों। उसे सुनकर अमीर पत्थरकी मूर्तिकी तरह बिना सुगबुगाये घोड़ेपर बैठा रहा। हल्ला और नजदीक आता मालूम दिया। मूर्तिमें कुछ जान आती दिखाई पड़ी, किन्तु जीवन और मुक्तिका मार्ग ढूँढ़नेके लिये

नहीं, बल्कि घोड़ेसे जमीनपर आ पड़नेके लिये। इमामकुलने दौड़कर मदद की और बाँह पकड़कर रोकते हुए "डरिये नहीं, अपने लिये जरा भी भय न कीजिये। इन्शा-अल्लाह, दौलत बरकरार है" कहकर तसल्ली दी।

हल्ला करनेवालोंका गिरोह प्रलयकी बाढ़की तरह कुर्गानके समीप आ पहुँचा। उसके आगे-आगे एक स्त्री—जिसके कि बाल पागलोंकी तरह खुले बिखरे चारों तरफ उड़ रहे थे—अगुआ बनकर चिल्ला रही थी :

—न छोड़ो इस डाकूको! न छोड़ो! खूनसे हाथ रंग मुल्कको बर्बाद और हमारी इज्जत-आबरूको पामाल करके यह यहाँसे सुरक्षित भाग जाना चाहता है। न छोड़ो! हमारी भलाई इस मनहूसको गिरिफ़्तार करनेमें ही है...

दूसरे भी न जाने क्या-क्या चिल्ला रहे थे। भीड़ कुर्गान पहुँची। पगलीने "चारों ओर कठघरा लगा दो, कि इस मुदीरको भागनेका रास्ता न मिले" कहकर हुक्म दिया। एक आदमीने किनारेसे आकर "ओय पगली! ओय अहमक! ओय लम्बी चोटी अकल छोटी! कितनी बेशर्म बन गई है? क्यों मुझे बदनाम कर रही है? पीछे जा, नहीं तो अभी तुझे मारता हूँ" कहकर स्त्रीको धमकाया। लेकिन उसने कान न दिया, और फिर भी "न छोड़ो इस डाकूको" दुहरा रही थी।

अमीरकी जमातके एक आदमीने उक्त पुरुषके पास आकर कहा—अलीमर्दां! क्या यह तेरी औरत है? क्यों ऐसी बेशर्म औरतको बीबी बनाई? क्यों इसे घरसे निकलने दिया और वह बलवाइयोंके साथ हो गई! जल्दी कोई उपाय कर नहीं तो सब सत्यानाश होना चाहता है।"

—जब मैंने इसे अपनी बीबी बनाया, उस वक्त बेशर्म नहीं थी, बल्कि दर्वानिहाँकी परमसुन्दरी कन्या थी; इतनी सुन्दरी कि सरेजूयके हाकिमने इसे अपनी बीबी बनाया, लेकिन हाकिमको इसने पसन्द न किया और नितप्रतिके लड़ाई-झगड़ेसे तंग आ तीन मास बाद उसने इसे मुझे

बख्श दिया। मेरे साथ भी वही बात, वही पागलपन शुरू किया। मैंने हाथ और पैर बाँधकर सिर्फ एक बार जबर्दस्ती सम्पर्क किया और इससे एक लड़की पैदा हुई। उसी लड़कीकी खातिर इसे नहीं भगाया। कुछ मास हुए, उस लड़कीको जनाबआलीने स्वीकार किया। तबसे इसका पागलपन और बढ़ गया। और "अमीरको जाकर मार डालूँगी" कहकर घरसे निकली। मैंने पैरोंमें जंजीर डालकर इसे तहखानेमें बंद कर दिया था। मेरी अनुपस्थितिमें आज रातको न जाने कैसे निकलकर बाहर आ गई और इन नंगों-भुक्खड़ोंके साथ मिलकर अमीरके विरुद्ध शोर मचा रही है। इस काममें मेरा तनिक भी अपराध नहीं।

× × ×

अभी अलीमर्दांकी बात समाप्त भी न हो पाई थी, कि अमीरके सिपाहियों और अफगानोंने गोलियाँ दागनी शुरू कर दीं। गोलियोंकी बारिशमें निहत्थे आदमी कैसे ठहर सकते थे? दस मिनटमें सब भाग गये और अमीरके भी भागनेका रास्ता खुल गया। पगली अब भी जमीनपर पड़ी चिल्ला रही थी "न छोड़ो...न छोड़ो...न छोड़ो..."

२०

अवतारी पुरुष

वख्श (वक्षु) नदी के किनारे सरगजाँ गाँवमें कई प्रदेशोंके पाँच सौ आदमी पड़े थे। उनमेंसे एकने कहा :

—जनाबआलीके मुबारकनामा (पत्र)से मालूम होता है, कि हमारे हज़रत अमीर हम्दानीकी ज़ियारत (तीर्थ-दर्शन) और उनके आत्मतेजसे सहायता माँगनेके लिये कूलाब गये हैं, और हमें आज्ञा दे गये हैं, कि लालसेना और बुखाराके क्रान्तिकारियोंका हर तरहसे

मुकाबिला करें। अब आप सब अपने विचार प्रकट करें, कि किस तरह और किस हिकमतसे जनाबआलीकी आज्ञाको पूरा किया जाये।

—शराफ बाय, अब काम हाथसे निकल चुका है। आबाद नगरों और प्रदेशों तथा दुर्गोंको क्रान्तिकारी ले चुके हैं। ऊपरसे बोलशेविकोंने गाँव-गाँवमें आदमी भेज उपदेश-व्याख्यान द्वारा अपनेको भला बतला अमीरको बदनामकर लोगोंको हमारे विरुद्ध बहका दिया है। ऐसी अवस्थामें हमसे क्या हो सकता है? अच्छा यही है, कि इस समय इस काममें हाथ न डालकर अपनेको किसी कोनेमें समेट रखना चाहिये—दूसरे आदमीने कहा।

तीसरेने कहा—जनाबआलीने दुआ करनेवालोंकी कदर न की, सदा मुल्लोंसे अधिक सैनिकोंको माना। यदि सैनिकोंमेंसे सौ अमलदार (अफसर) बनाये, तो मुल्लोंमेंसे मुश्किलसे एकको। यदि सैनिकको बीस तन्खाह देते, तो मुल्लाको मुश्किलसे एक। इस तरह हर काममें मुल्लोंका अपमान शरीयत (धर्म)के अपमानका कारण बना। शरीयतके अपमानको, अऊज़-बिल्लाह, किताबोंमें कुफ्र कहा गया है। परिणाम सामने ही है। अब डटकर इस कामको ठीक करनेके लिये खुदाके रास्तेमें युद्ध करना होगा, और रज़ा-बकज़ा (भगवानकी इच्छा) मानकर अवतारी व्यक्ति के आनेकी प्रतीक्षा करनी चाहिये।

शराफ बायने कहा—ईशान मुफ्ती, दूसरा आदमी जनाबआलीकी भले ही शिकायत करे, किंतु आपको तो कभी न करना चाहिये। आप एक गरीब मुल्ला-बच्चा (विद्यार्थी) थे, पासमें कोई चीज़ न थी। जनाब-आलीने आपको मुफ्ती बनाया, सदूर बनाया, तन्खाह (जागीर) दी, किर्गिज़ों (लर्कै)के परऊ सारे धार्मिक अधिकार दिये। फिर बताइये और क्या करते? क्या अपनी बादशाही आपके हाथमें सौंप देते? आप मुल्ला लोग बात और माल मारनेमें उस्ताद हैं; लेकिन जब कामका समय आता है, तो सीधे कंधा हिलाना जानते हैं। कहावत है "दो स्त्री

एक पुरुषके बराबर, और दो मुल्ला एक स्त्रीके बराबर", जो गलत नहीं है। हम अपने सारे माल-असबाबको छोड़कर मैदानमें आये, किंतु किसीसे गिला और शिकायत नहीं करते। उदाहरणार्थ खुद मेरी करशीमें इलाचाबाफी (कपड़ा बुनने) की एकसौ पचास दूकानें थीं, जिनमें कारीगर और उस्ताद लेकर तीनसौ आदमी काम करते थे। यदि बाग और खेतीके कामको भी ले लें, तो मेरे घरसे चार सौ आदमी भात-रोटी खाते थे। इन सभी चीजोंको इस्लाम और जनाबआलीके रास्तेमें नौछावर करके मैदानमें निकला, और अब भी नीयत रखता हूँ, कि जब-तक शरीरमें प्राण है, इसी राहपर रहूँगा। "काम हाथसे निकल चुका" कहकर निराश होनेकी जरूरत नहीं। यदि मुट्ठीभर बुखारी अमीरके खिलाफ़ बोलशेविकोंसे एक हो बेसिर पैरके भुक्खड़ोंकी भीड़ इकट्ठाकर इतना काम कर सके, और आज प्रायः सारे देशपर प्रभुत्व करते हैं; तो यदि हम लोग मुल्कके सारे महान और ऐश्वर्यशाली व्यक्ति एक मन हो काम करें, तो क्यों जनाबआली—जो तैमूरकी संतान है—को फिर तख्त बुखारापर न बैठा सकेंगे? इसलिये दिलमें कोई शक-शुबहा न करें, और कुलाब चलकर जनाबआलीसे सलाह लेकर काम शुरू करें।

सभाके लोग क़रशीवाले शराफ बायकी बात मानकर कूलाबकी ओर रवाना हो गये।

× × ×

शहर कुलाब मुर्दासा पड़ा था। वहाँ जीवनका कोई चिन्ह न दिखाई पड़ता था। वह कब्रिस्तान था, जहाँसे कोई शब्द नहीं सुनाई पड़ता था। अधिकांश घरोंके द्वार खुले और कारबारकी अधिकांश चीजें जहाँ-तहाँ पड़ी हुई थीं। इस बेजान शहर या नीरव श्मशानमें सिर्फ तीन आदमी दिखलाई पड़ते थे। वह एक कब्रसे दूसरी कब्र जाते कब्रिस्तान-

रक्षकोंकी तरह एक हवेलीसे दूसरी हवेलीमें घूम रहे थे। एक हवेलीमें ताजा मारे गये कुछ मुर्दोंको देखकर एकने कहा—अमीरके आदमी अपना दिमाग इतना खो चुके हैं, कि इन जदीदोंको मारकर इनके मुर्दोंको एक ओर फेंक देना तो अलग, इनके साफे और जामाको भी नहीं उतार सके!

तीनोंने साफे और जामे निकाल मुर्दोंको हवेलीके कोनेमें ले जाकर कुएँमें डाल दिया और हवेलीको जहाँ-तहाँ खोदनेके बाद वह वहाँसे चले गये।

इसी समय शहरमें सवारोंका दूसरा झुंड पहुँचा। वहाँ किसीको न देखकर उनमेंसे एकने कहा—मैंने कहा न, कि काम हाथसे निकल चुका है?

—अफगानिस्तान चलकर वहाँसे काम शुरू करना चाहिये।

—तुम्हारी इस बातसे मैं भी सहमत हूँ, शराफ़ बाय! जो भी हो, आखिर वह इस्लामी देश है।

बातचीत लम्बी नहीं हुई और जब वह शहरसे बाहर निकल रहे थे, उस वक्त मुर्दोंकी हवेलीसे होकर आये तीनों आदमियोंमेंसे एकके हाथमें भारी कुल्हाड़ा देखा। उनमेंसे एकने पुकारा—आ इब्राहीम, चलें अफगानिस्तान।

—मेरा अफगानिस्तानमें क्या काम? अभी चौबीस कार्तूस हाथ आये, यदि एक बंदूक भी हाथ लग जाय, तो बसमाची (डाकू) बन जाऊँ—इब्राहीमने कहा।

—अमीर अपने सारे तोप-तोपखानेसे क्या कर सका, कि इन चौबीस कार्तूसोंसे कर लेगा? अच्छा यही है कि अफगानिस्तान चलें और अवतारी-पुरुषके प्रगट होने तक बाट जोहें या यदि संभव हो तो अंगरेज सरकारसे मदद लेकर लौटें।

—अजब नहीं कि वह "अवतारी पुरुष" खुद मैं ही हूँ, ईशान मुफ्ती!—कहकर इब्राहीम दूसरी हवेलीमें चला गया।

२१

सदाकेलिये हिजरत (प्रयाण)

अमीर बड़े दबदबेके साथ, मानो आर्क बुखारासे चारबाग़ सितार-मुखासा जा रहा हो, चलकर पंज-नदीके किनारे पहुँचा। दरकदके घाटपर एक काले घरमें अँगीठी जला घोड़ोंके झूल और गद्दोंको बिछाकर शयन-स्थान तैयार किया गया था। शयनस्थानपर बैठते ही अमीरने आवाज दी—खज़ान्ची!

इमामकुल अभी अपने लिये सोनेकी व्यवस्था नहीं कर सका था। वह दौड़कर आ "खुश तक्सीर" कहते कमर दोहरी करके आदाब बजा खड़ा हो गया। अमीर दो सेकंड उसकी आँखोंकी ओर देखता रहा, फिर ठंडी साँस लेकर बोला—बेगाना देशमें जा रहे हैं। मालूम नहीं, वहाँ हमारा क्या होवे ?

इमामकुल—मेरे हजरत! चिन्ता न करें। इन्शा-अल्ला, श्रीचरणोंको कोई हानि नहीं पहुँचेगी।

अमीरने अपने सिरको ऊपर नीचे हिलाकर कहा—नहीं, मालूम नहीं, कि वहाँ अपनी रुचिके अनुसार जिन्दगी बसर कर सकूँगा या नहीं। अपने देशकी भूमिमें बीतनेवाले इस अन्तिम समयको गनीमत समझना चाहिये। आज रातको तुम घरके द्वारपर पहरेदार रहो और फैज़ीचा मवेज़फरोशको यहाँ भेजो, कि थोड़ी देरके लिये मैं गमसे बेगम होऊँ। लेकिन, सावधानी रखना। अफगान इस भेदको जान न पायें। काले घरके पास किसीको आने न देना।

इमामकुल तीन बार कोर्निशकर बिना पीठ दिखाये लौटकर घरसे बाहर गया। पाँच मिनट बाद एक गोरा आँख-भौं-व काला सोलह-साला लड़का अमीरके पास पहुँचा।

× × ×

सूर्योदय समीप था, किन्तु अब भी ताजिक पर्वतोंके दक्खिन और पच्छिममें छाये बादलोंने दिनको आने नहीं दिया। अमीरके आदमी नींदसे उठकर नाओंपर भार लदवा रहे थे। इसी समय दूर घोड़ा दौड़ाकर आते कुछ आदमी दिखलाई पड़े। अमीरके वास-स्थानकी रक्षा करनेवाले अफगानोंने आगन्तुकोंपर अपनी बंदूकें सीधी कीं। इमामकुल—जो अब तक अमीरके कमरेके द्वारसे हिला तक न था—दौड़कर रक्षक अफगानोंके पास गया और सवारोंके नजदीक आनेकी प्रतीक्षा करने लगा।

अमीरके भार और अमलदारोंका एक भाग पंजनदी पार कर चुका था। काले बादल भी कुछ कटे-छटे थे और ताजिकिस्तानके क्षितिजपर प्रकाशकी किरणें फैलने लगी थीं। सवारोंका गिरोह भी नजदीक आया। इमामकुलने उन्हें देखकर अफगानोंसे कहा—खातिर जमा रहो, ये अपने ही आदमी हैं।

अफगानोंकी बंदूकें हथेलियोंसे कन्धेपर चढ़ गईं। इमामकुलने आगन्तुकोंके साथ इस तरह पार्श्वालिंगनपूर्वक सलाम और दुआ की और उनके सिर और मुँहको चपचप करके चूमा, मानो अपने बाप या दूरसे लौटे पुत्रसे भेंट हुई हो। भेंटकी रस्म खतम होनेके बाद आनेवालोंमेंसे एकने कहा—मालूम होता है, जनाबआली अब खाक अफगानिस्तानमें तशरीफ ले जाना चाहते हैं। आज तक श्रीचरणोंकी छायामें हम सुखी जीवन बिता रहे थे। इसके बाद अब हम क्या करें? हम आये हैं कि जनाबआलीके भुवनमोहन सौन्दर्यको अपनी आँखोंसे देखें और अपने भविष्यके लिये श्रीचरणोंकी राय लें।

इमामकुल लौटकर अमीरके द्वारपर आया और बिना अंदर गये या पर्दा हटाये बोला—तक्सीर! देशके बड़े-बड़े लोग आये हैं। वह हजरतके जादू करनेवाले दृष्टिपातके पात्र हों, अब उन्हें कैसे रहना चाहिये इसके बारेमें वह श्री सम्मतिको मुक्तावर्धक मधुस्पन्दी श्रीमुखसे सुनें।

अमीर—तुम स्वयं जानते हो, कि इस समय मैं ज्ञान-ध्यान पूजा-पाटमें

लगा हूँ (सहशायीकी तरफ मुँह करके) न घबड़ा फैजीचा ! (फिर बोला) इसलिये मैं अभी उनसे भेंट नहीं कर सकता। लेकिन उनसे कहो कि हम अफगानिस्तान भाग नहीं रहे हैं, बल्कि हिजरत (प्रवास) कर रहे हैं। हिजरत हमारे पैगम्बरकी सुन्नत (सदाचार) है। यदि हमारी बात मानें और अपनी धन-दौलतको अपने हाथमें रखना चाहें, तो सारी चल-सम्पत्ति और रेवड़ों-गल्लोंको हाँके हमारे पीछे अफगानिस्तान आ जायें और सर्वसाधारणमें अफवाह फैलायें कि बोलशेविक सबको कत्ल कर डालते हैं, जिसमें दूसरे भी भाग आयें। पीछे जब साइत मुहूर्त आयेगा, तो हम फिर वापस आयेंगे।

इमामकुलने आकर महानोंको अमीरका संदेश कह सुनाया। जब इमामकुल दुहरा रहा था "हम हिजरत कर रहे हैं...हम फिर आयेंगे" तो एक भार ढोनेवालेने कहा—"इसके बाद इस देशको तू स्वप्नमें ही देखेगा, यह हिजरत सदाकी हिजरत है।"

२२

आतंक

---ऐ लोगो ! तुम कृतघ्न बने, इसलिये सुख-समृद्धि तुम्हें छोड़ गयी और आज तरह-तरहकी आफतोंमें फँस गरीबीकी जिन्दगी काट रहे हो। तुमने जनाबआलीका गुण न जाना और उनके कामोंपर ज़बान चलाते रहे। नहीं समझे कि बादशाहोंका काम समझना आसान नहीं है "सलाहे मम्लकत व मुल्क खुसरवाँ दानन्द" (देश और राज्यकी व्यवस्था राजा ही जानते हैं)। यदि अम्लाकदारोंने तुमसे मालगुजारी माँगी, तो तुम नाराज हो गये; यदि जकातचियोंने धार्मिक जकात ली, तो तुम नाराज हो गये; यदि सरकर्दों (सैनिक अफसरों) और अमलदारों (नागरिक अफसरों) ने अपनी तनखाह (जागीर)की पैदावार...

जिस रात अमीर भागा उसके दूसरे दिन दोशम्बेमें तरह-तरहकी अफवाहें उड़ने लगीं—बोलशेविक, क्रान्तिकारी और रूसी आ रहे हैं। वे सबको मार डालेंगे। वे दुधमुंहे बच्चोंको संगीनोंपर टाँग देते हैं, लोगोंके धन-मालको लूट लेते हैं। जितना जल्दी हो सके भागकर अफ़गानिस्तान चलो या अपने परिवारके साथ ऊँचे पहाड़ोंकी गुफाओंमें जा छिपो।

इन बातोंको सुनकर अधिकांश आदमी भागनेकी फ़िक्रमें पड़े थे, इसी समय एक सरकर्दाने लोगोंके सामने उपरोक्त कृतघ्नतावाला व्याख्यान दिया था। अभी उसका व्याख्यान समाप्त न होने पाया था कि मुल्लाने "ठहरिये, ठहरिये" कहकर उसकी बात काटकर खुद बोलना शुरू किया:

—जैसे पैगम्बर उम्मत (धर्मानुयायी)के बिना, और पीर मुरीदके बिना नहीं हो सकता, इसी तरह हाकिम भी बिना पेश-खिदमत (खिदमतगार छोकरा) और बादशाह बिना मुहरम (राज-परिचारक छोकरा)के नहीं हो सकता। हमारे लोगोंने निर्लज्जतासे काम लिया, यदि हाकिम या जनाबआली अपने लिये पेश-खिदमत या मुहरम-बच्चा रखते, तो उनपर बदचलन कहकर तुहमत लगाते। चाहिये तो यह था, कि यदि कोई दोष भी देखते, तो आँख बन्द करते। किताबोंमें "हम्ल मोमिन बर-सलाह" (सलाहके ऊपर मुसलमानका बोझ) कहा है। हमारे लोगोंने किताबकी बातको पैरों तले रौंदा और अपने गुमान (विचारों)के अनुसार बदनाम करना शुरू किया। कहा है, गुमान ईमानसे अलग करता है, इसलिये ये सारे लोग काफ़िर हो गये, आलिमों (पण्डितों) की इज्जत-हुर्मत करनी छोड़ दी, उनको ईदका सदका (भेंट) कुर्बानीका चमड़ा, इमामत और दूसरी विहित भेंटें समयपर देनी छोड़ दीं, देते भी तो कम देते। इसका ही दंड शिरपर आया...

—तुम, कब्र-जले मुल्लाओंने—कह एक बिखरे बालोंवाली औरतने मुल्लाकी बात काटते कहना शुरू किया—अपने अमीरके हर कामको शरीयतके अनुसार और जनताके हर आन्दोलनको कुफ्र बतलाकर लोगोंको

गदाई, गरीबी, फकीरीके गड्ढेमें गिरा दिया। लोगोंकी इज्जत-आबरूको शरीयतका प्रमाण दे-दे बरबाद कराया। अमीरके भागनेपर अब फिर चाहते हो, कि उसके नामपर...

लोगोंमें खलबली मच गयी और मुल्लाने हाथ उठा स्त्रीकी ओर इशारा करके कहा—"ओ वेहयाओ, फ़ाहिशा! इस बदचलनको शरीयतके अनुसार बोरामें बन्द करके मारना चाहिये"। मुल्ला-बच्चों (विद्यार्थियों) और बाय-बच्चोंमेंसे कुछ औरतकी तरफ दौड़े, लेकिन लोगोंने अपनेको बीचमें डालकर उसके ऊपर हाथ नहीं छोड़ने दिया। मार-मार धर-धरकी आवाज लोगोंमें उठ खड़ी हुई और वे लोग एक दूसरेपर टूट पड़े। इसी समय बन्दूककी "पर्त-पुर्त"की आवाज पहले अलग-अलग, फिर एक साथ ही बहुत सी बन्दूकोंकी आवाज आई और मार-पीट रुक गयी।

"मैंने कहा न था, तुम्हारी कृतघ्नताका यह दंड है। लो बोलशेविक आ गये, जल्दी भागना चाहिये"—सरकर्दाने कहा। फिर मुल्लाने भी "खुदा और उसके रसूलकी बात झूठी नहीं हुआ करती। जनाबआलीके साथ तुमने जो बर्ताव किया, उसीका यह फल है" कहकर लोगोंके अन्दर ग़ायब हो गया और एक घंटा बाद दोशम्बा और उसके इलाकेमें वह आदमी फिर नहीं दिखाई दिया।

× × ×

चन्द बार और सौ दो सौ बन्दूकोंकी एक बार छूटनेकी आवाज आयी। फिर दोशम्बा शहरके दरियाबाद मुहल्लेकी ओरसे हथियारबन्द पाँच सौ सवार आते दिखाई पड़े। उनके हाथोंमें तलवार, भाला, छुरा व खंजरसे लेकर बन्दूक और तमंचा तक तरह-तरहके हथियार थे। अधिकांश आदमियोंके शरीरपर फर्गानाके रूईदार तंग जामें, पैरोंमें बूट और सलवार, शिरोंपर किर्गिजोंकी नम्दावाली टोपियाँ, माथेपर शाही या आल-वानकी रुमालें बँधी थीं। सवार बन्दूकोंको हाथोंमें फायर करनेके लिये तैयार रखे शहरमें दाखिल हो कुर्गान (महल)के सामने आये। उन्होंने

फिर एक बार एक साथ ही सारी बन्दूकें खाली कीं। उनमेंसे एक साफे वाले आदमीने कुन्दर्ली जामा और सुनहले कमरबन्दवाले दूसरे आदमीसे कहा :

—असगर, यह आदमियोंसे खाली और मालसे भरा शहर तेरी भेंट है। तू इब्राहिम गल्लूकी गलतीकी वजहसे हम सबको दोषी न बना।

दूसरेने कहा—मखदूम, हमारे उज्बेक कहते हैं—"क़ार निम ओच्चूँ पी ग़ल्म मन, क़दरिम ओचूँ पी ग़ले मन" (चीजके लिये नहीं बल्कि इज्जतके लिये मैं रोता हूँ)। यद्यपि मैं कारी शेरमतके नीचे हूँ, लेकिन आधे फर्ग़ानाको हाथमें कर मैं स्वयं ख़ान (बादशाह) और स्वयं ही बेक (गवर्नर) हूँ। मैं अपनी सारी इज्जत-हुर्मत और शान-शौकतको छोड़कर तेरी बात मान जेहादकी नीयतसे अमीरकी मदद करने आया। तेरा इब्राहिम गल्लू हमारी मेहमानी क्या करेगा, उसने हमारी बेइज्जती की।

—मैं फिर कहता हूँ, कि एक इब्राहिम गल्लूके गुनाहको हम सबके ऊपर न डाल। जनाबआलीने तेरी बड़ी इज्जत की। तुझे एशिक-अक़ा-बाशीका दर्जा, कुन्दली जामा और सुनहरा कमरबन्द बख़शा, जिसके लिये कि दरबारमें सालों सेवा करनी पड़ती। यदि बात करनी है, तो बात यह है—कुर्गान (महल)से लेकर ग़रीबोंके झोंपड़े तक धन-मालसे भरे हैं, जो चाहे ले ले। यदि इससे भी सन्तोष नहीं होता, तो दोशम्बा तक सारे इलाकेका घोड़ोंका गल्ला, भेड़ोंका रेवड़ या घरका माल-असबाब, जो चाहे सब तेरा माल है। इस प्रदेशमें कौन है, कि इन बन्दूकोंके सामने मेरे और तेरे रास्तेमें बाधा डाले। गर्ममें ख़ुद मेरा घर है। वहाँ मेरी बात और फ़र्मानको कोई नहीं टाल सकता। वहाँ दुधमुँहे बच्चोंको भी "फ़ुजैल मख़दूम आया" कहकर डराने पर वह रोना छोड़ देते हैं। वहाँ तुझे चन्द रोज अपना मेहमान बनाऊँगा। तेरी ख़ातिर-बात करूँगा। जब ख़ातिर-बातसे पेट भर जायगा तो तुझे फरग़ाना भेज दूँगा।

अभी इन दोनों सरदारोंकी गिला-शिकायत और उज्रु-माज़ुर खतम न हो पाया था, कि पाँच सवार घोड़ा दौड़ाते आ पहुँचे और "जल्दी करो, लाल सेना और क्रान्तिकारी हिसारसे इस ओर आ रहे हैं"—कहकर उन्होंने हलचल डाल दी।

कुछ घंटों बाद बोलशेविकोंकी लालसेना और अर्दाद दोशम्बा आ पहुँचे। उनके साथ वायसूनसे हिसार तकके स्वेच्छा-सेवक भी थे। इस वक्त शहरमें न कोई आदमी था न कोई चीज़। कुर्गान, लोगोंकी हवेलियाँ, सरायें और दूकानें ऐसी खाली पड़ी थीं, जैसे झाड़ू देकर वहाँकी एक-एक चीज़को चुन लिया गया हो।

२३

मीटिंग

शहर दोशम्बामें महोत्सव जैसी चहल-पहल थी। तरह-तरहके आदमियोंसे भरे कूचोंमें चलना मुश्किल था। हवेलियोंके अतिरिक्त दूरके गाँव और दीहातसे तमाशा देखनेके लिये आये लोग भी ठहरे हुए थे। वस्तुतः पूर्वीबुखारा (अब ताजिकिस्तान)के सभी किसानों-चरवाहों सभी कमकरोंके लिये आज महोत्सव था। यह वह महोत्सव था, जब कि अमीर और अमीरीकी सालोंकी सड़ी ज़ालिम हकूमतको खतमकर दुनियाके नवीनतम राजनीतिक सिद्धान्तपर अवलम्बित सरकार अर्थात् प्रजातन्त्र सरकारने उसका स्थान ग्रहण किया था। आज प्रेम और भ्रातृभावका नया दिन था, जो इस बातका शुभ-सन्देश दे रहा था, कि अब अमीर और अमीरीके सारे आतङ्क और पाशविकता सदाके लिये समाप्त हो गये और सुख-समृद्धिका भविष्य आरम्भ हो गया। फटे लिबास और घासके जूतेवाले ताजिक, और यूरोपी पोशाक, टोपी और बूट पहने रूसी एक दूसरेसे गले मिल रहे थे। गाँवका एक किसान गदहे पर गेहूँ लादकर लाया था। वह उसके बदले चीनी, चाय और पैसा पाकर अपने गाँवके

दूसरे आदमीसे कह रहा था—अमीरके आदमी और मुल्ला कहते थे, कि बोलशेविक सबको मार डालते हैं, लूट लेते हैं। वह सब झूठ है। मुझे जिन्दगीमें याद नहीं, कि किसान हकूमतके दरवाजेपर अनाज लेकर आये हों और उसके बदलेमें कोई चीज मिली हो। आज मैं एक बोरा गेहूँ लाया था, उसके बदलेमें चीजें भी पायीं और नगद भी।

—मैं भी भेड़ लाया था और मुझे उसके बदलेमें चीजें और पैसे मिले। सब किसानोंको खबर देनी चाहिये, कि खर्चसे ज्यादा गल्लाको शहरमें ले आयें और उसके बदलेमें आवश्यक चीजें ले जायें। अगर हम इस तरह करने लग जायँ तो उन बर्बाद जगहोंको फिर आबाद कर देंगे जिन्हें अमीर और उसके डाकुओंने नष्ट किया और घरके माल-असबाबको लूट ले गये।

—अवश्य ऐसा करना चाहिये—कहकर दूसरेने जवाब दिया।

"आइये मीटिङ्ग आरम्भ हुई, मीटिङ्ग!" कहकर एक बुखारीने लोगोंको आवाज़ दी।

—मीटिङ्ग क्या चीज होती है—एक ताजिकने पूछा।

—हकूमतें लोगोंको एक जगह जमा करके उपदेश करती हैं और बतलाती हैं कि प्रजातन्त्र सरकार क्या है, इसीको मीटिङ्ग कहते हैं—कहकर बुखारीने जवाब दिया।

"आइये चलें," "हाँ चलें" कहते लोगोंने आध घंटाके अन्दर दोशम्बाके बाजारवाले मैदानको भर दिया। एक जदीदने मंचपर आकर कहा—भाइयो! मीटिङ्ग आरम्भ होती है। मैं वकील-मुखतारको व्याख्यान देनेके लिये प्रार्थना करता हूँ।

वकील-मुखतार अभी मंच पर नहीं पहुँच पाये थे, कि तालियोंकी आवाजसे आसमान गूँज उठा। एक पीले-मुँह कम-खून मैले रंग वाला, लम्बा आदमी मंचपर पहुँचा। ताली दुबारा बजने लगी। वकील-मुखतारने दुबारा कहना शुरू किया। भाइयो! इन्तुखीन (इस तरह)

हमने लालसेनाकी सहायतासे अमीरको भगाया। इन्तुखीन, इसके बाद यह सरकार जनताकी सरकार है। इस सरकारमें अमीरके पिट्ठुओंके लिये इन्तुखीन जगह नहीं है...

खड़े लोगोंमेंसे एकने किसीकी ओर इशारा करके दूसरेसे कहा—इसको पहचानते हो।

—क्यों नहीं पहचानता हूँ, अब्दुर्रहमान मिंगबाशी है?

—वह यहाँ क्या करता है?

—अब भी महान (कलाँ) आदमी है।।खुराक-मन्त्री है। मैंने इसे गेहूँ दिया था। इसने चाहा कि मुझे चीज-माल दिये बिना हटा दे। मैं लड़ पड़ा। उसी वक्त एक बुखारी आ गया। उसने इसे डाँटकर मुझे पैसे और चीजें दिलवाईं। इसकी हक्की-बक्की बन्द हो गयी थी और उससे कुछ न बोल सका। यदि अमीरका जमाना होता, तो क्या करता, जानते हो न?

—लेकिन, क्या यह अमीरका पक्षपाती नहीं है? फिर कैसे इसे इस सरकारमें जगह मिली?

—मैं क्या जानूँ, बड़े जानें।

वकील-मुख्तार भाषण जारी रखते बोल रहा था—अमीरकी हुकूमतके जमानेमें उसके अमलदार इन्तुखीन लोगोंपर जुल्म करते थे। उन्हें इन्तुखीन सख्त सजा दी जायगी...

फिर उन दोनों आदमियोंमेंसे एकने आँखे मिंगबाशीकी ओर और कानोंको वकील-मुख्तारकी ओर लगाये अपने साथीसे कहा—देखो वकील-मुख्तारकी इस बातसे मिंगबाशीका रंग उतर गया है।

—रंग क्यों न उतर जाय, अमीरके वक्त इसने कम जुल्म नहीं किया। खासकर इन पिछले पाँच महीनोंमें—जब कि अमीर यहाँ था—इसने उसके पाँच हजार फौजियों और दरबारियोंका पेट ग़रीबोंके खूनसे भरता रहा। लोगोंके घरोंमें एक दिनका भी भोजन न छोड़ उन्हें खिलाता रहा। अपने कियेके लिये, क्यों न भय खाये?

वकील-मुख़्तार कह रहा था—हम इन्तुखीन उन अमलदारोंके साथ अच्छा बर्ताव करेंगे और वेतन-पारिश्रमिक भी देंगे, जो कि सच्चे दिलसे सेवा करेंगे।

वकीलकी इस बातको सुनकर अब्दुर्रहमानके चेहरेपर थोड़ा खून दौड़ गया, लेकिन शिर नीचा करके वह फिर विचारोंमें डूब गया, जिससे जान पड़ता था, कि अब भी उसके मनको विश्वास नहीं।

वकील-मुख़्तार व्याख्यान समाप्तकर तालियोंकी गूंजमें मंचसे उतरे। फिर एकके बाद एक कई बुखारियोंने मंचपर जा प्राय: उसी विषयपर व्याख्यान दिया। मीटिङ्गके अन्तमें फटे फरंजा (बुर्का) को ओढ़े एक बिखरे बालोंवाली स्त्री मंच पर आई। व्याख्यान देते-देते बीचमें जोशमें आकर उसने फ़रंजाको शिरसे उतारकर फेंक दिया। सभामें असाधारण हलचल मच गयी। एक आदमीने कहा—यह वही पगली औरत है जो कुछ दिन पहले यहाँ दिखाई पड़ी थी। दूसरेने कहा—यह अमीरी जमानेकी अत्याचार-पीड़िता है, खुशी किसे कहते हैं इसका नाम भी इसे नहीं मालूम।

सचमुच बिखरे बालोंवाली औरत नहीं जानती थी, कि वह क्या कह रही है: "भाइयो! मैं शुक्र करती हूँ कि...भाइयो! मैं बधाई देती हूँ..." कहते किसी बातको पूरा किये बिना बोल रही थी। जिस समय उसने फरंजा फेंका, उस समय श्रोताओंमेंसे एक दाढ़ी-मूँछ-विहीन आदमी उसकी ओर गौरसे देखने लगा। अन्तमें उठकर धीरे-धीरे लोगोंके बीचसे होके मंचके पास पहुँचा और एक बार फिर ध्यानसे देखकर बोल उठा—आह, गुलनार! तू यहाँ!!

इस बातको सुनकर औरत एक सेकेण्डके लिये बिना बोले पूछने वालेकी तरफ देखती रही। फिर एकाएक "वाह, तू मेरा यादगार!" कहकर मंचसे कूदी। यदि पूछनेवालेने उसे हाथसे थामकर बगलमें न ले लिया होता, तो वह जमीनपर गिरकर अपने एकाध अंगको तुड़ाये बिना न रहती।

चतुर्थ खण्ड

डाकुओंका राज

१९२०-२६

१

कारतूसोंवाला आदमी

अर्बाब नासिरकी सराय देरसे आनेजानेवालोंसे सूनी थी। कूलाब और बल्जुवानके हाकिमोंके बीसों सिपाहियोंकी पेट-पूर्तिके लिये जो हण्डे हर रात गरम हुआ करते थे, आजकल उन्होंने आगका मुँह तक न देखा। अर्बाब अपनी बीबीके साथ बैठा दुनियाका रोना रो रहा था। इसी समय किसीने दरवाजा खटखटाया। अर्बाब बड़ी निराशाके साथ उठते "क्या फिर कोई बोलशेविक सूखा-हाथ आया" कहते धीरे-धीरे दरवाजापर पहुँचकर बोला—कौन ?

—मित्र, खोल !

दरवाजा खोलनेपर एक सवार अन्दर आया। उसके कण्ठमें कारतूसोंकी माला थी। अर्बाब नासिरने जैसे ही इस आदमीको देखा, पहलेकी निराशा छोड़कर बड़ी गरमा-गरम अगवानी की और कुशल-मंगल पूछा।

उसके घोड़ेको ले जाकर साईसखानामें बाँध दिया, फिर सवारको मेहमानखाना (बैठक)में ला बुखारी (हँकी अँगीठी)में आग जलाई। मकान गरम होने तक चाय और दस्तरखान भी पहुँच गया। कारतूसोंवाले आदमीने अपनी जेबसे पाँच बुखारी तंका देते हुए कहा "अर्बाब, मैं एक घंटे तक तेरा मेहमान हूँ। जल्दीसे एक थाल आश तैयार कर।"

अर्बाबने पहले हवेलीमें जा बीबीको आश (मांसवाली खिचड़ी) पकानेके लिये कहा, फिर आकर मेहमानके पास बैठ गया। घरमें नीरवता छाई हुई थी।

देवदारकी लकड़ीके जलनेकी सरसराहटके सिवा वहाँ कोई शब्द सुनाई नहीं देता था। लेकिन यह नीरवता देर तक न रही और मेहमानने आगकी ज्वालाके सामने अपनी कथा आरम्भ करनेसे पहले पूछा—अबीब, बतला आज-कल तेरी हालत कैसी है?

—कैसी कहूँ? जनाबआलीके साथ हमारे यहाँसे "खैरियत और बरक्कत" भी चली गयी। जब हमारा देश मुसलमानाबाद था, उस जमानेमें किसी रात मेरी सराय मेहमानोंसे खाली नहीं रहती थी। यदि हाकिम या अमलदार मेहमान होते, तो मामूली खरच देनेके अतिरिक्त मुझे जामा भी पहनाते। उनके नौकर और न होता, तो भेड़ मारकर एक भाग खुद खाते और दूसरा भाग मेरे लिये छोड़ जाते। क्या कहूँ, उस जमानेमें शेरके किये हुए शिकारसे पेट-पूर्ति करनेवाले गीदड़की भाँति मेरी जिन्दगी थी और किसी चीजकी चिन्ता न थी।

—और अब?

—अब कभी पन्द्रह-बीस दिनतक भी मेरी सराय मेहमानका मुँह नहीं देखती। यदि कोई बोलशेविक आ भी गया, तो अपना खाना अपने साथ लाता है। यदि किसी चीजको लेता भी है, तो हिसाब करता है और एक-एक पैसाको कागजपर लिखवाकर देता है।

—कोई हरज नहीं, यह भी दिन बीत जायेंगे और दुनिया फिर दुनिया बनेगी। जनाबआली चले गये हैं, किन्तु हम उनके दीपकको बुझने नहीं देंगे। सिर्फ बे-हथियारीने कामको कुछ पीछे कर रखा है। अगर एक बन्दूक पाता, तो इन कारतूसोंका काम चल जाता और उसी दिन मैं स्वयं काम शुरू कर देता। एक क़जाक़ने मुझे यह कारतूस और एक बन्दूक दी, लेकिन सिर्फ एकसे काम आगे नहीं बढ़ सकता, और अच्छा काम करनेके लिये ग्यारह गोलियोंवाली नहीं तो पाँच गोलियोंवाली बन्दूक चाहिये।

अबीबने शिरको दाहिने बाँये घुमाते अपनी असहमति प्रकट करते हुए कहा—बन्दूक मिलनेपर भी अकेले तुमसे क्या हो सकेगा? "बेउम्मत

(वे अनुयायी)के पैगम्बर''की तरह पर्वत-पर्वत, बयावान-बयावानमें भटक रहे हो, यदि शिकार मिला तो कुछ भेड़ों और बकरियोंको हाथ लगा लिया। किन्तु ऐसे कामोंसे देशको मुसलमानाबाद नहीं बनाया जा सकता।

—अबीब!—कारतूसवाले आदमीने गरम होकर कहा—तू इस कामका आदमी नहीं है। तू सिर्फ इतना ही जानता है कि दो तंका खर्चकर एक थाल आश दे मुसाफिरसे पाँच तंका लेये और किसानको सौ तंका दे साल भर बाद डेढ़सौ तंका वसूल करे। तू आदमीको नहीं पहचानता। यदि एक अच्छी बन्दूक हाथ आ जाय, तो मैं इन चौबीस कारतूसोंसे दूसरी चौबीस बन्दूकें अपने हाथमें कर सकता हूँ। तू दुनियासे बेख़बर है। तूने सुना है कि अब्दुर्रहमान-मिंगबाशी बोलशेविकोंका खुराक-अफसर बना है या कि दौलतमन्दबी वलजुवानकी रेवकम (रिवोल्यूश्नरी कमीटी—क्रान्तिसमिति)में है। क्या समझता है, ये सारे बोलशेविकोंके भक्त बन उनपर प्राण न्योछावर करने गये हैं? विश्वास रख, इनमेंसे कोई भी अमीरी जमानाके शान व शौकतको भूल नहीं सकता। एक आवाज़ भी यदि उस तरफसे आई, तो "लब्बैक" कहकर सबसे पहले ये मदद देनेको आगे बढ़ेंगे। हमारे सौभाग्यसे जदीदोंने "हमने अब्दुर्रहमानको खुराक़ अफसर और दौलतमन्दबीको क्रान्ति-समितिका अध्यक्ष बनाया" कहकर न केवल इनपर बल्कि सारे पुराने अमलदारोंपर विश्वास प्रकट किया। रूसियोंको इस देशसे जानकारी नहीं है। वे नहीं जानते कि यहाँ क्या हो रहा है। यह अवस्था हमारे लिये बहुत आशाप्रद है।

आश तैयार हुआ। कारतूसोंवाला आदमी आश खाकर अबीब-नासिरसे "खुश रहो" कहकर उठा। जब वह अपने घोड़ेपर सवार हुआ तो अबीबने पूछा—इस वक्त तुम्हारा क़ूशखाना (अस्त्रभवन) कहाँ है?

—अब्दुलक़यूमजीकी हवेलीमें—कहकर वह दनगरा गाँवकी ओर घोड़ा दौड़ाते चला गया।

२

शैतान

आदमियोंसे भरा एक मेहमानखाना था। लोग दम-पर-दम हुक्का और प्याला-पर-प्याला चाय पी रहे थे। मेहमानखानेमें प्रथम स्थानपर बैठे आदमीने कहा—जनाबआलीके तग़ाई (एजेन्ट) सईदवेकने चिट्ठी-पत्री देकर फैज़ाबादकी तरफके महानों (नम्बरदारों)को तैयार कर दिया है। उन्होंने मिलकर एक-एक दो-दो करके हिसारकी तरफके दूसरे अमलदारोंको भी काम करनेके लिये तैयार कर लिया है। अब कूलाब और बलजुवानके महान बाकी हैं; उन्हें तुम तैयार करो—उसने यह बात नीचेकी तरफ बैठे आदमीसे कही।

आदमीने जवाब दिया—शैतानने एक अविवाहित आदमीको स्त्रीसे सम्पर्क करनेके लिये बहकाया, लेकिन स्त्री नहीं मिल रही थी। शैतान फिर-फिर उकसा रहा था। इसपर अविवाहित आदमीने तंग आकर शैतानसे कहा, मैं हर कामके लिये तैयार हूँ, मुझे उकसानेकी जरूरत नहीं; तू सिर्फ एक औरत लाके दे दे। इसी तरह शैतान सईदबेगको पत्र लिखना चाहिये, कि हमें उकसानेकी आवश्यकता नहीं, यदि हथियार हाथमें आये, तो हम अपना जौहर दिखला देंगे।

दूसरे आदमीने कहा—यदि हथियार हो, तो औरत भी मिल सकती है न!

इस पर सब आदमी उसकी समझपर ठहाका लगाकर हँस पड़े।

इसी समय एक फ़रंजावाली औरत दरवाजामें आ नीचेकी ओर बैठे आदमीको इशारासे बुलाकर बाहर ले गयी।

—हथियार न हो तो भी औरत मिल सकती है—किसीने कहा और एक बार फिर ठहाका लगा।

बाहर गये आदमीने अन्दर आकर प्रथम स्थानपर बैठे आदमीसे कहा—इब्राहीम! इस औरतका तुमसे काम है।

इब्राहीम बाहर जा पाँच मिनट बाद घरके अन्दर आकर बोला—सचमुच इस औरतको शैतानने मेरे पास भेजा है। तैयार हो जाओ, आज रात एक भाग्य-परीक्षा करनी है।

सभी जामा पहन कमर बाँध तैयार हो गये। इब्राहीमने "बी! साफ करके रखी कज़ाकवाली बन्दूकको ले आ, आज काम आयगी" कहकर कारतूसोंकी मालाको ताखसे उठा गर्दनमें डाल लिया। गृहपतिने,—जिसे कि इब्राहीमने "बी" कहकर सम्बोधन किया था—कुछ कारतूसोंके साथ बन्दूक को लाकर उसके हाथमें देते हुए कहा "मिट्टीमें दबी रहनेसे बहुत मुर्चा खा गयी थी। तेल डालकर बहुत गज चलाये तो भी अच्छी तरह साफ नहीं हुई।"

—हरज नहीं—बन्दूकको हाथमें लेते इब्राहीमने कहा—एक दो बार फैर करूँगा आप ही साफ हो जायगी।

इब्राहीम आगे-आगे और दूसरे उसके पीछे-पीछे चलकर रास्तेपर पहुँचे। हवेलीसे बाहर निकलते वक्त इब्राहीमने कह दिया—बी, एक मोटी भेड़ मारकर यख़नी तैयार कराके रखना, बहुत सम्भव है कल हमें मुहिमपर जानेकी जरूरत पड़े।

लोग वहाँ पहुँचकर आध घंटा नासिरके दरवाजेपर बिना आवाज दिये या दरवाजा खटखटाये खड़े रहे। फिर अबीब आया। इब्राहीम ने पूछा—हालत कैसी है?

—बुरी नहीं है। चार सैनिक सरायमें आये। देखा कि वे पेटसे भूखे और थके-माँदे हैं। जल्दी उनके लिए खाना तैयार करा बीबीको

तुम्हारे पास भेजा, इस वक्त वे सारे नींदमें मुर्दा पड़े हैं, यदि काम करना है तो यही समय है।

—तेरे पास रस्सियाँ हैं ?

—चार रस्सियाँ तैयार कर रखी हैं।

"बहुत अच्छा, रस्सियोंको इनके हाथमें दे" कह अपने आदमियोंकी तरफ इशारा करके इब्राहीमने उनके हाथोंमें रस्सियाँ दिलवाईं और स्वयं बन्दूक ले उनके पीछे-पीछे मेहमानखानाके द्वारपर पहुँचा। सोनेवालोंके खर्राटेके सिवा वहाँ कोई आवाज सुनाई नहीं देती थी। इब्राहीम और उसके साथी हल्के पाँव मेहमानखानाके अन्दर दाखिल हुए और तुरन्त चार हिस्सोंमें बँट सैनिकोंपर टूट पड़े। खबरदार होनेसे पहले ही उनके हाथ-पैर बाँधे जा चुके थे और सिरहाने रखी उनकी चारों बन्दूकें दुश्मनोंके हाथ में थीं। इब्राहीमने एकएक बन्दूकको देखा। एकमें उसका अपना कारतूस ठीक आ रहा था। उसने "शैतानने बहुत अच्छे समयमें मदद दी" कहकर उस बन्दूकको अपने गलेसे लटका लिया और बाकीको बगलमें दावे मकानसे बाहर आया। साथियोंके भी बाहर आ जानेपर "असदुल्ला इसे तू ले, शाहमर्दा क़ुल यह तेरी चीज हैं, तग़ाई सरिक यह तेरे लिये है" कहते बाकी तीनों बन्दूकोंको अपने तीन साथियोंमें बाँट दिया।

असदुल्ला—लेकिन इनको क्या जिन्दा ही छोड़ चलें ?

—हाँ—इब्राहीमने कहा—अगर इनकी जानको नुकसान पहुँचायेंगे तो हम अरबाब नासिर और दौलतमन्दवी रेवक्मूको भी सन्दिग्ध बना देंगे। यही नहीं हम लोगोंको अरबाबके घरकी कुछ चीजें भी बाँधकर ले चलनी चाहिये, जिसमें इस घटनाके बारेमें पूछनेपर चोरोंके आनेका बहाना किया जा सके।

यह तदबीर अरबाबको भी पसन्द आई और उसके घरसे दो-तीन बोकचा बाँधकर इब्राहीमके साथी चल दिये। उनके चले जाने पर

अरबाबने "चोर चोर, मेरे घरको लूट ले गये" कहकर कई बार हल्ला मचाया। फिर अन्दर आकर सैनिकोंका हाथ-पैर खोल उनकी हालतपर अफसोस करते उन्हें बल्जुवानकी ओर भेज दिया।

३

प्रारम्भ

इब्राहीम अपने आदमियोंके साथ अब्दुलक़यूम बीकी हवेलीमें यख़नी खाकर बैठा हुआ था। इसी समय दरवाज़से एक सवार आया। इब्राहीमने सवारसे पूछा—क्या कर आया है?

—सैनिकोंके बल्जुवान पहुँचनेसे पहले ही मैंने वहाँ जा दौलतमन्द बीसे मिलकर सब काम पक्का कर दिया। यदि रूसी हमारे पीछे सैनिक भेजेंगे तो दौलतमन्दबी—जो कि उनका पथ-प्रदर्शक है—उन्हें सरसरक पर्वतमें पहुँचा देगा। हमें जल्द वहाँ पहुँचकर मौकेकी ताकमें रहना चाहिए।

× × ×

सौ लाल-सैनिक आ रहे थे। एक बल्जुवानी आगे आगे चलते उनका पथ-प्रदर्शन कर रहा था। लाल-सैनिकोंने शामतक पहाड़ोंको छान मारा लेकिन दुश्मनका कोई पता न लगा। शाम होनेपर सैनिकोंने लौटना चाहा, किन्तु पथ-प्रदर्शकने कहा—"सरसरक पर्वतको भी देख लेना चाहिए।" सरसरक पहुँचने तक चारों ओर अँधेरा छा गया था तो भी हिम्मतवाले लाल सैनिक पहाड़पर चढ़ने लगे। थोड़ी ही दूर ऊपर जानेपर पाँच बन्दूकें एक साथ खाली हुईं और उसके बाद भी लगातार बन्दूकोंकी आवाज आने लगी। सैनिक पीछे लौट पड़े।

लालसैनिकोंके घोड़ोंके पैरोंकी आवाज दूर सुनाई देने लगीं, तब कुछ आदमियोंने पहाड़से नीचे उतर वहाँ पाँच मुर्दे और पाँच गोलियों

वाली पाँच बन्दूकें पायीं। बन्दूकों और मुर्दोंकी पोशाकको ले वे पहाड़के नीचे उतरने लगे। चन्द कदम आगे उन्होंने एक मुसलमानके मुर्देको पाया। उसे देखकर इब्राहीमने कहा—सैनिकोंको धोखेका पता लग गया और उन्होंने अपने पथ-प्रदर्शकको भी मार डाला। अब हमें यहाँसे दूसरी जगह चल देना चाहिये—और वह अपने साथियोंको लेकर तबक़चीकी ओर चला गया।

× × ×

अब काम शुरू कर देना चाहिये—अब्दुल क़यूमबीने दौलतमन्दबीसे कहा—कलकी घटनासे अवश्य बोलशेविक तुमपर सन्देह करने लगे होंगे। यदि हम चुप रहेंगे तो शायद बड़ी सेना आकर प्रदेशपर जबर्दस्ती अधिकार जमा ले और तुमको निकालकर तुम्हारी जगह अपने आदमीको रखे। फिर हमारे लिये काम करना कठिन हो जायगा।

—तुम्हारा कहना ठीक है, किन्तु यदि रेव्-कम् (क्रान्ति-समिति)में कुछ समय और काम करनेका मौका मिले तो अच्छा है।

—अच्छा होता ठीक है, लेकिन मुझे आशा नहीं है कि वे तुम्हें और निश्चिन्त हो काम करने देंगे। इसलिये सब ख्यालोंको छोड़ मैदानमें आ जाओ। देखा नहीं, फ़ुज़ैल और ईशान सुलतान कितने ही समय तक हाकिमी करते रहे, लेकिन अब फ़ुज़ैलने गर्मको और ईशान सुलतानने दर्वाज़को अपनी चीज बना ली।

—हथियारोंकी कमी है, इसलिये किसी तरह कुछ और हथियार हाथमें करना चाहिये। फिर कामको आगे बढ़ाना अधिक आसान होगा।

—अधिक हथियार भी मैदानमें सीधे उतरनेपर ही हाथ लग सकते हैं। तू बिलायत (सूबा)का हाकिम बन और मैं तेरा नायब, और इब्राहीमको सेनापति बना अपनी हुकूमत कायम करें। हमारे पास जो हथियार हैं, वह लोगोंसे पैसा लेनेके लिये काफ़ी हैं। कुछ पैसा ख़ानाबादमें

जनाबआलीके तग़ाई (एजेण्ट)के पास भेज देंगे और तीन दिनमें हमारे पास हथियार आ जायगा।

—अफसोस, इब्राहीमकी अदूरदर्शिताने काम खराब कर दिया, नहीं तो भीतर रहकर हम बहुत काम कर सकते थे। नहीं देखा, इस्माइल दीवानबेगीने बोलशेविकोंके साथ भक्ति प्रदर्शित कर क्या-क्या काम किये। शहरसब्ज जैसे प्रदेशको—जहाँके लोगोंने स्वयं बोलशेविक सेनाकी अगवानीकर तुरा (राजकुमार)को गिरफ्तारकर प्रदेशको बोल-शेविकोंके हाथमें सौंपा था—उलट-पुलट दिया और शहर-सब्ज प्रदेश पर ऐसी जबर्दस्त चोट लगाके निकल गया कि आज भी उसे सम्हालना मुश्किल है।

—दौलतमन्द, अगर-मगरको छोड़, यदि जनाबआली न भागे होते, यदि तुम्हें कूलाब और मुझे बल्जुवानका हाकिम न बनाया होता, तो बहुत अच्छा होता; लेकिन वह नहीं हुआ। बीती बातोंको यादकर अफसोस करनेसे कुछ लाभ नहीं, हमें भविष्यकी चिन्ता करनी चाहिये।

—लेकिन इब्राहीम एक मोट-गरदनियाँ एक-बग्गा स्वार्थी आदमी है, वह चाहता है कि देशमें स्वयं महान बने। नहीं मालूम वह हमारी रखी कौल-करारपर राजी होगा नहीं।

—मैं उसे राजी करूँगा। वह खुद जानता है, कि मुल्कमें उसकी इज्जत नहीं है। हर एक आदमी उसे "इब्राहीम गल्लू डाकू" कहता है। बाय लोग भी उसे महान बनानेपर राजी नहीं। वे डरते हैं कि इब्राहीम खुद हमारे मालको लूटेगा। तू इब्राहीमको अपनी बहिन दे रहा है, यही इज्जत उसके लिए काफी है। सुबेदारका दामाद और राज्यका सेनापति होना यह पद उसके लिए बड़ा है।

—अच्छा जाओ, इब्राहीमको इस बातपर राजीकर कौल-करार बाँधकर उसे ले आओ।

४

मित्रता

बल्जुवान बिलायत (सूबा)के गाँव खोजा बल्जुवानमें भारी जलसा हो रहा था। भेड़ोंको मार पाँतोंसे रखकर देगोंमें तरह-तरहके आश और दूसरे खाने पकाये जा रहे थे। एक ओर प्रदेशके महान लोग—मुल्ला, ईशान, सरकर्दा (सैनिक अफसर) और अमलदार (नागरिक अफसर) वकील-मुखतारका भाई (जो कि भाईके बुखारा जानेपर उसका स्थानापन्न था—के सामने पातितजानु बैठे तकसीरकशी (हाँजी हाँजी भरना) हो रही थी। दूसरी ओर सुरैया आफ़न्दी मेहमानोंके खातिर राष्ट्रीय सेनाकी परेडका प्रदर्शन कराते जलसाकी शान-शौकतको दुगुना कर रहे थे।

दावतके खतम होनेके बाद दौलतमन्दबी, अब्दुलकयूमबी और अब्दुश्शकूरको—जिनके लिये कि यह दावत दी गई थी—सुनहले जामों, नसली घोड़ों और भारी रकमकी भेंट दी गई। दूसरे महान लोग भी अमीरी जमानेके अपने पदोंके अनुसार स्थानापन्न वकील-मुखतारकी ओरसे पारितोषिक पाये। सभी प्रसन्न और कृतज्ञ थे।

मजलिससे दूर एक कोनेमें स्थानापन्न वकील-मुख़तारके घोड़ोंके बाँधनेकी जगह उकड़ूँ बैठा केवल दाखुन्दा ही एकमात्र ऐसा आदमी था, जिसके मुँहपर प्रसन्नताकी रेखा न थी। वह मजलिसके जिन्दाबादके नारों और तालियोंकी गूँजको मानो बिल्कुल देख-सुन न रहा था और अपने माथेको जाँघपर रखे किसी खयालमें डूबा हुआ था।

"हाँ दाखुन्दा!" कहकर एक बुख़ारीने उसे नींदसे जगातेकी तरह परिहास किया—"फिर तेरे शिरमें क्या खयाल आया, अब भी सोच रहा है कि देश बसमाचियों (डाकुओं)के जूतोंके नीचे रौंदा जा रहा है!"

—अब क्या हुआ है ?—कहकर दाखुन्दाने आश्चर्य भी किया और प्रश्न भी।

—सुलह हो गयी।

—किसके साथ सुलह हो गयी ? बसमाचियोंके साथ !

—चाहे बसमाची नाम रखो, चाहे कुलाब और बल्जुवानके महान, जो भी कहो उनके साथ सुलह हो गयी।

—मेरी समझमें सुलह नहीं हो सकती, यदि भेड़िया और भेड़ोंके बीच सुलह होना सम्भव है, तो हमारे और बसमाचियोंके बीच भी सुलह हो सकती है।

—स्थानापन्न वकील मुख्तारने ऐसा काम किया कि भेड़िया भी सन्तुष्ट और भेड़ भी।

यह बात मेरी समझमें नहीं आ सकती।

—ठीक कहता है। तू एक अनपढ़ अशिक्षित आदमी है। किसी बातको कैसे समझ सकता है ? यह भी नहीं जानता कि हमारे कलाँ (महान्) लोग समझदार और युक्तिज्ञ आदमी हैं, विशेषकर स्थानापन्न वकील-मुख्तार तो अपने आका (बड़े भाई)से भी अधिक चतुर हैं। उनके युक्ति-कौशल और कूटनीतिज्ञताके तो सारे बुखारावाले कायल हैं। वह हजार बसमाचियोंको प्यासा नदी तक ले जा प्यासा ही लौटा सकते हैं। उन्होंने कई साल इस्ताम्बूल (तुर्की)में शिक्षा प्राप्त की है। ऊपरसे अमीरके हाथसे निकलकर और कितने ही समय तक सोशल रेवोल्यूशनरी (करेन्स्कीकी सामाजिक क्रान्तिकारी) पार्टीमें, फिर कम्युनिस्टों और कितने ही समय तक नौजवान-बुखारा पार्टीमें सम्मिलित हो उन्होंने क्रान्तिसम्बन्धी कार्य किये। तू गाँठ बाँध ले, ऐसा आदमी खता नहीं कर सकता।

—खूब, बहुत खूब ! सुलहकी शर्त क्या है ?

—चार महीने तक देशके कलानों, या तेरे कहनेके अनुसार

बसमाचियोंके हथियार उन्हींके हाथमें रहेंगे। उनका खर्च सरकारकी ओरसे दिया जायगा, जिसका कुछ हिस्सा इसी वक्त दे भी दिया गया। इसके बदले वह डाकुओंको दबाकर मुल्कमें शान्ति स्थापित करेंगे और बुखारा जन-प्रजातन्त्र सरकारकी आज्ञा मानेंगे। चार मास बाद अपने हथियार लाकर उन्हें और अपनेको नम्रता-पूर्वक सरकारके हाथोंमें सौंप देंगे।

—इन शर्तोंके पूरा करनेके लिये उनकी ओरसे कौन जिम्मेदार हुआ है?

—सभीने खोजा बल्हुवान—वह बुजुर्ग जो इस मजारमें सोये हुए हैं, की कसम खाई है।

—ओ हो! क्या खूब! मेरी अल्पबुद्धिमें इस माँसे बच्चा होनेकी आशा नहीं।

× × ×

—मेरे साथ कौल-करार किया, फिर क्या हुआ जो तूने सरकारसे मित्रता बाँधी—इब्राहीमने दौलतमंदबीसे पूछा।

—तू नहीं जानता, इस सुलहमें हमने कुछ भी उन्हें नहीं दिया। मुझे पहले उमीद न थी कि वे मुझसे सुलह करेंगे। लेकिन उन्होंने खुद सुलहकी बात शुरू की और चार माह तकके लिये मुल्कका अधिकार हमारे हाथमें छोड़ दिया। इन चार महीनोंमें हम जो चाहें करेंगे। उदाहरणार्थ पहली बात हम यह कर सकते हैं, कि जितना हो सके उतना पैसा अफगानिस्तान भेज वहाँ खानाबादमें बैठे जनाबआलीके तगाई (एजेन्ट)के द्वारा खूब हथियार मँगायें। दूसरी बात यह कि सुलहकी एक शर्तके अनुसार डाकुओंके दबानेके बहाने उन्हें हम अपने नीचे ला हथियारबन्दकर अपना आदमी और नौकर बनायें। इस तरह लोग भी हर बातमें हमारा मुँह देखनेको मजबूर होंगे और जिसके घरको डाकू लूटेगा वह हमें प्रसन्न करके हमारी सहायता चाहेगा। इस तरह हकूमतकी इज्जत गिरेगी और हमारी इज्जत लोगोंमें बढ़ेगी। हमने सुरैया आफन्दीको

गर्म और दर्वाज भेजा है कि फ़ुजैल और ईशान सुल्तानसे भी सुलह करें। यदि उनमें भी बुद्धि हुई और इस तरहकी सुलह उन्होंने मान ली तो बहुत अच्छा होगा। अभी उनकी ताकत इतनी मजबूत नहीं हुई है, इसलिये लड़ाईपर उतर आना अच्छा न होगा। न तू मजलिसमें आया न सुलहमें शामिल हुआ, तेरे लिये अब अच्छा यही है कि दोशम्बा और हिसारकी ओर जाकर अपना काम शुरू करें।

५

गैबी हथियार

नारोन गाँवमें एक हजार आदमियोंकी भीड़ जमा थी। किसीने पूछा—क्या बात है?

—इब्राहीम गल्लू चकवै-तोकसाबा-पुत्रने लोगोंको सलाहके लिये बुलाया है।

—क्या लोगोंको दूसरा काम नहीं है, कि उसके बुलानेपर इकट्ठा हुए हैं?

—नहीं देखता, यहाँ जमा होनेवाले कौन हैं? ये वही आदमी हैं जिनका अमीरके जमानेमें बोलबाला था। वह मिल्कियतवाले थे। अच्छी-अच्छी जमीनों और बहुसंख्यक ढोरोंके स्वामी थे। इनमेंसे कितने ही "हम अमीरके सर्कर्दा, हम अमलदार हैं" कहकर लोगोंपर शासन करते, तनखाह (जगीर) खाते, घूस लेते और लोगोंसे मुफ्त काम कराते थे। इनमेंसे कितने ही "मैं मुल्ला, मैं ईशान, मैं काजी, मैं रईस हूँ" कहकर लोगोंका खून चूसते और वक्फ (धार्मिक सम्पत्ति)का माल उड़ाते। अब जब कि अमीर भाग गया है, कितनोंकी पहली शान-शौकत खतम हो गई। कुछ अब भी अपनी पहली हालतमें हैं, तो भी भय खाते हैं, कि जल्दी या देरमें उनकी यह मुफ्तखोरी खतम होके रहेगी। चूँकि यह अपनी सारी दौलत और दबदबेको अमीरकी तरफसे समझते हैं, इसी-

लिये वह "हम जनाब-आलीकी सरकारकी तरफसे ऐसे बने", "हमने दौलतआलीकी छत्रछायामें अमुक-अमुक काम किया" कहते फिरते थे। वस्तुतः सभी काम इन्होंने अमीरकी सरकार और उसके नामपर किये। अब जब कि उन्होंने सुना है कि सरकार कमकरोंकी है, तो याद करते हैं कि पिछले जमानोंमें कमकरोंपर उन्होंने जो जोर-जुल्म किये हैं, यदि सचमुच सरकार कमकरोंकी है तो वह सब उनके सिरपर पड़नेवाला है। यह बात उन्हें खूब अच्छी तरह मालूम है, इसीलिये वह यहाँ इकट्ठे हुए हैं और चाहते हैं कि कमकरोंकी सरकारके मजबूत होनेसे पहले ही उसे नेस्त-नाबूद करके फिरसे अमीरी दौरको जारी करें। दूसरे, कितने ऐसे भी हैं जो मेरी-तेरी तरह असल कामको नहीं जानते और "क्या बात है क्या बात है" या "चलो देखें यह क्या करते हैं" सोचकर अथवा सरकर्दों, बायों, मुल्लोंकी बातोंमें पड़कर यहाँ आये हैं।

जमा हुए आदमियोंमेंसे कुछ लोग आपसमें इसी तरहकी बात कर रहे थे। इसी समय इब्राहीम अपनी जगहसे उठकर एक ऊँची जगहपर आ एक छोरसे दूसरी छोर तक लोगोंपर निगाह डालते बोला—मुसल्मानो! मैंने तुम्हें इसलिये बुलाया है, कि तुम मेरी सहायता करो और हम इस्लाम और मुसल्मानीकी राहमें जहाद करें; मुल्कको मुसल्मानाबाद बनायें, जनाबआलीको अफगानिस्तानसे ले आ उनको अपने तख्तपर बैठायें।

लोगोंके बीचसे आवाज आने लगी—"हमने अमीरसे क्या नेकी देखी कि उसे वापस बुलायें?" "अगर तू भूखा है तो कुछ-कुछ चीजें अपने लिये जमाकर और हमें अपनी हालतपर छोड़", "यदि जहाद (धर्मयुद्ध)की नीयत रखता है, तो फिर क्यों इस तरहकी बेसिरपैरकी बातें कर रहा है?" "अमीर अपने सारे तोपों-तुफंगों, खजाना-दफीना (निधि)से क्या काम कर सका, जो यह करेगा? व्यर्थ लोगोंको पामाल, घरोंको उजाड़ और किसानोंको परेशान करेगा।" "इसे या इसको आगे बढ़ाने वालोंको लोगोंकी बर्बादीकी क्या पर्वाह? वह ऐसा काम करना

चाहते हैं, जिसमें चंद्‌रोज तक उनका बोलबाला रहे" "कब जले और देग उबले"। "पहले जमानेमें भी लोगोंके घर जलते थे और इनकी देग उबलती थी, गरीबोंकी बर्बादी इन्हें मोटा बनाती थी। अब भी वह यही चाहते हैं।" "कहते हैं आज-कल कमकरोंकी हकूमत है, लेकिन हुआ क्या? अब्दुर्रहमान भिंगबाशीने खूराक-अफसर बनकर लोगोंके घरोंको बेदाना कर दिया और बाय लोगों तथा उनके पक्षपातियोंके गेहूँसे भरे अम्बारों तथा बखारोंको छुआ तक नहीं। 'गरीब जनताकी सरकार है' कहकर इनकी आँखें सदा गरीब किसानके एक ठिलियाभर गेहूँपर गड़ी रहती है। पहले नाजके बदले चाय, चीनी, कपड़ा और दूसरी चीजें देते थे और अब 'जब माल बुखारासे आयेगा तो देंगे' कहकर एक सूखा पुर्जा थमा देते हैं। इस पुर्जेको क्या किसान थूक लगाकर चाटे?" "यह पाप अब्दुर्रहमानका है। आज न सही, कल। उसका विश्वासघात प्रगट होगा और उसे दंड मिलेगा। हमें न इब्राहीमकी जरूरत है, न उसके अमीरकी।"

इब्राहीमने लोगोंकी बड़बड़ाहटके कम पड़नेपर फिर अपनी बात शुरू की :

—गर्मको फुजैलने और दर्वाजको ईशान सुल्तानने अपने हाथमें लिया है। यदि कूलाबके अंदर बैठे साठ लाल सैनिकोंको न गिनें तो मैं कह सकता हूँ कि कूलाब और बलजुवान दौलतमंदबी और अब्दुल कयूमके हाथमें हैं। मैंने खुद अपने चंद आदमियोंके हाथ पत्र भेजकर कुर्गान-तप्पाको खाली करवाया। वहाँका रेव्-कम् (क्रान्तिकारी समितिका प्रतिनिधि) मेरा पत्र पढ़कर अपने परिवारके साथ वहाँसे भाग गया। मैंने वहाँ पहुँचकर बोलशेविकोंसे मित्रता दिखलानेवाले कितने ही नर-नारियोंको मारा और अपनी तरफसे केन्ज-बेकराको वहाँका हाकिम नियुक्त किया। अमीर तगाई शहीद-बेकके पत्रोंसे मालूम होता है, कि जनाब-आली बहुत जल्द अंग्रेजी सरकार और अफगान सरकारसे दोस्ती करके

यहाँ आनेवाले हैं। तबतक हमें चाहिये कि इस देशको दुश्मनोंसे पाक कर रखें, जिसमें जनाब-आलीके सामने हम सुर्खरू बन सकें। यदि तुम हमारी सहायता करो तो दोशम्बाको खाली करा लेना मुश्किल नहीं है।

फिर बातें उड़ने लगीं, और किसीने कहा, "कुछ नहीं होगा, तू जा अपना काम कर। हमें अपनी हालतपर छोड़ दे। यदि तू भूखा है तो हम थोड़ी बहुत चीज जमाकर तेरे पास भेज देंगे।"

इब्राहीमने अपने आपसे कहा—"अफसोस ! मेरा बाप इस आदमीका कृतज्ञ था। नहीं तो अभी एक गोलीसे इसकी खोपड़ी उड़ा देता।" फिर लोगोंकी ओर निगाह करके कहा—आप लोगोंको मैंने मुसल्मान समझकर यहाँ बुलाया, जिसमें हम दूसरे मुसल्मानोंसे मिलकर जहाद कर सकें। जहाद फर्ज (परम कर्तव्य) है। यदि विश्वास नहीं, तो मुल्ला लोगोंसे पूछ लें..."

"जहाद फर्ज है, जिहाद फर्ज है" कहकर दो-तीन सफेद पगड़ी-वालोंने इब्राहीमकी बातका समर्थन किया। इब्राहीमने फिर अपनी बात जारी रखते मुल्लोंसे कहा—आप हमारी मदद करनेके बारेमें जोरदार भाषण दें और आयतें पढ़ें।

—तक्सीर ! एक अर्ज है।

इब्राहीमने अपनी बात रोककर कहा—क्या कहता है ?

—आज रातको जब लालसैनिक रास्तेसे जा रहे थे, तो मैंने सोचा, शायद नुक्सान पहुँचायें, इसलिये अपने ढोरोंको एक ओर हाँक ले गया। दिन हो जानेपर एक-एककर देखा तो मालूम हुआ कि एक दुमकटा लदा हुआ घोड़ा पैदा हुआ है। घोड़ेको पकड़ उसका भार देखा, तो वहाँ दो पेटी कार्तूस और छः बंदूकें पाईं। यही वह घोड़ा है जिसे भारके साथ मैं तुम्हारे पास लाया हूँ।

इतना कहकर उसने बोझवाले घोड़ेको इब्राहीमको भेंट किया। यह बात सुनकर इब्राहीमने लोगोंकी तरफ़ निगाह करके कहा—सुना ! यह है

भगवानकी मदद ! यह है गैबी हथियार जिसे खुदाने मेरे पास भेजा है। तुम सबमें ईमान नहीं, इसीलिये सहायता नहीं देना चाहते। अब मैं कमरको मजबूतीसे बाँधकर मैदानमें उतरा हूँ। जो कोई भी गर्दन खींचेगा उसे अच्छी तरह याद रखना चाहिये, कि वह खुदाके गजबका शिकार होगा और उस गजबका लानेवाला मैं होऊँगा। हम खुदाकी राहमें जहाद कर रहे हैं और खुदा हमारे साथ हैं।

इसके बाद इब्राहीम अपने घोड़ेपर सवार हो दोशम्बाकी तरफ रवाना हुआ और जमायतके दो सौ आदमी भी निकलकर उसके पीछे हो लिये।

६

दंड

शाहमंसूर गाँवमें लोग मजलिसके सामने एकत्रित हुए थे। उनके चेहरोंको देखनेसे मालूम होता था कि कोई असाधारण बात सामने आई है। गाँवका बाय कह रहा था—इब्राहीम बकेने जहादके लिये कमर बाँधी है। हमारा कर्तव्य है कि इस्लाम-प्रेमके नामपर उसकी सहायता करें।

—इब्राहीम कहाँ और इस्लाम-प्रेम कहाँ—गाँवके एक आदमी हकबर्दीने कहा इस आदमीका इस्लामसे क्या संबंध जिसने बाप-दादोंके जमानेसे चोरी-डकैतीको अपना पेशा बना रक्खा है ?

गाँवके इमामने विरोध करते हुए कहा—इतिहासके ग्रंथोंमें उल्लेख है कि अमीर तैमूर साहबकराँने भी आरम्भिक जीवनमें डकैती की थी। शायद हमारा यह डाकू भी साहबकराँ बने। इसलिये मदद देनी चाहिए जिसमें उस दिन हमें लज्जित न होना पड़े।

जहाँ-तहाँसे लोग बोल उठे 'हकबर्दीने ठीक कहा', 'चोरका क्या भरोसा', 'वह लोगोंको लूटना चाहता है,' 'अपने लूटनेवालेको हम क्यों मदद दें ?'

बायने कहा—चाहे डाकू ही सही, लेकिन अब भाग्य-लक्ष्मी उसके शिरपर बैठी है। नारीनमें उसे गैब (गुप्त) से हथियार मिला। फौजी पुलिस उससे मुकाबिला न कर सकी और उसके कितने ही सैनिक मारे गये। एक हुकूमत, जिसने अमीरको निकालकर बाहर किया, उसका इतनी मजबूतीसे मुकाबिला करना आसान काम नहीं है। यह सभी चिह्न साहबकराँ (सम्राट्) के हैं। खुदाने जिस आदमीको साहबकराँ बनाया, उससे मुँह फेरना हमारे लिये ठीक नहीं।

—उससे मुँह फेरना खुदासे मुँह फेरना है—इमामने कहा।

हकबर्दी—गैबी हथियारकी बात करते हो? लाल सैनिकोंकी गलतीसे एक हथियारोंसे लदा घोड़ा पास चरती घोड़ियोंमें चला गया। फौजी पुलिसका हथियार छोड़ भागना यह दोशंबाके हाकिमोंकी गलती है; जिन्होंने कि एक प्रसिद्ध और अनुभवी डाकुओंके मुकाबलेमें थोड़ेसे अनुभवहीन सिपाहियोंको भेज दिया। जब उसका मुकाबला लाल फौजके थोड़ेस सिपाहियोंसे हुआ तो इब्राहीम लाचार हो भाग खड़ा हुआ।

बाय—मैं तुम लोगोंके लाभके लिये कह रहा हूँ, नहीं तो मुझे क्या, मैं भी तुममेंसे एक हूँ। यदि इब्राहीमकी सहायता न करोगे, तो तुम्हारे सारे अनाजको छीनकर अब्दुर्रहमान मिंगबाशी बोलशेविकोंको खिला देगा। उसमें मेरा भी गल्ला चला जायगा। लेकिन मैं कोई-न-कोई उपाय निकाल अपनेको भूखसे बचा लूँगा। 'भेड़ियेकी माँद बेहड्डीकी नहीं होती।' यदि तुम्हारा गल्ला हाथसे निकल गया, तो भूखों मरोगे और खेतके लिये बीज भी न रह जायगा; और मैं अमीरके जमानाकी तरह बोनेके लिये बीज न दे सकूँगा।

—कमकरोंकी सरकार गरीब किसानोंको भूखों मरने और बेबीजके नहीं रहने देगी। यह बात कितनी ही बार सरकारी कर्मचारियोंने जलसों और बाजारोंमें लोगोंसे कही है। यद्यपि आवश्यकताके समय सरकार हमसे गल्ला लेती है, लेकिन जब-जब हमें आवश्यकता होगी, तो हर तरहसे

हमारे पास अनाज पहुँचायेगी, और तुम्हारी तरह एक मनकी जगह दो मन लेनेके लिये नहीं।

हकबर्दी—नहीं, हमको चोर नहीं चाहिये। अगर तू चाहता है, तो खुद उसके पास चला जा। यदि इब्राहीमकी ताकत बढ़ी, तो वह फिर हमारे शिरपर अमीरको ला बैठायेगा। अमीरके जुल्म व अत्याचारको हम भूले नहीं हैं।

'बुढ़ियाका दर्द है कपास' बाय भी अमीरके आदमियोंको चाहता है।

सभा समाप्त हुई। सबसे पहले बाय अपना जामा सम्हाले मजलिससे रवाना हुआ।

× × ×

रातको लोग नींदमें थे। इसी वक्त गोलियोंकी आवाज एकके बाद एक सुनाई दी। सभी घबड़ाकर जाग उठे और अपनी हवेलियोंके दरवाजेसे बाहर निकल आये। लेकिन जो कोई भी दरवाजासे बाहर आया, उसे हाथ-पैर बाँध कूचामें डाल दिया गया। डाकुओंने शाहमंसूर गाँवको घेर लिया था। घरकी सारी चीजोंको निकालकर उन्होंने जमा कर लिया था।

'यह है उन लोगोंके लिये दंड, जो लश्करे-इस्लाम (इस्लामी सेना)की मदद नहीं करते, जिन्होंने मलीशिया (फौजी पुलीस) और लालसेनाके मुर्दोंको रास्तेसे हटाकर दफनाया उनके नाक-कान काट लो, आँख निकाल लो, हकबर्दीको हाथ-गर्दन बाँधकर सामने लाओ, दूसरोंको उनकी हालत पर छोड़ दो कि भूखों मरें। देखें बोलशेविक कहाँसे अनाज लाके उनका पेट भरते हैं—इब्राहीम कह रहा था।

× × ×

शाहमंसूरकी भाँति दोशंबा इलाकेके कोकताश, मौलाना और दूसरे गाँवोंको भी दंड दिया गया। फिर मुल्लों, ईशानों (पीरों) सरकर्दों (फौजी अफसरों), अमलदारों (नागरिक अफसरों) और बाय लोगोंने

कारासू गाँवमें एकत्रित हो शपथपूर्वक इब्राहीमको कलाँ (नेता) या सर्दार बनाया। सभाकी समाप्तिपर इब्राहीमने कहा—खुदाका शुक्र कि मैं अब खुद दौलत (सरकार) बना, लेकिन इस सभामें एकत्रित हो फातिहा पढ़नेवालोंको शपथ और करार तोड़नी नहीं चाहिये। फातिहा क्या है इसे भूलना न चाहिए।

—फातिहा 'खुदाकी मुहर है' तकसीर (क्षमानिधान) ! जो फातिहा तोड़ता है वह खुदाकी मुहरको तोड़ता है—एक मुल्लाने कहा।

—हाँ यही बात है—कहकर इब्राहीमने अपनी बात जारी की—जनाबआलीके पाससे भी हर रोज अच्छी खबरें आ रही हैं। जनाबआलीने अपने मुबारकनामा (श्रीपत्र)में खुद लिखा है—'हमारे सेवकोंमें जो कोई बहादुरी दिखलाये उसके कामसे हमें सूचित करो। हम उसे ऊँचा पद देंगे।'

—हजरतने करामत (चमत्कार) कर दिया तकसीर !—एक फौजी अफसरने कहा—पहलेके बादशाहोंकी भी यही रीति रही है। वह जान देनेवाले बहादुरोंको धनसे वंचित नहीं होने देते थे। उदाहरणके तौर-पर स्वर्गीय अमीर यानी जनाबआलीके पिताके समय बादशाही लगान न दे किसान अफगानिस्तान भाग गये। एक किसानको मैं पकड़के लाया, तो मुझे एक बारगी मीर-आखुर बना दिया।

—अब भी ऐसा ही होगा—इब्राहीमने कहा—जो कोई भी जान लड़ायेगा, मेरे बतलानेके मुताबिक जनाबआली उसपर कृपावृष्टि करेंगे। गोली-बंदूक भी जनाबआलीके पाससे बराबर आ रही है। लेकिन हमारे आदमी व्यवस्थित युद्धके ढंगको नहीं जानते। इसलिये यह आवश्यक है कि जब तक वह ठीकसे कवायद-परेड न सीख जायँ, तबतक लालसेनासे सामने होकर न लड़ें। हाँ, ऐसा काम करें, कि जिसमें लालसेना बेखुराकके रह जाय। इसके लिये आवश्यक है कि किसानोंपर कड़ाई की जाय और कोई शख्स शहरमें अनाज न ले जाने पावे। यदि कोई किसान एक मुट्ठी

अनाज शहर लें गया या उसने अन्न ले जानेके लिये लोगोंको प्रेरित किया, तो हम उसे बहुत सख्त दंड देंगे।

—यदि लाल सैनिक स्वयं आकर गाँवोंसे अन्न ले जायँ, तो क्या करना चाहिए?—एक नौकरने पूछा।

—यदि लाल सैनिक स्वयं गाँवमें आकर अनाज ले जायँ, तो भी उनके चले जानेपर गाँववालोंको कड़ा दंड देना चाहिए, जिससे बादमें वह यथाशक्ति अन्न देनेकी कोशिश न करें। तब लाल सैनिक अन्न न देनेवालोंपर कड़ाई करेंगे। इससे लोगों और लाल सैनिकोंमें दुश्मनी पैदा होगी और यह हमारे फायदेकी चीज है। लाल सैनिक हफ्तामें एक बार गाँवमें आयेंगे और हमारे आदमी सभी गाँवोंमें सदा रहते हैं। इस-लिये हम अपने हुक्मको हर तरहसे गाँवोंमें चला सकते हैं। गाँवोंमें भी अपने नौकरोंको पैसा-जूता-जामा पहनाकर दे-दिलाकर खिला-पिलाकर रखना जरूरी है। मुल्लों और ईशानोंके लिये बेगार और खैरात फिरसे जारी करानी चाहिए, जिसमें कि वह मेरे और जनाबआलीके लिये दुआ करें और लोगोंको हर तरहसे बोलशेविकोंको अन्न देनेसे मना करें।

एक मुल्लाने आधा उठकर—करामत कर दी तकसीर! खुदा आपकी दौलत बढ़ावे। 'बिन्नबी-व-आलेहिल्-अमजद्' (पैगंबर और उसकी श्रेष्ठ संतानके वास्ते)—कहते दुआ की।

इब्राहीमने कहा—संक्षेपमें यह कि हमें हर तरहसे शहरमें अनाजको जानेसे रोकना चाहिए। इसका सबसे आसान तरीका है कड़ा दंड।

७

नाच-गान और कूबकारी*

कोकताश गाँवमें हवेलीके अंदर-बाहर, बाहरी फाटक और कूचा तक

*बकरी नोचनेकी घुड़दौड़।

झाड़ दे छिड़काव किया गया था। रासवाले घोड़ोंको खूँटोंसे बाँध साईस धोकर खरहरा कर रहे थे। दालानमें एक छोरसे दूसरे छोर तक बड़ा कालीन बिछाया गया था। लम्बाईके दोनों छोरोंपर हिसारी आबरेशमके दो गद्दे रखे थे। प्रधान स्थानपर अदरस, शाही, अतलस और मख-मलके चार गद्दे बिछे थे। वहाँ एक लम्बा बकर-दाढ़ी, स्याह चेहरेका, पैंतालीस-साला आदमी तीन तकियोंको लगाये एक पार्श्वमें झुका हुआ बैठा था। उसके पैरहनेकी ओर एक सोलह-सतरह साला लड़का बैठा पैर दबा रहा था। जरा और नीचे एक और उसी उम्रका लड़का कमरमें सफेद कमरबंद बाँधे अपने सामने एक चायनिक, प्याला और तश्तरी लिये बैठा था। जिस वक्त प्रधान पुरुष इशारा करता, लड़का चायको प्यालामें डाल प्यालाको तश्तरीमें रख दोनों हाथोंसे बड़े सन्मानके साथ आदमीके सामने रख बिना पीठ दिखाये अपनी जगह आकर बैठ जाता। फर्शकी दोनों तरफके गद्दोंपर चार-पाँच आदमी पातितजानु बैठे थे, जिनकी पगड़ी और लिबाससे मालूम पड़ता था, कि वह बाय और अमलदार (अफसर) हैं। फर्शके नीचेकी ओर एक गद्दे पर और चार आदमी बैठे थे, जिनके सामने दो आगकी अँगीठियाँ रखी थीं। उनमेंसे एकके हाथमें रबाब (एकतारा) था, जिसकी खूँटियोंको ऐंठकर तारको मिजराबसे बजाकर वह ठीक कर रहा था। पासके दो आदमी दायरा (डफ) और दुंबक हाथमें लिये उनके चमड़ेको अँगेठीपर ताजा कर रहे थे। चौथा आदमी एक सतरह-अठारह साला लड़का था, जो अपने लंबी-काली जुल्फोंको कंघी कर रहा था।

प्रधान पुरुषने चाय पी प्यालाको तश्तरीपर रख रबाबीकी तरफ निगाह करके कहा—तुम लोग आका! कितने वर्षोंसे इस तरफ हो?

—सरदार साहब! तीन साल हुआ। जहाद (धर्म-युद्ध)की इच्छासे हम अपने वतनसे बुखारा आकर अमीर साहबके नौकर हुए। जब-तब रबाब बजा संगीत करके अमीर साहब और उनके दरबारियोंको

खुश करते थे। अमीर साहब इस मुल्कसे चले गये, हम लोग बे-साहब हो गये। खुदाका शुक्र है, कि आप साहबे-दौलत (राजा) हुए। फिर हमें अपनी कला दिखानेका अवसर मिला—रबाबीने कहा, जिसके रंग-ढंग और बोल-चालसे मालूम हो जाता था कि वह अफगान है।

—खूब, अच्छा तो कोई चीज सुनावें—सरदारने कहा। रबाब, डफ और दुंबक एक साथ बजने लगे। रबाबीने गाना शुरू किया :—

ले गया अफगान-बच्चा रबाबके स्वरसे, (दो बार)
अल्ला-अल्ला अजब गानेवाला है वह, (")
ऐसी चाल, कटाक्ष और निद्रालु आँखें, (")

....

त्राहि माम् त्राहि माम्......................

—आगा—सरदारने कहा—मेहरबानी करके अपने बच्चेका नाच भी दिखलाइये।

साजमें नाचकी गत बजने लगी। जुल्फीवाला बच्चा उठकर नाचने लगा और रबाबी गाने लगा :—

हाथमें ली तलवार,
कर दिया कीमा उसका,
जो कि होवे गाजी,
बगलमें लेवे निमूछा,
ओय, जो कि होवे गाजी
बगलमें लेवे निमूछा।

महफिल खूब गरम थी। इसी समय दमुल्ला इमाम आया। इज्जतके लिये कहीं लोग खड़े न हो जायँ और मीर गाजीकी महफिलमें विघ्न न पड़े' इसलिये मुल्ला तेजीसे कदम बढ़ाते पास पहुँच गया। प्रधान पुरुषने सम्मान-प्रदर्शनके लिये जरा-सा शरीरको झुका देना ही काफी समझा और गद्देके

ऊपरी हिस्सेपर बैठनेके लिये इशारा किया। इमामने बैठकर मीर गाजी और 'जनाबआली'के लिये हाथ उठाकर दुआ की।

—तकसीर!—मीर गाज़ीने कहा—दोष न दीजिये। 'कभी ग़मज़ा व उसूल, कभी खुदा व रसूल (कभी कटाक्ष और नयन-बाण और कभी भक्त-भगवान)। हम रात-दिन दीन-इस्लामके लिये जहाद करते हैं। इसलिये कभी-कभी बज्म (नाच-गान) लगाकर दिमागको ताजा न करें तो ठीक नहीं होता।

—अलबत्ता, अलबत्ता—इमामने कहा—यह पुराने बादशाहोंकी सुन्नत (सदाचार) है। इतिहासकी पुस्तकोंमें लिखा है, कि अब्बासी खलीफा भी दासियोंकी बज्म रचाते थे। और उनके वली (सिद्ध) होनेमें जरा भी शक नहीं। दूर जानेकी जरूरत नहीं। जनाबआली बुखारामें रहते वक्त कभी-कभी खास तौरसे बज्म रचाकर दिमागको तर करते थे। कभी-कभी जनाब ईशान क़ाज़ीकलाँ (महान्यायाधीश) 'शहीद' (धर्मपर बलिदान हुए)को भी बज्म कराते। और छोकरेसे चाय और मिठाई ले उसे स्वागत आदि कहते।

—खूब, ऐसा है तो आप भी ईशान कलाँकी सुन्नत (सदाचार)को पूरा करते हमारे छोकरेसे एक प्याली चाय और मिठाई लीजिये और उसे स्वागत कहिये।

इमामने नर्तक छोकरेके पास एक प्याला चाय ले जा अपने हाथको उसके ओठोंमें लगा 'तेरे सदके (निछावर)! मेरी खातिर और हमारे मीर गाजीकी खातिर जरा मेहरबानी करके' कहा।

—दमुल्ला! अपने ही लिये—मीर गाजीने कहा—मेरे लिये सारी रात है।

महफिलवाले कहकहा लगाकर हँसे। रबाबीने गाना शुरू किया—

हाथमें दिया रुमाल }
आ सामने मेरा माल } दो बार

जो कोई गाजी होवे,
उसे मिले पैसा माल,
ओय, जो कि होवे गाजी,
उसे मिले पैसा-माल

× × ×

बसमाची (डाकू) नौकरोंने एक आदमीके हाथ-गर्दनको बाँधकर द्वारसे लाकर मीर गाजीके सामने किया ।

—यह कौन है ?—मीर गाजीने पूछा ।

—राहती गाँवका निवासी सादुल्ला है । इसे बोलशेविकोंके लिये शहरमें अनाज ले जाते पकड़ा—नौकरने जवाब दिया ।

—खूब खूब, अभी ठहरो, बज्मके बाद इससे बात पूछेंगे ।

लेकिन बज्मके खत्म होने तक जिंदा रहना उस आदमीको नसीब न हुआ । अब्दुर्रशीद लश्करके साथ पचास दूसरे बसमाची हवेलीके अंदर आये । अब्दुर्रशीदने उस आदमीको देखकर मीर गाजीसे कहा—इब्राहीम बेक ! इस आदमीका एक मिनट भी जिंदा रहना ठीक नहीं । इसे मुझे दो कि ले जाकर कूबकारी करें, जिसमें तुम्हारी बज्म बिना कूबकारीके न रहे ।

इब्राहीमकी "हाँ-ना"की प्रतीक्षा किये बिना सवार सादुल्लाके तनके कपड़ोंको उतारकर दरवाजासे बाहर ले गये और बकरीके नोचने जैसी कूब-कारीकी घुड़दौड़ शुरू की । कूबकारीके मैदानमें जैसे सिरकटी बकरीके साथ करते हैं, उसी तरह उन्होंने जिन्दा आदमीके साथ किया । आध घंटेकी खींचाखींचीके बाद हाथ-पैर और सिरसे अलग हो सादुल्लाका लहूलुहान धड़ जमीनपर गिर पड़ा ।

—अब तूदाकाशी (छीनाझपटी) करें—अब्दुर्रशीदने कहा—जो आदमी इस 'बकरी'को छीनकर मीर गाजीके सामने ला रक्खे, इस नारकी आदमीका माल-असबाब और जवान स्त्री उसीकी होगी ।

खिलाड़ियोंको यह शर्त मंजूर हुई। लहूलुहान धड़को किसीने वृक्षपर टाँग दिया। खिलाड़ी सवार आस्तीन ऊपर चढ़ाये, लगामको घोड़ेकी गर्दनपर छोड़े, कोड़ेको दाँतसे पकड़े, हाथोंको हवामें उठाये खड़े हुए। बुज़-अन्दाज (बकरी फेंकनेवाले)ने रक्तलिप्त धड़को दो-तीन बार हवामें घुमाकर सवारोंकी भीड़के अंदर फेंका। खिलाड़ी सवारोंने बड़ी फुर्तीसे अपने शरीरको घोड़ेकी पीठसे झुकाकर लोथड़ेको चारों तरफसे पकड़ा। फिर खींचतानी शुरू हुई। अन्तमें अब्दुर्रशीदने चार फंदावाली रस्सीको लोथड़ेपर फेंक दूसरी छोरको जीनकी काठीसे मजबूतीसे बाँध घोड़ेको कोड़ा लगाया। घोड़ा दो छलाँगमें पाँतीके किनारे पहुँच गया। दूसरोंने भी अपने घोड़े उसके पीछे डाले लेकिन अब्दुर्रशीदका तेज घोड़ा उनसे सौ कदम आगे बढ़ते हवेलीके अंदर घुसकर बज्मके सामने खड़ा हुआ। अब्दुर्रशीदने खून भरे लाल लोथड़ेको फर्शके एक ओरपर इब्राहीमकी नजरके सामने जमीनपर रखकर कहा—"यह है मेरी कूबकारी 'बकरी'को निकाल लानेमें मैं ही सफल रहा।"

रबाबी अब भी गानेसे मीर गाजीके दिलको खुशकर रहा था—

"पक्केको पकड़ पक्केको
पक्केको न बनाये को।
जो कि होवे गाजी
खींचे वह लड़कीको
ओय जो कि होवे गाजी
खींचे वह लड़कीको..."

८

आगे बढ़नेके लिये पीछे हटना

मौसिम बहुत सर्द था। बर्फ पड़ रही थी। गैरिसन (छावनी) क्लब

एक उजाड़-घरमें थी, जहाँ अन्दर और बाहरकी सर्दीमें कोई अन्तर न था। किवाड़की दारारों और प्रकाश-छिद्रोंसे होकर गिरते बरफके फाहोंने फर्शको मानो सफेद रुईसे ढाँक दिया था। घरके अन्दर दस लाल-सैनिक और कुछ क्रान्तिकारी सैनिक कार्तूसके खाली बक्सोंपर बैठे हुए थे। उनके फटे जूते और लिबास बतला रहे थे, कि काफी समयसे उनके पास नई पोशाक नहीं पहुँची। उनके उड़े रंगों और सूखे चेहरोंसे पता लगता था, कि देरसे उन्हें पेटभर खाना नसीब नहीं हुआ; लेकिन उनकी चमकती आँखें बतला रही थीं, कि लाल-सैनिकोंकी वीरता और अभिमान अब भी उनमें वैसा ही है।

—साथियो! सभा आरम्भ करता हूँ—सभापतिने कहा—कार्यक्रममें सिर्फ एक ही प्रश्न है "कुलाबको छोड़ देना उचित है या नहीं?"। कोई और प्रश्न रखना चाहता है?

—...

—नहीं रखना चाहता है। कहना पड़ेगा कि सिर्फ एक ही प्रश्न है। पहले राजनीतिक कमीसर (अफसर)को बोलनेकी इजाजत है।

कमीसर—साथियो! कुलाबके किलेकी रक्षाके लिये जो भी हो सकता था, हमने किया। भूखे, नंगे सर्दी खाते भी हमने धैर्यको न छोड़ा। अंगरेजी बंदूकोंसे हथियारबन्द तीन हजार बसमाचियोंसे सिर्फ साठ लाल-सैनिकोंने डटकर मुकाबिला किया। कठिनाइयोंने उन्हें अनुत्साहित नहीं किया। जरूरत पड़नेपर हम फिर मुकाबिला करेंगे। लेकिन मैं समझता हूँ, अब यहाँ रहना बेफायदा है। महीनों गुजर गये, दोशम्बाकी तरफसे हमारे पास कोई मदद नहीं आई और न निकट भविष्यमें आनेकी आशा ही है। ऊपरसे खूराकका मिलना असम्भव हो गया है, जिसको कि ध्यानसे हटाया नहीं जा सकता। इस बारेमें साथियोंकी राय सुनकर सभाको कोई निर्णय करना चाहिये।

—मेरा विचार है—एक साथीने कहा—चाहे जो भी हो, अब भी हमें इस स्थानको दृढ़ बनाना चाहिये, जिसमें यह किला दुश्मनके हाथमें

न जाय। हम "दुनियाके सारे कमकरो, एक हो जाओ"का नारा लगाते इस किलेकी रक्षा करते रहे। खूराक जैसे आज तक हासिल करते रहे, आगे भी उसी भाँति हासिल करेंगे।

कमांडरने बहस शुरू की—यह वह स्थान है, जहाँ गृहयुद्धों और प्रतिगामियोंकी विरोधाग्निमें हमारे शरीरका मांस पका। हम कभी नहीं चाहते, कि जीवित रहते कमकरोंके अधिकारमें आये इस किलेको लौटा दें। खासकर जब कि बुखाराकी जन-प्रजातन्त्र-सरकार, बुखाराके अत्याचार-पीड़ित कमकरोंकी रक्षाके लिये हमें बुलाकर यहाँ लाई है। ऐसी अवस्थामें यह उचित न होगा कि हम अपने कंधेपर पड़ी इस बड़ी जिम्मेवारीको उतार फेंके। किन्तु आहारका प्रश्न बाध्य कर रहा है, कि हम अस्थायी तौरपर इस स्थानसे पीछे हटें। इस साथीने कहा, कि आहार जैसे आज तक हम हासिल करते रहे, वैसे आगे भी करेंगे, किन्तु यह आहार प्राप्त करनेका काम इतना आसान नहीं है। इलाकेमें बसमाचियोंने किसी चीजको रहने नहीं दिया, सबको बर्बाद कर दिया है। खूराककी चीजें दूर ले जाकर पहाड़की चोटियों और गुफाओंमें छिपा दी गई हैं। गाँवमें कुछ रह नहीं गया है। लोग भूखे मर रहे हैं। इसपर भी जब हम गाँवमें जाते हैं, तो थोड़ा बहुत कोई न कोई चीज हाथमें लेकर लौटते हैं; लेकिन जैसे ही हम गाँवसे निकल आते हैं, बसमाची पहुँच जाते हैं और "तुमने लाल सैनिकोंको अन्न दिया" कहकर लोगोंकी बड़ी सासत करते हैं। बसमाची किस तरह सासत करके लोगोंको मारते हैं, यह साथियोंको मालूम है। वह लोगोंको जिन्दा जलाते, क़त्ल करते, दारपर टाँगते और कुबकारी करते हैं। सबसे नरम सजा उनकी है आँख-कान काट लेना। यहाँ बहुत कम ऐसे सौभाग्य वाले आदमी हैं, जो इस सजासे बचे हैं। यद्यपि हमारे चले जानेपर भी बसमाची इन सासतोंको जारी रखेंगे, लेकिन उस वक्त कोई आदमी हमें इसका कारण नहीं समझेगा। इसलिये मेरी राय है, कि इस अवस्थामें अपने प्रति लोगोंमें रंजिश पैदा करनेका मौका देना ठीक नहीं।

दूसरोंने भी अपने-अपने विचार प्रगट किये। अन्तमें राजनीतिक कमीसर फिर बोले—हम इस किलेको सदाके लिये छोड़कर नहीं जा रहे। हम इसलिये जा रहे हैं, कि जल्दी ही नई शक्ति और पूरे साधनोंके साथ लौट आएँ। हम जा रहे हैं, कि लौटकर इस घरकी छतपर, सिर्फ इसी घरकी छतपर नहीं बल्कि सभी नवनिर्मित घरोंकी छतोंपर लाल झंडा फहरायें। हम पीछे हट रहे हैं, लेकिन हमारा पीछे हटना उस आदमीके पीछे हटनेकी तरह है, जो अपने वेगको बढ़ा छलाँग मारकर नहरके पार जाना चाहता है। हम दो क़दम पीछे हट रहे हैं, ताकि दौड़ते आकर सामनेकी उस खाँईको आसानीसे कूद जायँ, जिसे अंगरेजी साम्राजियों और अमीरके पक्षपातियोंने खोद रखा है। हमारी क्रान्तिके युद्धोंके इतिहासमें इस तरह पीछे हटनेके कई उदाहरण हैं।

सभाने एक रायसे निश्चय किया और आगे बढ़नेके विचारसे दो कदम पीछे हटना स्वीकार किया।

९

आँखों-कानोंसे भरा थैला

इब्राहीम बेग, ईशान सुल्तान खाँ, दौलतमन्दबी, अब्दुलकयूमबी, तोग़े सरिग़, बरात, एसिक आकाबाशी और दूसरे सारे बसमाचियोंके कूरबाशी (सेना-संचालक) और सरदार अपने दस्तों और सिपाहियोंके साथ शहर कूलाबमें एकत्र हुए थे। आपसमें शपथ करके उन्होंने इब्राहीम बेगको अपना नेता बनाया। सारे सरदार एक घरमें बैठे और युद्ध-कौन्सिल आरम्भ हुई। इब्राहीमने कहा—

—सभी काम इच्छानुकूल हो रहे हैं। शहर कूलाबका हाथमें आना बहुत बड़ा सगुन है। अब हमारे लिए बुखाराका रास्ता खुल गया। जनाबआलीकी तरफसे भी अच्छी-अच्छी खबरें आई हैं। जनाबआलीकी

दयादृष्टिसे खुदा, पैगम्बर और शरीयत हमारे मददगार हैं। अफगानिस्तानकी सरकार बिल्कुल नहीं चाहती, कि जनाबआली और अंग्रेज सरकारके बीच संबन्ध स्थापित हो। लेकिन उसकी सारी कड़ाइयोंके होते भी रास्ता निकल आया। अँगरेजी कौन्सलखाना (दूतावास)के एक कर्मचारीने मास्कवी पोशाकमें जनाबआली और अंग्रेजी राजदूतके बीच पत्र-व्यवहारका सिलसिला कायम कर दिया है। जनाबआली और राजदूतने ऐसा प्रबन्ध कर दिया है, कि अब हमें हथियारोंकी किल्लत नहीं पड़ेगी। चाहे खानाबादके रास्ते चाहे बदख्शाँके रास्ते हमें हर तरहके हथियार अब मिलते रहेंगे, लेकिन इसके लिये हमें पैसा इकट्ठा करना पड़ेगा। सईद बेकने मुझे यह भी लिखा है, कि जो लोग जहाद (धर्मयुद्ध) में ज्यादा बहादुरी दिखला रहे हैं, उनका नाम लिखकर भेजो, जिसमें कि उन्हें अपनी सेवाके अनुसार श्रीचरणोंसे पद और प्रतिष्ठा प्रदान की जाय।

पैसेकी समस्या आसानीसे हल हो गई। सभी कुरबाशियोंने एक रायसे तै किया कि जो कुछ—बच्चोंकी टोपियों तक—कुलाब और बल्जुवानके लोगोंसे मिल सके, सबको सईद बेकके पास खानाबाद भेज दिया जाय, ताकि वह हथियार खरीदें। इसके बाद बहादुरी दिखलाने वालोंके बारेमें लिखनेकी बात आई। हरेक आदमी पत्रमें अपना नाम लिखे जानेके लिए अपने-अपने कारनामोंको सुनाने लगा—"मैंने असुक गाँवमें आग लगाई", "मैंने एक दर्जीको जर्दोर्दी और बोलशेविकोंकी बर्दी सीनेके लिए मार डाला" "मैंने अमुक आदमीको लाल सैनिकोंके हाथमें अनाज बेचनेकी कोशिश करनेके लिए कान छेदकर पेड़से टाँग दिया", "मैंने एक मजूरकी 'अब स्वतन्त्रता है, कोई किसीको दबा नहीं सकता' कहते मालिककी ओर दौड़नेके अपराधमें आँखें निकाल लीं", "मैंने पहाड़ोंमें न ले जानेके कारण अमुक गाँवके गेहूँमें आग लगाकर जला दिया"......

वहाँ सिर्फ एक आदमी था, जिसने अपने कारनामोंके बारेमें मुँह नहीं खोला। इब्राहीम बेकने उसकी ओर निगाह करके कहा—तू क्यों कुछ नहीं बोलता? क्या तूने कोई कारनामा नहीं किया?

आदमीने एक मुँह बन्द भरे थैलेको अपने नीचेसे निकालकर इब्राहीमको दिखलाते हुए कहा—मैंने जो कुछ काम किया, सब इसी थैलेके अंदर है। जब जनाबआली आयेंगे, तो खुद उनकी सेवामें भेंट करूँगा।

इब्राहीम—इस थैलेके अंदर क्या है? यदि हीरा, मोती या सोना है तो उसके खर्च करनेका वक्त यही है और इसे अफगानिस्तान भेजकर हथियार खरीदा जा सकता है।

—नहीं, यह हीरा-मोती या सोना नहीं है। इसके बदलेमें हथियार नहीं मिल सकता, लेकिन यह ऐसी चीज है, जिसे देखकर जनाबआली सोना-जवाहिरके देखनेसे भी अधिक खुश होंगे।

एक बसमाचीने दूसरेके कानमें धीरेसे कहा—जान पड़ता है, जनाब-आलीकी भेंटके लिये एक निमूछे लड़केको इस थैलेके अन्दर बन्द कर रखा है?

इब्राहीम—बता, दुनियामें अलभ्य यह कौन सा धन तेरे पास है?

आदमीने थैलेका मुँह खोलकर दिखलाया। वहाँ आदमियोंके कटे कान और आँखें भरी हुई थीं। फिर उसने कहा—यह जदीदों, बोलशेविकों और उनके खैरखाहोंके आँख-कान हैं, जिन्हें जनाबआलीकी सरकारकी स्थापनाके लिए मैंने काटे। आगे भी इस कामके लिए जितने आँख-कान काटूँगा, उन्हें जब जनाबआली पधारेंगे, तो श्रीचरणोंमें भेट करूँगा। उस वक्त जनाबआली जानेंगे कि तोग़ो सरिगने क्या कारनामा किया, फिर वह जो चाहेंगे वह मेरे लिये प्रदान करेंगे।

१०

कार्तूसोंसे भरा कुंड

लाल सैनिक कुलाबसे निकल कनकुर्त पहुँचे और चंद रोज वहाँ ठहरे। राहमें बसमाचियोंके साथ कई झड़प हुई, लेकिन वह सलामतीके साथ फैजाबाद पहुँच गये। साठ लाल सैनिकों और चंद स्थानीय स्वयं-सेवकोंका तीन हजार बसमाची जल्लादोंके बीचसे उन्हें नुकसान पहुँचाते सही सलामत निकल जाना एक ऐसी वीरता और चमत्कारकी चीज है, जो कि क्रान्ति-युद्धके इतिहासके पन्नोंमें ही दिखलाई पड़ती हैं। फैजाबादमें वहाँ पहलेसे ही वर्तमान सैनिक मिल गये और दोनों कुछ समय तक वहाँ ठहरे।

बसमाचियोंकी संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही थी। हर रोज हर गाँवमें चंद आदमियोंको अमीरकी तरफसे नया अमला (पदाधिकारी) बनाया जाता, जो आदमियोंको जमाकर बसमाचियोंसे आ मिलते। इस तरह चार हजार बसमाची दोशम्बा और फैजाबादके इलाकेमें छाये हुए थे। दोशम्बासे फैजाबाद मदद नहीं पहुँच रही थी। फैजाबादके सैनिक बिना अनाजके थे। उनके अच्छे-अच्छे घोड़े खूराकके बिना मर गये या माँदा हो गये थे। जैसे भी हो, फैजाबादसे निकलकर दोशम्बा जाना जरूरी था, लेकिन सवाल था अधिक सामान और हथियारोंको क्या किया जाय। खासकर बीस पेटियोंमें आये चालीस हजार कार्तूसोंको किसपर लादकर दोशम्बा ले जाया जाय। अब एक दिन भी फैजाबादमें रहना संभव नहीं था, क्योंकि एक दिनका भी दाना न तो आदमियोंके लिये बचा था और न घोड़ोंके लिये। खैरियत यही थी कि कुर्गानके पास एक कुंड था, नहीं तो वे प्यासे मर जाते।

× × ×

दोशम्बेका समीपवर्ती मौलाना गाँव एक हकूमतकी राजधानी बना हुआ

था। इसका अधीश्वर था "मुल्ला मुहम्मद इब्राहीमबी दीवानबेगी लश्कर-बाशी तोपचीबाशी (महामंत्री-सेनापति-तोपखाना-जेनरल) चक्काबे तूकसाबा (पुत्र)"। इतना लम्बा चौड़ा विरुद अधीश्वरकी मुहरपर खुदा हुआ था। हर रोज निकलनेवाले फरमानोंपर लगी इस मुहरको गाँवके इमामसे पढ़वाकर लोगोंने याद कर रखा था, नहीं तो भूलसे भी यदि किसीने विरुदोंमेंसे किसी एकको छोड़ दिया तो अपमानके अपराधमें उसे मृत्युदंड मिलता। स्वरूप और गुणमें अमीरके हकूमतकी उत्तराधिकारिणी इस हकूमतको अमीरसे दायभागमें दो पुरानी तोपें मिली थीं, जिन्हें बारूदसे भरकर हर रोज सुबह और शाम दोशम्बाकी तरफ दागा जाता। दोशम्बा बाध्य हुआ कि इस नवस्थापित जीर्ण हकूमतपर आक्रमण करनेके लिये लाल सैनिकोंको इजाजत दे। वहाँके लाल सैनिकोंकी संख्या अधिक नहीं थी, तो भी उन्होंने अपनेमेंसे सौ सवारोंको दो मशीनगनोंके साथ मौलानाकी तरफ रवाना किया। उन्होंने रातको मौलाना गाँवमें चुपचाप मुकाम करके आक्रमण करनेका निश्चय किया था, लेकिन पहले हीसे खबर पाकर बसमाची गोली चलाने लगे। दो मशीनगनों और सौ बन्दूकोंने उनका जवाब दिया। लेकिन सौका चार हजारसे मुकाबला आसान नहीं था—खासकर जब कि उनमेंसे कितनोंके पास ग्यारहगोलिया, सतगोलिया, पचगोलिया बंदूकें थीं। इसलिये लाल सैनिकोंको बाध्य होकर पीछे हटना पड़ा, जिसमें बहुतसे लाल सैनिक हताहत हुए, और उनके हथियार दुश्मनोंके हाथ लगे। वह तबतक पीछे हटते रहेंगे, जब तक कि दोशम्बासे कुमक न पहुँच गई। कुमकके पहुँच जानेपर उन्होंने दुबारा बसमाचियोंकी राजधानीपर हमला किया और उसे ध्वस्तकर जहाँ अपने बंदियोंको स्वतन्त्र किया, वहाँ अमीरकी पुरानी तोपोंको भी छीन लिया। इसी वक्त मौका पाकर फैजाबादके लाल सैनिक भी बसमाचियोंसे लड़ते-भिड़ते सलामतीके साथ दोशम्बा पहुँच गये।

इस घटनाके बाद बसमाचियोंने भली भाँति समझ लिया, कि सिंहकी पूँछ मरोड़ना आसान काम नहीं है। इसके बाद सीधे हमला करनेका प्रयत्न

उन्होंने फिर कभी नहीं किया और एक जगह भारी जमावड़ेको खतरनाक समझ वह बहुतसे गिरोहोंमें बँटकर गाँवों और पहाड़ोंमें बिखर गये। अब उनका काम था, अपने आस-पास संतरी रख गाँवोंको लूटना और बरबाद करना।

× × ×

फैजाबादके कुंडका पानी नीले रंगका हो गया। उसका स्वाद भी इतना बदल गया कि कोई उसे पी नहीं सकता था। आसपासके आदमी यह हालत देख कुंडके पानीको उलीचनेके लिये जमा हुए। पानीको निकाल फेंकनेपर देखा कि वहाँ बीस भरी पेटियाँ पड़ी हैं। उन्हें कुंडसे बाहर निकाल खोलकर देखनेपर उनमें चालीस हजार कार्तूस मिले। मौलानाकी लड़ाईसे इब्राहीम करीब-करीब बेकार्तूसका हो गया था। खबर पा पेटियोंको अपने हाथमेंकर उसने लोगोंसे कहना शुरू किया—यह है खुदाकी मदद जिसने इस्लामके गाजियोंके लिये कुंडको कार्तूसोंसे भर दिया।

११

हामियान-इस्लाम (१९२१ ई०)

आसमानसे बातें करनेवाले ऊँचे-ऊँचे पहाड़। पाताल तक पहुँचनेवाले खड्ड और गुफायें। रास्ते इतने तंग तथा सीधे कि जिनपर चलते बकरियोंके भी हवास ढीले पड़ जाते। बारीक भयानक ऊँचे डाँड़े, जहाँ पहुँचनेमें बादल भी काँप उठता। बड़ी-बड़ी पथरीली चट्टानें, जो हाथीको भी अपने पीछे छिपा सकतीं। घूम-घुमौआ दर्रे या जोतें जो अपने घुमावमें साँपको भी मात करतीं। यह है मस्चाह पर्वतकी दूनका नक़शा। इस दूनके एक किनारे काले-काले बिन्दु दिखाई पड़ते हैं। यही है आब-बुर्दनी मस्चाह गाँव। यहीं बारह कमरोंका एक मकान है। यह इमारत १९२० से १९२३ तक हामियान-इस्लामकी राजधानी रही। उनका नेता था सैयद अमीर अहमद खाँ।

उस समय इमारत कैसी अवस्थामें थी? हरेक कोठरीमें नस्तालीक़ (फारसी) अक्षरमें लिखी छोटी-छोटी तख्तियाँ टँगी थीं, जिनसे उनके नाम मालूम होते थे—काज़ीखाना, मुफ्तीखाना, रईसखाना इत्यादि। औरोंसे बड़े एक कमरेपर लिखा था—ज़ास्दानिया (मंत्रणागृह)। इस कमरेकी जमीनपर किर्कीवाला सुन्दर कालीन और बुखाराके लम्बे गद्दे बिछे थे। प्रधान स्थानपर शाही गद्दा तीन मस्नदोंके साथ सुसज्जित था। कमरेकी दीवारसे बन्दूक, तमंचा, तलवार जैसे हथियार लटक रहे थे। पैरहनेकी ओर बैठकीको जमीनमें गाड़कर एक शिकारी बाज़को भी रखना न भूले थे।

इमारतके कोनेमें नीचे जानेकी सीढ़ी थी। बारह-तेरह सीढ़ियाँ उतरनेपर वहाँ एक अँधेरा तहखाना था। यहाँकी कोठरियोंपर लिखा था—जेलखाना, शरबतखाना (मदिरालय) और कूरखाना (अस्त्रागार)।

जेलखानेके अन्दर झाँकनेपर वहाँ गर्दनोंमें जंजीर, पाँवोंमें कुंदा पहने खोजन्द (लेनिनाबाद), ऊरातप्पा और पंजकन्दके कितने ही किसान लेटे "मुफ़्ती इस्लाम"के मौतके फतवे और "अमीर सैयद अहमद खाँ"के फर्मानकी प्रतीक्षा कर रहे थे। और शरबतखानेमें क्या था? रंग-रूपमें यूरोपियन किन्तु साफा-जामा पहने एक आदमी ऊरातप्पा और पंजकन्दसे लूटकर लाये अंगूरोंको अर्क़ खींचनेकी मशीनोंमें डालकर शराब निकाल रहा था। और कूरखानेमें? दूसरे कुछ साफा-जामा धारी यूरोपीय "लश्करे इस्लाम"के लिये कार्तूस और गोलियाँ तैयार कर रहे थे।

१९२१की गर्मियोंमें हामियान-इस्लामके सारे नेता मंत्रणागृहमें एकत्र हुए थे। प्रधान-स्थानमें खुद सैयद अमीरखाँ पल्थी मारे बैठे थे। उनकी दाहिनी ओर दीवारके पास मुफ्तीखाना, काजीखाना, रईसखाना तक आलिम लोग, और बाईं ओर कूरबाशी (सैनिक) पाँतीसे अदबके साथ पातितजानु बैठे थे।

सभाका आरंभ करते अमीर अहमदखाँने कहा :

"मैंने कुछ समय खोजन्दके उलूस (महल)में प्रबन्ध-समिति (इजरा कमेटी)के प्रधानके रूपमें बोलशेविकोंके साथ काम किया था। इस थोड़ेसे समयमें मैंने उनसे बहुत सी चीजें सीखीं। बोलशेविकोंके काम करनेका सबसे बड़ा ढंग यह है, कि वह आइन्दाका पहलेसे ही प्लान (योजना) बनाते हैं, इसलिये उनका काम अव्यवस्थित नहीं होता। हमें भी उसी तरह अपने आइन्दाके बारेमें पहलेसे सोचकर प्लान बनाना चाहिये। (सभाकी ओर एक नजर डालकर फिर बात जारी रखते) मस्चाह और किला पहले क्या थे, इसे आप जानते हैं। मस्चाहके पास कुछ न था। फलगरके पास जो कुछ था, उसे हमारे आदमियों और घोड़ोंने चन्द दिनोंमें समाप्त कर दिया। उस समय इसराइन (परगना)के आदमी खुद भूखे मर रहे थे। वह भला हमें क्या खूराक-पोशाक देते? बादमें हम खोजन्द और ऊरातप्पाके इलाकोंमें लूटपाट मचाकर अपनी आवश्यकताकी चीजें लाये। लेकिन अब इन इलाकोंमें बोलशेविकोंने अपनेको इतना मजबूत कर लिया है, कि रफिक़ और आबबुर्दानसे बाहर कदम रखना भी मुश्किल है। कुछ वक्त तक हमारे भाई जनाबआली अमीर बुखारा हिसारकी ओरसे सहायता पहुँचाते रहे, लेकिन उनकी सल्तनतपर भी बहुत चोट लगी और हमें उनकी सहायतासे वंचित हो जाना पड़ा। यदि जल्दी आवश्यकताकी चीजोंके पानेके लिये रास्ता न निकालेंगे, तो हमें तंग होना पड़ेगा। मेरी रायमें हिसार और दोशम्बाकी तरफ अपने दस्तोंको भेज वहाँसे खूराक और पोशाक लूट मँगाना चाहिये। अभी वहाँ बोलशेविक नये आये हैं और देशमें व्यवस्था ठीक तौरसे नहीं स्थापित कर सके हैं, इसलिये लूटपाटका पूरा सुभीता है। मेरी इस रायके बारेमें मंत्रियोंकी क्या सलाह है?"

सभीने एक स्वरसे कहा—हजरतने करामत (चमत्कार) कर दी!

—दीनके आलिम (धर्माचार्य) इस बारेमें क्या फर्माते हैं?—कहते अमीरने दाहिनी ओर निगाह डाली।

—तक्सीर—काजीने कहा—"शुभस्य शीघ्रं" आपके विचार बड़े ही सुंदर हैं। मेरी रायमें इसके बारेमें और बात-चीत करना फिजूल है। बहादुरोंको कामके लिये हुकुम देना चाहिये।

—आप कुछ नहीं बोल रहे हैं ईशान मुफ़्ती?—कहते अहमदखाँने मुफ्तीकी ओर निगाह फेरी।

—इस कामको सयार और इतिहासकी पुस्तकोंमें 'शरीय्या' कहा गया है। हमारे पैगम्बरने ऐसे कामके लिये 'असहाबे-शरीय्या' (शरीय्यावाले मित्रों)को दारुल-हरब (अ-मित्र देश)में भेजा था। अब जब कि जनाबआली (बुखारा-अमीर) चले गये और मुल्क जदीदों तथा बोलशेविकोंके हाथमें चला गया, उधरके इलाकोंको 'दारुलहरब' मानना पड़ेगा। अतएव शरीयतके अनुसार उधरके गरीबोंको लूटना-पीटना उचित ही नहीं बल्कि पैगम्बरकी सुन्नत (सदाचार) है।

शिकारी बाज़ सभाकी कार्यवाहीके बीच पंखोंको अपनी चोंचसे खुजलाता या शरीरको हिलाता था, किन्तु सभा समाप्त होनेके बाद अब उसने अपने सिरको छातीके नीचे कर लिया, मानो बसमाचियोंके लाभके लिये दोशम्बाके मुसल्मान निवासियोंके विरुद्ध मुफ्ती-इस्लामके इस फतवासे वह भी लज्जा महसूस कर रहा था।

× × ×

जिस समय इब्राहीमबेक कूलाब और बलजुवानको दौलतमंदबी और अब्दुल कयूमबीके हाथमें दे, स्वयं हिसार और दोशम्बाके पहाड़ोंमें तोगे सरिगके साथ लूटपाट मचा रहा था। इसी समय गरीबोंके सिरपर एक दूसरी बला आई। दर्रा रामितसे नसरतशाह मस्चाही और दर्रा वज़ाबकी तरफसे इसरार तुरा अपने दस्तोंके साथ लूटपाटके लिये उतरे। भूखी टिड्डियोंकी तरह जो कुछ भी उनके सामने आया उसे लूटा। खूराक-पोशाकसे लेकर कालीन, गेलम्, नमदा, कूरपा (गद्दा), कूरपाचा, देग, थाल (तबक), कटोरा, गाय दूहनेकी नदिया आदि किसी चीजको नहीं

छोड़ा और सबको गधों, घोड़ों, बैलों और भेड़ोंपर लादकर मस्चाहकी तरफ रवाना किया। वहाँके गधों, घोड़ों, गायों, भेड़ोंके गल्लों और रेवड़ोंको ही नहीं आशूके नमक तकको भी लदवाकर भेज दिया। यदि विरोधमें किसीने दम भी खींचा तो वह तलवारके घाट उतारा गया या गोलीका शिकार बना। दो तरफसे खेत काटनेवालेकी तरह एक दूसरेके नजदीक होते नसरतशाहने किबला-दोशम्बामें और इसरार तुराने चारबाग खानकाहके गाँवमें डेरा डाला।

लेकिन बादमें जब दोशम्बासे आकर लालसैनिकोंने आक्रमण किया, तो हामियान-इस्लाम अपने कितने ही साथियोंको खो दोबारा रामित और वज़ाबको लूटते "दयार-इस्लाम" यानी अमीर अहमदखाँकी राजधानीको भाग गये।

इब्राहीम बेगने इस घटनाके बारेमें अमीरको लिखा था :

> "जहाँपनाह ! आपके दास मीर मस्चाहने मुसल्मानोंके सुख और जनाबआलीकी सल्तनतको दृढ़ करनेके लिये अपने अफसर नसरत शाह और भाई इसरार तुराको हामियान-इस्लामके बहादुरोंके साथ भेजा था। वह गरीबोंके सामानमेंसे कुछ लेकर तथा 'मुसल्मानोंके शत्रुओं'को मारकर अपने वतन लौट गये। बाकी देश हर तरहसे सुखी और शान्त है और हजरतकी दीर्घायुकी प्रार्थना करता है। अत्तक्सीर, अत्तक्सीर, अत्तक्सीर।"

१२

अनवरपाशा

—दाखुन्दा !

—...

—ओए दाखुन्दा !

—...

—दाखुन्दा ! मैं तुझे बुला रहा हूँ

—लब्बैक तकसीर !

—सोता है या जागता ! एक चायनिक चाय गरम करके ला।—वकील मुख़तारके प्रधान लेखक (सरकातिब)ने बहुत शोर मचा ख़िदमतगारको चाय लानेका हुकुम दे बगलमें बैठे अपने सहकारीसे कहा—शरीक ! याद है परसाल पूर्वी बुख़ाराकी यात्राकी तैयारीके वक्त मैंने इस दाखुन्दाके बारेमें क्या कहा था ? मैंने कहा था, यदि यह लिखा-पढा होता तो वकील मुख़तारका लेखक बन जाता, तबसे साल पूरा नहीं हुआ, लेकिन मेरी वह भविष्यद्वाणी करीब-करीब ठीक उतरी। इस आदमीने इतने समयमें लिखना-पढ़ना सीख लिया, जिसके साथ इसका रंग-ढंग भी बदल गया, अब पहलेवाला वह सीधा-सादापन इसमें नहीं है। यदि किसी कामको करनेके लिये कहो, तो अनसुनी कर देता है, या दबाने पर हिलता है। शायद जल्दी ही "खुद कीजिये" सुनना पड़े। अवश्य इसपर प्रधान लेखक बननेकी हवस सवार है।

—इसके अक्षरोंको इसे छोड़ दूसरा नहीं पढ़ सकता, भला किस तरह यह प्रधान लेखक बनने की हवस करेगा ? कौन इसे प्रधान लेखक बनायेगा ?

—जदीदों और बोलशेविकोंके राजमें अक्षरकी सुन्दरताको कौन पूछता है ? "लिख सकता है", "सकता हूँ" बस प्रधान लेखक बन जाता है, बोलशेविकोंने इल्मकी भी मट्टी पलीद कर दी। हमने दमुल्लाकी कितनी कमच्चियों और थप्पड़ खा-खाकर दस सालमें बड़ी मुश्किलसे लिखना-पढ़ना सीखा था। इस पहाड़ी दाखुन्दाने अपने आप छै मासके अन्दर लिखना-पढ़ना खतम कर दिया। वकील मुख़तार मुझे "पुराने परिचित" समझकर संतोष देते हैं, नहीं तो इस घासके चपलीवालेने कबके नहीं मेरी प्रधान-लेखकता छीन ली होती, विशेषकर आजकल जब कि दाखुन्दा

एक सरगरम बोलशेविक गिना जाता है और मैं पुरानी सरकारका एक सेवक। यह वकील मुखतारकी गुणज्ञता ही है, जो अब भी मैं इस पदपर हूँ।

—आप भी तो चख-चख लगाये रहते हैं और अपने ऊपर संयम नहीं रखते। यह स्वतन्त्रताका युग है। कोई किसीको आँख नहीं दिखला सकता। "लिखना-पढ़ना सीख गया, प्रधान लेखक होगा या नहीं, सर-गरम बोलशेविक है···" कहकर चिन्ताके मारे मरनेकी जरूरत नहीं। आक़ा-ओक़ा (महाशय) कहकर किसी तरह अपना काम चलाना चाहिये। यदि हर काममें झगड़ा उठाया करेंगे, तो अपना काम खराब करेंगे। पाँच मिनट आगे नहीं पाँच मिनट पीछे सही, दाखुन्दा चाय गरम करके लावेगा। इतनी-सी बातके लिये हाय-हाय करनेकी क्या जरूरत?

—आखिर प्याससे हलक सूख गया है। जीभ तालूमें चिपकना चाहती है।

—तेज शोरबा जरा कम खाइए।

—सच कहूँ, असलमें वकील-मुखतारके कामोंने आजकल मुझे परेशान कर रखा है।

—ओ, वकील-मुखतारके किस कामने आपको परेशान कर रखा है?

—आजकल जो कुछ हो रहा है, उसका क्या तुम्हें कुछ भी पता नहीं है? वकील-मुखतार सदा अलीरजाके साथ फुस-फुस करते रहते हैं। दोनों सारी रात सुबह तक बैठे रहते हैं। दानियालको छोड़ किसी दूसरेको बात करनेका मौका नहीं देते।

—खूब, फुस-फुस करते रहें, इससे हमारा-तुम्हारा क्या बिगड़ता है?

—यह···

—यह कौन ?

—दाखुन्दा आकर चला जाय, तो बात करेंगे।

दाखुन्दाने चायनिक लाकर प्रधान लेखकके सामने रखी, उसने दाखुन्दासे पूछा—कहाँ था, आवाज देने पर "हाँ" भी नहीं कहता।

—अलीरजा आफन्दी सैनिकोंको परेड करा रहा था, उसीको देखता था।

—अच्छा, इस चायनिकको भी गरम करके ला दे, फिर तमाशा देखने जा—कहकर प्रधान लेखकने दूसरी खाली चायनिक सामने रख दी।

दाखुन्दा चायनिक लेकर चला गया।

प्रधान लेखक—इस वक्त मैं क्या कह रहा था ?

—कह रहे थे, कि अलीरजा और वकील-मुख़तार फुस-फुस करते रहते हैं।

—हाँ, कुछ दालमें काला मालूम होता है। रातमें कितने ही बसमाची भी उनके पास आते हैं। वह अपनी हर बातको तवारिशों (रूसियों)से छिपाते हैं। कोई बला सिर पर न आये, यही सोचकर डरता हूँ।

—कौन-सी बला, बताइये तो ?

—मैं डरता हूँ, कि कहीं ये बसमाचियोंके साथ मिल न जायँ।

—ख़ूब, मिल जायँ मिल जायँ इससे हमारा तुम्हारा क्या ? हमारा काम है, हर रोज कामको इनकी आज्ञानुसार करना और अपना वेतन लेना। वे चाहे बसमाचियोंसे मिल जायँ या ख़ुद बसमाची बन जायँ, इससे हमारा क्या वास्ता ?—'लोली (नट)के घड़ेको पानी दे और अपना पैसा ले।' किसी बातके लिये परेशान होने और घबड़ानेकी ज़रूरत नहीं है।

—मैं तुमसे एक कहानी कहता हूँ। एक दिन स्वर्गीय ईशान काजीकलाँने मुझसे पूछा यह हिण्डनबर्ग किस तरहका आदमी है, कि जिस युद्ध-क्षेत्रमें जाता है, दस-दस हजार आदमी मरने लगते हैं ? मैंने निस्संकोच हो जवाब दिया था। "तकसीर ! वह मृत्यु है, मृत्यु। जहाँ जाता है मौतको साथ लिये जाता है"। इस वार्तालापके बाद हिण्डनबर्ग सदा मेरी आँखोंके सामने मृत्युकी भाँति प्रकट होने लगा। जब सो जाता, हिण्डनबर्गको मृत्युके रूपमें देखकर जाग उठता और जबतक विश्व-युद्ध समाप्त नहीं हुआ, मैं चैनसे सो नहीं सका। जबसे बसमाची पैदा हुए हैं, तबसे हर रात हिण्डनबर्गकी तरह बसमाचियोंको देखता हूँ, विशेषकर इन दिनोंमें, जब कि उनमेंसे एकको रक्तपूर्ण प्यालीकी तरह लाल-लाल आँखें फाड़े वकील-मुखतारके सामने जाते देखा और सो भी स्वप्नमें नहीं बल्कि जाग्रतावस्थामें मूर्तिमान मृत्युके रूपमें, तो मेरे होश उड़ गए। भगवान न करें कि वकील-मुख़तारके साथ मिल जाय। ठीक जानो, यह बसमाची सिर्फ बोलशेविकोंको ही नहीं बल्कि एक भी जदीदको दुनियामें जिन्दा नहीं रहने देंगे। जदीदोंके साथ हम और तुम भी हरामकी मौत मरेंगे। यही बात है, जिसने मुझे परेशान कर रखा है, नहीं तो मेरे लिये जैसा अमीर वैसा बसमाची और वैसा ही जदीद। जो भी एक कौर रोटी दे, मैं तो उसीका गुलाम हूँ। तुम्हारी बात ठीक है "लोलीके गदहेको पानी दे और अपना पैसा ले"। इस बातको मैंने गाँठ बाँध लिया है।

—मैं तुम्हारी इन बातोंको बिल्कुल न समझ पाया, वकील-मुखतार पूर्वी बुखाराके राज-काजके वकील-मुखतार (शासक) ही नहीं हैं, बल्कि वह बुखारा जन-प्रजातन्त्रके राष्ट्रपति भी हैं। बसमाची इस सरकारके दुश्मन हैं, फिर वकील-मुखतार कैसे उनसे मिल जायँगे ?

प्रधान लेखकने जरा सोचकर कहा—मैं आज न सही कल प्रधान-लेखक पदके हाथसे चले जानेके लिये दाखुन्दा जैसोंसे भय खाता हूँ,

इसी तरह वकील-मुख़तार और दूसरे जदीद भी दाखुन्दोंसे भय खाते हैं। सच बात यह है, कि यह लोग बोलशेविक ढंगके शासनके लिये राज़ी नहीं। बुखारा-क्रान्तिके बाद चाहे वकील-मुखतार बोलशेविक बन गये हों, लेकिन इनका यह काम वैसा ही अवसरवादका था जैसा हमारा और तुम्हारा जदीद बनना। यह ठीक है, कि वह बोलशेविक होनेसे ही बुखारा जन-प्रजातन्त्रके राष्ट्रपति बन पाये, किन्तु वह अच्छी तरह जानते हैं; कि शासनकी आजकी व्यवस्था देर तक न चलेगी। आज न हुआ तो कल दाखुन्दे, भिश्ती, मजूर और भूखे किसान उठ खड़े होंगे और बुखारा सरकारको भी रूसिया और तुर्किस्तानकी भाँति वास्तविक बोलशेविक सरकार बना देंगे। उस समय यदि वकील-मुख़तारका पद कायम भी रहा, तो भी यह दर्जा भिखमंगोंके अक्रसकाल जैसा होगा; जब कि आज यह और इनकेसे विचार रखनेवाले गरीबोंके मालिक और मुल्कके जीवनमरणके स्वामी हैं। यही कारण है, जो यह उसके लिये रास्ता ढूँढ़ रहे हैं और चाहते हैं कि बसमाचियोंसे एक होकर अपनी उद्देश्य-पूर्तिकी ओर एक कदम और आगे बढ़ायें।

—लेकिन तवारिश लोग या लाल सैनिक, जो कि बुख़ारा जन-प्रजातन्त्रके बुलाने पर यहाँके कमकरोंकी सहायता और अमीर तथा बसमाचियोंको खतम करनेके लिये आये हैं, क्या वकील-मुखतारके इस कामको पसन्द करेंगे ?

—अगर जान जायँ, तो जरूर पसन्द न करेंगे; लेकिन वकील-मुख़तार इस कामको उनसे छिपाकर कर रहे हैं।

—लेकिन अलीरजा और दानियाल तो आज तक सेना-पुलिसको शिक्षा दे बुखारा जन-प्रजातन्त्रके नामसे बसमाचियोंके साथ लड़ते आये, वह क्यों वकील-मुखतारके विचारको मान बसमाचियोंसे एक हो जायँगे ?

—वह भी आजतक मतलबसे बसमाचियोंके साथ लड़ रहे थे।

अबजब कि उन्हें एक बड़ा आधार मिल गया, तो चाहते हैं कि मुहमे परदा उतारकर फेंक दें।

—ठीक, किन्तु उनका वह बड़ा आधार क्या है ?

—तुम ऐसी बातें कर रहे हो शरीफ, मानों दुनियामें अभी आये हो। अनवरपाशा उसमानी तुर्कोंके जदीदोंका नेता और एक प्रसिद्ध आदमी है। वह शिकारके बहाने बुखारासे भागकर आजकल बसमाचियोंके भीतर बैठा है। क्या वहाँ वह कूमिज (घोड़ीके दूधकी शराब) और काज़ाखानेके लिये बैठा है ? वही अनवरपाशा इनका आधार है। यदि वह न होता, तो वकील-मुखतार, अलीरजा, दानियाल और दूसरोंको आगे बढ़नेकी हिम्मत न होती। अनवरने मेहमानके तौरपर बुखारामें आकर काममें जोश दिलाया। कौन जानता है, बुखारामें इस बातकी भी सलाह हुई हो और आश्चर्य नहीं कि जल्दी ही बुखाराके शासकोंमेंसे भी कुछ इनके साथ हो जायँ।

—अनवरपाशा !

—ठहरो, दाखुन्दाको चाय रखकर चले जाने दो।

दाखुन्दा चायनिक रखकर चला गया।

—तुम दाखुन्दासे क्यों इतनी सावधानी रखते हो ?—कहकर शरीफने आश्चर्य प्रकट किया।

—यह दाखुन्दा वह परसालवाला दाखुन्दा नहीं है। अब वह हर बातको समझता है। रातको मेरी नींद जब टूट जाती है, तो दाखुन्दाको पुकार अँगीठी जला बैठे-बैठे बात करता हूँ। अलीरज़ा और वकील-मुखतारके बहुतसी बातोंका पता मुझे दाखुन्दासे ही मिला। उसके कथनानुसार अब्दुर्रहमान मिंगबाशी दो रात पहले दानियालके पास आया था, यद्यपि दानियालने उससे पहले युद्ध किया था और अब मिंगबाशी उसके पाससे चालीस बन्दूकें और दो पेटी कारतूस ले गया है। जानते हो, अब्दुर्रहमान मिंगबाशी कौन है ? वही, जो कि क्रान्तिके आरम्भमें

हमारा अब-अफ़सर बनकर ग़रीबोंको सताता रहा और अन्तमें स्वयं भागकर बसमाची बन गया। बकील-मुख़तारके पास और भी कितने बसमाची चुपके-चुपके आते हैं। दाखुन्दा कह रहा था "जदीद और बसमाची एक होकर बोलशेविकोंसे लड़ रहे हैं", ऐसी अफ़वाह लोगोंमें उड़ रही है। इस बातको सुनकर बाय, मुल्ला और अमीरके पुराने अमलदार बहुत खुश हैं, लेकिन ग़रीब कमकर "अमीरी जमानाके ज़ुल्मोंको दस गुना करके हमारे शिरपर ढायेंगे" कहकर चिन्तित दीख पड़ते हैं। दाखुन्दा इस सम्बन्धमें जो-जो भी बातें कहता, मैं 'हाँ-हाँ' कहते सुनता हूँ और अपनी तरफ़से कुछ नहीं बोलता; बल्कि अपनेको बिल्कुल अनजान प्रकट करता हूँ। यदि उसको मालूम हो कि हम दोनों इसी तरहकी बात-चीत कर रहे हैं, तो उसे सन्देह होने लगेगा। मालूम नहीं इन कामोंका क्या परिणाम होगा? क्रान्तिका समय है। बहुत सावधान रहनेकी ज़रूरत है। अब क्या कहना चाहते हो?

—मैं यही कहना चाहता हूँ, कि अनवरपाशा जैसा एक प्रसिद्ध आदमी अपने वतनको छोड़कर यहाँ काम कर रहा है।

—मैं जदीद नहीं हूँ लेकिन रूस-जापान युद्धके बादसे ग़ज़ट (समाचारपत्र) पढ़ता आया हूँ। तुर्कीमें जब क्रान्ति हुई, उसी समय मैंने अनवरपाशाका नाम समाचार-पत्रमें पढ़ा। विश्व-युद्धमें भी उसने हिण्डनबर्गके साथ काम किया और "विश्वके तुर्कोंको हम एक करेंगे, विश्वके मुसलमानोंको हम एक करेंगे" कहकर लाखोंको मौतके मुँहमें झोंका, लेकिन अन्तमें तुर्की की हार हुई और अनवरको बे-आबरू हो वतन छोड़ भागना पड़ा। कमालपाशाने तुर्कीकी बागडोर संभाली और अनवरपाशा आकर फिर कोई गड़बड़ी न पैदा करे, इसलिये उसे देश लौटने की इज़ाज़त न दी। अब वह यहाँ आया है, कि अशिक्षित आदमियोंमें कोई बड़ा काम करके हाथसे गयी प्रसिद्धिको फिरसे लौटानेमें सफल हो।

—बसमाची तो जदीदोंके खूनके प्यासे हैं, फिर वे कैसे अनवरपाशा जैसे जदीदके साथ मिलकर यह काम करेंगे ?

—कहावत है "चोर-चोरको अँधेरी रातमें भी पा लेता है", उसी तरह ये भी एक दूसरेसे घुल मिल रहे हैं, लेकिन इनमेंसे हरएक दूसरेको धोखा देकर अपना मतलब पूरा करनेकी फ़िक्रमें है और राजको अपने हाथमें लेना चाहता है। अफ़वाह है, कि अनवरपाशा "इस्लामकी एकता" के बहाने बसमाचियोंको इकट्ठाकर उन्हें अपनी अधीनतामें ला अपना मतलब पूरा करना और राजको अपने हाथमें लेना चाहता है। उधर बसमाची भी—जो हजार मुसलमानोंको एक धेलेमें भी खरीदनेको तैयार नहीं—अनवरपाशाकी प्रसिद्धिसे फ़ायदा उठा, राजको अपने हाथमें करके अपनी इच्छानुसार मुसलमानोंको लूटना चाहते हैं। "हर आदमी अपने मुर्देके लिये रोता है।" जदीद, कदीम, मुसलमान, तुर्क, जाति और देशके नामसे चिल्लाना लोगोंकी आँखोंमें धूल झोंकनेका एक बहाना है। लेकिन इसी चिल्लानेमें, जैसा कि मैंने कहा, हम और तुम हरामकी मौत मरेंगे।

—तुम्हारी यह सब बातें भँगेड़ियोंकी तान हैं, इनशा-अल्ला, कोई ऐसी बात न होगी।

—भँगेड़ियोंके भी तानमें कभी-कभी सच्चाई देखी जाती है। जो भी हो, हमें इन बातोंका ख्याल रखना चाहिये और परिणामसे भय खाना चाहिये।

१३

आहारकी खोज

—सलामदर !

दोशम्बाके कुर्गानमें दो घंटोंसे दो पाँतियोंमें खड़ी जातीय सेना (लश्कर-मिल्ली) इस फ़र्मानको सुनकर सलामीके लिये तैयार हो गये। फ़र्मान देनेवाला पीले रंग, खड़ी-मूँछ तुर्की पोशाक पहने एक लम्बा

आदमी था। उसने अपनी मूँछको ऐंठते हुए थोड़ा पीछे खड़े कफ़काज़ी (काकेशसवाली) फ़ौजी वर्दी पहने आदमी से पूछा—नह्सिल (कैसे हो) दानियाल आफ़न्दी ?

—चोक़ गोजल् (बहुत अच्छा)—दानियाल आफ़न्दीने जवाब दिया।

कमाण्डरने दानियालके साथ फौजकी सलामी ली। क़ुर्गान (महल)की दूसरी ओर एक कमखून मैले रंगका लम्बा आदमी दिखलाई पड़ा। उसकी आँखोंपर चिन्ताके चिह्न थे। वह धीरे-धीरे विनय और अभिमानके साथ कमाण्डरके सामने आया। कमाण्डर और दानियालके सलाम करने और जवाब देनेके बाद उसने सैनिकोंकी तरफ निगाह करके "ओग़लान् लारम्" कहते तुर्की भाषामें सैनिकोंसे कुशल-मंगल पूछा। सैनिकोंने भी इन चन्द दिनोंमें सीखे शब्दों द्वारा "यो शासुन् वकील-मुखतार हज़रतलरी" कहकर दुआ किया। वकील-मुखतारने जवाबमें अपने शिरको थोड़ा हिलाते "तशक्कुर् एदरम्" (धन्यवाद) कहा।

दूसरी पाँतीके एक सैनिकने अपने साथीसे धीरेसे कहा—आक़ा शरीफ़ ! वकील-मुखतार "तश्शकता खुरम" बोले क्या ?

शरीफ़ अपनी हँसीको न रोक सका।

कमाण्डर अपने जरनैलीके चिह्न छोटे चाबुकको हाथमें लिये दूसरी पाँतीसे गुजरते हुए शरीफ़से बोला "यजूनगलर इस !"

शरीफने "ओह अक़रम तोपचीबाशी ! तू कौन सी कब्रसे जिन्दा हो उठ आया ?"—कहकर सारे सैनिकोंको हँसा दिया। कमाण्डरने सुनीको अनसुनी बना वकील-मुखतारके पास लौटकर जंगी सलाम दे तुर्की भाषामें कहा—इन जवानोंकी शिक्षा और व्यवस्था बहुत अच्छी है, इनसे बहुत आशा की जा सकती है।

वकील-मुखतारने भी "चोक़योशा, इन्तुर्खानवात, अलीरजा आफ़न्दी" कहकर कमाण्डरको बधाई दी।

मान-सम्मान और धन्यवाद देनेके बाद अलीरजाने "तशरीफ़ लाइये" कहकर वकील-मुख़तारका हाथ पकड़े एक कमरेके अन्दर दाखिल होते "दानियालजी तुम भी आओ" कहकर अपने साथीको भी बुलाया। तीनों कमरेके अन्दर पहुँचे। वकील-मुख़तारने "काम कैसे चल रहा है?" कहकर अलीरजासे पूछा। अलीरजाने "बहुत अच्छा" कहकर जेबसे एक पत्र निकाल वकील-मुख़तारके हाथमें दिया। वकील-मुख़तारने चुपचाप पत्रको पढ़ना शुरू किया। पत्रका प्रभाव उनके चेहरेपर पड़ता जा रहा था और समाप्त करते वक्त उनके होठोंपर हँसीकी रेखा दौड़ गई। और बोले—कहना होगा इन्तुर्ख़ान काम रास्तेपर चल रहा है।

—हम आज रातको दानियाल आफ़न्दीके साथ "अन्नकी खोज"में जा रहे हैं और हर बातको कह देंगे और उसे लिखकर इस चिट्ठी लानेवालेके हाथसे भेज देंगे।

—जो भी हो इन्तुर्ख़ीन तैयार रहना चाहिये, जिसमें काम इन्तुख़ीन शत-प्रतिशत इच्छानुसार होवे—कहते वक्त वकील-मुख़तारके चेहरेपर फिर घबड़ाहटका असर दिखाई देने लगा।

अलीरजा—हजरत वकील-मुख़तारकी तबियत अपने इन दासोंकी ओरसे खातिर-जमा रहे। हम मुट्ठीभर तुर्क (उस्मानी) नौजवानोंने आरमेनियन, कुर्द, अर्नऊद, अरब, तुर्क—संक्षेपमें तुर्क-साम्राज्यके सभी अत्याचार-पीड़ित जातियोंके नेताओंको मीठी-मीठी बातोंसे अपने साथ करके हल्ला मचाया और इस तरह ३१ मार्चकी क्रान्ति हुई और खलीफा अब्दुलहमीदको तख्तसे उतरना पड़ा। बल्कानके युद्धके समय सेनाको हार दिलवा कामिलपाशाकी सरकारको ख़तम किया। बुल्गारिया-सर्वियाके आपसी मतभेदों और जंगसे फ़ायदा उठा बग़ैर एक गोली चलाये हाथसे निकल गये अदरनाको फिर वापस ले लिया और इस प्रकार अपने मंत्रि-मण्डलको दोस्त और दुश्मनोंके आगे ऊँचा किया। बगदाद रेलवेको जर्मनोंको और दूसरी चीजोंको दूसरी युरोपीय शक्तियोंको प्रदानकर

कर्मचारियोंको प्रतिमास ठीक वक्तपर वेतन देते रहे। अन्तमें विश्व-युद्धमें सम्मिलित हो उस्मानी (तुर्की) नामको दुनियामें प्रसिद्ध किया। हमारे शिरपर जो बातें गुजरी हैं, उनके सामने इस वक्तकी समस्या कुछ भी नहीं है। हजरत वकील-मुख़तार—जो साथ ही बुखारा-जन-प्रजातन्त्रके राष्ट्रपति भी हैं—की छत्र-छायामें हर कामको हम पूरे इतमिनानके साथ अंजाम देंगे। जरूरत सिर्फ इस बातकी है, कि हजरत वकील-मुख़तार अपने उद्देश्य और वादोंपर दृढ़ रहें।

इस हर्षोत्पादक भाषाको सुनकर वकील-मुख़तारके चेहरेसे चिन्ताका प्रभाव जाता रहा। आशा और आनन्दको प्रकट करते हुए "धन्यवाद इन्तुर्खान राय, सफलता इन्तुखान चाहता हूँ"—कह वकील-मुख़तार अपने आफिसकी तरफ जानेको तैयार हुए। अलीरजाने बड़े सम्मानके साथ फिर मिलनेका वादा करते हुए कहा—श्रीमान्से इजाजत ले "अन्नकी खोज"के लिये जा रहे हैं।

× × ×

कोकताश गाँवमें एक कच्चा घर था जिसकी छत सरकण्डे और घाससे छाई हुई थी। उसमें दूसरे किसान-घरोंसे कोई अन्तर न था। इस घरमें मझोले कदका छरहरा आदमी खड़ा था। उसकी पोशाक यूरोपीय ढंगकी थी। दाढ़ीके बाल बतला रहे थे, कि उसने कितने ही दिनोंसे हजामका मुँह नहीं देखा है। जब वह मूँछके बालोंको पकड़कर ताव देना चाहता, तो दाढ़ीके बाल उलझकर उसमें बाधा डालते। वह दाढ़ीके बालोंको अलगकर मूँछके छोरोंको मुँहमें डाल चबाते हुए अपने पैरोंकी ओर देखने लगता। फिर घरके बीच इधरसे उधर टहलने लगता। जब भी किवाड़के सामने पहुँचता, दरारोंसे बाहरकी ओर देख फिर टहलने लगता।

आधी रात खतम हो जानेपर बाहरसे पैरोंकी आहट आने लगी। आदमी भी टहलना छोड़ द्वारके पास खड़ा होकर बोला—क्या है हसनबे?

—आ गये, यदि हजरतपाशाकी आज्ञा हो तो अन्दर आयें—इसनने कहा।

"आने दो" कह आदमीने मुँहके पानीसे भिगे मूछकी नोकोंको ऊपर ले जा ऐंठ दिया, फिर घरके बीचमें खड़ा हो आनेवालोंकी प्रतीक्षा करने लगा। प्रतीक्षा देर तक नहीं करनी पड़ी। दो आदमी द्वारके अन्दर आ सम्मान और सैनिक सलामके तौर पर हाथोंको ललाट तक पहुँचा पाशाके सामने आकर खड़े हुए।

—अलीरजाबे ! क्यों देर हुई ? मैं दो घंटेसे प्रतीक्षा कर रहा हूँ—कहते पाशाने भी सलामके जवाबमें अपने हाथको कुछ ऊँचे उठा मिलानेके लिये आगे बढ़ाया। अलीरजाने दौड़कर पाशाके हाथोंको आँखोंसे मला और फिर जमीनपर पड़ उसके पैरोंको चूमा। किन्तु "उठ" यह फरमान मिलते ही अलीरजा सैनिक ढंगकी चुस्तीके साथ खड़ा हो अपने साथीकी तरफ इशारा करके बोला—यह हमारे साथी मशहूर बहादुर दानियालबे हैं।

"मुसलमानोंके खलीफाका दामाद अनवर" कहकर अपने हाथको दानियालकी ओर बढ़ाते हुए "अलीरजासे तुम्हारी बहादुरीके बारेमें सुनकर मैं तुम्हारा अदृष्ट-प्रसंशक बन गया था" कहकर अनवर-पाशाने अपने विशेष ध्यानसे दानियालको कृत-कृत्य किया।

फिर अलीरजाने "बुखारा जन-प्रजातंत्रकी शासन समितिके प्रधान तथा पूर्वी बुखाराके राज-काजके वकील-मुख़तार उसमान खोजाने सलाम भेजा है" कहकर बात पूरी की।

मुलाकातकी रस्म ख़तम होनेके बाद तीनों बैठकर आपसमें बातचीत करने लगे।

—कामको कहाँ तक पहुँचाया ?—कहकर अनवरपाशाने अलीरजासे पूछा।

—सभी बातें ठीक हैं, हर कामके लिये तैयार हैं—अलीरजाने जवाब दिया।

—और उसमान खोजा ?

—उसमान खोजा भी अपने वचन पर दृढ़ है। केवल हजरत पाशाके फ़र्मानकी प्रतीक्षामें है।

—अगर ऐसा है, तो कामको शुरू करना चाहिये।

—सिर-आँखों पर—कह अलीरजा उठकर सैनिक सलाम दे फिर अपनी जगह बैठ गया।

अनवर—तेरी ताक़तमें कुछ कमी हो तो बसमाची मदद देनेको तैयार हैं। किन्तु उनमेंसे कुछके पास हथियार नहीं है। हिन्दुस्तानसे बदख़्शांके ऊपर-ऊपर नये हथियार आनेवाले थे, लेकिन देर हो गयी। हो सके तो घटनाके दिनके लिये आप उन्हें हथियार दें।

—सिर-आँखोंपर।

राष्ट्रीय सेना खासकर फौजी पुलिस—जिसे मैंने खुद सिखाया है—हर कामको अच्छी तरह कर सकती है—कहकर दानियालने अपने कौशलका परिचय दिया।

"मुजाहिद (धर्मयोद्धा) आगये" कहकर ख़िदमतगारने बाहरसे खबर दी।

—आने दो—अनवरपाशाने जवाब दिया।

इब्राहीम बेगके साथ बसमाचियोंके बीस कूर्बाशी (सेना-संचालक) अन्दर आये। अनवरपाशाने उनमेंसे हर एकको "काज़ी, मुजाहिद, दीवानबेगी, दादख़ाह..." नाम देकर उनका अलीरजा और दानियालसे परिचय कराया। कुशल-प्रश्नके बाद वे जहाँ-तहाँ बैठ गये। अलीरजा इब्राहीमके साथ और दानियाल अब्दुर्रहमानके साथ पास-पास बैठकर बातें करने लगे। उस वक्त उनके देखनेसे आदमी समझ सकता था, कि वह मिली-भगतवाले पहलवान हैं, जो कि तमाशबीनोंके सामने एक

दूसरेके ऊपर झपट्टा मार अपना रोल पूरा करते हैं और अपने कमरेके अन्दर चिर-मित्रकी तरह दूध-शक्कर हो जाते हैं। बातचीत और योजनाके पक्की हो जानेके बाद अलीरजाने कहा—हजरत पाशाकी इजाजतसे बेहतर होगा कि हम जल्द लौट जायँ। दोशम्बासे हम अन्नकी खोजके बहाने आये थे। यदि खाली हाथ लौटेंगे, तो तबारिश (बोलशेविक) लोग सन्देह न करने लगें।

—इसके लिये चिन्ता न करें, इब्राहीमबे तुम्हें खाली हाथ न जाने देंगे—अनवरने कहा।

अलीरजा और दानियाल, अनवरपाशा और बसमाचियोंसे रुखसत हो बाहर निकले। नदीके किनारे दस भेड़ें और सौ पूत (पन्द्रह सेरा) गेहूँ उनके लिये तैयार था, जिसे लेकर वे वकील-मुखतारके पास पहुँचे। वकील-मुखतारने उनकी 'अन्नप्राप्ति''की प्रशंसा की।

१४

अमीर लश्करे-इस्लाम (दिसम्बर १९२१)

दिसम्बर १९२१की एक रातको दोशम्बेमें बड़ी हलचल मची हुई थी।

—क्या बात है ?

—वकील-मुखतारने लाल सैनिकोंको बसमाचियोंके सामने हथियार रखनेका हुकुम दिया है, लेकिन उन्होंने इसे माननेसे इनकार कर दिया है।

—फिर ?

—अलीरजा और दानियाल अपने सिपाहियोंको लेकर लाल सैनिकोंसे जबर्दस्ती हथियार रखवानेके लिये किलाके सामने खड़े हैं।

—खुद वकील-मुखतार कहाँ है ? शायद यह विश्वासघात अलीरजा और दानियालने खुद किया है।

—नहीं, खुद वकील-मुख्तार बुखारासे लाये हथियारोंको बसमाचियोंमें बाँट रहा है।

दोशम्बाके दो आदमियोंमें इस तरहकी बातचीत हो रही थी, इसी समय किलाकी ओरसे बन्दूकों और मशीनगनोंकी आवाज आने लगी। भोरके वक्त इस भयानक आवाज़ने शहरके लोगोंको नींदसे उठाकर भागनेके लिये मजबूर किया और वह अपने छोटे बच्चोंको कंधेपर रखे शहरसे निकलने लगे। आठ बजे तक शहरके स्थायी निवासियोंमें यहूदियोंके चन्द परिवारों—जिन्हें भागनेका ठाँव न था—को छोड़ कोई नहीं रह गया, लेकिन लोगोंका माल-असबाब जहाँका तहाँ पड़ा रहा। शहरमें हर घंटे हलचल बढ़ती जा रही थी। वकील-मुख्तार अब भी अपने हथियारोंको बाँट रहा था।

वकील-मुखतारकी बदौलत हथियारबन्द हुए बसमाची पहले खुद वकील-मुखतारके खास आदमियोंको, फिर लोगोंके खाली मकानोंको, फिर अनाथ यहूदियोंको लूटकर बाहर चले गये।

मिनट-मिनट स्थिति बदल रही थी। वकील-मुख्तारने देखा, कि शहरमें खुराक नहीं रह गयी है और बसमाची चाहते हैं, कि उसके पास बचे हथियारोंको भी छीन लें। इधर लाल सैनिक भी बेवकूफी करके अपने हथियारोंको "हजरत वकील-मुख्तार" को सौंपना नहीं चाहते। ऐसी अवस्थामें भागनेका निश्चय करनेके सिवा वकील-मुखतारके लिये कोई चारा न रहा।

रातका वक्त था पानी बरस रहा था। इसी वक्त वकील-मुखतार उसमान खोजा अपनी बहुमूल्य वस्तुओं, तिल्ला (अशर्फी) और तंका (चाँदी सिक्का) और वखशानेसे बचे छोटे हथियारोंमेंसे कुछको समेटा और अलीरजा, दानियाल, सुरैया और दूसरे अनुयायियोंको लिये शहरसे निकला। अब भी कुर्गान (महल) में जामोंसे भरे ट्रंक, तह किये कालीन

असंस भरे अम्बार, तीन सौ पेटी कारतूस, बहुतसे हथियार और दूसरी भी कितनी चीजें पड़ी थीं।

वकील-मुखतारके भागनेकी खबर पा बसमाची शहरमें आये। उन्होंने इन चीजोंको लिया और शहरके घरमें जो कुछ बच रहा था, उसे भी लूटा। दिन हुआ। लाल सैनिकोंने अपने स्थानसे शहरको देखा। आदमियों और चीजोंसे खाली मकानों और शिर-पैरसे नंगे यहूदियोंके अतिरिक्त शहर और कूर्गानमें कोई चीज न दिखलाई पड़ी। शहरके बाहर चारों तरफ नये हथियारोंसे सुसज्जित पाँच हजार बसमाची घेरा डाले हुए थे। अनवरपाशा "अमीर लश्कर-इस्लाम, दामाद-खलीफा-मुसलमीन व नायब-जनाब-आला-बुखारा" (इस्लामी सेनाका सेनापति, मुसलमानोंके खलीफाका दामाद, बुखाराके अमीरका नायब)की उपाधिसे बसमाची दलका कमाण्डर बना हुआ था। लेकिन यह भाग्यका जुआरी, हिण्डनबर्गका शिष्य और प्रसिद्ध नेता अपने पाँच हजार खूँखार अनुयायियोंके साथ संसारके कमकरोंके अधिकारोंके प्रतिनिधि चंद दर्जन लाल सैनिकोंको परास्त न कर सका और न दोशम्बा शहरको लेनेमें सफल हो सका—दोशम्बा भविष्यके ताजिकिस्तान प्रजातंत्रकी राजधानी। हाँ, उसने यह कहकर दिलको तसल्ली दी होगी कि बसमाचियोंने वकील-मुखतारके साथ विश्वासघात किया और उसे डटे रहनेकी हिम्मत न रही।

१५

परेशान कारवाँ

वकील-मुखतारका छः सौ आदमियोंका कारवाँ इक्कीस मशीनगनों, सत्तरह सौ बन्दूकों, तंका-तिल्लासे भरी सन्दूकों, मूल्यवान जामों और लिबासोंसे भरे ट्रंकोंके साथ पर्वत और निर्जन प्रदेशोंसे जल्दी-जल्दी रवाना हुआ। खुद वकील-मुखतार "इन्तुखीन शै, शै इन्तुखीनशै" कहते आगे-आगे घोड़ा भगाये लिये जा रहा था। अलीरजा अत्यन्त क्रोधसे

अपनी मूँछोंको चबाते "पज्वनूग़लर सफिलूलर पज्वनूग़जर सफिलूलर" कहते किसीको गाली दे रहा था। पहाड़ों और दरोंसे गुजरते तीसरे रोज कारवाँ लत्ताबन्द गाँवमें पहुँचा, लेकिन अभी कारवाँ खाने-पीनेकी तैयारी ही कर रहा था कि चारों ओरसे बन्दूकोंकी आवाज आने लगी। वकील-मुखतारको "इन्तुखीन शै" कहनेकी भी ताकत न रह गयी। जब वह बोलना चाहता, तो उसके ओठ सिलेसे मालूम होते और भयके मारे जीभ हिल न सकती थी। आवाज और बढ़ने लगी। कुछ मिनट बाद बसमाचियोंके प्रतिनिधि वकील-मुखतारके सामने आत्म-समर्पण करने और हथियार छोड़नेकी शर्त लेकर आये। पाँच मिनटमें ही कारवाँमें "समर्पण-समर्पण"की आवाज सुनाई देने लगी।

—भाइयो! किसके सामने समर्पण? बसमाचियोंके सामने समर्पण! उन बसमाचियोंके सामने समर्पण, जिनके साथ हम बोलशेविक पार्टीके नेतृत्वमें बुखाराके कमकरों और जन-प्रजातन्त्रके नामसे लड़ते रहे! यह ऐसी शर्त है, जिसे ख़ुद बसमाची हमारे हाथ कर सकते हैं। यह ऐसी शर्त है, जिसे वही कबूल कर सकते हैं, जो खुद बसमाची हैं, और प्रजातन्त्र सरकारके सेवकोंका बाना पहनकर हमारे अन्दर आ हमारा नेतृत्व कर रहे हैं। जब तक हमारे तनमें जान है, तब तक हम बसमाचियों और समर्पणके लिये जोर देनेवालोंसे लड़ेंगे। बस, देख लिया, इस धोखेको। इसे वकील-मुखतारके नामसे हम पर डाला गया। बस, रहने दो उन लोगों की पैरवी करना, जिन्होंने अन्तमें हमें यहाँ लाकर पटका। इस वक्त हमारे अन्दर वकील-मुखतार और सेना-नायक नहीं हैं। इस वक्त हमारे सामने सिर्फ बसमाची हैं। आओ, बसमाचियों और उनके पक्ष-पातियोंसे लड़ें।

—दाखुन्दा ठीक कहता है—शराफ़ने कहा—हम किस उद्देश्यसे अपना घरबार छोड़ बुखारासे इधर आये? हम किस लिये अब तक बसमाचियोंसे लड़ते रहे? यदि हमें बसमाची होना होता, तो इतना कष्ट

उठानेकी ज़रूरत न थी; हम वतनसे बिना निकले ही बसमाची बन सकते थे। यदि बसमाचियोंके सामने आत्मसमर्पण करना ही हमारा उद्देश्य था, तो इतनी पहाड़ों-पहाड़ों जंगलों-जगलोंमें मारे-मारे फिरनेकी जरूरत क्या थी? हम घरमें आरामसे बैठे रह सकते थे। न बसमाचीका मुँह देखते और न उनके हाथमें समर्पित होते। हम बिना किसी दबावके पार्टी और जनताके प्रति अपने कर्त्तव्यको पालन करनेके लिये अपनी खुशीसे बसमाचियोंके साथ लड़नेके लिये मैदानमें उतरे। इस रास्तेमें बड़ी-बड़ी तकलीफें झेलीं। हमें "पज़ोङ्क् सतिल सफिल" कहकर गालियाँ दी गयीं, हमने सहा बर्दाश्त किया। यह सब इसलिये बर्दाश्त किया कि बसमाचियोंको खतमकर अपने किसानीके काममें लगें। लेकिन हमारे ये नेता अक्रम तोपचीबाशी और नौरोजीकी औलाद चाहते हैं, कि खुद हमें बसमाची बनावें और हमारी सारी कुर्बानियोंके बदलेमें सदाके लिये अपयश और बदनामीका इनाम दें। आओ बसमाचियोंसे लड़ें और अपने खूनसे उस बदनामीके धब्बेको धोयें, जिससे वकील-मुखतार और उसके सहकारियोंने अपने पदसे अनुचित फ़ायदा उठाकर हमारे दामनपर लगाया है...

—आओ लड़ें, आओ लड़ें!

यह आवाज जो अलीरजाके सैनिकों और दानियालकी फौजी पुलिसके अधिकांश लोगोंकी ओरसे बुलन्द हुई, उसने बसमाचियोंकी गोली की आवाज़को दबा दिया। यह आवाज थी, जिसने कारवाँवालोंको एक दूसरेसे भिड़ा दिया। यह वह ज्वालावाली अग्नि थी जिसने कारवाँवालोंको परीक्षाकी भट्ठीमें डालकर सोनेको ताँबेसे और चाँदीको राँगे और सीसेसे शुद्ध करके अलग कर दिया। यह वह कोलाहल-पूर्ण बाढ़ थी, जो पत्थरको खड्ढोंमें, बालूको गड्ढेमें, घास और तृणको किनारेपर फेंककर अपनी राह चली। गोलियोंके आनेके शुरूमें दानियाल अपने सत्तर सिखाये हुए सिपाहियोंके साथ मैदानसे निकलकर बराबरके लिये बसमाची बन

संगगर्दककी तरफ चला गया। कुछ दूसरे भी बसमाची बन गये, किन्तु समर्पण विरोधी बहादुर बिना किसी संचालक या कमाण्डरके बसमाचियोंसे लड़ने लगे। आध घंटेके भीतर बसमाचियोंने चींटियों और टिड्डियोंकी तरह सारे गाँवको घेर लिया। प्राणोंका बाजार सस्ता और बहादुरों की जान महंगी हो गयी। कोलाहलवाली बाढ़ रक्तवाहिनी नदीके रूपमें परिणत हो गयी।

वकील-मुखतारने देखा, कि या तो शत्रुकी तरह बसमाचियोंके हाथ पड़कर उनके हाथों यन्त्रणा सहनी पड़ेगी या बहादुरोंके हाथों जान खोना पड़ेगा। उसने मुक्तिका रास्ता ढूँढ़ते हुए वही रास्ता पाया, जिसका उपयोग करके २२ जुलाई १८७५ को खुदायारखाँने खोकन्दसे और ३ सितम्बर १९२० को अन्तिम अमीर बुखारा आलमखाँ गिज़दवानसे भागा—अर्थात् अशर्फी भरे तोड़ों, तंकोंसे भरे बक्सों, बन्दूकों और मशीनगनोंको रास्तेमें जहाँ-तहाँ बिखेरते हुए भागे। इस तरह जब कभी बसमाची नजदीक आते, वह अपने खजानेके बचे-खुचे भागोंको बिखेरता पहाड़ों और दर्रोंमें घोड़ा दौड़ाते भाग निकला। अन्तमें भुक्खड़ बसमाची मालसे इतने लद गये और वकील-मुखतारका भार इतना हल्का हो गया, कि बसमाचियोंने उसका पीछा करना छोड़ दिया। वकील-मुखतार अपने बचे सहगामियों—जिनमेंसे कुछ खुशीसे और कुछ दूसरा चारा न होनेसे उसके साथ हुए थे—के साथ उज्जबकान-किन्दी गाँवमें पहुँचा और अपने आदमियोंको दो-दो चार-चार करके लोगोंके घरोंमें बाँट करके खुद अलीरजाके साथ एक घरमें जाकर ठहरा।

× × ×

सुबह होने तक इस परेशान कारवाँका कोई आदमी गाँवमें नहीं रह आया, जिसकी जिधर इच्छा हुई वह उधर चला गया—कुछ बसमाचियोंकी ओर और कुछ जन-प्रजा-तंत्रकी ओर। वकील-मुखतारने अलीरजाके साथ अफगानिस्तानका रास्ता लिया।

पीछे रह गये प्रधान कातिबने अपनी दावातकी ओर इशारा करके अपने सहकारीसे "खैरियत हुई कि अशर्फियोंकी खुर्जीको बसमाचियोंकी ओर फेंकते वक्त मैं इस दावातको संभाले रखना नहीं भूला, नहीं तो मेरे जीवनकी कीमत एक काले पैसेके बराबर भी न होती"—कहकर संतोष-प्रकट किया।

१६

लूट और कैदी

युर्चीमें एक अजब घबड़ाहट फैली थी। लोग अपनी अधिकांश चीजें जमीनमें गाड़ रहे थे। जो चीजें उतनी मूल्यवान न होतीं, उन्हें वैसे ही छोड़ देते और आवश्यक चीजोंमें जितना ले जा सकते थे, उसे ले अपनी गाय-भेड़ जैसे खानगी जानवरोंको हाँकते दो-दो चार-चार करके जंगल और बयाबानकी तरफ भागे जा रहे थे। युर्चीमें एक भी आदमीका पूत न रह गया था। इसी वक्त नंगे-पैर नंगे-सिर दस आदमी वहाँ आये। यद्यपि उनकी भिन्न-भिन्न शकल-सूरतसे उनके भिन्न-भिन्न नगर और देशका होना साफ-साफ मालूम होता था, किन्तु उन सबके लिबास फटे, बदन चोटसे घायल, पैर अधिक चलनेसे सूजे, आँखें भूखसे अन्दर धुसी, ओठ बेखून होनेसे नीले और निगाहें निष्प्रभ थीं। उनकी यह दशा बतलाती थी, कि उन सबको एक वक्त एक घड़ी एक ही बलामें फँसना पड़ा था।

—यहाँ रेव्-कम्-खाना (रेवोल्यूशनरी कमीटीका आफिस) कहाँ होगा ?

—मुझे क्या मालूम, उस आदमीसे पूछें शायद उसे मालूम हो—कहकर दूसरेने एक आदमीकी ओर इशारा किया जो दो छोटे बच्चों और सिरपर बकचा लिये हुई औरतके साथ जा रहा था।

—ओय् आका ! तू यहाँका रहनेवाला है ?

आदमीने आवाज सुन मुँह फेरकर मुसाफिरोंकी ओर एक निगाह डाली और फिर वह जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाकर चलने लगा।

—ओ आदमी, तू यहाँका रहने वाला है, पूछ रहा हूँ?

आदमी आवाजको अनसुनीकर औरतपर तेज़ चलनेके लिये दबाव डाल रहा था, किन्तु मुसाफिर तेजीसे चलकर उसके पास पहुँच गये।

—आदमी हो या जानवर? क्यों बात नहीं सुनते?—एक मुसाफिरने कहा।

—लो, सुनता हूँ, क्या कहते हो?—आदमी खड़ा हो गया।

—रेव्-कम् खाना यहाँ कहाँ है?

आदमीने मुसाफिरोंकी तरफ एक-एक करके निगाह डाली और कहा—तुम मनहूस जदीद हो क्या? देख रहे हो न तुम्हारी मनहूसीसे हमारी क्या हालत है? तुम्हारा वकील-मुख़तार देशमें आग लगाकर भग गया। अब एक ओर तवारिश (बोलशेविक) लोग संदेह करके बस-माची कहकर हमसे नाराज हैं और दूसरी तरफ "मुल्क हमारा है" कह-कर बसमाची हमारा सब कुछ नाश कर रहे हैं। इन दो आगोंके बीच पड़े हम नहीं जानते कि क्या करें?

आदमी अभी अपने दुख-सुखको नहीं कह पाया था, कि एक तरफसे बंदूककी आवाज आई और कूचासे कुछ हथियारबन्द सवार निकलकर उनकी तरफ दौड़े। रेव्-कम्-खाना ढूँढ़नेकी बात छोड़ "बसमाची-बसमाची" कहते हुए वह हर तरफ भाग गये। उनमेंसे एक जो औरोंसे न भागनेके लिये कह रहा था, अपनी जगह खड़ा रहा। सवारोंने उससे पूछा—

—तू कौन है?

—मैं आदमी हूँ।

—मैं भी जानता हूँ, तू आदमी है, हैवान नहीं है। पूछता हूँ, तू किस पक्षका है?

अभी मुसाफिरने अपना मुँह न खोला था, कि जानेवाले आदमीने कहा—मैं समझता हूँ, यह जदीद या बोलशेविक है, क्योंकि अभी मुझसे "रेव्-कमूख़ाना" पूछ रहा था ?

सवारोंने तुरंत उस आदमीके हाथों और गर्दनको बाँध दिया। फिर एक सवारने उस आदमीसे पूछा—तू खुद कौन है, कहाँ जा रहा है ?

—मैं यहींका रहनेवाला हूँ और जहाँ दूसरे लोग गये हैं, उधर ही जानेवाला हूँ।

—बहुत खूब ! बकचा ला, और खुद हल्का हो जिधर चाहे जा।

आदमीके 'हाँ' या 'नहीं' कहनेसे पहले ही एक सवारने औरतके सिरपरसे बकचा छीन लिया।

अब तक गाँव हथियारबन्द सवारोंसे भर गया था। सवार अपने घोड़ोंको कूचेमें बाँध घरोंकी तलाशीमें लगे हुए थे। उन्होंने पहले घरोंमें छोड़ी चीजें लाकर एक जगह जमा कीं, फिर कुदालसे फर्श खोदकर गाड़ी हुई चीजोंको भी निकाला।

—इस बन्दीको क्या करूँ ?—रक्षक सवारने पूछा।

—क्या करें ? एक कार्तुस इसके सिरपर भी निछावर "घास कम दुनिया पाक"—कहकर एक बंदूकचीने निशाना बाँधा।

दूसरेने कहा—नहीं, क्या जानें यह आदमी बोल्शेविक नहीं, बल्कि जदीद हो। अनवरपाशाने हुकुम दे रखा है, कि हरेक जदीद या हकूमतके आदमीको न मारकर उसे केन्द्रमें भेजना चाहिये। मीर गाजीने भी इस हुकुमको कबूल किया है, इसलिये इस आदमीको भी लूटके मालके एक भागके साथ बंदी बनाकर कोकताश भेजना चाहिये।

बसमाचियोंने हाथ लगी चीजोंमेंसे एक हिस्साको केन्द्रीय नेताओंके नाम अलग करके बाकीको आपसमें बाँट लिया और बंदको भी मालके साथ दश सवारोंके हमराह कोकताश भेज दिया। बाकी सवार यूर्चीसे निकलकर देहनौ रवाना हुए।

१७

पथराव

यंगिकुर्गान गाँव बसमाचियोंसे भरा था। लक़े (किर्गिज), मर्का, करलुक् और ताजिक सभी जातियोंके बसमाची हवेलियों, घरों और कूचोंमें लेटे हुए थे। उनके साथ आठ सौ दरवाज़के भी बसमाची थे, जिनके पैरोंमें लकड़ीके जूते और गर्दनमें ग्यारह-गोलिया-पंच-गोलिया अंगरेजी बन्दूकोंके अतिरिक्त बाबा आदमके जमानेकी एक-एक कमान भी थी। बात मारनेमें यह सबसे आगे थे।

गाँवके बीचमें वकील-मुखतारके सामानसे सुसज्जित एक घरमें ईशान सुल्तान, अलीमर्दा, अब्दुलकयूमबी और दूसरे कूरबाशी और मुल्ला बैठे हुए थे। ईशान सुल्तानने अलीमर्दासे कहा—इस वक्त तू हमारी और खलीफा मुसल्मीनके दामाद अनवरपाशाकी मददसे इब्राहीम डाकूकी जगह बैठा है, लेकिन कोई काम हमारी रायके बिना न करना। भगवानकी दी हुई इस दौलतको हमें आपसमें मिलकर सँभालना चाहिये। इब्राहीम चाहता था सभी चीजें खुद खाये और सब काम अपने हाथमें रखे। वह किसी आदमीको पसन्द नहीं करता था।

अलीमर्दा—अलबत्ता, तुम हमारे दोस्त हो। मेरे लिये उचित है कि कोई काम बिना तुमसे पूछे न करूँ। इस वक्त भी मैं तुम्हारे पास सलाहके लिये आया हूँ कैसे रूसियोंको मुल्कसे निकाला जाय?

एक मुल्लाने बीचमें बोलते हुए कहा—सब काम शरीयत-शरीफ (सद्धर्म)के अनुसार होना चाहिये, तभी देश मुसल्मानाबाद बनेगा। जिस तरीकेसे जदीदोंके हाथसे मुक्ति मिलेगी, उसी ढंगसे रूसियोंके हाथसे भी। इब्राहीम बेग अपने पिछले कामोंमें शरीयतका ख्याल नहीं करता था। आलिमोंका सम्मान नहीं करता था। वकील-मुख्तारसे लूटे मालमेंसे मल्लोंको उचित अंश नहीं देता था।...

इसी समय बाहरसे हल्ला-गुल्लाकी आवाज आई और मुल्ला अपनी बात समाप्त न कर सका। कुछ हथियारबन्द आदमी एक हाथ-गर्दन बँधे व्यक्तिको ला रहे थे और उसके पीछे-पीछे एक पगली जैसी औरत अलीमर्दां और दूसरे बसमाचियोंको गालियाँ देती आ रही थी। बन्दीको अंदर ले जाकर ईशान सुल्तानके समक्ष खड़ा किया गया। ईशानने पूछा—यह कौन है?

—यह जदीद (नवीन) है। हम इसे यूरचीसे पकड़कर ला रहे हैं। कोकूलाश ले गये, किन्तु वहाँ सर्दार न थे। आपके पास लाते वक्त रास्तेमें इस बंदीको हमारे हाथमें देखकर यह औरत पागलोंकी तरह पीछे पड़ गई। भगानेकी बहुत कोशिश की, किन्तु नहीं भगी और यहाँ तक आ गई।

अलीमर्दांने बड़े ध्यानसे बंदीकी ओर देखकर पूछा—तेरा नाम क्या है?

—यादगार।

अलीमर्दां सिरको ऊपर-नीचे हिला पहचानते हुए बोला—क्या तू सरेजूय वाले अजीमशाहका भगोड़ा चरवाहा तो नहीं है?

बंदीने इस सवालका जवाब नहीं दिया।

अलीमर्दांने ईशान सुल्तानकी तरफ निगाह करके कहा—तक्सीर! इस औरत और मर्दकी कहानी बहुत लम्बी है। मैं इन्हें बहुत सालोंसे जानता हूँ। इन दोनोंके बीच शरीयतके विरुद्ध सम्बन्ध है। ऊपरसे इन्होंने हर जगह हमारी शिकायत की है। मैंने सुना है लत्ताबन्द गाँवमें इसीने वकील-मुख्तारके सैनिकोंको हमारी फौजोंसे लड़वाया। इसलिये चाहे अनवरपाशाने जदीदोंके न मारनेका हुक्म दे भी रखा है, तो भी इसे मारना चाहिये, शायद यह आदमी बोल्शेविक भी होगा।

मुल्लाने बीचमें टोका—चूँकि इनका एक दूसरेके साथ शरीयतके विरुद्ध सम्पर्क है, इसलिये इन्हें पथराव करना चाहिये पथराव।

—अलबत्ता, पथराव करके मारना चाहिये—दूसरे मुल्लाने साथ दिया।

ईशान सुलतान—कल तक इसे बंद रखकर आलिमोंसे फतवा लिखवा फिर लोगोंके बीच ले जाकर पथराव करना उचित है। (अपने आदमीकी ओर निगाह करके) इन्हें ले जा, अलग-अलग दो कोठरियोंमें बंद कर ताला लगा दे।

× × ×

दूसरे प्रातःकाल मुल्ला अपराधियोंके पथराव करनेका फतवा लिख लाये। ईशान सुलताननें फतवा पढ़कर अपने आदमीसे कहा—अपराधियोंको ले आ।

पाँच मिनट बाद "ले आया" कहते नौकर अंदर आया। ईशान सुल्ताननें दर्वाजासे बाहर सिर्फ एक आदमीको देखकर पूछा—अपराधिनी औरत कहाँ है?

—तक्सीर!

—औरतको भी ला, कह रहा हूँ।

नौकरने आगे आकर कहा—औरतको दो द्वारवाली कोठरीमें बंद किया था, किन्तु ताला लगाते वक्त एक द्वार भूल गया और वह भाग गई।

ईशान सुल्तान इस असावधानीके लिये अपने आदमीको खूब गाली देकर बोला—जल्दी करो। एक बड़ी जगहमें गड्ढा खोद बन्दीको कमर तक गाड़ दो और फौजियोंको खबर कर दो, कि हरेक आदमी इसपर एक-एक पत्थर मारकर पुण्यार्जन करे। अगर मर जाय, तो भी सारा शरीर जब तक ढँक न जाय, तब तक पत्थर मारनेसे हाथ न खींचें।

नौकर अभी बंदीको दरवाजासे बाहर न ले गया था कि बंदूकों और मशीनगनोंकी आवाज आने लगी। बसमाचियोंमें खलबली मच गई। हर आदमी हथियार ले घोड़ेपर चढ़ भागनेके लिये उतावला हो गया।

दस मिनट बाद यंगी-कुरगान गाँवको सौ लाल सैनिकों और क्रांति-कारियोंने घेर लिया था। बसमाची जंगके लिये हवेलीसे निकले। मुल्ला भी 'मारो गाजी मरो शहीद' कहकर उन्हें युद्धके लिये प्रोत्साहित करने लगे, किंतु बसमाचियोंको गाजी बनना मयस्सर न हुआ और सभी गरोह गरोह 'शहीद' भाग खड़े हुए। बसमाचियोंके दस्तेके अगले भागमें दरवाजी थे। वे सबसे पहले अपने लकड़ीके जूतोंको छोड़कर भाग निकले।

एक दरवाजीने कहा—वल्लाह! ऐसी नामर्दाना जंगसे बिल्कुल खुशी नहीं होती। हम तो ऐसी जंग पसंद करते हैं, जिसमें मर्दोंकी तरह बगलसे बगल मिलाके लड़ा जाय, और मर्दको नामर्दसे जुदा किया जा सके।

बढ़ते-बढ़ते युद्ध-क्षेत्र गाँवके अंदर आया। दोनों तरफकी गोलियाँ शत्रु-मित्रको पहिचाने बिना एक दूसरेकी छाती चीरने लगी। बसमाचियोंने देखा कि गाँव छोड़ना ही पड़ेगा। उन्होंने अनाजवाली हवेलियोंमें आग लगा दी। गाँव खून और आगके अंदर था।

बसमाची भाग गये। लाल सैनिकोंने गाँवमें घुसकर बहुत ढूँढ़ा, किंतु वहाँ ईशान सुल्तानके कुशखाना (अस्त्रागार) की किवाड़को ढाल बना-कर खड़े दाखुंदाके सिवा और कोई नहीं मिला। वह उनके साथ दोशंबा गया।

१८

लंका

दोशंबा शहरको चारों ओरसे दस हजार बसमाचियोंने घेर रखा था। यह बसमाची पहलेके बसमाचियोंकी तरह युद्ध-विद्यासे अपरिचित और अव्यवस्थित न थे। उनका नेतृत्व अनवरपाशा जैसा विश्व-युद्धका एक अतिप्रसिद्ध जेनरल कर रहा था। वकील-मुख्तारके विश्वासघातके बाद इस आदमीका प्रभाव बसमाचियों और प्रतिगामियों पर बहुत बढ़ गया

था। अब बसमाची अच्छी तरह उसकी आज्ञाका पालन करते थे। उसने "अमीर-लश्करेइस्लाम-नायब-अमीर-बुखारा व दामाद-खलीफा-मुस्लमीन अनवर" की मुहर और हस्ताक्षरसे खत-पत्र भेजकर अपनी आज्ञाकारिता और प्रजातंत्रीय सरकारसे लड़नेके लिये लोगोंको निमंत्रित किया था। उसने हाथमें आये लूटके मालको अफगानिस्तान भेजकर हथियार और सैनिक पोशाक खरीद मँगाई थी और अपने हस्ताक्षरसे 'कागजाकब्बा' (नोट) निकालकर नकद सिक्केकी जगह लेनेके लिये मजबूर किया था।

शहर दोशंबाकी हालत और खराब हो गई थी। लाल सैनिक चंद स्थानीय ताजिकों और बुखारियोंके साथ घिर गये थे और बड़ी मुश्किलसे रोजका खाना इकट्ठा कर पाते थे। अंतमें बसमाचियोंने पानीका मिलना भी कठिन कर दिया। काफी समयसे वे अपनी और अपने घोड़ोंकी प्यास केवल बारिशके पानी और बरफसे दूर कर रहे थे। उनकी पोशाक फटकर बेकार हो गई थी और कड़ाकेकी सर्दीके दिनोंको उन्होंने पोशाकके बिना बिताया था। बीमारों और घायलोंकी संख्या दिन-पर-दिन बढ़कर उनकी शक्ति कम हो रही थी। भूखे घोड़े खुले मैदानमें बरफ-वर्षाके समय भी नंगे खड़े थे। बुखारासे कोई मदद नहीं आ रही थी।

"अब इस जगह और रहना संभव नहीं"—यह आवाज अफसरोंसे लेकर सिपाहियों तक सबके सामने आ रही थी। किंतु लालसेनाका नियम और विनय इस बात की इजाजत न देता था, कि कोई इस बातको मुँहपर लाये। बुखारासे कोई खबर नहीं आई। हवाई तारसे मिली खबरोंसे मालूम होता था, कि बाहरी दुनियासे उनका संबंध बिल्कुल कट चुका है। तीन मास तक घिरे रह सारे कष्टोंको सहन करनेके बाद बुखारासे हवाई तारके जरिये फर्मान आया—"दूसरा फर्मान मिलनेपर अस्थायी तौरसे दोशंबा छोड़कर चले आओ।"

घिरावेके कष्टोंसे मुक्ति देनेवाले इस फर्मानका जारी करना जारी न

ग्यास मिनट बाद यंगी-कुरगान गाँवको सौ लाल सैनिकों और क्रांति-कारियोंने घेर लिया था। बसमाची जंगके लिये हवेलीसे निकले। मुल्ला भी 'मारो गाजी मरो शहीद' कहकर उन्हें युद्धके लिये प्रोत्साहित करने लगे, किंतु बसमाचियोंको गाजी बनना मयस्सर न हुआ और सभी गरोह गरोह 'शहीद' भाग खड़े हुए। बसमाचियोंके दस्तेके अगले भागमें दरवाजी थे। वे सबसे पहले अपने लकड़ीके जूतोंको छोड़कर भाग निकले।

एक दरवाजीने कहा—वल्लाह! ऐसी नामर्दाना जंगसे बिल्कुल खुशी नहीं होती। हम तो ऐसी जंग पसंद करते हैं, जिसमें मर्दोंकी तरह बगलसे बगल मिलाके लड़ा जाय, और मर्दको नामर्दसे जुदा किया जा सके।

बढ़ते-बढ़ते युद्ध-क्षेत्र गाँवके अंदर आया। दोनों तरफकी गोलियाँ शत्रु-मित्रको पहिचाने बिना एक दूसरेकी छाती चीरने लगी। बसमाचियोंने देखा कि गाँव छोड़ना ही पड़ेगा। उन्होंने अनाजवाली हवेलियोंमें आग लगा दी। गाँव खून और आगके अंदर था।

बसमाची भाग गये। लाल सैनिकोंने गाँवमें घुसकर बहुत ढूँढ़ा, किंतु वहाँ ईशान सुल्तानके कुशखाना (अस्त्रागार) की किवाड़को ढाल बना-कर खड़े दाखुंदाके सिवा और कोई नहीं मिला। वह उनके साथ दोशंबा गया।

१८

तंका

दोशंबा शहरको चारों ओरसे दस हजार बसमाचियोंने घेर रखा था। यह बसमाची पहलेके बसमाचियोंकी तरह युद्ध-विद्यासे अपरिचित और अव्यवस्थित न थे। उनका नेतृत्व अनवरपाशा जैसा विश्व-युद्धका एक अतिप्रसिद्ध जेनरल कर रहा था। वकील-मुखतारके विश्वासघातके बाद इस आदमीका प्रभाव बसमाचियों और प्रतिगामियों पर बहुत बढ़ गया

था। अब बसमाची अच्छी तरह उसकी आज्ञाका पालन करते थे। उसने "अमीर-लश्करेइस्लाम-नायब-अमीर-बुखारा व दामाद-खलीफा-मुस्लमीन अनवर" की मुहर और हस्ताक्षरसे खत-पत्र भेजकर अपनी आज्ञाकारिता और प्रजातंत्रीय सरकारसे लड़नेके लिये लोगोंको निमंत्रित किया था। उसने हाथमें आये लूटके मालको अफगानिस्तान भेजकर हथियार और सैनिक पोशाक खरीद मँगाई थी और अपने हस्ताक्षरसे 'काग़ज़ाकच्चा' (नोट) निकालकर नकद सिक्केकी जगह लेनेके लिये मजबूर किया था।

शहर दोशंबाकी हालत और खराब हो गई थी। लाल सैनिक चंद स्थानीय ताजिकों और बुखारियोंके साथ घिर गये थे और बड़ी मुश्किलसे रोजका खाना इकट्ठा कर पाते थे। अंतमें बसमाचियोंने पानीका मिलना भी कठिन कर दिया। काफी समयसे वे अपनी और अपने घोड़ोंकी प्यास केवल बारिशके पानी और बरफसे दूर कर रहे थे। उनकी पोशाक फटकर बेकार हो गई थी और कड़ाकेकी सर्दीके दिनोंको उन्होंने पोशाकके बिना बिताया था। बीमारों और घायलोंकी संख्या दिन-पर-दिन बढ़कर उनकी शक्ति कम हो रही थी। भूखे घोड़े खुले मैदानमें बरफ-वर्षाके समय भी नंगे खड़े थे। बुखारासे कोई मदद नहीं आ रही थी।

"अब इस जगह और रहना संभव नहीं"—यह आवाज अफसरोंसे लेकर सिपाहियों तक सबके सामने आ रही थी। किंतु लालसेनाका नियम और विनय इस बात की इजाजत न देता था, कि कोई इस बातको मुँहपर लाये। बुखारासे कोई खबर नहीं आई। हवाई तारसे मिली खबरोंसे मालूम होता था, कि बाहरी दुनियासे उनका संबंध बिल्कुल कट चुका है। तीन मास तक घिरे रह सारे कष्टोंको सहन करनेके बाद बुखारासे हवाई तारके जरिये फर्मान आया—"दूसरा फर्मान मिलनेपर अस्थायी तौरसे दोशंबा छोड़कर चले आओ।"

घिरावेके कष्टोंसे मुक्ति देनेवाले इस फर्मानका जारी करना जारी न

करनेसे भी कठिन था। लेकिन लालसेनाकी दृढ़ता और दृढ़ संकल्पने हरेक कठिनाईको आसान कर दिया।

रात अँधेरी थी। बर्फ और वर्षा दोनों पड़ रही थी। आदमी और घोड़े बर्फ और कीचड़में कमर-कमर तक डूब जाते थे। घोड़ोंने तीन माहसे पेट भर खानेका मुँह न देखा था। इनमें उतनी शक्ति न थी, कि वे अपने सवारोंको कीचड़से बाहर खींच लायें, बल्कि उल्टा सवार ही पैदल हो कीचड़में फँसे अपने घोड़ोंको बाहर निकाल रहे थे। कारवाँ इस अवस्थामें दोशंबासे निकला। उनकी मददसे दोशंबाके यहूदियोंके साठ परिवार नर-नारी, छोटे-बड़े, वृद्ध-जवान शिरसे पैर तक नंगे बसमाचियोंके हाथसे निकलकर उनके साथ हुए थे। किसी के मुँहसे जरा भी आवाज न निकल रही थी। आगे-पीछे दाहिने-बायें लाल-सैनिक सिपाही और सवार उनकी रक्षा कर रहे थे। राह चलना कितना कठिन था, यह इसीसे मालूम है, कि रात दस बजेसे दिनके नौ बजे तक वह सिर्फ एक योजन आगे बढ़ सके थे।

बसमाचियोंको पहले पता न लगा। दिन होनेपर खबर मिली। फिर उन्होंने आकर कारवाँको घेर लिया। आगे-पीछे दाहिने-बायें चारों ओरसे गोलियाँ चला उन्होंने मुश्किल कर दिया। ऊपरसे रास्तेके पुलोंको उन्होंने बरबाद कर दिया था। रेगर, सरेआसिया, यूर्ची, और देहनौके लोगोंको लाल-सैनिकोंके आनेका डर दिखा भगा दिया था। लोगोंके भाग जानेपर उनके मालको लूट घरों और बखारोंमें आग लगा दी थी।

लेकिन लाल-सैनिक कारवाँकी रक्षा करते आगे बढ़ते गये। यहूदियोंके अल्प-वयस्क बच्चों, बूढ़ों और औरतोंको अपने घोड़ोंपर चढ़ाये आगे बढ़ते गये। बसमाची चारों ओर से गोलियों की वर्षा कर रहे थे तो भी आगे बढ़ते गये। जंगली भेड़ियोंको भगा रहे चतुर निशान-चियोंकी तरह अपने शत्रुओंको भगा रास्ता साफकर वह आगे बढ़ते गये। आगे-पीछे और दोनों पक्षोंसे वर्षाकी भाँति गोलियोंके बरसते रहनेपर

भी नीची-ऊँची जमीनों पहाड़ों और दर्रोंका ख्याल न कर वे आगे बढ़ते गये।

१६

विजयोत्सव

देहनौ और बायसूनके बीच अंबारसाय नामक जगह है, जिससे हर यात्रीको गुजरना पड़ता है। युगोंकी बाढ़ोंने गुजरते हुए यहाँ पहाड़में बहुतसे खड्ड और ऊँची-नीची जगहें बना दी हैं, जिसके कारण यह स्थान प्राकृतिक मोर्चेका रूप लिये हुए है। यहाँ यदि एक आदमी बंदूक लेकर खड़ा हो जाय, तो अपने ऊपर एक भी गोलीके आये बिना दर्जनों आदमियोंके रास्ते रोक सकता है। अनवरपाशा दोशंबासे यहाँ तक लाल-सैनिकोंको घेरनेमें सफल न हुआ था। उसने इस जगह अपना जाल बिछा रखा था। साथ ही उसने आधुनिक युगकी युद्ध-विद्याके अनुसार प्राकृतिक खाइयोंकी मोर्चाबंदीको और मजबूत कर रखी थी। दस हजार बस-माचियोंमेंसे चुनकर चार हजारको इस स्थानपर नियुक्त किया था, और हरेक टुकड़ीपर एक-एक अनुभवी तुर्क अफसरको मुकर्ररकर सारी सेनाकी कमान अपने हाथमें ले वह लाल-सैनिकोंकी अगवानीके लिये तैयार था।

लाल-सैनिक और स्थानीय स्वयं-सेवक अपने विरोधियोंके दशांश भी न थे। हजारों कठिनाइयोंको झेलते जब वे यहाँ पहुँचे, तो एकाएक नई परिस्थितिको देख अपने कमांडरके हुक्मपर जमीनपर लेट गये। दुश्मनोंकी ओरसे गोलियोंकी वर्षा हो रही थी। छिपानेके लिये शरीर पर डाले बर्फके अतिरिक्त दूसरी कोई आड़ न थी। तोपोंकी गड़गड़ाहट और बंदूकोंकी पटपटाहटसे सारी पर्वतस्थली गूँज रही थी। इसी अवस्थामें लाल-सैनिक पेटके बल सात घंटे तक सरकते एक खाईके किनारे पहुँचे।

दुश्मन चला गया था और खाइयोंमें कारतूसोंके खाली खोलोंके अतिरिक्त और कुछ भी न था। इन्हीं खाइयोंमें उन्होंने आराम लिया।

कमांडरने दुनियाके एक प्रसिद्ध जेनरल पर विजयी होनेके लिये लाल-सैनिकोंको बधाई दी। जवाबमें पर्वतको गुँजाते मानो उसे भी अपने साथ लिये सबने मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय गीत गाया। और उसके बाद :—

न राजा न धनी ही हों,
पुरान वस्त्र फेंक दो,
बोलशेविक है मेरा पथदर्शक,
दाखुंदा बहादुर हूँ मैं।
पैरसे पैदल चलूँ,
विशाल पंथपर चलूँ,
न हाथ बाँध मैं चलूँ,
दाखुंदा बहादुर हूँ मैं।
पहाड़ जोत पार हो,
सीनेको बर्फपर धरूँ,
लेकिन बिजली सा लड़ूँ,
दाखुंदा बहादुर हूँ मैं।

एक ताजिकके इस गानेने विजयोत्सवके आनंदको दूना कर दिया और वह ताजिक था हमारा दाखुंदा।

२०

ज्वालामुखी पर्वत

काफिरून (बायसून) गाँवमें अमीर-बुखाराके दरबारकी तरहका एक दरबार लगा था। दरबारके चारों तरफ युरोपीय सैनिक पोशाक पहने ताज़िक, अफगान और उजबेक सैनिक घेरे खड़े थे। इनके अफसर उस्मानी तुर्क थे। प्रधान मकानको सजाया गया था। उसके अंदर जेनरल

अपनी सैनिक बर्दी, कंधेपर फीता और सीनेपर तमगोंको लगाये बैठा नक्शा देख रहा था और उसपर जहाँ-तहाँ पेंसिलसे चिन्ह लगा पास रक्खे कागजपर कुछ लिखता भी जाता था।

—हाजी लतीफ दीवानबेगी जनाबआली अमीर बुखाराके पाससे आया है। यदि हजरत पाशाकी आज्ञा हो, तो हस्तचुंबनसे कृतकृत्य होनेके लिये आये।

—पंद्रह मिनट बाद आवे।

अर्दली निवेदन करते वक्त ललाट पर रखे दाहिने हाथको हटा शिर नीचाकर सम्मान प्रदर्शन करते 'अच्छा' कहकर लौट गया।

जेनरल पुनः नक्शा देखनेमें मग्न हो गया। पंद्रह मिनट बाद फिर अर्दली अंदर आया, लेकिन इस बार कुछ न बोल सिर्फ हाथको ललाटपर रखके खड़ा रहा। जेनरलने दस मिनट और नक्शा देख कागज काला करके कहा—अच्छा, आनेको कह।

मझोली दाढ़ीवाला एक पैंतालिस-साला लंबा आदमी ललाटसे कंठ तक ढाँके साफा लगाये अंदर आया और पास आ पातितजानु बैठ अमीर बुखाराको दुआ करनेकी तरह जेनरलके लिये दुआ करने लगा। लेकिन जेनरल दुआके समाप्त होनेकी प्रतीक्षा किये बिना फुर्तीसे अपनी जगहसे उठा, और तबतक सम्मानके लिये खड़े हो अपने मेहमानकी 'क्या मुझे हाजी लतीफबेसे मिलनेका सम्मान मिल रहा है?' कह बड़ी गर्मजोशीके साथ मुलाकात की; उसे बैठनेके लिये स्थान बतला स्वयं अपनी जगहपर बैठ गया। फिर उसने हाजीसे कुशल-मङ्गल पूछकर कहा—मेरे भाई जनाबआली अमीर बुखाराका मिजाजशरीफ कैसा है?

—अल्-हमदो-लिल्लाह (भगवानकी प्रशंसा), जनाबआली हर तरहसे खुश हैं और हजरतपाशाके दीर्घायु होनेके लिये दुआ करते मित्रतापूर्ण सलाम भेज रहे हैं। उनकी सारी आशाएँ पहले खुदा और दूसरे हजरत पाशापर बँधी हुई हैं। उन्हें विश्वास है कि खुदा, पीर

(गुरु), और हजरतपाशाकी मददसे जल्दी वह बुखाराके सिंहासनको सुशोभित करेंगे ।

जेनरलने कहा—इन्-शाश्र-ल्लाह (यदि भगवानने चाहा) सारी इच्छाएँ जल्द पूर्ण होंगी । यहाँके हरेक कूरबाशी (सेनानायक) अपनेको अपने-अपने गाँव या इलाकेका स्वतंत्र शासक समझता था और अपने मतलबके लिये वह आपसमें लड़ते रहे थे । मैंने उनको एक व्यवस्था-सूत्रमें लानेकी कोशिश की और अंतमें मेरे भाई जनाबआली अमीर बुखाराकी कृपासे एक हद तक मैं इसमें सफल हो गया । इस समय समरकंद, बुखारा, शहरसब्ज, करशी, ग़ज़ार, शेराबादके सारे कूरबाशी मेरी आज्ञा मानते हैं । उनमेंसे अधिकांश अपने-अपने मुजाहिदों (धर्म-योद्धाओं)के दस्तोंके साथ खुद मेरी कमानके नीचे काम करनेके लिये यहाँ मौजूद हैं । सबसे ज्यादा सरकस इब्राहीमबेग था जो मेरी आज्ञा माननेके लिये बिल्कुल तैयार नहीं था । मूर्ख मुल्लाओंने भी उसकी सहायता की थी । देखिये मुल्ला लोग उसे किस तरहका पत्र लिखते हैं—कहकर जेनरलने एक पत्र* निकालकर पढ़नेको दिया :—

अमीरुल् मोमिनीन् सल्लमल्लाह तआला

वह महाविजयी

रक्षक प्रभु सम्माननीय मीर-बी-दादखाह, लश्करबाशीको दुआ और सलामके उपायनके बाद मालूम हो, कि हम आपके दुआ-वाचक परमभक्त आलिम (पंडित) लोगोंने सुल्तानाबादमें पुण्य ईद-पर्वके मनानेके लिये इकट्ठा हो आपसमें मंत्रणा की । कुछ लोगोंके बारेमें हमने सुना, कि वह जनाबआली और श्रीमानके विरोधी और बागी हैं । श्रीमान उनके बारेमें हमें सूचित करें । जो कोई अनवरका अनुयायी है, उसे कुरान और हदीस

* यह मूल पत्रका अनुवाद है ।

(स्मृति)के अनुसार काफिर सिद्ध कर सभी यहाँ एकत्र हुए हम आलिम-फाजिल शरीअतके अनुसार कत्ल करायेंगे । जो लक़े (किर्गिज़) है और जो ताजिक या कर्लुक अनवरका अनुसरण करते हैं उनके बारेमें सूचित कीजिये । उनको भी शरीअतके अनुसार हम आलिम-फाजिल लोग एकत्र हो कत्ल करायेंगे । हम लोग शरीअतके अनुसार काम करेंगे । श्रीमान् भी हमारे पक्षका समर्थन करें । जो कुछ बदनामी होगी, वह सब हम लोगोंके शिरपर, यदि वह श्रीमान्‌को उचित जान पड़े । आगे आप स्वयं भली भाँति जानते हैं । अत्तक़सीर अस्सलाम व अलैकुम् ।

(पत्र भेजनेवालोंकी मुहर और हस्ताक्षर)

मुल्ला मुहम्मद सलीमी मुदर्रिस	मुल्ला अली महमदी मुदर्रिस
खलीफा मुल्ला अल अंज़र मखदूम	मुल्ला अस्मतुल्ला मखदूम
मुल्ला तुगाय मुरादी मुदरिस	मुल्ला अब्दुर्रहमान मखदूम

मखदूम महमदी तुकसाबा

—हम उस्मानी (तुर्क) यहाँ सदा नहीं रहेंगे । मुल्कको बोलशेविकोंसे पाक करके हम उसे जनावआलीको अर्पण कर देंगे । इसके बाद हमारा कर्तव्य समाप्त हो जायगा और हम अपने देशको लौट जायेंगे । यह आपका देश गुप्त निधि है, जिसके उद्‌घाटन करनेवाले शिल्पी स्वयं प्रकट होंगे । इस समय हम इस स्थानको बोलशेविकोंसे खाली कर रहे हैं । फिर पैसेवाली सरकारें—विशेषकर अंग्रेज यहाँ आकर अपना खेल खेलेंगे । ताजिकोंकी एक अच्छी कहावत है 'यदि पैसा हो तो वनमें भी शोरबा ।' उस समय इस भूमिके स्वामी अपनी गुप्त निधि और इसकी शिल्प-शक्तिको पैसेवाली सरकारोंको सौंपकर उसके बदलेमें तोड़े-तोड़े अशर्फियाँ लेकर खुशीके साथ राज-काज करेंगे । व्यापार बढ़ेगा । उससे भी शासन-कर्ताओंको भारी लाभ होगा । लेकिन कूरबाशियों और मूर्ख मुल्लाओंकी बुद्धि यहाँ काम नहीं करती । वह चाहते हैं, कि एक गाँव या मौजेका शासक बनकर खायँ और सोयँ । जो भी हो, मेरे भाई जनाब-

आलीके बारबारके भेजे फरमानोंकी वजहसे इब्राहीमने भी मेरी आज्ञा माननी स्वीकार की और अपने बारह सौ जवानोंके साथ स्वयं मेरे स्कंधावार (छावनी) में आया है। इस समय दस हजार जंगी मुजाहिद बायसूनको नगीनेकी तरह घेरे हुए हैं। एक बड़े आक्रमण द्वारा हम इस शहरका काम तमाम कर देंगे। इसके बाद शेराबादकी बारी आयेगी, जिसके ले लेनेके बाद हम जनाबआलीके और नजदीक हो जायेंगे। जनाबआलीकी कोशिश और इस्माइल दीवानबेगीकी मार्फत हिन्दुस्तान (अंग्रेज सरकार) से जो सौ ऊँट फौजी वर्दी, सैनिक और डाक्टरीके सामान हमारे पास पहुँचे हैं, उनसे हमारा काम बहुत अच्छा हो गया है। आगे भी इस तरहकी कोशिश जारी रहनी चाहिये।

हाजी लतीफ—तीस हजार अफगान जिहादी, जिनमें अधिकांश हिन्दुस्तानके सीमान्तके हैं, हमारे हाथमें हैं। सिर्फ हजरतपाशाकी आज्ञाकी जरूरत है। फिर तो जनाबआलीकी इजाजत ले इस्लामके गाजियोंकी संख्या हम दूनी कर देंगे।

—ठीक है। इन सब कामोंसे पता लगता है कि इस्लामके भाग्यका सूर्य मध्याह्नपर है। जो इलाका बोलशेविकोंके हाथमें है, वहाँ भी हमारे पक्षपाती हैं और वे हमारे फायदेके लिये काम करते हैं।

अर्दलीने बीचमें आ जेनरलकी बात काटते हुए कहा—बाइसूनसे प्यादा आया है और कहता है, कि हजरतपाशाके लिये एक पत्र और गुप्त सन्देश लाया हूँ।

—आनेको कह—कहकर जेनरलने सामने फैले नक्शेकी ओर एक निगाह डाली। प्यादाने आकर पत्र जेनरलके हाथमें दिया। जेनरलने पत्रको खोलकर पढ़ना शुरू किया। पढ़ते वक्त उसके चेहरेपर चिन्ताके बादल दौड़ने लगे, जिसे रोकनेकी उसने बड़ी कोशिश की। पत्र समाप्तकर चुकनेपर हाजी लतीफकी ओर निगाहकर "अच्छा, अभी आया" कहकर प्यादाको दूसरे घरमें ले जा कुछ बात की और फिर पहले कमरेमें आकर

"शत्रुके इरादेसे पहले खबरदार होना भी आधी विजय है" कहते अपनी जगहपर बैठा। हाजी लतीफको खबर सुननेका इच्छुक समझकर "शत्रु आज रातको आक्रमण करना चाहता है" कहते अपनी घड़ीकी तरफ देखकर "अभी दो घंटा रात गई है। अभी भी फ़ुर्सत है" कह कलम हाथमें ले कागजपर लिखना शुरू किया, साथ ही अलीरज़ाको बुलानेका भी हुकुम दिया।

अलीरज़ाके आने तक कुछ पन्ने और भी जल्दी-जल्दी काले हो चुके थे। अलीरज़ा आकर हाथको ललाटपर रख सैनिक सलाम दे खड़ा हो गया। जेनरलने अपने लिखे कागजोंमेंसे एकको उसके हाथमें दे "यह तेरे लिये है, इस फर्मानके अनुसार अपनी चुनी हुई फौज और अफगान गाजियोंको ले नक्शेके अनुसार बायसूनकी राहपर सन्तरी रख स्वयं अपने सवार दस्तेके साथ उसके ऊपर खबरदारी कर"। दूसरे कागजोंको भी देते हुए "इन्हें विश्वस्त सवारों द्वारा कुरबाशियोंके शिविरोंमें भिजवा दे, जिसमें वह आध घंटेके भीतर युद्ध-क्षेत्रमें आ जायँ।"

अलीरजा "बचश्म (आज्ञा सिर-आखोंपर)" कह अपने सिरको झुका जेनरलके सामनेसे चला गया। जेनरल भी गर्दनमें तमंचा डाल, दूरबीनको हाथमें ले घरकी छत पर गया और दूरबीनसे बायसूनकी ओर देखने लगा।

देखते-देखते देर हो गई, किन्तु न बायसूनकी तरफसे और न कूर-बाशियोंके शिविरकी तरफसे ही कोई सुगबुगाहट दिखाई पड़ा। केवल जेनरलके शिविरके पासकी सवार और पैदल सेनाने बायसूनकी तरफ कूच किया था। सरदारने कुछ कदम पीछे खड़े अपने चार तुर्क अर्दलियोंमें से एककी ओर निगाह करके कहा—जल्दी जा, अलीरजासे पूछ कि फरमानको कूरबाशियों तक पहुँचाया या नहीं?"

अर्दलीने फुर्तीसे नीचे उतर एक घंटा बाद लौटकर एक पुर्जा

जेनरलके हाथमें दिया। जेनरलने दियासलाई जलाकर कागजको पढ़ा और कहा—फर्मान अपने समयपर पहुँच गया, किन्तु क्यों इन गधोंका कहीं पता नहीं ?

एकाएक बायसूनकी तरफसे बंदूकों और मशीनगनोंकी आवाज आने लगी। "काम शुरू हो गया"—कहकर जेनरलने दूरबीनको शिविरोंकी तरफ लगाया, किन्तु अब भी वहाँ गतिका कोई चिह्न दिखलाई नहीं पड़ता था। जेनरलने "मैं अमीर-लश्कर-इस्लाम नायब-जनाब-आली व दामाद खलीफा-मुसल्मीन अनवर फरमान देता हूँ कि मिनट न खतम होते सारे गाजी तैयार होकर युद्ध-क्षेत्रमें पहुँच जायँ" कहते चिल्लाकर आवाज दी, किन्तु कोई प्रभाव नहीं। फर्मानको दो-तीन बार और जोरसे दुहराया लेकिन सब बेकार। जेनरल जल्दी-जल्दी छतसे उतर घोड़ेपर सवार हो अपने नजदीकके अब्दुर्रहमान मिंगबाशीके शिविरकी ओर दौड़ा। अन्दर जाकर देखा कि अब्दुर्रहमान मिंगबाशीके सहायकोंमें हरेक छोकड़ेके साथ वृक्षके नीचे सोया है और अब्दुर्रहमानके घरके अंदर कालीनपर दो-तीन साज बजानेवाले बैठे गा रहे हैं :—

"ओय् ! जो कि होवे गाजी
बगलमें लेवे निमूछा"

खुद अब्दुर्रहमान एक लड़केके साथ सो रहा था।

जेनरलके ऊपर मानो वज्रपात हो गया। वह जरा देर स्तब्ध हो इस दृश्यको देखता रहा। फिर उसने गाली देकर पुकारा, किन्तु तब तक तोप और मशीनगनकी आवाज स्कन्धावारके समीपसे आने लगी थी और जेनरलको अवसर न था कि इन "गाजियों" को कामपर लगावे या दूसरे शिविरोंमें भी जाकर ऐसे ही दृश्योंको अपनी आँखोंसे देखे। वह फौरन वहाँसे निकल घोड़ा दौड़ाते अपने स्थान पर पहुँचा, किन्तु देखा कि वह उसके आनेसे पहले ही लूटा जा चुका है। जेनरलको और आश्चर्य हुआ, जब अर्दलीने आकर संदेश दिया :

—हजरतपाशाके जानेके बाद ही शहरसब्जवाले अब्दुल् गफ्फार कूरबाशीने अपने दस्तेके साथ यहाँ आकर खजाना और अस्त्रागारको लूट लिया और कितने ही हथियारों तथा अशर्फीके तोड़ोंको अपने साथ ले गया। उसके बाद ईशान सुल्तान अफगानोंके दस्तेके साथ आया। वह भी दो खुर्ज़ी तिल्ला (अशर्फी) लेकर चला गया।

ज़ेनरलको फुरसत न मिली, कि अपने इन लुटेरे गाजियोंको कुछ कहे, क्योंकि ज्वालामुखी बायसूनकी तरफसे नजदीक आ पहुँचा था।

जिसने भी चाहा कि अदूरदर्शितापूर्वक बहादुरीके साथ मुकाबलेमें खड़ा हो, वह ज्वालामुखीके लावेकी बाढ़में पड़े पाषाण-खंडों और वृक्षोंकी तरह पलक झपकते-झपकते नेस्तनाबूद हो गया। ज़ेनरलके स्वयं युद्धमें पड़नेसे भी कोई फायदा नहीं हुआ। चंद घंटों बाद युद्ध-क्षेत्रोंमें लाशोंके सिवा कुछ न रह गया। हाँ बसमाचियोंकी सेना एक बर्फका पहाड़ थी वह लालसेनाके ज्वालामुखीका मुकाबला न कर सकी। लावाके प्रभावसे पानी बन बाढ़की तरह वह हर तरफ बह गई। उसके रास्तेमें जो भी आया उसे जलाते, खराब करते साथ ले गयी।

जिन्दा बचे बसमाची अपने बचे-खुचे आदमियोंके साथ अपनी असली जगहको भाग गये। भागते समय उनके सामने जो भी चीज आई उसे लूटने, जलानेमें कोई कसर उन्होंने उठा न रखी। अनवरपाशा अपनी एक हजार चुनिन्दा फौजके साथ सरिक्-मिश्में दुबारा भाग्य परीक्षाके लिये चला गया।

२१

वृक्ष-शाखाकी सेना

लाल-सेना बसमाचियोंका पीछा करते चौबीस दिनोंमें दोशम्बा पहुँचते चारएक्काराँ गाँवमें ठहरी। इन चौबीस दिनोंमें गाँवों और कसबोंमें कोई

वैसा मुकाबला नहीं हुआ, लेकिन चारयक्काराँसे दोशम्बाके लिये रवाना होनेके पहले लाल-सेनाको कुछ रुकना पड़ा। उसे पता लगा कि दोशम्बा और उसके आस-पासमें बसमाचियोंने बड़ी तैयारी कर रखी है, पुलोंको बिल्कुल बर्बादकर दिया है और रास्तेपर खाइयाँ खोद रखी ह। दोशम्बाकी तरफसे उठती धूलको देखकर मालूम होता था, कि वहाँ तीस-चालीस हजार ज़र्रार फ़ौज जमा हुई है। यह सोचकर लालसेनाने चारयक्काराँसे शहरको तोपके दाबमें लिया। शामको वहाँसे कूच कर मारतप्पा गाँवमें मुकाम किया; दूसरे दिन फिर चारयक्काराँ लौट आये। उस दिन आकाशमें पहले दिनसे भी अधिक धूल उड़ रही थी। दूसरी बार शहरको फिर तोपके दाबमें लिया। शहरकी तरफसे सवारोंके आक्रमणके चिह्न—गर्द और धूल—चारयक्काराँके नजदीक आने लगीं, किन्तु खुद सवारोंका पता न था। आज रातको भी मारतप्पा लौटकर चारों ओर सन्तरी रख लाल-सैनिकोंने विश्राम किया। तीसरे दिन वह फिर चारयक्काराँ आये और अबकी बार शहरपर पक्का हमला करनेका इरादा कर चुके थे। कुछ तोपें दागी गईं, किन्तु उनके गोले उड़ती धूलमें गुम हो गये और कुछ पता न लगा। सवारोंने शहर पर हमला किया। लालसेना शहरके बहुत नजदीक पहुँच गई। धूल भी बहुत कम हो गई थी, किन्तु अब भी दुश्मनका पता न था। शहरके अन्दर पहुँच गये, फिर भी कोई दिखाई न पड़ा। शहरके कूचोंमें एक सिरेसे दूसरे सिरे तक देखकर लौट आये, लेकिन वहाँ वृक्ष-शाखाओंके बोझोंके सिवा कुछ न मिला। पता लगा कि शहरको हाथमें रखनेके लिये बसमाचियोंने यह आखिरी तजवीज निकाली थी। वह दरख्तोंकी शाखाएँ काटकर उन्हें घोड़ोंसे कूचोंमें खिंचवाते थे, जिससे उठती भारी धूल देखकर लालसेनाने धोखा खाया था।

—:o:—

२२

अनवरका अवसान (अगस्त १९२२)

अगस्त १९२२ का आरंभ था। बल्जुवान इलाकेके एक गाँवमें बसमाचियोंका एक दस्ता बकरीद मनानेके लिये जमा हुआ था। उन्होंने लोगोंको मस्जिदमें जमाकर बोलशेविकोंके विरुद्ध भड़काया। सभा गर्म थी। इसी समय एक आदमी आया और एक कोनेमें तहारत (हस्त-पाद-मुख-प्रक्षालन) करने लगा। बसमाचियोंके सरदारके लिये यह अपरिचित स्थान था। उसने वहाँके लोगोंसे आगन्तुकके लिये पूछा। लोगोंने "एक गरीब ताजिक है, ईदकी नमाज पढ़ने आया है" कहकर जवाब दिया। सभा समाप्त हुई। सभी ताजा तहारत करके ईदकी नमाज पढ़नेके लिये तैयार हुए, लेकिन सरदारके दिलसे संदेह दूर नहीं हुआ था। उसके लिये हर अपरिचित सरकारी जासूस और हर काला चिह्न लालसेना थी। नमाज़के अन्तमें वह अपने संदेहको और न रोक सका। उसने उक्त अपरिचित आदमीको पकड़ लानेके लिये अपने आदमियोंको हुकुम दिया। आदमियोंने चारों ओर बहुत पूछताछ की, लेकिन पदचिह्न और पन्द्रह मिनट पहले दीवारके पास बँधे घोड़ेकी लीदके सिवा और कुछ न मिला। इस बातको सुनकर सरदारका सन्देह और बढ़ गया। उसने अपने आदमियोंको हथियार-बन्द हो हरवक्त हाजिर रहनेका हुकुम दिया था।

देर न हुई कि एक ओरसे तीस लाल-सैनिक कुछ स्थानीय स्वयंसेवकों और एक मशीनगनके साथ प्रकट हुए। अभी बसमाची अपने घोड़ोंपर सवार न हो पाये थे, कि लाल-सैनिकोंने उन्हें चारों ओरसे घेर लिया। जंग शुरू हुई। मशीनगनकी गोलियाँ फव्वारेके पानीकी तरह बसमाचियों-के सिर पर पड़ने लगीं। अपने आदमियोंको मुकाबला करनेका हुकुम दे खुद आगे बढ़ा। बसमाची लाल फौज़के और नजदीक पहुँचे। अब बंदूक,

फिर तमंचा और अंतमें संगीनकी लड़ाई हुई। युद्ध-क्षेत्रमें हताहतोंकी ढेर लगी थी। बसमाची भाग गये।

लाल-सैनिकोंने कुछ दूर तक पीछा किया, फिर उन्हें लुप्त देखकर लौट आये। लौटकर मुर्दोंमें दोको विशेष शान-शौकतवाला देख उनके लिबासको उतरवाकर साथ ले लिया। शिविरमें आ लिबासोंकी जाँच् पड़ताल करनेपर वहाँ दो मुहरें मिली। एक पर उत्कीर्ण था "दौलत-मन्दबी" और दूसरी पर "अमीर-लश्कर-इस्लाम नायब-अमीर-बुख़ारा व दामाद-खलीफा मुसल्मीन अनवर"।

अपनी उमरके बयालिसवें सालमें भाग्यके जुआड़ियोंके सरदार अनवरपाशाने इस अभागी मृत्युसे अपने जीवनका अन्त किया।

कमांडरने अपने आदमियोंको बधाई दी और सेनाका पथ-प्रदर्शन करके लानेवाले ताजिककी तरफ निगाह करके कहा—तुझे और भी बधाई देनेकी जरूरत है। यदि तूने चतुराई और सावधानीसे काम न लिया होता, तो शिकार हाथसे निकल गया होता।

एक बुखारीने, जो कि सफरमें उसके साथ था, उसकी तरफ निगाह करके कहा—सचमुच दाखुन्दा! तूने भारी काम किया।

—यदि मस्जिदमें एकत्रित गरीबोंने मेरे भेदको न छिपाया होता, तो मैं उनके हाथ पड़कर मारा जाता और यह विजय न प्राप्त होती। इसलिये मैं तुम्हारी बधाईको ताजिक गरीबोंकी ओरसे स्वीकार करता हूँ।

२३

निराशा

अनवर और दौलतमंद बीके मुर्दोंको चगन गाँवमें दफनाकर अनवरके खास फौजियोंको लिये बसमाची तुफ़लंग नदीके किनारे एकत्रित हो भविष्यके कामका प्रोग्राम बनाने लगे। उन्होंने गाँवके लोगोंको एकत्रकर

अनवरपाशा और दौलतमंदबीके खूनका बदला लेनेके लिये उभाड़ा। अनवरके अनुयायी यूसुफजियाने कहा—हमने काफिरोंके हाथसे तुम्हें स्वतंत्र करनेके लिये इस्लामी सेनाके सेनापति और मुसल्मानोंके खलीफाके दामादकी बलि दी, किन्तु यदि तुम्हारी सहायता प्राप्त हो, तो हममेंसे हरएक इस्लामी सेनाका सेनापति बन सकता है। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि पहलेकी तरह अब भी हमारी सहायता करनेसे हाथ मत खींचो, जिसमें हम अपने सेनापतिके खूनका बदला ले सकें और उनके आरंभ किये कामको पूरा कर सकें—

हम जिन्दगीका एक दिन काटनेके लिये सहायता चाहते हैं। एक ओर तुम हो और दूसरी ओर सरकारी सेनायें हैं। हम दो आगोंके बीच पड़े हुए हैं। बहुत हो चुकी यह सारी बरबादियाँ—यूसुफ़की बात काटकर एक किसानने यह आवाज निकाली, जिसका समर्थन करते दूसरे किसान भी बोल उठे "सच तो कहता है, सच तो कहता है।"

दौलतमंद बीके भांजे अब्दूकादिरने युसुफजियाका पक्ष समर्थन करते कहा—दौलतमंदबी शहीद हो गये, लेकिन हम उनके कामको आगे बढ़ायेंगे। जो आदमी पहलेकी तरह हमारी सहायता न करेगा, उसे मरे हुए इन आदमियोंके पीछे-पीछे दूसरी दुनियामें जाना पड़ेगा।

—भाइयो! काम खराब है, परिस्थितिको देखना चाहिये। अब अच्छा यही है, कि प्रजातंत्र सरकारके हाथमें हम आत्मसमर्पण कर दें। जो नहीं चाहता वह बैठ जाय, या अपने देश चला जाय—कहकर समरकन्दके बसमाची हाजी अब्दूकादिर करीमोफ़ने किसानकी बातका अनुमोदन किया।

यूसुफजियाने गुस्सेमें लाल होकर कहा—यह पतित बच्चाबाज़ है। इसकी बातपर कभी विश्वास नहीं करना चाहिये।

सभामें लोग हर तरफ अलग-अलग बोलने लगे; "लेकिन क्या इसकी बच्चाबाज़ी तुम्हें अब मालूम हुई?" "क्या इसके सिवा तुममें कोई

दूसरा बचावाज नहीं ?", "जो कोई आत्मसमर्पणका नाम ले वह पतित और बध करने योग्य है", "अब कुछ नहीं हो सकता, आत्मसमर्पण करना जरूरी है", "बस, मुसल्मानोंको स्वतंत्र करनेके नामपर यह सारी बदचलनियाँ बहुत हो चुकीं।"

यूसुफजिया—"अच्छा, तो इस सलाहके अनुसार करेंगे" कह सभाको नमासकर अपने आदमियोंको साथ ले हाजी अब्दूकादिरको आगे करके एक तरफ चला। लोगोंसे चंद कदम दूर होनेपर यूसुफजियाका तमंचा छूटा और हाजी अब्दूकादिरका शरीर धराशयी हुआ। हल्ला मच गया। बसमाचियोंकी बंदूकें एक दूसरेपर तन गईं। लोगोंने शोर करना शुरू किया "हाजी अब्दूकादिरके कातिलको हमारे हाथमें दो", "यूसुफजिया शिया है, इसलिये इसने हाजी अब्दूकादिरका कत्ल किया। इसका बदला इससे लेना चाहिये" इस आवाजने झगड़ेके लिये तैयार आदमियोंमें जोश पैदा कर दिया। तुर्क भग चले और यूसुफजियाने उनके आगे-आगे अपना घोड़ा दौड़ाया। वह तुफलंग नदीके तटपर पहुँचा और घोड़ेपर सवार ही नदी पारकर जाना चाहता था, लेकिन पानीके भँवरमें पड़ गया। उसका काम वहीं तमाम हुआ।

दूसरे बसमाची जहाँ-तहाँ चले गये। ईशान सुलतान अपने आदमियोंके साथ आत्म-समर्पणका विचार करने बखशयाकी तरफ गया। दानियाल अपने अनुयायियोंके साथ गर्ममें फुज़ैल मखदूमके पास चला गया। कूलाब और बलजुवानके बसमाची दौलतमंदबीके भांजे अब्दू-कादिरको अपने भीतर ले बलजुवानकी तरफ रवाना हुए। कुछ बसमाची अलग हो आत्म-समर्पण करनेके लिये प्रजातंत्र सरकारके पास गये। फारूक आफ़न्दी, उस्मान आफ़न्दी, अलीरज़ा आफ़न्दी और दूसरे तुर्क "कुछ नहीं हुआ" कहकर अफगानिस्तानकी ओर चले गये।

—:०:—

२४

साहसका काम (१६२३)

१६२३का आरंभ था। कूलाबके किलेको तीन-चार हजार बसमाचियोंने घेर रखा था। अन्न लाने और आदमियोंके आने-जानेका रास्ता बिलकुल कट गया था। अनवरके मारे जानेके बाद अफगानिस्तानसे आकर सलीम शामीपाशा*ने बसमाचियोंका नेतृत्व संभाला था। उसके अपने कथनानुसार वह उस्मानी (तुर्की) तुर्क और अनवरपाशासे भी अधिक युद्धकलाविशारद और बहादुर था।

—मैं अफगानिस्तानसे इसलिये आया, कि अपने शिष्य अनवर-पाशा—जो अपने कम अनुभवके कारण शहीद हुआ—के खूनका बदला लूँ और उसके अपूर्ण कामोंको पूर्ण करूँ— शामीने कहा।

लेकिन बसमाची अपने नये सरदारके बारेमें दूसरी ही राय रखते थे। उनमेंसे एकने कहा—शामीपाशा कदापि अनवरका स्थान नहीं ले सकता। अभी हमारे पास आये देर न हुई और इस थोड़ेसे समयमें ही चारसौ बढ़िया घोड़े हथिया लिये। ऊपरसे हर सप्ताह नई औरत रखता है, इस बातमें तो अमीर आलमखाँसे भी बढ़ गया।

दूसरे बसमाचीने कहा—जो भी हो "यद्यपि गाँव उजाड़ है किन्तु नाम बड़ा है" की कहावतके अनुसार इसका नाम सुनकर अनवरके मारे जानेके बाद छिन्न-भिन्न हुए कूरबाशी फिर एक हुए हैं। आशा है, इसके नेतृत्वमें चलकर कूलाबको हम फिर अपने हाथमें कर लेंगे। इस आदमीमें अनवरसे बढ़कर गुण यह है, कि हमारे गुण-दोषको यह नहीं

* इसके बारेमें अनेक मत हैं। किसी-किसीने इसका शामी नाम बतलाया और किसीने सलीम, इसलिये हमने दोनों नाम मिला दिया है—लेखक

देखता। यद्यपि स्त्री-लम्पट और पैसेका लोभी है, किन्तु इसकी जीभ छोटी है, इसलिये हमारे ऐश-अशरत और माल जमा करनेमें बाधा नहीं डालता।

× × ×

कूलाब किलेके अन्दर पाँच सौ लालसैनिक और कुछ स्वयंसेवक ताजिक घिरे हुए थे। बीस दिनसे किलेका सम्बन्ध बाहरसे टूट गया था। कई दिनोंसे आदमी और घोड़े भूखे थे। बाहर निकल जानेका कोई रास्ता नहीं मिल रहा था। अब ये बसमाची १९२१के बसमाचियों जैसे नहीं थे। तीन सालकी लड़ाइयोंके अनुभव और तुर्की अफसरोंकी सैनिक शिक्षा पाकर वह बहुत दक्ष हो गये थे। अफगानिस्तान और हिन्दुस्तान (अंगरेज सरकार)से लगातार आये हथियारोंसे वह अच्छी तरह लैस थे। अनवरकी मृत्युके बाद बिखरे बसमाचियोंने अपना अन्त समीप देख "जो भी हो" कहते शामीका नेतृत्व स्वीकार किया था।

अब और किलेमें रहना संभव नहीं था। मनुष्य सभी कष्टोंको झेल सकता है, किन्तु भूखसे देरतक लोहा नहीं ले सकता।

—तुम स्थानीय आदमी हो। यहाँसे निकलनेका क्या तरीका तुम्हारी समझमें आता है?—लाल-सेनाके कमांडरने ताजिक स्वयंसेवकोंसे पूछा।

—मुझे एक चिह्न दो, उसे ले मैं दोशम्बा जाकर सेना लाता हूँ—दाखुन्दाने जवाब दिया।

कमांडरने दाखुन्दाको अपने कमरेमें ले जाकर एकान्तमें बात शुरू की—किलेसे किस रास्ते निकलोगे? बसमाचियोंके बीचसे, उनके हाथमें पड़े बिना कैसे दोशम्बा पहुँच सकोगे?

—यह मेरा काम है। यदि मैं उनके हाथ पड़ गया, तो मारा जाऊँगा। एक आदमी कम होनेके सिवा इसमें तुम्हारा कोई नुकसान नहीं। लेकिन यदि मैं अपने उद्देश्यमें सफल हुआ, तो सभीकी मुक्ति होगी।

—बसमाची रातदिन कड़ी देख-भाल कर रहे हैं। किलेसे निकलते ही तुम जरूर पकड़ लिये जाओगे।

—मैंने ऐसा उपाय सोच लिया है, जिसमें शत-प्रतिशत सफलताकी आशा है। तुम मुझे एक कुदाल, एक सुंभा, एक टोकरी और चार आदमी दो; फिर मेरा काम देखो।

—बहुत अच्छा, किन्तु दोशम्बा जाने भरके लिये समय नहीं है। यदि निकलनेमें सफल हुए, तो आकसू गाँव जा वहाँकी गैरिसन (फौजी चौकी)के आदमियोंको साथ ले आओ।

× × ×

घिरावेकी चौबीसवीं रातका सवेरा अभी नहीं हो पाया था। इसी समय कुलाबके किलेके चंद स्थानोंसे ज्वालामुखी फटने जैसी "गुमबुर-गुमबुर"की भयानक आवाज आई। उसके बाद ही पत्थर, मिट्टी, धुआँ और आग बवंडरकी तरह आसमान तक बुलंद हुई। घिरे सैनिक हक्के-बक्केसे नींदसे एकाएक जगे। "जान देना जान लेना" बस यही उनके सामने रह गया था। इस आग और धुएँके पीछे हजारों हथियारबंद बसमाची नींदसे अभी-अभी पाँचसौ लाल-सैनिकोंपर टूट पड़नेके लिये तैयार थे। कमांडरके "सावधान!" कहनेपर लाल सैनिक और ताजिक स्वयंसेवक आकस्मिक दुर्घटनाके भयको मनसे जल्दी हटा अंतिम सांसतक लड़नेको तैयार हो गये।

धूल-मिट्टी, आग और धुआँ दब गया था, लेकिन अब भी आक्रमण-कारियोंका कहीं पता न था। केवल बसमाचियोंके कैम्पके पीछेसे बंदूक और मशीनगनकी आवाज आ रही थी। चारों ओर दिनका आलोक फैल गया। किला घेरनेवाले बसमाची भी अपने कैम्पकी तरफ दौड़े। लाल-सेनाने अवसरको हाथसे जाने नहीं दिया और बसमाचियोंने जिस जगह किलेकी दीवारको बारूदसे उड़ाया था, उसी रास्ते एक बार ही लाल-

सैनिक किलेसे बाहर निकल बसमाचियोंपर बंदूक और मशीनगनकी गोलियाँ बरसाने लगे।

सूर्यने और ऊँचे उठकर विश्वको प्रभासित किया। बसमाची भी रात्रिके अन्धकारकी तरह आँखोंके सामनेसे लुप्त हो गये। मैदानमें सिर्फ किलेकी लालसेना और आकसूसे आई गैरिसन आमने-सामने दिखलाई पड़ी। उन्होंने एक दूसरेको बधाई दी, जिसका सबसे बड़ा पात्र दाखुन्दा माना गया। वह सचमुच इस साहस-कार्यका प्रथम वीर था।

२५

परस्पर-हत्या

कुर्गान-गर्ममें सैनिक समिति बैठी थी। शामीपाशा प्रमुख था। कितने ही बसमाचियोंने ईशान सुल्तानके अपराधों और विश्वासघातोंको एक-एक करके गिनाया। अन्तमें फुज़ैल मखदूमने कहा—ईशान सुल्तानका अन्तिम अपराध यह है कि मैंने चाहा, फरगानाके बसमाची कोरी शेरमती (शेरमहमद)को हमारे इलाकेसे अफगानिस्तान जाते वक्त गिरफ़्तार करके उसका सारा माल और हथियार छीन लें और इस तरह अपनी नवस्थापित सरकारको मजबूत बनावें। साथ ही इस तरह दूसरे बसमाचियोंको भी शिक्षा दें कि वह भागनेका ख्याल छोड़ दें। इसी विचारसे मैंने चहल-दर्राके रास्तेको भी खराब करवा दिया था। लेकिन ईशान सुल्तानने रास्तेको ठीक करवा शेरमतीको अपनी तरफसे गुजरने दिया। यही नहीं, जिसमें मेरी फौज पीछा न कर सके, रास्तेको फिरसे खराब करवा दिया। ईशान सुल्तानका यह अन्तिम अपराध भी हुकुमनामामें लिखा जाना चाहिये।

शामीपाशाने "पैकी" (अच्छा) कहकर इन सारी बातोंको काग़ज़पर लिखा, फिर तुर्की जबानमें लिखे अपने सारे कागजोंको अनुवाद करके लिखनेके लिये कातिबके हवाले किया।

जुमा (शुक्र)के दिन जुमाकी नमाजके लिये लोग गर्मकी जामा-मस्जिदमें एकत्र हुए थे। इमामने साधारणप्रथाके अनुसार जुमाके दो प्रसिद्ध खुतबों (उपदेशों)को पढ़ा। दूसरे खुतबेमें तत्कालीन बादशाहका जिक्र करते समय "अल् अमीर फ़ुजैलुद्दीन महम्मद बहादुर सुल्तान" कहकर फ़ुजैल मखदूमी बसमाचीका नाम अमीरकी उपाधिके साथ पढ़ा। फिर निम्नोक्त हुकुमनामेंको पढ़कर सुनाया* और समाप्तिपर फिर एक बार नये बादशाहके लिये लोगोंसे भी दुआ कराई। हुक्मनामा इस प्रकार था :

आरोपपत्र

ईशान सुल्तान खोजा सूबा दरवाजके हाकिम और अस्कर-बाशी (सेनानायक)के विश्वासघात

जनाबआली अमीर बुखाराशरीफ सैयद अमीर आलम अफगानिस्तान की भूमिमें विराजमान, की सेवामें। अभिवादनके बाद मालूम हो, कि ईशान सुल्तानने दरवाजपर अपना अधिकार जमानेके लिये सेना जमा की और इलाकेको अधिकृतकर बलजुवान, आकसू, कानीतिल्ला और कूलाबदर्राको दबाकर तरह-तरहके झगड़े-फसाद और अत्याचार किये, जनाबआलीकी ओरसे नियुक्त नायब और राजप्रतिनिधि दिवंगत शहीद अनवरपाशाके सैनिक और नागरिक शासनकी समाप्तिके समय ईशान सुल्तानने इस्लामके मुजाहिदोंके भीतर उक्त सेनापतिके सामने फूट डाली जिसके परिणामस्वरूप मुजाहिदोंकी छ हजार सेना बायसून इलाकेसे घबड़ाकर भागी और दुश्मनसे लड़नेकी जगह उसने परस्पर हत्याकांड मचाया, जिसमें सैकड़ों मुसल्मान कुर्बान हुए। ईशानकी मददसे फ़रगानावालोंने उसके प्रतिद्वंदियोंका कत्ल किया, जिससे देशवासियोंको भारी क्षोभ हुआ। बुखारावालों और दूसरे कबीलोंके आपसी झगड़ेसे

* मूल प्रतिका अनुवाद—लेखक

फायदा उठा उज़बेकों और ताजिकोंको एक दूसरेसे लड़ा अपने विश्वास-घातका परिचय दिया, साथ ही रूसियोंके साथ मेल करके इस्लामके मुजाहिदोंसे तीन सौ बन्दूकें और दो सौ मशीनगनें देकर सुलह की, जिसके कि काग़ज़-पत्र हमारे हाथ लगे हैं।

फ़रगानियों और किरगिजोंमें झगड़ा डालकर इस्लामी-मुजाहिदोंकी शक्तिको निर्बल करनेकी सलाह दी। उसने रूसियोंके साथ मेल किया। इस तरह इस्लामी उद्देश्यको हानि और लोगोंके युद्ध करनेके भावको दबानेके लिये वहाँके प्रबन्धालयोंको खतम कर दिया। बादमें जब कि इस तरहकी निराशा फैली थी, तो भगवान्के रास्तेमें युद्ध करनेके लिये महम्मद अकबर तूक़सावाक़ो अपने घरमें ले जाकर दस्तरखानपर बैठा इसे पकड़कर क़त्ल किया। उसके मालको ले लिया और उसके बाल-बच्चोंको नंगा करके बाटका भिखारी बना दिया। इसके अतिरिक्त कितने ही मातबर सेनानायकोंको भी क़त्ल कराया। फिर फ़र्गानावाले शेरमहम्मद (शेरमत) बेकीको खबर दे तुर्कों और क़रातगिनके स्वामी फ़ज़ैलुद्दीन मख़दूमको पराजित करनेका निश्चय किया। हमारे ऊपर भी उसने आक्रमण किया, लेकिन हमने सैनिक तरीकेके अनुसार उसके हमलेका मुकाबला किया और ईशान सुल्तानकी फौजको भागना पड़ा। पहले हमने शेरमहम्मदको रोकनेके लिये चहलदर्राके रास्तेको खराब किया था। ईशानने खराब रास्तेको फिरसे तैयारकर शेरमहम्मदकी फौजको रास्ता दिया और हमारी फौजको न जाने देनेके लिये रास्तेको ख़राब कर दिया। उसके भाई ईशान सुलेमानको हमारे मुक़ाबलेमें भेजा और शेरमहम्मदको दरवाज़के रास्ते निकल जाने दिया। इसके अतिरिक्त गैरतशाह बी दादखाह और दिलावरशाह बी लश्करबाशी दरवाज़ और कितने ही दूसरोंको क़त्ल करवाया। हमारी फ़ौजोंका पीछा करते ईशान सुलेमान तवीलदर्रा और सगीरदश्तमें बन्दूकवाले सैनिकोंको जमाकर शेरमहम्मद बेककी सेनासे एक हो हमला किया। जब हम दरवाज़में थे, तो

दर्रासे होकर उसने कूलाबवाले महम्मद अशूरबेक वी दादखाह लश्कर-बाशीको क़त्ल कराया। बादमें अब उस तरफसे हमारी फ़ौजको आगेसे घेरकर दरवाज़में भूखसे आत्म-समर्पण करने या अफगानिस्तान भागनेके लिये मज़बूर करना चाहता है। उसकी इस तरहकी योजनायें और पत्र हमारे हाथमें आये हैं... इसलिये उसके इन कामों, अपराधों और विश्वासघातोंके लिये शरीयत और सैनिक कानूनके अनुसार उसे मृत्युदण्ड देनेका निश्चय किया गया है...

२८ माह रबीउल-औव्वल सन् १३४१

मुहर : सेनापति मुसल्मान-जनसाधारण-सेना सामीपाशा

× × ×

जब फ़र्गानाके बसमाची कोरी शेरमतने ईशान सुल्तानसे मदद मिलना सम्भव न देखा, तो तबीलदर्रासे खुम-किलासे होते उस स्थानको लूटते-पाटते वह अफगानिस्तानकी तरफ़ चला गया। फुज़ैल मखदूम और सामीपाशाके भी दर्वाज़ आनेकी खबर मिली। थोड़ी देर बाद अपने सिपाहियोंके साथ तबीलदर्रासे आकर उन्होंने ईशान सुल्तानको गिरफ्तार कर लिया और किला-खुम भेज दोस्तीसे पुकारकर ईशानके भाई ईशान सुलेमानको भी बन्दी बना लिया। फिर उपरोक्त आरोप-पत्रको दोनोंके सामने पढ़ सुना और शरीयत शरीफके अनुसार दोनोंको अपराधी सिद्धकर ईशान सुल्तान द्वारा मरवाये महम्मद अकबर तूकसाबाकी क़ब्रके पास उन्हें दार (शूली)पर खींच दिया गया।

सुबह होनेपर लोगोंने आकर दारपर खींचे दोनों मुर्दोंको देखा। तमाशबीनोंमेंसे एक ताजिकने उस वक्त कहा—

खींचो तलवार तेज मारो एक दूसरेको,
जाओ इस दयारसे, हटाओ शिरदर्दको ॥

एक बूढ़ेने कहा—अच्छी कविता पढ़ी पुत्र! एक बार फिर तू पढ़।

—एक बार नहीं, बार-बार मैं पढ़ूँगा, लेकिन कविता-पाठसे काम नहीं बनेगा—जवानने कहा।

—भगवान् दया करे, किन्तु मेरे हाथसे क्या बनेगा ?

—उसकी दया भेड़ियोंकी दया है, किन्तु जब तक भेड़िया नहीं मरता तब तक दया नहीं होती। भेड़िया मरें और दया आवे कहकर बैठे रहना समझदार आदमीका काम नहीं है।

—तो क्या करना चाहिये ?

—जो भी काम कर सकते हैं करना चाहिये, जिसमें जल्दी भेड़ियेकी बला भेड़ोंके शिरसे नेस्तनाबूद हो जाये।

बूढ़ेने जवानके नजदीक आ कानमें कहा—सावधान जवान, मालूम है मुर्गीकी कितनी टाँगें ?

—हाँ, मुर्गीकी एक टाँग।

—यदि तेरे हाथ-पैरको काट डालें तो ?

—तो भी मुर्गीकी एक टाँग।

—तो सुन, यदि कर सके तो कूलाब जाकर अधिकारियोंको खबर दे कि फुज़ैल अपने भाई सदादको सामीपाशाके साथ कूलाबके ऊपर भेजना चाहता है। उनके साथ अपने भतीजे, दौलतमन्दबी और अब्दूकादिरके साथ ही तुर्गेशरिक़ और बरात ईशक आकाबाशीको भी भेज रहा है, जिसमें कि वह दो तरफसे कूलाबपर आक्रमण करें। कहा जाता है, इब्राहिम और रहमान भी उनके साथ होंगे। दूसरी खबर यह है, कि ईशान सुल्तानका भाई ईशान रहमत अपने दोनों भाइयोंके क़त्लके बाद चाहता है कि सरकारके सामने आत्म-समर्पण करके उसकी सेवा करे।

—क्या ईशानको देखा जा सकता है ?—जवानने पूछा।

—देखा जा सकता है, लेकिन यदि फुजैलके आदमियोंको खबर लग गयी, तो हम सबको मार डालेंगे।

—बाबा ! सत्तरको पहुँच गये, आदमियोंसे क्यों इतना डर रहे हो ? यदि वह न भी मारें, तो भी घरमें मर जाओगे। आओ चलें, ईशान रहमतके पास।

बूढ़ा जवानको अपने साथ दूर पहाड़ोंमें ले गया। फिर पत्थरोंसे घिरी एक गुफाके पास जवानको खड़ाकर अन्दर गया। पाँच मिनट बाद लौटकर जवानको भी साथ ले बूढ़ेने वहाँ बैठे एक तरुणकी तरफ इशारा करके कहा—यह है ईशान रहमत।

ईशान रहमतने जरा देर आँखोंकी तरफ देखकर कहा—तुम वही आदमी तो नहीं हो, जिसे यंगिकुरगानमें पथराव करके मारना चाहते थे।

—सम्भव है।

—क्षमा करना बिरादर ! मैंने अब तोबा किया, तुम मेरे साथ नेकी करो और मेरी अर्जको सरकार तक पहुँचा दो।

—मैं तवीलदरसे यह जाननेके लिये आया था, कि तुम्हारे भाई ईशान सुल्तानने आत्म-समर्पणके बारेमें जो निवेदन-पत्र दिया है, वह असली है या जाली। किन्तु अब तो वह नहीं रहे। तुम बताओ, किस नियतसे आत्म-समर्पण करना चाहते हो ?

—आत्म-समर्पण छोड़ मेरे लिये दूसरा रास्ता नहीं है। यदि मैं आत्म-समर्पण न करूँ, तो फुजैल या दिलावरशाह मुझे मार डालेंगे।

कविता-पाठी जवान—दाखुन्दा—ने गुफासे निकलकर कूलाबका रास्ता लिया।

२६

भाग्यवान् सरदार

खवालङ पर्वतमें बसमाचियोंने डेरा डाला था। सदाद, दानियाल और कूर्बाशियोंको सामीपाशा व्यवस्थाके सम्बन्धमें पाठ दे रहा था :—

—चाहे कूलाब हो या कूलाबकी दीहात, हमारे लोगोंको अपनी इच्छा और अपने लाभके लिये कोई चीज नहीं लूटनी चाहिये। गरीबोंके घरों या सरकारके हाथसे जो कोई भी कामकी चीज हाथ लगे, उसे कैम्पमेंले जाकर जमा करना चाहिये। शहरकी विजय और शान्ति-स्थापनाके बाद हर एक आदमीको उसके कामके अनुसार इनाम दिया जाये।

सामीकी शिक्षाके अनुसार सदाद और दानियाल बसमाचियोंको दस्ता-दस्ता करके खुद भी अपने खास दस्तों (फौजी टुकड़ी)के साथ चले। सबसे पीछे सामी घोड़ेपर चढ़कर निकला। उसने तै कर लिया था, कि जैसे ही कूलाबपर विजय हो, जो भी कामकी चीज हाथ लगे, उसे अपने आदमियों द्वारा अफगानिस्तान भेज देना होगा। अब आजके कामको कलपर नहीं छोड़ना होगा, क्योंकि इन चोरोंके हाथमें कोई चीज सुरक्षित नहीं है।

× × ×

बसमाचियोंकी फौज पेचीले रास्तेसे गुजर रही थी और रास्ता इतना तंग कि कहीं-कहीं एक घोड़ा भी मुश्किलसे गुजर सकता था। साथ ही वहाँ इतनी सीधी चढ़ाई-उतराई थी, कि कितनी जगहोंपर आदमीको उतरकर घोड़ेकी पूँछ पकड़कर ऊपर चढ़ना पड़ता था। एक तरफ पहाड़ इतना ऊँचा, कि मेघको भी वहाँ पैर रखना आसान नहीं था। दूसरी ओर नदी इतनी खड्डमें बह रही थी, कि गिरनेवाले पत्थरोंके सिवा कोई वहाँ पहुँचनेकी हिम्मत न कर सकता था। यदि कोई वहाँ पहुँचे यानी ऊपरसे लुढ़के, तो दूसरी बार दुनियामें नहीं लौट सकता था, सिर्फ उसकी मिट्टी-पानीके साथ निश्चित स्थानमें पहुँच सकती।

बसमाची जिस वक्त इस दुर्गम राहसे गुजर रहे थे, उसी वक्त बन्दूक और मशीनगनकी आवाज आई। कूलाबसे आये लाल सैनिकोंकी ओरसे सामीपाशाके लिये यह अगवानी थी। लड़ाई शुरू हुई। अन्तमें बसमाचियोंने हार खाई। गोलीसे बचे कितने ही लुढ़ककर नदीमें गिर अपने अनन्त-

कालीन निवासमें पहुँच गये और बाकी इधर-उधर भाग गये। सामी अपने खास सिपाहियोंके साथ पहाड़के ऐसे कोनेमें छिप रहा, जहाँ उसे कोई नहीं देख सकता था। सदादने पहाड़के डाँड़ेपर जाकर शरण ली। दानियाल अपने अनुभवी सिपाहियोंके साथ बहुत बुरी जगहमें फँसा था। यहाँ तीन तरफ संग तराशों द्वारा काटी जैसी पहाड़ी दीवारें खड़ी थीं और चौथी तरफ एक तंग रास्ता था जिधरसे कि लाल-सैनिक आ रहे थे। उनके आगे-आगे आकर दाखुन्दा और उसके साथी ताजिक स्वयंसेवकोंने अपनी पहाड़ी चतुराईसे पत्थरोंकी ओट तैयार कर ली थी। आगे बढ़नेके लिये लाचार दानियालने गोली चलानी शुरू की। गोलियाँ बेकार हो खतम होनेको आईं। लाल-सैनिकोंने मौतकी परवा न कर आगे बढ़ना जारी रखा और अन्तमें दानियालके कैम्पमें पहुँच तलवार और तमंचेका हाथ दिखाया। रात आई। जिन्दा बचे बसमाचियोंको अन्धकारने अपनी गोदमें छिपा लिया। लालसेना भी अपने कैम्पमें लौट गयी।

× × ×

अगले दिन सबेरे सदाद अपने छिपनेके स्थानसे निकलकर कलके युद्धकी जगहमें आया। मुर्दोंके बीच उसने दानियाल और उसके घोड़ेको देखा। वह उसके शवको लेकर गर्मकी तरफ भागा। और सामी? अपनी बाशकमन्दानी (सेनापतित्व)के इन चन्द महीनोंमें लोगोंके लूटे मालसे उसने अच्छा खजाना जमा कर लिया था। इस लूटको ले उसने अपने आदमियोंके साथ अफगानिस्तानका रास्ता लिया। इस तरह माल-जान दोनोंके साथ निकल भागनेसे उसने अवश्य अपनेको अनवर पाशासे अधिक भाग्यवान समझा।

अब्दूकादिर, तुर्गेसरिक और बरात ईशक आकाबाशी पीछे कूलाबसे भागकर खानाबाद (अफगानिस्तान) पहुँचे। उन्होंने वहाँ सामीपाशाकी शान-शौकतको देखकर कहा—मुस्लिम-जन-साधारणकी सेनाके बाशी-कमन्दानने चोरीमें हमारा भी कान काट लिया।

२७

हिमानी (जुलाई १९२३)

जुलाई १९२३का महीना था । आबबुर्दान—मस्चाह गाँवमें सैयद अमीर अहमदखाँके मन्त्रणागार—जिसे हम १९२१में देख चुके हैं—में कूर्बाशी लोग सलाहके लिये एकत्रित हुए थे। सैयद अहमदखाँने कहा—हमें कभी यकीन न था कि लाल सैनिकोंको हमारे पहाड़में रास्ता मिल जायगा। अब क्या करना चाहिये ?

—खुदाका मुल्क तंग नहीं है, यदि मस्चाहमें नहीं रहा जा सकता, तो करातगिन चलें, जहाँपर फुजैलउद्दीन ग़ाजीकी "सुदृढ़ सरकार है"—कहकर खालबूता कूर्बाशीने अपना विचार प्रकट किया।

इसरार तुराने कहा—यदि फलगरके भुक्खड़ न होते, तो इस कोहिस्तान (पर्वत-स्थली)में लाल-सेना कभी पैर न रख सकती थी। इन भुक्खड़ोंने न सिर्फ लाल-सेनाका पथप्रदर्शन किया, बल्कि वह पहाड़ी तोपोंको अपने कंधोंपर रख पहाड़ी डाँड़ोंसे पार कर लाये । अफ़सोस कि अपने राज्यके समय हमने इन्हें क़तल न कर डाला। यदि आजके दिनको जानते, तो एक भी फलगरीको दुनियामें न छोड़ते।

नसरतशाहने कहा—फलगरियोंके लिये रोनेकी जरूरत नहीं, यदि लाल-सेनाकी छाया अपने ऊपर देखें, तो मस्चाहके भुक्खड़ भी वही करेंगे। फलगरके भुक्खड़ोंने हमारे हाथों जो जो मुसीबतें सही हैं, मस्चाहके गरीब भी हमसे उतने ही बेजार हैं। अपने चन्द सालोंके यहाँके निवासमें हमने उनके पास एक दिनकी भी खुराक नहीं रहने दी। हमें ऐसी तदबीर करनी चाहिये, कि हमारे चले जानेके बाद मस्चाहमें एक भी आदमी न रह जाय, नहीं तो ये भी लाल-सेनाका पथ-प्रदर्शनकर हमें पकड़वा देंगे ।

खालबूताने कहा—तदबीर आसान है। लोगोंको बोलशेविकोंसे डरवाओ, यदि नहीं सुनें तो अपने रवाना होनेसे पहले इन्हें करातगिन

भेजवा देना चाहिये। ऐसी अवस्थामें लाल-सैनिक मस्चाहमें पहुँच, यहाँके पाषाण-स्थानमें किसी आदमीको न देख चन्द रोज रहकर लौट जायेंगे।

मन्त्रणा-समिति लम्बी नहीं होने पायी, क्योंकि इसी वक्त लाल-सैनिकोंके आबबुर्दान पहुँचनेकी खबर मिली। बसमाचियोंने लोगोंको भड़काना शुरू किया—बोलशेविक दुनियासे आदमके बीजको नेस्त कर देना चाहते हैं। तुम लोग जल्दी भागकर फ़ुजैलउद्दीन मख़दूम गाजीके राज्य करातगिनमें चले जाओ। मस्चाहके रहनेवालोंने अपने कोहिस्तानसे बाहर कभी पैर न रखा था और बोलशेविकोंको वे जानते न थे। बसमाचियोंके मुँहसे जो कुछ उन्होंने सुना उससे बोलशेविक उन्हें "सात शिरोंवाले देव" मालूम हुए और डरके मारे भाग खड़े हुए।

एक दूसरी जगहके ताजिकने "भाइयो! इनके बहकावेपर कान मत दो और अपने वतनसे आवारा मत बनो। बोलशेविक गरीबोंके दोस्त हैं" कहकर चाहा कि लोगोंको भागनेसे रोके, लेकिन इसी वक्त बसमाचीकी छोड़ी एक गोली उसके कानके पाससे गुजरी और उसे वहाँसे हटनेके लिये मजबूर होना पड़ा। वह पहाड़में जा सामनेसे गायब हो गया।

२३ जून १९२३को लाल-सेना फलगरके गरीबोंके साथ अमीर अहमद खाँकी राजधानी आबबुर्दानमें पहुँची और देखा कि वहाँ कोई नहीं है। "प्रासाद"में ज़िन्दान (जेल) तौक और जंजीरोंसे भरा, शर्बतखानामें शराब चुआनेकी मशीन, कूरखाना (अस्त्रागार)में गोली ढालनेके सामान—ये थे अमीर अहमद खाँकी तीन सालकी हकूमतके स्मृति-चिह्न। लेकिन मन्त्रणागारमें अब भी शिकारी बाज बैठकीपर बैठा अपनी चोंचसे पंखोंको खुजला रहा था, मानों दरबारके नष्ट होनेसे उसे कोई परवा न थी।

लाल-सैनिकोंने बसमाचियोंका पीछा कर कुछको मारा और कुछको बन्दी बनाया। कूर्बाशियों (सेनानायकों)में केवल खालबूता फ़ुजैल मख़दूमके पास तक पहुँच सका।

बसमाचियोंके काम तमाम करनेके बाद लालसेनाने वहकावेमें पड़कर भागे लोगोंको समझा बुझाकर लौटा लानेके लिये आदमी भेजे, लेकिन जब तक वे उनके पास पहुँचे, तबतक पकशेफ़के पीछे नरनारी, छोटे-बड़े, बृद्ध-जवान सारे भगोड़े हिमानीके नीचे दबकर मर चुके थे।

२८

दृढ़ संकल्प

१९२३ में बिलायत गर्ममें अन्न और खानेकी दूसरी चीजोंके लिये बहुत तंगी थी। इस बिलायत (प्रदेश) के आधे काम करनेवाले फरग़ाना मजदूरीपर जिन्दगी बसर करते थे। पिछले छ सालकी बेकारीने उन्हें भारी बलामें फंसा दिया था। खेती कभी भी वहाँके सारे आदमियोंका पेट न भर सकी थी और अब तो वह खेती भी पिछले तीन सालसे बसमाचियोंके पैरोंसे पामाल हो चुकी थी। बसमाची पहले अधिकतर हिसार और कूलाबकी बिलायतोंकी लूटपर जिन्दगी बिताते थे, लेकिन अब एक सालसे उनका वह रास्ता भी बन्द था, इसलिये वह इसी बिलायतसे अपनी सारी आवश्यकताओंको पूरा करनेके लिये मजबूर थे।

फ़ुजैल मख़दूमने जब अपनेको सुदृढ़ और मजबूत ख्याल किया, तो उसने चारों तरफके चार-पाँच हजार बसमाचियोंको वहाँ जमाकर बन्दूक, कारतूस और फौजी लिवास बनानेके कारखाने कायम किये, जिससे "दृढ़" राज्यके लोगोंकी आर्थिक-अवस्था और भी खराब हो गयी। इस खराबीका बुरा असर सबसे पहले ग़रीबोंपर पड़ा। बाय, मुल्ला, ईशान (पीर) और अमीरके अमलदार (अफसर) या तो स्वयं बसमाची थे या बसमाचियोंकी छत्र-छायामें रहते थे, इसलिये वह अपनेको खुशहाल रख सकते थे। यह बिलायत अच्छे दिनोंमें भी अभी चीजके बदले चीजके युगसे आगे नहीं बढ़ी और अब "दृढ़" होनेके बाद वह एकाएक कागज-चा (नोट) के युगमें आ पड़ी। फ़ुजैल मख़दूमके राज्यमें चीजके बदले

कागज लेनेके लिये लोग बाध्य थे। थोड़े समयमें वह नोटोंके मालदार और चीजोंके भिखारी बन गये। हाँ, इसकी वजहसे भूखसे तंग आकर कितने ही गरीब फुजैल मखदूमकी नौकरी करनेके लिये बाध्य हुए। तो भी देशमें भारी तबाही थी।

यही वजह थी कि जब फुजैल मखदूमने आबगर्ममें जाकर लाल-सेनासे लड़ना चाहा, तो बिलायतके अन्दर उसके विरुद्ध विद्रोह उठ खड़ा हुआ। लोगोंने उसको मदद देना छोड़ दिया। दाखुन्दोंका प्रोपेगैण्डा (प्रचार), बायों और मुल्लोंके प्रोपेगैण्डासे अधिक बलवान सिद्ध हुआ। एक यह भी बड़ा कारण था, कि फुज़ैलने अपनी सारी बहादुरी और गर्मके कोहिस्तानकी दुर्गमताओंके अपने पक्षमें होते भी आबगर्ममें बारह दिन ठहरकर लड़नेके बाद हार खाई और वह बिन-सफियान गाँवमें भागनेके लिये बाध्य हुआ।

२९

तीन आकस्मिक महोत्सव

गर्मकी बिलायतमें बिन्-सफियान गाँवमें सारबुक नदीके आर-पार दो सेनायें पड़ी थीं। एक तरफ पाचिरा गाँवमें लाल-सेनाका कैम्प लगा था और दूसरी तरफ़ कज़नाक गाँवमें फुजैल मखदूम डेरा डाले अपने भगोड़े सिपाहियोंको जमा करनेमें लगा था। उन दोनों गाँवोंके बीच नदी पर एक पुल था, जिसे भी फुज़ैलने खराब कर दिया था और इस तरह वह अपनेको नदी पारके आक्रमणसे सुरक्षित समझता था।

—मैंने अपने बीस बहादुर जवानोंको इसलिये अलग कर दिया है कि वे नदी पारकर दुश्मनकी खबर लावें, लेकिन उनके साथ जानेके लिये कुछ ताजिक वीरोंकी आवश्यकता है—यह बात तवारिश वरीनोफ़ने बसमाची-विध्वंसन-कमीशनके प्रमुखसे कहा।

प्रमुखके माँगने पर पाँच ताजिक जानेके लिये तैयार हुए, जिनमें

दाखुन्दा सबसे पहला था। ये तीस आदमी बसमाचियोंकी नजरसे दूर नदीके नीचेकी तरफ गये और उन्होंने एक पुल बाँधकर सारबुक नदीको पार किया।

वहाँ अपने लिये एक अच्छा मोर्चा तैयार कर वह बसमाचियोंकी गतिविधिपर नज़र रखते वहाँ जम गये। किन्तु थोड़े ही समय बाद बसमाचियोंको इस बातका पता लग गया और उन्होंने उनपर हमलाकर दिया। अवस्था बड़ी खतरनाक थी। एक ओर सिर्फ तीस आदमी थे, जिनमें सिर्फ पच्चीस सैनिक शिक्षा-प्राप्त थे और दूसरी ओर दो हजार बसमाची उनपर गोली चला रहे थे। पहलेसे तैयार किये सुदृढ़ मोर्चेने उनकी सहायता की। वे बसमाचियोंको देखकर निशाना लगा सकते थे और उनकी एक गोली भी खाली जाने वाली नहीं थी; लेकिन बसमाचियोंकी गोली मोर्चेके पत्थरोंसे टकरा चिपटी होकर गिर पड़ती थी। अन्तमें बसमाचियोंने मरनेका कुछ भी न ख्याल कर एक साथ तीन ओरसे हमला कर दिया। फुज़ैल और खालबूता स्वयं उनका नेतृत्व कर रहे थे। मोर्चा और मोर्चावालोंकी हालत बुरी थी। लालसैनिक मोर्चा छोड़ पीछे हटनेके लिये मजबूर हुए। वे पेटके बल जमीन पर पीछेकी ओर सरकते पत्थरोंका आड़ ले बसमाचियोंके साथ लड़ते भी जा रहे थे। लाल-सैनिकोंने इस तरह अपनेको नदीके किनारे पहुँचाया। तबतक बसमाचियों ने पुलको तोड़ दिया। अब एक तरफ पानी और दूसरी तरफ आग थी। दोनोंके बीच थोड़ेसे लाल-सैनिक आग लगे जंगल और समुद्रके बीच पड़े सिंहकी तरह छुटकारेका रास्ता ढूँढ़ रहे थे।

कितने बसमाची बहुत धीरे-धीरे बढ़ रहे थे। वे चाहते थे कि लाल-सैनिकोंकी गोली खतम हो जाय, तो बिना नुकसान उठाये उन्हें गिरफ्तार कर लें। थोड़ी देरमें ताजिक स्वयंसेवकोंने नदीमें एक अनुकूल जगह ढूँढ़ निकाली और पलक मारते-मारते वे अपने साथियोंके साथ पानीमें कूदकर दुश्मनकी आँखसे दूर चले गये। शिकारके हाथसे निकल जाने

पर वे बड़े कुपित हुए और घोड़ों पर सवार नदी पार हो पैदल दौड़ते गोली चलाने लगे। लाल-सैनिक नदीके किनारेकी चट्टानों और नीची ऊँची जमीनमें छिपते ऊपरकी ओर दौड़े। बसमाची भी उनके पीछे ऊपरकी ओर दौड़ना चाहते थे, लेकिन दो-चार आदमियोंके गोली खाकर लुढ़कने पर पीछे आ दूसरे रास्तेसे उन्होंने लाल-सैनिकोंको घेरना चाहा।

× × ×

"ऐ वाय ! दाखुन्दा नहीं है" कमाण्डरने लौटकर आये लाल-सैनिकों पर एक-एककर नजर दौड़ाकर कहा। पाँच मिनटमें यह खबर सारी सेनामें पहुँच गयी और हर एक जवानको दाखुन्दाके गुम होनेका अफसोस हुआ। एक कमाण्डरने कहा—इन लड़ाइयोंमें बहुतसे साथी बलि हुए। दाखुन्दा भी इस राहमें क़ुर्बान हुआ। वह ऐसा आदमी था, जिसका व्यक्तित्व एक दर्पण था, जिसमें ताजिक कमकर-जनसाधारणका आत्मबल दिखलाई पड़ता था। साथ ही वह ऐसा व्यक्ति था, जिसने अपने आपको हमारी पार्टीकी अभिलाषा और संकल्पके लिये अर्पण कर दिया था। वह सच्चा बोल्शेविक था और उसके सारे काम बोलशेविकोंके अनुरूप होते थे। अपने अन्दरसे ऐसे व्यक्तिका उठ जाना हमारे लिये भारी अफसोसकी बात है।

—दाखुन्दा स्वयं हमारे अन्दरसे उठ गया, लेकिन उसका व्यक्तित्व ताजिक कमकरों और जन-साधारणमें अब भी मौजूद है और हमारी पार्टी ऐसी मजबूत है कि हजारों ऐसे व्यक्तियोंको पैदा करेगी—कहते दूसरे कमाण्डरने अपने साथीको तसल्ली दी।

बसमाची नदीके किनारे आकर भी अपनी पहली जगहको छोड़े न थे। उनकी तैयारी भी पूरी हो चुकी थी। उन्होंने लाल-सेनाको चारों तरफसे घेर लिया। रसद खतम हो गयी और हालत बुरी थी। हर तरफ नंगी पहाड़ियाँ और पत्थर थे। वहाँ किसी चीजके मिलनेकी आशा न थी। लालसेना ऐसे स्थानमें थी, जहाँसे पीछे हटनेकी गुंजाइश न थी।

बसमाचियोंका हमला हर घंटे तेज होता जा रहा था और वे अपने घिरावेको तंग करते जा रहे थे।

× × ×

समरकन्दसे श्वेदसोफ़की कमानमें एक दस्ता सारबुकके किनारे पहुँचा। एक पत्थरके पीछे काली चीज़को देखकर उन्होंने गोली चलाई, लेकिन काली चीज़में कोई गति न दिखाई पड़ी। दस्ताने अपनी एक टुकड़ीको जिन्दा गिरफ्तार करनेके लिये आदमीके पास भेजा, जिसमें कि उससे कुछ बातोंका पता लगा सके। टुकड़ीने नजदीक जा फिर एक बार गोली चलानी चाही, किन्तु "स्वयी, स्वयी" (अपना आदमी) की आवाजने गोली चलानेसे रोक दिया। टुकड़ीके सरदारने "रूकि वेर्ख" (हाथ ऊपर) कह काली चीजको हुकुम दिया। काली चीजने चट्टानके पीछेसे सीधे खड़े हो दोनों हाथोंको ऊपर उठा दिया। टुकड़ीने आगे बढ़कर उसे गिरफ्तार किया और चट्टानके पीछे खड़ी बन्दूकको भी ले लिया।

—इस आदमीको मैं पहचानता हूँ—यह आवाज श्वेदसोफ़के दस्तेके साथ आये एक फलगरी स्वयंसेवककी थी, जिसे सुनकर सबकी नजर आदमीके ऊपर गड़ गयी।

—तू ही न मस्चाहमें लोगोंको न भागनेके लिये समझा रहा था, फिर क्या हुआ जो स्वयं बसमाचियोंमें चला गया?—फलगरीने पूछा।

—मैं यहाँ दुश्मनकी गति-विधि जाननेके लिये आया था। मस्चाहके बाद लौटकर अपने दस्तेके साथ आबगर्म जाकर मैं फ़ुज़ैल मखदूमसे लड़ा और अब फिर उसी कामके लिये यहाँ आया—कहकर आदमीने अपना हाल बताया।

× × ×

श्वेदसोफ़का दस्ता बसमाचियों पर पीठकी तरफसे हमला करके उनकी पांतीको तोड़ बरीनोफ़के दस्तेसे जा मिला था।

बरीनोफ़के कैम्पमें आज तीन आकस्मिक महोत्सव हो रहे थे।

बसमाची हार खाकर भाग गये, समरकन्दसे कुमक आ पहुँची और जिसे सब लोग मारा गया समझते थे वह दाखुन्दा सही-सलामत स्कन्धावारमें पहुँच गया था—चट्टानके पीछेकी काली चीज़ दाखुन्दा ही था।

फ़ुज़ैल इस पराजयके बाद फिर अपनी कमर सीधी न कर सका। मौज़ामज़ार ताबे हायतमें एक बार सामने आ पड़ने पर लड़नेके लिये मजबूर हुआ, लेकिन उसका घोड़ा मारा गया। फ़ुज़ैल दूसरे घोड़ेको ले सीधे मोतीनान गाँवमें अपनी हवेलीमें पहुँचा। वहाँसे नक़द और मालको ले छतपर फहराते अपने "सुदृढ़ता"के झण्डेको गिरा उसने सारे घरमें अपने हाथसे आग लगा दी। फिर तोपच्चाकके रास्ते वखयाकी तरफसे भागते पंजनदीके किनारे पहुँचा। उसके सिपाहियोंने देखा कि वह अफ़गानिस्तान भागना चाहता है, उन्होंने चाहा कि उसे पकड़कर सरकारके हाथमें दे दें और इसके द्वारा अपने अपराधोंके लिये क्षमा माँगें, लेकिन फ़ुज़ैलने ऐसा करनेका मौका न दिया और अपने भाई सदाद और दो-तीन दूसरे आदमियोंके साथ नदी पार हो अफ़गानिस्तान चला गया। उसके आदमियोंने दूसरे दिन अपने हथियारोंको दे सरकारके हाथमें आत्मसमर्पण किया।

अब विलायत गर्म अपनेको आबाद करनेके लिये आज़ाद थी।

३०

चतुर कलाकार

विलायत दर्वाज़में लालसेनाने सगीरदश्तमें अपना कैम्प बनाया था। इस निर्जन बयाबानमें भी उन्होंने खेमोंमें पुस्तकालय, सिनेमा और नाटक स्थापित कर सांस्कृतिक जीवन और मनोरंजनके साधन स्थापित कर दिये थे। सिनेमाके बाद नाटक शुरू हुआ। एक अंकके पूरा हो जानेपर पर्दा गिरा और दर्शकोंके बैठनेकी जगहमें चिराग जल उठे। दाखुन्दाकी नजर

स्थानीय दर्शकोंके पीछेकी पंक्तिमें एक स्त्रीपर पड़ी, जो स्वयं भी उसकी तरफ ध्यानसे देख रही थी। उसकी आँखोंसे मालूम होता था कि वह परिचित है। दाखुन्दाको उस स्त्रीके बारेमें ज्यादा जाननेकी इच्छा हुई और वह दर्शकोंके बीचसे आगे बढ़ा। स्त्री भी मानों पुरुषके अभिप्रायको समझ गयी और दर्शकोंकी पाँतीसे अलग हो, एक ओर खड़ी हो प्रतीक्षा करने लगी। दाखुन्दा तेजीसे कदम बढ़ाते उसके पास पहुँचा और देखकर चकित हो बोल उठा—ओः, गुलनार! तू यहाँ क्या काम करती है?

—तू यहाँ क्या काम करता फिरता है? एक साल हुआ दोशम्बासे अलग हुए। न तू खुद दोशम्बा लौटा न मुझे अपने पास बुलाया। अन्तमें वियोगसे दम लेना मुश्किल हो गया और तेरी खोजमें चल पड़ी। किसीने कहा बेदानामें है, मैं वहाँ पहुँची। कहा आबगर्म गया, वहाँ पहुँची; कहा बिलायत गर्ममें है, वहाँ पहुँची। कहा तबील दर्रा गया, वहाँ गयी। कहा सगीरदश्त गया, और अन्तमें यहाँ तुझे पानेमें सफल हुई। मैं आई कि तुझसे एक पक्की बात करूँ। "क्या करना चाहिये" अब इस बातका मुझे जवाब दे, मुझमें और अधिक प्रतीक्षा करनेकी शक्ति नहीं है।

—बसमाचियोंको नेस्त करना चाहिये, इस समय इसके सिवा कोई दूसरा काम मुझे दिखलाई नहीं पड़ता।

—बसमाचियोंको लाल-सैनिक नेस्त कर रहे हैं, बसमाचियोंको नेस्त करना तेरे लिये बाकी नहीं है।

—तू गलत कह रही है गुलनार! वस्तुतः बसमाचियोंका नेस्त करना मेरा-तेरा और सारे ताजिक कमकरोंका कर्त्तव्य है। बसमाची वही आदमी हैं, जो पहले अमलदार (सरकारी अफसर), बाय, काजी, और हाकिमके नामसे हमारा खून पीते थे और अब बसमाचीका लिबास पहनकर फिर चाहते हैं कि वही अमीरी, अमलदारी, अकसक्कालीका युग जारी हो, और फिर चाहते हैं कि मेरे, तेरे और सारे कमकरोंके खूनको पीवें। इसलिये सारे बसमाचियोंको नेस्त-नाबूद करना सबसे पहले मेरा और तेरा कर्तव्य

है; क्योंकि उनके नेस्त होने ही पर हम चैनसे रह सकते हैं। हमें लाल-सेनाके गिर्द जमा हो जाना चाहिये, जिसमें बसमाचियोंके बीजको अपने हाथसे दुनियासे नेस्त कर दें।

—यदि यही बात है, तो मुझे भी अपने साथ ले चल और बसमाचियोंके नेस्त करनेके रास्तेकी शिक्षा दे।

—अगर चाहती है, तो ज़रूर तेरे लिये भी काम मिल सकता है।

—क्यों न चाहूँगी ? जिसने अपनी जवानीको अमीरी युगके कानून-कायदेकी भट्टीमें झोंका। जिसने अपने सब-कुछको प्राचीन रीति-रवाजोंकी चक्कीमें पिसवाया, वह मैं आज यदि प्राचीन और नवीनके इस संघर्षमें कमकर सरकार और अमीरशाहीके युद्धमें काम न करूँ, यह कैसे हो सकता है। यदि मेरे लिये कोई काम हो, मेरी सेवा आवश्यक हो, तो मैं उसके लिये तैयार हूँ।

—अच्छा, मैं तुझे काम देता हूँ। दरवाज़वाले ग़ैरतशाह और दिलावरशाह कहाँ हैं, क्या कर रहे हैं, और उनके पास कितने लड़ाकू हैं—यह बात जाननेकी बड़ी ज़रूरत है। यदि इस कामके लिये मर्दको भेजें, तो वह जरूर मारा जायगा, क्योंकि इन आखिरी दिनोंमें ज़रा भी सन्देह हो जानेपर बसमाची बिना कुछ पूछे कत्ल कर डालते हैं। लेकिन अभी स्त्रियोंके बारेमें उतना सन्देह नहीं करते, इसलिये मुझे आशा है कि तू इस कामको कर सकती है।

—ज़रूर कर सकती हूँ। दिन उगते ही किला-खुमकी तरफ रवाना हो जाऊँगी—गुलनारने कहा।

नाटकके दूसरे अङ्ककी घंटी बजी। दाखुन्दा तमाशाकी तरफ जाना चाहता था, किन्तु गुलनारने उसे रोककर कहा—मुझे एक तदबीर सूझी है।

—क्या तदबीर ?

—मैंने यहाँ आज रात एक गलतीका काम देखा। जिस समय नाटकके लिये अभिनेता तैयारी कर रहे थे, उसी वक्त उनके अन्दरसे

एक मध्य-वयस्का मोटी-सी औरतने आकर चादर ओढ़ अट्ठारह-साला सुन्दरी तरुणीका रूप धारण किया। यदि कर सके, तो मुझे भी अट्ठारह-साला कन्या बना दे।

दाखुन्दाने हँसते हुए कहा—मेरी दृष्टिमें अभी भी तू अतीव सुन्दरी और सुमुखी अट्ठारह-साला कन्या है। तुझे बनावट-सजावटकी ज़रूरत नहीं है।

—तेरी नज़रमें ऐसा हो सकता है, किन्तु बसमाचियोंकी नज़रमें अट्ठारह-साला कन्या और मुझमें बहुत अन्तर है। भेष बनानेसे मुझे आशा है कि उद्देश्य जल्दी सिद्ध होगा।

—किन्तु तब सम्भव है तेरा अनिष्ट करें।

—इसके लिये मुझे एक कटार लाकर दे दे। वह काफ़ी होगी।

—तू चाहती है कि ख़तरेके वक्त सीनेमें कटार मार ले?

—नहीं, खुदा न करे, उस सीनेमें जहाँ कि तेरा प्रेम मौजूद है, वहाँ मैं अपने हाथोंसे कटार मारूँगी? यदि यह काम करना चाहती तो मैं कबकी न खतम हो गयी होती? कटार इसलिये चाहिये, कि समय पड़ने पर उससे मैं अपनी रक्षा कर सकूँ, यानी ज़रूरत आ पड़े तो उसे तेरे शत्रुओं, अपने शत्रुओं और ताजिक गरीबोंके शत्रुओंके सीनेमें छिसेड़ दूँ।

"बहुत अच्छा" कह दाखुन्दा गुलनारके विचारसे सहमत हुआ। दोनों नाटक देखनेका खयाल छोड़ पिछवारे—हजामके खेमेमें गये।

३१

मुल्ला चारतारीकी कन्या

सगीरदश्तसे एक सवार घोड़ा दौड़ाये किलाखुमकी तरफ जा रहा था। किलाखुम नजदीक आ गया था। वह चश्मासे निकलती छोटी नहरमें घोड़ेको पानी देनेके लिये खड़ा हो गया। इसी समय हरियाली और

"तार की झंकारों के साथ सुरीली आवाज़" पृष्ठ ४२६

पहाड़ी फूलोंसे घिरे चश्मेकी तरफसे तारकी झंकारोंके साथ सुरीली आवाजमें किसीको गाते सुना :

गिरि और बनमें	लाला उगे
बाग औ खेतमें	शस्य झुके
सुख है सर्वत्र	मेरे मनको छोड़
प्यारी हवाएँ	खुशी बढ़ायें
ऐ सुगन्ध वायु	उसे खबर दे
सौन्दर्य सब ये	आते दौड़ते
आँख और दिलसे	तुझ बिन क्या मिलता
हे मम हृदय-बल !	हे नेत्र-प्रभा !

इन भाव-पूर्ण पदोंको सुनकर सवारका दिल विकल हो उठा और वह घोड़ेका मुँह चश्मेकी ओर मोड़कर उधर चल पड़ा। देखता है, एक अट्ठारह-साला सुन्दरी कन्या चारतार बजाती गीत गा रही है। मानो सवारके आनेकी उसे कोई खबर नहीं है। वह अपनी आँखोंको बन्द किये उसी तरह गानेमें तन्मय थी। "तू कौन है, यहाँ क्या कर रही है?" सवारके इस प्रश्नको सुनकर ध्यान-मग्न कन्याने जगी-सी हो चारतारको ज़मीनपर रखकर कहा—

शोगनानकी एक गरीबिन हूँ। बाप और मैं दोनों दर्वाज़के शाहबच्चोंके दरबारमें जानेके विचारसे इस प्रदेशमें आये। रास्तेमें पिता जाते रहे और मैं अकेली राह भूल गई। अब कुछ समयसे पहाड़ों-पहाड़ों जंगल-जंगल मारी-मारी फिर रही हूँ।

—तेरा नाम क्या है और तेरे बापका क्या नाम था ?

—मेरा नाम शाहसनम है। बापका असली नाम शाहगुल था, किन्तु तार बजानेकी वजहसे लोगोंने उन्हें मुल्लाचारतारी नाम दे रखा था। वह इसी नामसे सर्वत्र प्रसिद्ध थे।

—बहुत अच्छा, आ मेरे पीछे सवार हो। मैं तुझे शाहबच्चोंके पास ले चलता हूँ।

लड़की अपने तारको हाथमें ले घोड़े पर सवार हुई। सवारने अपने घोड़ेको किला-ख़ुमकी तरफ दौड़ाया।

सवार किला-ख़ुममें पहुँच एक हवेलीमें दाखिल हुआ, जिसमें बसमाची डेरा डाले हुए थे। घोड़ेसे उतर लड़कीको एक तरफ़ रख वह स्वयं घरके अन्दर गया। वहाँ कूरबाशी बैठे हुए थे।

—आ मिर्ज़ा अस्करी, क्या खबर लाया?—कहकर दिलावरशाहने आनेवालेसे सवाल किया।

खबर यही है, कि बोलशेविक जबानी आत्मसमर्पण पर राजी नहीं होते। कहते हैं "यदि तुम वस्तुतः बसमाचीगिरीका पागलपन सिरसे उतार फेंकना चाहते हो, तो बिना किसी शर्तके अपने सारे आदमियों और हथियारोंके साथ आकर हमारे यहाँ आत्मसमर्पण करो।"

—यानी कहो कि तुम्हारे हाथसे जो भी चीज़ आये, उसे लेनेमें उज्र नहीं।

गैरतशाहने कहा—बोलशेविक हमें तुच्छ समझते हैं, लेकिन तोप और मशीन समतल मैदानोंमें काम आती हैं, हमारे कोहिस्तानमें नहीं। हमारा कोहिस्तान चारों ओर भगवानके बनाये मजबूत किलेसे घिरा है। यदि डाँड़ेसे एक पत्थर गिरायें तो सौ तोपें और मशीनगनें बेकार हो जायें।

सदीक बेक, कूरबाशी—दिलावरशाहने कहा—बहादुर जवानोंको ले रास्तोंकी रक्षा करें। हम भी मौजकी रूखी-सूखी चीज़ोंको हाथसे न जाने दें, कुछ आनन्दोत्सव मनायें।

मिर्ज़ा अस्करीने बीचमें बोलते हुए कहा—यदि हजरत शाह बज़्म (नृत्य-गीत) और खुशी मनाना चाहते हैं, तो एक चारतार बजाने-

वाला शोगनानी शिकार भी हाथ आया है। वह बज्मको इच्छाके अनुसार रौनक कर सकता है।

—यह भी भगवानकी देन है। जल्दी बज्म तैयार कर—दिलावर-शाहने मिर्जा अस्करीसे कहा।

× × ×

रातको दिलावरशाह और गैरतशाहके सामने मजलिस सजा था। मुल्ला चारतारी शोगनानीकी कन्या तार बजाकर गीत गा रही थी। एक ताजिक दुम्बक बजा रहा था और बारी आने पर गानेमें भी साथ दे रहा था। बज्म गरम थी। शोगनानी कन्याके मनोहर केश तार बजाते वक्त उसके चेहरे पर बल खा रहे थे, जिन्हें देखकर दिलावरशाहकी पाशविक वृत्तियाँ भड़क उठीं और उसने चाहा कि अपने अभिप्रायको बदेहागोई (सवाल-जवाबके गीत)के द्वारा कन्याके सामने रखे। उसने दुम्बकको अपने हाथमें ले चारतारसे सुर मिलाते बदेहागोई शुरू की :

दिलावरशाह—हे कन्या मुल्ला चारतारी यार मेरी होगी ?
कन्या— नहीं हूँगी।
दिलावरशाह—जान मेरी होगी ?
कन्या— नहीं हूँगी।
दिलावरशाह—माल मेरी होगी ?
कन्या— नहीं हूँगी, नहीं हूँगी।
दिलावरशाह—मिश्री और मधु ओठ तेरे क्षीर और शक्कर जीभ तेरी
कुसुमकली बदन तेरा हे कन्या मुल्ला चारतारी
यार मेरी होगी ?
कन्या— नहीं हूँगी।
दिलावरशाह— जान मेरी होगी ?
कन्या नहीं हूँगी।

दिलावरशाह— माल मेरी होगी ?

कन्या— नहीं हूँगी, नहीं हूँगी ।

दिलावरशाह(रोते)—असपहाँका सेव दूँ तुझे बदख्शाँका लाल दूँ तुझे
जो कुछ चाहे दूँ तुझे हे कन्या चारतारी
यार मेरी होगी ?

कन्या— नहीं हूँगी ।

दिलावरशाह— जान मेरी होगी ?

कन्या— नहीं होऊँगी ।

दिलावरशाह— माल मेरी होगी ?

कन्या— नहीं होऊँगी, नहीं होऊँगी ।

दिलावरशाह (सखेद)—मैं शाह दरवाजी हूँ अमीर मीरकाजी हूँ
दिलावरशाह गाजी हूँ हे कन्या चारतारी
यार मेरी होगी ?

कन्या— नहीं होऊँगी ।

दिलावरशाह— जान मेरी होगी ?

कन्या— नहीं होऊँगी ।

दिलावरशाह— माल मेरी होगी ?

कन्या— नहीं होऊँगी, नहीं होऊँगी ।

दिलावरशाह— राज है मेरे अधीन बूढ़े जवाँ मेरे अधीन
देश और जहाँ मेरे अधीन हे कन्या चारतारी
यार मेरी होगी ?

कन्या— नहीं होऊँगी ।

दिलावरशाह— जान मेरी होगी ?

कन्या— नहीं होऊँगी ।

दिलावरशाह— माल मेरी होगी ?

कन्या— नहीं होऊँगी, नहीं होऊँगी ।

दिलावरशाह कन्याकी गुस्ताखीसे गुस्सामें आ दुम्बकको एक तरफ रखकर तलवारकी मुट्ठीको पकड़े खड़ा हो गया। कन्या भी तारको जमीन पर रख हाथको अपने बगलमें डाले मुकाबलेके लिये खड़ी हो गई।

दिलावरशाह—तलवार तेज खींचूँ मैं दुश्मन और दोस्त काटूँ मैं
मिलन-मदिरा पिऊँ मैं हे कन्या मुल्ला-चारतारी
यार मेरी होगी?

कन्या— आजमा ले।

दिलावरशाह—जान मेरी होगी।

कन्या— आजमा ले।

दिलावरशाह—माल मेरी होगी?

कन्या— आजमा ले।

दिलावरशाहने म्यानसे तलवार निकालकर कन्या पर वार करना चाहा। कन्याने भी अपनी बगलसे कटार निकालकर शत्रुके सीनेमें भोंकना चाहा। कटारकी मूठको झपटकर दिलावरने पकड़ लिया और उसे छीनना चाहा। इसी समय कड़ाकेकी आवाजके साथ बंदूककी गोली जमीनपर गिरी। सारे घर में दुर्गन्धित धुआँ भर गया और चिराग बुत गया। बसमाची एक दूसरेसे टकराते अपनी बंदूकें हाथमें लिये गोली आनेकी दिशाकी ओर देखने लगे। उन्होंने देखा कि हवेलीकी छतको लाल-सैनिकोंने ले लिया है। दूसरी गोली भी छतसे आई, किन्तु खता कर गई।

"ठहर दाखुन्दा, ठहर दाखुन्दा! नहीं तो गुलनार मारी जायगी"—कहते किसीने आवाज दी और फिर गोलीका छूटना बंद हो गया। कितने ही बसमाची गिरफ्तार होनेका अवसर न दे, गुप्तरास्तेसे जिसे केवल वही जानते थे, और रातके अँधेरेसे फायदा उठा भाग गये, किन्तु कितने ही सालोंकी लूट-मारसे जमा किया उनका खजाना और माल-असबाब लाल-सेनाके हाथ लगा।

लाल-सैनिकोंने बसमाचियोंका पीछा करना नहीं छोड़ा। बसमाची अधमरे हो बंज पहुँचे और वहाँ अंतिम बार भाग्य-परीक्षा कर मुकाबला करते खड़े हो गये। इस लड़ाईमें बहुतसे मारे गये, जिनमें एक गैरतशाह भी था। बाकी बचे अफगानिस्तान भाग गये या बंदूकें गर्दनमें डाल उन्होंने सरकारके समक्ष आत्मसमर्पण किया। इस तरह दरवाजसे पामीर तकका प्रदेश बसमाचियोंसे पाक हो गया।

३२

बहुमूल्य पत्र

हजरत इलाह* (श्री भगवान)

श्री महान्, मंत्री, पूर्वी बुखारा-शरीफके उपराज, मीर, बी, दीवानबेगी, लश्करबाशी, गाज़ी महोदयकी सेवामें—

दुआ सलाम स्वीकारके बाद मालूम हो, कि हे अभिलाषा-स्थान! हे कृपालु! मैं यहाँ आकर जनाबआलीके पादचुंबनसे कृतकृत्य हुआ और श्रीमानके कुशल-मंगलको अपने स्वामी जनाबआलीके चरणोंमें पहुँचाया। और हर तरहसे आपके बारेमें प्रसन्न कराकर भगवानके मार्गमें लड़नेवाली इस्लामकी सेनाके लिये दुआएँ लीं। हे अभिलाषा-स्थान! हे पृष्ठ-रक्षक! जबसे यह दास अपने स्वामीके रिकाब-चुंबनसे कृतकृत्य हुआ, कितनी ही अच्छी खबरें हर तरफसे आई। इसलिये कासिम तूकसाबाको देरसे मैंने जवाब दिया। हे दयालु! इस्लामी सरकारोंसे भिन्न पाँच सरकारें जैसे—जर्मनी, इताली, अमेरिका, फ्रांस और अंग्रेजी सरकारें हैं। उन्होंने आपसमें बोलशेविक बीजके नष्ट करनेका निश्चय करके युद्ध-घोषणा कर दी। अब तक कितने ही शहर—जिनका जिक्र मैंने पहले पत्रमें किया था—बोलशेविकों के हाथसे उस्मानिया यानी तुर्कोंकी सरकार के हाथमें जिसमें काज़िमपाशा

---

* मूल पत्रका अनुवाद।

भी शामिल हैं, चले गये। उस्मानिया (तुर्की) सरकारका जो प्रदेश फिरंगियों (अंग्रेजों), रूसियों या जर्मनोंके हाथमें चला गया था, वह अलहमदो लिल्लाह (रामजीकी कृपासे) सारे मुक्त कर लिये गये। अबदुल करीम बादशाह गाज़ी जो कि अरब विलायतके रीफ़ (मराक्को) और यमन (सीरिया)में पहले असमाची रहा, अलहम्दोलिल्लाह (भगवानकी कृपासे) उसने आजकल दो लाख लड़ाकू सेनाको अल्लाहके रास्तेमें तैयार किया है। और हर तरहके तोप, मशीनगन, एरोप्लेन किसी चीजकी उसे कमी नहीं है। ईसाइयोंमेंसे यदि कोई दुश्मन पैदा हो तो वह तैयार है और भगवानकी मददसे सदा विजय इस्लामकी तरफ रहती है। मक्का और मदीना शरीफको इब्न सऊदने ले लिया। इस वक्त इस्लामी राज्योंमें एकता है। सारे मुसलमानोंमें अब एक खलीफाकी ज़रूरत है। सबकी एक राय है कि वह खलीफा महान् मक्कामें रहें। इन्शा-अल्लाह (यदि भगवानने चाहा) तो सुल्तान अब्दुल मजीदको इस्लामका खलीफा बनायेंगे। हे कृपालु! आपसे कहना न होगा, कि हर सेनानायकको पत्र लिखकर सेनाको बढ़ा फक़ीरोंकी दुआ लेकर हमारे हज़रतकी दीर्घायुके लिये आप दुआ करते रहें। यदि भगवानने चाहा, तो जल्दी ही मनकी मुराद पूरी होगी। हे दयालु! बोलशेविककी ओरसे एक रूसी आया है कि अमीर बुखाराको ले जाकर उनके तख्तपर बैठाये, लेकिन हमारे श्रीमानने स्वीकार नहीं किया। उन्होंने श्रीमुखसे कहा कि पहले हमारे देशसे निकल जाओ, तब हम नदी (आमू-दरिया) पार होकर कूलाब प्रदेशमें ठहरेंगे और वहाँसे अपने नायब (उपराज) दीवानबेगीको बायसून भेजेंगे। फिर हम हिसार आयेंगे और वहाँसे दीवानबेगी (महामंत्री)को बुखारा भेजेंगे। फिर हम बायसून जायेंगे। इस तरह काम जल्दी ही ठीक हो जायगा। हे अभिलाषा-स्थान! एक पत्र पहले इस दासको वकील बनानेके लिये भेजा है। वही वकील बननेका पत्र आपके सेनानायकोंके लिये होगा। और खुद आपकी वकालतका पत्र साथ लिये कासिम तूकसाबाके साथ भेजिये, जो कि मुझे बातचीत

करनेके लिये आवश्यक है। दूसरी अर्ज यह है कि इस्माइल बेक दीवानबेगीको जनाबआलीने मुल्ला कोरी तुकसावाके साथ भेजा, जो भगवानने चाहा तो बदख्शाँसे ऊपर-ऊपर आपके पास पहुँचेगा। जिस वक्त कि आपके पास तूकसावा पहुँचे, तो समझिये कि वह जनाबआलीका बकील (प्रतिनिधि) है। हे कृपालु! हाजी इस्माइल दीवानबेगीके पास खत नहीं आया। आपके संबंधमें वह बड़ी धार्मिक दोस्ती रखता है। उसने आपके लिये एक खत और एक दूरबीन मुझे दी। चूँकि रास्ता बहुत खतरनाक है, इसलिये उस दूरबीनको अपने पास रखकर उसके पत्रको भेज रहा हूँ। श्रीमान् एक पत्र लिखकर दो जोड़ा अच्छा इलाचा हाजी इस्माइल बेकके साथ भेजें। और किसी बारेमें पत्र नहीं लिखना है सिवा इसके कि दो जोड़ा इलाचा और छः जोड़ा करतागी इलाचा भेजिये। यह दास जहाँ उसकी आवश्यकता होगी वहाँ देगा।

पत्र-लेखककी मुहर : मूल्ला मुहम्मद नियाज़बेक बी

इनाककलाँ, १३४४

अनवर, सामी, फुजैल और दरवाजके शाह-बच्चोंका काम खत्म होनेके बाद इब्राहिम गल्लूने अपनेको 'मुस्तकिल' (सुदृढ़ शासक) घोषित किया। और अमीरके तगाई (एजेंट) सईद बेककी सलाहसे छः हजार नक़द बुखारी तंका, दो हजार चारी भेड़े, तीन सौ घोड़े, और तीस ऊँट देकर मुल्ला नियाज़को अपना वकील (प्रतिनिधि) और सादिक पुचुकको दीवानबेगी (मंत्री) बनाकर काबुलमें भूतपूर्व अमीर-बुखाराके पास भेजा। काबुल जाकर मुल्ला नियाजीने ऊपर उद्धृत पत्रको इब्राहीमके पास भेजा था। इब्राहीम इस खतसे बहुत खुश हुआ। पहली खुशी यह थी, कि बोलशेविक बिना लड़ाईके ही देशको खालीकर अमीरको सौंपना चाहते हैं। दूसरी खुशी यह थी कि अमीरने सबसे पहले अपने नायब यानी इब्राहीम बेगको वायसूत और बुखारा भेजनेका वायदा किया। इस तरीकेसे मानो ताजिक और लके (किरगिज) गरीबोंकी गाढ़ी कमाईको लूटकर जो छ

हजार तंका और भेंड़े, घोड़े और ऊँट काबुल भेजे गये, वह एकके दस होकर अपने जेबमें चले आयेंगे।

इब्राहीम बेकने इस पत्रमें खूब नमक-मिर्च लगा लिखवाकर सभी कूरवाशियोंके पास भेजा। उसका एक प्रभाव यह हुआ, कि बसमाची जो निराश होकर आत्म-समर्पण करनेको तैयार थे, वह "अमीरके आगमन और बोलशेविकोंके नेस्त होने" की बात सुनकर आशावान हो फिर एक बार क्रियाशील हुए। इस पत्रका नगद लाभ इब्राहीम बेकको यही हुआ।

बादमें दूसरा खत अमीरके चचा मीर अकरम-पुत्र मीर मुजफ्फरकी ओरसे आया। इसमें भी 'बोलशेविकोंके जल्द नेस्त होने'की बात थी। मीर अकरमने अपने पत्रमें शुभ-समाचार देनेके बाद एक जगह लिखा था कि 'कोरी शेरमहम्मद, फुजैल मखदूम, और उसका भाई बड़ी तबाहीकी हालतमें कालके रास्तेमें सो रहे हैं।" इस वाक्यने अफगानिस्तानकी तरफ भाग कर जानेकी इच्छा रखनेवाले बसमाचियोंको इस प्रवृत्तिसे रोकनेमें बड़ा काम किया। दूसरी जगह मीर अकरमने लिखा था 'बिरादर! सभी नये बने अमलदारों (अफसरों)को मेरी ओरसे बधाई पहुँचाओ। इन्शा अल्लाह बधाई (का पैसा) मुल्ला नियाजसे प्राप्त करूँगा।' इसके लिये नये अमलदार बने बसमाचियोंने यद्यपि कुछ पैसे जमाकर अमीरके चचाके पास बधाईके तौरपर भेजे, किंतु पहले पत्रकी अपेक्षा दूसरा पत्र बहुत सस्ता रहा।

३३

हुक्मनामा

हे दयालु!*

एक जोड़ा मोजा...तीस इटालियन सतंगोलिया तमंचेके कारतूस... एक चश्मा......भेजा। हे अभिलाषा-स्थान!...हे कृपालु! शुकरानाके

* मूल पत्रका अनुवाद।

लिये भी निवेदन करना चाहता हूँ और आशा है, कि श्रीमान् दस-रूबल-वाली एक सौ अशर्फियाँ जनाबआलीके लिये और एक सौ दस-रूबली अशर्फियाँ इस दासके खर्चके लिये भेजें। आपने जो पैसा भेजा था, उसमेंसे अब कुछ बाकी नहीं रह गया...सलवार, कुलाह...मौजूद न थी, उसके लिये पेशावर लिखा है। भगवान चाहेंगे तो खुद ले आऊँगा। भगवान श्रीमानकी और सारे मोमिनों (मुसलमानों)की इच्छा पूरी करे। आमीन (एवमस्तु)। दासके आनेके वक्त मिर्जा दादखाह नहीं थे। मैं भी अपने साथ कोई चीज नहीं लाया था। यह (मिर्जा दादखाँ) तीन हज किये हुए हैं। इनको एक सौ रुपया भेजकर एक पत्र लिखिये। उदेचीको भी कुछ मेहरबानी करके भेजिये...। चीज भेजनेकी ज़रूरत नहीं। हाजी मिर्जाके लिये पत्र भेजिये लेकिन चीज नहीं, परवानचीके लिये भी खत भेजिये चीजकी दरकार नहीं। दो आदमियोंको छोड़ बाकी किसीको चीज नहीं भेजनी चाहिए। जनाबआलीकी भी यही राय है। यदि आपके पास पैसा हो तो चाहे जितना पैसा इस दासके पास भेजिये। कहाँ खर्च करना चाहिये मैं उसे जानता हूँ...अस्सलाम अलेकुम्।

मुहर : मुल्ला महम्मद नियाज़बेक बी इनाककलाँ

मिर्जा (लेखक)ने जब इस पत्रको शुरूसे मुहरके अंत तक पढ़के सुनाया, तो इब्राहिम बेकने उससे कहा—पत्रको यहाँ रखकर जा मुहरम (नौकर छोकड़े)को कह कि हुक्का भरकर लाये।' और फिर माथेपर हाथ रखकर कुछ सोचने लगा।

एक सोलह-सतरह-साला लड़केने इब्राहीम बेकके सामने भरा हुक्का रख पातितजानु बैठकर निगालीको उसके मुँहमें दे दिया। इब्राहीम बेकने पाँच-छः फूँक लगा दोनों हाथोंको माथेसे हटाकर हुक्का ले जाते मुहरमसे कहा—खालिक तूकसावाको मेरे पास आनेको कह, दूसरा कोई भीतर न आने पाये—और फिर माथेपर हाथ रखकर विचारमग्न हो गया।

—फिर क्या आफत आई ? क्यों हालत बदली है ?—कहते खालिक आकर इब्राहीमके सामने बैठ गया।

—छः हजार चाँदीका बुखारी तंका, दो हजार भेड़ें, तीन सौ घोड़े, तीस ऊँट यह कहना आसान है। यह इब्राहीम (अपने सीनेकी ओर इशारा करके) था, जिसने इतनी चीजें इस बरबाद मुल्कसे जमा करके भेजीं और वह सब निहंगईमें स्वाहा हो गई। इतनेसे पेट नहीं भरा और अब फिर इस घर-जले मुल्ला नियाजने लिख भेजा है और 'दस रूबलवाली सौ अशर्फियाँ जनाबआलीके लिये, दस रूबलवाली सौ अशर्फियाँ मेरे लिये और सौ रुपया किसी तीन बार हज कर आये धोखेबाजके लिये' माँग रहा है। मानों मैं बच्चा हूँ और वह मुझे धोखा दे सकता है, और अंतमें कहता है—'जनाब-आलीकी भी यही राय है। जितना पैसा हो मेरे पास भेजा करो। मैं जानता हूँ उसे ठीकसे खर्च करनेका रास्ता।' मैंने कितनी बार लिखा कि एक कुलाह और सलवार भेजो, लेकिन पेशावरसे मँगानेका वादा करता है। जान पड़ता है, इन सबकी नियत बिगड़ी हुई है। पहले जो पैसा भेजा जाता, उसके बदलेमें बंदूक और कारतूस आते थे और अब छः हजार तंकों और दूसरी चीजोंके बदलेमें पाँच सौकी भी चीजें नहीं आ रही हैं।

खालिक—कहावत है 'दे और माँग' उनको दो और फिर गरीबोंसे लो। इतनी बातके लिये इतना शोर मचानेकी जरूरत नहीं। अपने पासकी कोई चीज मत दो। क्या भूल गये, जिस वक्त मैं और तुम डकैती-बटमारी करते थे, तब भी यही बात थी। एक तरफसे छीना-खाया और दूसरी तरफ हाकिम, काजी और मीर सबको दिया। वह भी हमारी दी हुई चीजोंमेंसे कुछको अमीर और उसके मुसाहिबोंको देते। अब जब कि तुम खुद जनाबआलीके नायब हो, लश्करबाशी हो, तो चीज देनेमें इतना कसाला क्यों ? यह न भूलो कि तुम्हारा यह सारा पद और दर्जा जनाबआलीकी तरफसे मिला है। यदि वह न भी माँगे, तो भी अपने ही समझकर देते रहना चाहिए।

—अब यह मुल्क पहले वाला मुल्क नहीं है। अब इस मुल्कसे कुछ लेना बहुत कठिन है। पहले तो यह कि इस मुल्कमें चीजें हैं ही नहीं। यहाँ जो कुछ था सबको लिया और खाया, अमीर और उनके आदमियोंके पास भेज दिया। बाय और धनवान लोगोंके पास चीज है भी, तो हम उसपर हाथ नहीं डाल सकते, क्योंकि मुल्कमें हमारे अवलंब अब सिर्फ वही हैं। वही हैं जिन्होंने हमें बोलशेविकोंकी आँखोंसे छिपा रक्खा है। यदि उनपर भी हाथ बढ़ायें, तो कहाँ खड़े होंगे? दूसरे, जबसे ताजिकिस्तानको एक प्रजातंत्र घोषित किया गया, तबसे उसके शासनके नियमोंमें भी परिवर्तन हुआ है। पहले जदीद लोग सदा मुल्कके बड़ोंके साथ रियायत करते, उनकी उमीद हमेशा इनपर थी। यह बड़े मालदार लोग गरीबोंको हमेशा दबाते, जहाँ तक हो सकता हमारी मदद करते। अब सरकार सारा विश्वास और आशा मुल्कके भूखों और नंगोंपर रखती है। उन्हें वह खेतीके लिये बीज और बैल देती, सामान देती है; उसने उनकी सेना बनाई है। अब ये कमकर हमारी जड़ उखाड़ फेंकनेको तैयार हैं। जहाँ भी हम पैर रखते हैं, इससे पहले कि हमारी चायकी केटली गरम हो, वह हुकूमतको खबर कर देते हैं। हमें सहायता देनेवालोंको गिरफ्तारकर खुद बंदूक ले लाल-सैनिकोंके आगे-आगे दौड़ते हैं और आक्रमण करते हमसे भिड़ जाते हैं। हम किससे और कहाँसे चीज जमा करें? खुद अपना पेट भरना मुश्किल हो गया है। जनाबआलीको कहाँसे भेजें?

—"अली मर्दा तुकसाबा आये हैं, यदि आज्ञा हो तो अंदर आनेको कहूँ" कहते मुहरमने इब्राहीमको बीचमें ही टोक दिया।

"आनेके लिये कह"—इब्राहीमने कहा।

अलीमर्दा आँसू भरी आँखोंसे सलाम देते भीतर आ दौड़कर पातितजानु बैठ इब्राहीमके हाथोंको बोसा दे पीठ फेरे बिना मुड़कर नीचेकी तरफ एक कोनेमें जा बैठा।

—कहो तूकसाबा, क्या बात है?

—मेरे गाँवके मुक्बड़ सरकारके खुफिया बन गये हैं। कुछ दिन पहले उनके हाथसे छिपकर मैं निकल आया। कल सैनिकोंको लाकर उन्होंने मेरे घरमें ताला डलवा दिया। अब्दुल्ला दादखाके पास जाकर यह बात कही। उसने "मेरे बसकी बात नहीं, मीर तोपचीबाशीसे जाकर कहो" कहकर आपके पास भेजा। यदि यही हालत रही, तो हमारे लिये जीना दूभर हो जायेगा। फिर या तो आत्म-समर्पण करना पड़ेगा, या तो अफगानिस्तान भाग जाना होगा।

इब्राहीमने खालिककी ओर निगाह करके ताना देते हुए कहा—"जनाबआली और मुल्ला नियाजको जाकर कहो, कि इसका इलाज करें" फिर कातिब (लेखक)को आवाज देकर कहा—"अब्दुल्ला दादखाको खत लिखो।" कातिबने अपना बस्ता खोल कलम और कागज हाथमें ले लिखना शुरू किया* :

अमारतपनाह अब्दुल्ला दादखाको मालूम हो, कि कुछ आदमियोंने अलीमर्दा तूकसाबाके बारेमें खबर दे उसके घरमें ताला लगवा दिया। इसलिये तुम्हें सूचित किया जाता है, कि यह खत पाते ही खबर देने-वालोंको पकड़कर तूकसाबाके मालको लेकर उन्हें दिला दो, और खबर देनेवालोंको क़त्लकी सजा दो। बहुत ताकीद। बाकी अस्सलाम-अलेकुम। सन हिजरी १३४२

मुहर : मुल्ला मुहम्मद इब्राहीम बेगी, दीवानबेगी, तोपचीबाशी लश्करबाशी, पुत्र चकावे तूकसाबा।

इब्राहीमने खत लिख जाने पर छोटी-बड़ी कितनी ही मुहरों वाली थैलीको कातिबके पास फेंकते कहा—"मुहर लगा।"

कातिबने मुहर लगा दी। इब्राहीमने पूछा—कौन-सी मुहर लगाई ?

इसपर कातिबने मुहरका वाक्य पढ़ सुनाया। इब्राहीमने "ठीक"

---

* मूल प्रतिका अनुवाद—लेखक।

कहकर मुहरकी थैली ले फिर अपने खीसेमें डाल ली। अलीमर्दा हुक्मनामा ले घरसे बाहर चला गया।

३४

बादशाह बेतख्त

बाबाताग़के पहाड़ोंकी एक गुफामें बसमाचियोंके कूरबाशी (सेना-नायक) अपनी फौजके मुफ्तीके साथ जमा थे। अब्दुल्ला बेग दादखाने कहा—इस क्रान्तिके समयमें मैंने तुम्हें तकलीफ़ देकर जो यहाँ जमा किया है, इसकी वजह यह है, कि हमने जनाब तोपचीबाशी इब्राहीम बेकके हुक्मनामाके अनुसार अलीमर्दा तूक़साबाका माल दिलवाने और खबर देने वालोंको सजा देनेके लिये जवानोंका एक दस्ता उस गाँवमें भेजा। गरीबोंके जत्थे और हथियारबन्द सैनिकोंने उनपर हमला किया। लड़ाईमें गाँवके कितने ही आदमी और हमारे दो जवान मारे गये, तो भी हमारे आदमी दो घोड़े हाथमें कर निकल आनेमें सफल रहे। मैंने इस बातको मीर दीवानबेगी लश्करबाशीको निवेदनकर घोड़ोंमेंसे एकको गनीमत (लूटका धन) के रूपमें हिम्मतअली तूक़साबाके साथ भेज दिया। जवाबमें मीरकी ओरसे एक खत आया, जो हम सभीके नाम है।"

यह कहकर अब्दुल्ला दादखाने खत बाँचना शुरू किया* :

फजीलतपनाह इस्लामके दुआकारी, सेनाके मुफ़्ती, और मुल्ला अब्दुल क़यूम सदूर।

राजरक्षित हुतात्मा अब्दुल्ला बेक़ बी दादखा, मुल्ला अहमद बी दादखा, पहलवान दादखा और हैदर कुल्ली बीको मालूम हो, कि भगवानकी कृपा और इस्लामी राज्यकी महिमासे हर तरहसे कुशल-मंगलके साथ रह इस्लामके धर्म-योद्धाओंके लिये दुआ करता रहता हूँ।...आपने जो पत्र

* मूल प्रतिका अनुवाद—लेखक।

और घोड़ा...हिम्मतअली तूकसाबाके साथ भेजा, वह मिला और आपकी खैरियत और सलामतीके बारेमें सुनकर बहुत खुश हुआ और मैंने दुआ की।...पत्रमें जो मदद भेजनेकेलिये लिखा, मैं मदद भेजनेवाला ही था कि माह सफर विजयी आ गया। उसे मैंने माह सफर तकके लिये स्थगित कर दिया, क्योंकि शेराबादसे इस तरफ़के सेनानायकको मैंने आज्ञा दी है, कि सफर महीनाके आते ही तारके रास्तोंको खराब कर दे। इस बातकी आप लोगोंको भी सूचना दी थी... यह भी सूचित करता हूँ, कि ताजिक और उजबक सब एक हो बहादुरीसे काम करें। बहादुरोंको एक वर्ग और निर्लज्जोंको एक वर्ग मानकर रातको गाँवमें जा अनाज ले लें। जो अत्र्यद् (सोवियत सेना)में हों या जिनके सगे-सम्बन्धी अत्र्यद्में हों, उन्हें पकड़कर कड़ी सजा दें और शरीयत शरीफ़ (धर्मशास्त्र) और राजनीतिक आवश्यकताओंके अनुसार बहुत कड़ी सजा देवें। खबर करनेवालोंको क़त्लकी सजा दें। और यह भी कि बिना देरी किये तारके रास्तोंको खराब कर दें, जिसमें कोई तार या डाक-खाना रह न जाय...इन्शा अल्लाह तारके रास्तोंको खराब कर देनेपर दुश्मन परास्त होगा...। और यह भी कि आप सबमें से हरेक शेरमर्दाना काम करें। खुदाकी मर्जी, जो हमारे दो आदमी शहीद हुए, लेकिन दूसरे सलामत हैं। भगवान् पर भरोसा रखकर पीर, वली और बुजुर्गोंकी मदद ले कमर बाँधकर तारके रास्तोंको बर्बाद कर शरीयत-विरोधी आदमियोंको सजा दे आशीर्वाद प्राप्त करें। मर्दानगी दिखलानेका यही वक्त है। माँसे आये आदमीको मरना जरूर है...दुश्मनकी घबड़ाहट यह है, कि हवाई जहाज टूट गया और युद्धके अन्तमें यह सरकार जानेवाली है। दिलको बिल्कुल छोटा न करें। आप सबके रक्षक भगवान हैं...बाकी अस्सलाम अलेकुम्। १३४४ हिज़री नबूबी (पैगम्बर प्रवास संवत्)

(मुहरः) मुल्ला महम्मद इब्राहीम बेक, दीवानबेगी, तोपचीबाशी चक्कावे तूकसाबाका पुत्र।

मुल्ला अब्दुल कयूम सदूरने कहा—जिन मुसल्मानोंने लालसेनाको खबर दी या खुद सैनिक बने या जिनके भाई-बन्द सैनिक हैं; शरीयतके अनुसार वह मुर्त्तिद् (पतित) हैं और काफ़िरोंसे भी गये गुजरे हैं। इसलिये उन्हें क़त्ल करने या उनका घर जलानेमें तनिक भी झिझकना नहीं चाहिये।

मुल्ला अहमद बी दादखाने कहा—हमको चाहिये कि इस फर्मानको गफूर बेक, असमतुल्ला बेक और दूसरोंके पास भी पहुँचावें और सब जगह एक साथ काम शुरू करें; नहीं तो मुक्खड़ोंकी सेनाके हाथमें पड़कर हम सब अलग-अलग मारे जायेंगे।

इस वक्त स्वयं तोपचीबाशी कहाँ हैं?—पहलवान दादखाने पूछा।

हिम्मतअलीने जवाब दिया—जिस समय मुझे उन्होंने खत दिया, उस समय वह दर्रा गर्दनेजौजामें थे। अभी दर्रासे बाहर न निकले थे, कि एक तरफसे लाल-सैनिकोंका एक दस्ता और मुक्खड़ोंकी पल्टन आ गई; लेकिन मीरने डटकर उनसे लड़ना ठीक नहीं समझा और सही-सलामत पहाड़के डाँड़ेपर चले गये।

—क्यों नहीं कहते, कि इस समय हमारे बादशाह बेतख्त हैं?—हँसते हुए मुल्ला अब्दुल सदूरने कहा।

—एक बादशाहके लिये बेपायातख्ती कोई दोष नहीं, खुदा भी बे-मकाँ है—कहकर दूसरे मुफ़्तीने सदूरके कथनका दुष्प्रभाव दूर करना चाहा।

इसी समय एकाएक बंदूकोंकी पटपटाहट सुनाई दी। सब घबड़ा गये। गोलियोंकी आवाज पर्वतकी प्रतिध्वनिसे मिलकर और भयंकर हो गई। बसमाची चट्टानोंसे छिपते पहाड़के डाँड़ेपर भागे। गोलियाँ भी वर्षाकी भाँति, किन्तु नीचेसे ऊपरकी तरफ, बरसती रहीं। बसमाचियोंमें-से एक लुढ़का। स्वयंसेवकोंके आगे-आगे जाते दाखुन्दाने उसे गिरते देखा। वह दौड़कर उस बसमाचीके पास गया। देखा, अलीमर्दा दम

तोड़ रहा है। दाखुन्दाने एक क्षण उसकी तरफ देखते "यह तेरा आखिरी ंड है। तू बच्चों तकको मारकर अपने गाँवको जला मेरे हाथसे भाग गया था। अफसोस कि अपनी आयुके पहले भागमें जो जुल्म हम गरीबोंपर तूने ढाये थे, तुझे उसकी सजा न मिल सकी" कहकर अपने चिरशत्रुसे अन्तिम बिदाई ली।

३५

मुसलमान-संहार (१६२५)

१६२५में ताजिकिस्तानके सभी ताजिक और उज्बेक कमकर बसमाचियोंका सफ़ाया करनेके लिए मैदानमें उतर आये थे। यहाँ तक कि जिनके पास हथियार न थे, वह भी लाठियाँ लिये "लाल लट्ठदारों" की गरोह बाँधकर बसमाचियोंको खोज निकालनेमें लगे हुए थे। बसमाचियोंके लिये जिन्दगी दूभर हो गई थी। खुल्लमखुल्ला बस्तीमें आनेपर मारे जाते या गिरफ्तार होते। इन हालतोंने बसमाचियोंके पैर हिला दिये थे। एक तरफ गरीब झुण्डके झुण्ड स्वयंसेवक-सेनामें नाम लिखा चुके थे और दूसरी तरफ भूखके मारे या क़ुरबाशियों, मुल्लोंके बहकायेमें पड़कर बसमाची बने बहुतसे डाकू पाँच-पाँच दस-दस करके सरकारको हथियार दे आत्म-समर्पण कर रहे थे।

बसमाची अब सीधे मैदानमें आनेकी हिम्मत न रखते थे। लाल सैनिकों या स्वयंसेवकोंसे मुकाबला करनेकी उनमें हिम्मत न थी। बसमाचीगिरी अंतिम साँस ले रही थी और साँप-बिच्छूकी तरह मरनेके समय सख्त चोट करनेमें बसमाची अब पशुतापर उतर आये थे। यह बात जिद्दीकी तरफ भागे अब्दुर्रहमान परवानचीके इस पत्रसे मालूम होती है, जो कि उसने खाल मुराद और राज़िक़ नामी बसमाचियोंको लिखा था।*

---

*मूल प्रतिका अनुवाद—लेखक।

आँखोंके तारे खालमुराद व मुल्ला राज़िक और सारे सिपाहियोंको मालूम हो, कि मैं जिद्दीकी तरफ़ आ आप लोगोंके अच्छे काम देखकर बहुत खुश हुआ। जो कोई बुरा है उसे खुदाके सुपुर्द करें। इसलिये आप लोगोंको सूचित किया जाता है, कि जहाँ कहीं भी इनके यार-दोस्त हों और मिलिशिया (सैनिक पुलिस) मिले, उनको खत्म कीजिये। वज़ाब-जिद्दीकी तरफ़की मिलिशिया क़त्ल और गायब हुई। यदि आप लोग मुझसे प्रेम रखते हैं और खुदा तथा शरीयतसे (भलाईकी) आशा रखते हैं, तो बेदीन औ बेदियानत मुसल्मानोंको पकड़कर पाँच सौ तकको क़त्लकर उनके माल-मवेशी और घरवालोंको आगमें जला दें। ज़रा भी दया न दिखावें। हाँ, जहाँ कहीं अच्छा घोड़ा देखें, उसे तुरन्त अपने हाथमें करें। यहाँ तक कि मेरी औलादसे भी न हिचकिचायें और मेरी बातपर अमल करें। शेष अस्सलाम् अलेकुम्।

(मुहर) अब्दुर्रहमान परवानची लश्करबाशी ग़ाज़ी।

सरसरक पहाड़से होकर गये इब्राहीमने भी मुफ्ती सद्र और अन्य दो आलिमों—अब्दुल्ला दादखा और हैदरकुल्ली बी—को यह पत्र लिखा था* :

फ़जीलतपनाह (विद्वान्) और मुफ्ती सद्र तथा इस्लामके दुआ करनेवाले अमारतपनाह अब्दुल्ला बेग दादखा और हैदरकुल्ली बीको मालूम हो, कि भगवानकी कृपासे यहाँ सब कुशल-मंगल है।...आपका पत्र मिला और समाचार जानकर खास करके अमारतपनाह अस्मतबेक दादखाके शहीद होनेको सुनकर बहुत अफसोस और परेशानी हुई; फिर भी भगवानकी इच्छापर संतोष किया और पुनीत आयतें पढ़कर दुआ की। विश्वका

* मूल प्रतिका अनुवाद—लेखक।

स्वामी अपनी कृपासे अक्षय आनन्द प्रदान करे। आमीन (एवमस्तु)।

...आप दोनों एक जान हो अपनी सेनाको कामपर लगायें और छै मास तक काफिरोंके साथ युद्ध न कर मुसल्मानोंका संहार (मुसल्मानकुशी) करें। चाहे अलिमोंमेंसे हो, चाहे फकीरोंमेंसे, जो भी सरकारका नाम जबानपर लाये या उससे सहानुभूति रखता हो, सर्वहत्या (क़त्ल-आम) करके उसके घरमें आग लगा दें। इसके लिये जो कुछ करेंगे, वह शरीयतका काम है। उसके लिये ईशान मुफ्ती (धर्मशास्त्री)से सवाल करनेपर फ़तवा (व्यवस्थापत्र) मौजूद ही समझो। और असमदुल्ला बेकने तीन व्यक्तियोंको शहीद किया है। उसके पुत्र-कलत्र सगे-सम्बन्धी सबको बिल्कुल क़त्ल करो। कूलाब, किजिलसू कन्गुर्त, संगलाख-पर्वत, सरसक-पर्वत और सील-पर्वतस्थलीके मुसल्मानोंको शत्रुकी सहायताके जुर्ममें क़त्ल करो। एक हो जाओ। अपने समाचारको जल्दी-जल्दी भेजियो। अलबत्ता वस्सलाम्। १३४४...

(मुहर) मुल्ला महम्मद इब्राहीम, बी, दीवानबेगी, तोपची-बाशी, लश्करबाशी, चक्कावे तूकसाबाका पुत्र।

वस्तुतः अब दोनों वर्ग साफ-साफ एक दूसरेके विरुद्ध मैदानमें उतर आये थे। बसमाची—जो आज तक अपनी सारी पाशविकताओंको मुसल्मानोंकी हिमायतके नामपर करते थे—अब सीधे मुसल्मान-कुशीपर उतर आये थे। हाँ, हरेक मुसल्मानको वह कत्ल नहीं करते थे, क्योंकि "मुफ्ती सदूर" (प्रधान धर्मशास्त्री) और "अमारतपनाह" लोग भी तो मुसल्मान थे, जिन्होंने उन सब मुसल्मानोंका कत्ल करनेका हुक्म दिया, जो "सरकारका नाम जबानपर लाते" या "सरकारसे सहानुभूति रखते"। कौन वर्ग सरकारसे सहानुभूति रखता था? यह थी सर्वसाधारण

मुसल्मानोंकी वह भारी संख्या, जो कि कम्यूनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार-के नेतृत्व तथा आर्थिक सहायतासे अपने जीवनको बेहतर बनाना चाहती थी। बसमाची अपने वर्गके स्वरूपको इतना खोल चुका था, कि वह अपने शत्रुओंके उद्गम स्थानको भी बख्शनेके लिये तैयार न था। इसीलिये "अरमतुल्लाके पुत्र-कलत्र सगे-सम्बन्धी" तकको कत्ल करनेका हुकम दे रहा था और अपने इस कामके लिये ईशान मुफ्तीसे फतवा भी ले रहा था। फतवा देनेमें मुफ्तीका दिल भी हिचकिचाता नहीं था। बसमाची-सरदार तैमूर इनाक़ने सरकारसे सहानुभूति रखनेवाले कुछ गरीबोंको लिखा था* :

"जब तक मैं हरामज़ादोंको कत्लकर तुम्हारे घरवालोंको बंदी करके न लाऊँगा, दुनियामें एक दिन भी (निश्चिन्त हो) न फिरूँगा।"

अब "कहाँ जायें, क्या करें"के बारेमें कुछ भी न जाननेवाले गरीब कमकर भी पार्टी और सरकारके सक्रिय नेतृत्व और आर्थिक सहायतासे अपने शत्रु और मित्रको साफ-साफ समझने लगे थे। वह समझने लगे थे, कि सुखी जीवनके निर्माणके लिये बसमाचियों और उनके समर्थकोंको नष्ट करना पहली शर्त है। वह यह भी जान गये थे, कि जनसाधारणकी भारी संख्याके साथ हुए बिना इस कामको पूरा नहीं किया जा सकता। यही वजह थी, कि जनसाधारण इन डाकुओंके खिलाफ उठ खड़े हुए थे—जिनको सरकार हथियार न दे सकी थी, वह लाठी-भाला ले "लाल लट्ठदार" बनकर बसमाचियोंका मुकाबला कर रहे थे। कितने ही कमकर बसमाचियोंके हाथ मारे गये, लेकिन उनके खूनने बाकी लोगोंमें जोश भर और अधिक जनसंख्याको मैदानमें खींचा। गाँवके गाँव जला दिये गये थे। लेकिन उनकी लाल लपटें कालरात्रिके बाद दिनके अरुणोदयकी सूचना दे रही थीं।

---

* मूल प्रतिका अनुवाद—लेखक।

३६

जनताका कोप

पत्थरके पीछे पत्थर आया	दाखुन्दा लड़नेको आया
स्वयंसेवकोंके हाथोंसे	बसमाची है तंग आया
फूल पहाड़ोंपर उग आये	फूल सूँघ रही गोपकन्यका
बसमाचीकी गंदगियोंको	बसमाचीका खून धो रहा
बरस रहे सावनके बादल	काफिर-निहाँ हुआ अति उज्ज्वल
पड़तीं बसमाचीके सिरपर	हम असवारोंकी तलवारें

१६२५में ताजिकिस्तानके सारे कमकर बसमाचियोंके खिलाफ उठ खड़े हुए और लाल सेनाकी सहायताके साथ वह पहाड़, जंगल, दर्रे सबमें फैल गये। क्रुद्ध जनगण सालीपायासे फैजाबाद तक, हिसारसे रामित तक, देहनौसे शेराबाद तक, बसमाचियोंके पीछे पड़े उन्हें ढूँढ़ता-फिरता रहा। बसमाची भी अपनी अन्तिम शक्ति लगा खूँरेजी कर रहा था। गाँवोंको जला खान्दानोंको वीरान कर रहा था। कुपित जनता इस पाँच सालकी बसमाचीगर्दीमें अपना सब कुछ खो चुकी थी। इसीलिये उसको अब बसमाचियोंका भय नहीं था। अब लोग शत्रुओंको बिल्कुल समाप्तकर सुखी जीवन बिताना चाहते थे। वह युद्धमें जाते वक्त ब्याह-शादीके गीत और कविता गाते बिदा होते थे। दाखुन्दा भी उपरोक्त गीत गाता उनके आगे-आगे दौड़ रहा था। अन्तमें जनताका कोप विजयी हुआ। गैरू बेक, असमतुल्ला बेक, शरीफ बेक, बनर बेक और दूसरे इक्कीस कूरबाशियोंके दस्ते नष्ट कर दिये गये। ज़िद्दीके पहाड़ोंमें भागा अब्दुर्रहमान परवानची भी जनताके कोपसे न बच सका और यकनाबमें गिरफ़्तार कर लिया गया और तत्काल उसका सिर धड़से अलग कर दिया गया। तैमूर इनाक, अब्दुलअजीज खानकारी और कितने ही दूसरे कूरबाशी नेस्तनाबूद हुए। और भी कितने ही कूरबाशियों और बसमाचियोंने जनताके कोपसे

बचनेका कोई और उपाय न देख हथियार-समेत आत्म-समर्पण कर दिया।

अब सिर्फ इब्राहीम बेक बे-उम्मत (अनुयायी-विहीन) पैगम्बरकी तरह बच रहा था और उसके साथ कुछ नजदीकी भर रह गये थे। वह अब भी मैदानमें था लेकिन कहाँ है, यह कोई नहीं जानता था। उसे अब बादलोंकी पहुँचसे बाहरके पहाड़ी डाँड़े और जलसे दुर्लंघ्य संकीर्ण दर्रे बचाये हुए थे।

२७

अवसान (१९२६)

१९२६की गर्मियोंमें सरसरक पर्वतस्थलीके अन्न-जल-विहीन डाँड़ेपर "मुल्ला महम्मद इब्राहीम बेक, दीवानबेगी, तोपचीबाशी, लश्करबाशी, चक्कवे तूकसाबा-पुत्र" अपने बीस घनिष्ठ बन्धुओंके साथ चार महीनोंसे पड़ा हुआ था। यह वही जगह थी, जहाँसे इब्राहीम गल्लू "अवतरित" हो "तोपचीबाशी" और "लश्करबाशी" बना था। लेकिन इस समय पाषाणहृदय इस कठोर पर्वतने पहलेकी तरह दया न दिखलाई और अपने शरणागतके आर्त्तनादपर कोई ध्यान नहीं दिया। जीवनकी अन्तिम निधि एक बोरा गेहूँ था सो भी आज खत्म हो गया।

— दूसरा कोई चारा नहीं, आओ, अपने एक घोड़ेको मारकर खायें—इब्राहीमने अपने आदमियोंसे कहा। उन्होंने घोड़ेको मारकर चमड़ा खींचा और चमड़ेको भी पकाकर नमक डालकर रख दिया। लेकिन वह भी देर तक नहीं चल सका। चमड़ेके आखिरी टुकड़ेको उबालकर शोरबा बना पीनेके दिन इब्राहीमने अपने आदमियोंसे कहा—"इस तरह जीना संभव नहीं, दो जाँबाजोंकी जरूरत है, जो जान हथेलीपर रख नीचे जायें। शायद अमृतकी घड़िया प्राप्त करके लायें।"

एक आदमीने उठकर सेवा बजानेके लिये हाथ सीनेपर रखकर

बिदा माँगी। इब्राहीमने कहा—शाबाश, तेरे आत्म-त्यागको। यदि मेरे शासनके समय मेरी सेवामें तू होता, तो इसके लिये मैंने तुझे एक बिलायतका हाकिम बना दिया होता। अब तुझे जबानी "दादख्वाह" बनाता हूँ। जब एक पन्ना कागज मिलेगा तो इस पदकी यारलिक (सनद) दे दूँगा—यह कहकर उसे एक पुराने नौकरके साथ रवाना किया।

अन्न ढूँढनेवाले जैसे ही आँखोंसे ओझल हुए, कि इब्राहीमके दिलमें हौल होने लगा "हाय, क्या किया? हाय, क्या किया? क्यों मैंने एक नवागत अपरीक्षित आदमीको इस कामके लिये भेजा? क्या जाने, विश्वासघात करके मुझे पकड़वा दे"। इसके बाद पहाड़की एक ऊँची शिलापर बैठ दूरबीनसे वह देखने लगा। हरेक पत्थर और हरेक काली चीज़ लाल-सैनिक या स्थानीय स्वयं सेवक-सी दिखाई पड़ने लगी। भविष्यको अन्धकारपूर्ण देखकर दिल काँपने लगा। "घटनाकी दवा समयसे पहले करनी चाहिये" कहते वह अपनी जगहसे उठा। उसने अपनी औरतोंको डेरेसे दूर ले जाकर उस जगह छिपाया, जहाँ पिछले साल "लाल लट्ठदारों"के स्त्री-बच्चोंको पहरेके अन्दर रख भूखों मरवाया था। फिर वह उसी जगह आकर दूरबीनसे देखने लगा।

× × ×

सरसरककी सैनिक चौकीमें लोगोंको सन्देह होने लगा था, कि क्यों दाखुन्दाका कोई पता नहीं? यदि जिन्दा होता तो अब तक जरूर लौट आता। उसे गुम हुए एक सप्ताह हो गया, किन्तु कोई नहीं जानता कि कहाँ है। शायद उसके शिरपर कोई आफत आई।

—बंदूकके साथ गया था या बे-बन्दूक?

—गैरू बेककी ग्यारह गोलियोंवाली बंदूक उसके पास है। गैरूके क़त्ल होनेपर उसने वह बंदूक विजय-धनके तौरपर पाई थी।

यह बातचीत अभी चल ही रही थी, कि दूरसे एक प्यादा आता दिखाई पड़ा। सबकी आँखें उधर लग गईं। दूरबीनसे देखकर एकने कहा—स्वयं दाखुन्दा है, उसके हाथमें दो बन्दूकें हैं।

प्यादा चौकीमें पहुँच गया। वह सचमुच दाखुन्दा था।

—क्या खबर ? क्यों देरसे आया ?

—यह बंदूक कहाँसे मिली ?

—उसका पता मिला या नहीं ?

चारों तरफसे सवालोंकी बौछार होने लगी। लेकिन सबका जवाब दाखुन्दाने इतना ही दिया :

—पता मिला। मैंने भागना पसन्द नहीं किया। आज बहाना करके लौटा। उसने एक आदमी मेरे साथ कर दिया था, जिसे खत्मकर यह बंदूक हाथ लगी। देर करनेके लिये ज़रा भी समय नहीं, तैयार हो जाओ।

दश मिनटके अंदर तैयार हो लाल-सेनाके सैनिक और स्वयंसेवक चल पड़े। आगे-आगे दाखुन्दा गाता जा रहा था :

"पत्थरके पीछे पत्थर आया

दाखुन्दा लड़नेको आया"...

दस्ता पहाड़की जड़में पहुँचा। इब्राहीमको अपना सन्देह सच्चा मालूम हुआ और वह जलालताग पहाड़की ओर भागा। वहाँ बारह दिन छिपे रहकर उसने फिर अपने एक घोड़ेको मारकर खाया। दस्ता वहाँ भी पहुँचा। इब्राहीम वहाँसे भाग वेशअर्ग, फिर भागकर सरचश्मा गया। वहाँके लोगोंसे चीजें माँगी, लेकिन किसीने कुछ नहीं दिया। अभी वह कुछ करनेकी सोच ही रहा था, कि पीछा करनेवाला दस्ता फिर समीप आता दिखाई पड़ा। जल्दीसे भागकर वेशकप्पा गया और जून १९२६के अन्तमें अपने छब्बीस अनुयायियोंके साथ नंगे पैर नदीमें कूदा। अफगानिस्तानकी ओरसे चली गोलियोंने पाँचका काम तमाम किया और स्वयं इब्राहीमने अपने इक्कीस नौकरोंके साथ अफगानिस्तान भागकर जान बचाई।

—:o:—

पंचम खंड

ताजिक् कमकरोंका प्रजातंत्र

(१९२९-३०)

१

चटाईके नीचे बिच्छू

दिसम्बर १९२९में दोशम्बा बहुत अच्छी तरह सजाया गया था। शहर हर तरफ दर्पणकी तरह स्वच्छ था। कूचोंमें रंग-बिरंगे कागजोंकी फूल-पत्तियाँ लगाई गई थीं और जगह-जगह हरे पत्तोंवाले दरवाजे बनाये गये थे। कपड़ेके टुकड़ोंपर "जिन्दाबाद स्वतंत्र ताजिकिस्तानके मजदूरों-किसानों-सिपाहियोंके प्रजातंत्रका प्रथम सम्मेलन", "जिन्दाबाद ताजिकिस्तानके स्वामी"के नारे चमकीले अक्षरोंमें लिखकर दरवाजों, दीवारों, कार्यालयों और सड़कोंपर लटकाये हुए थे। निजी घरोंके दरवाजे और छतें भी लाल झंडेसे सूनी न थीं। सड़कें और गलियाँ आने-जानेवालोंसे भरी थीं। लाल चायखानोंमें रबाब, तम्बूर, दोतारा और दुम्बककी झंकारसे जोश उमड़ रहा था। क्लबोंमें प्रथम सम्मेलनके सम्बन्धमें व्याख्यान हो रहे थे। लोग वक्ताओंका स्वागत तालियोंकी गड़गड़ाहटसे कर रहे थे। सिनेमाघर "लाल मस्को"के दृश्यों और सोवियत-देश-बन्धुओंकी प्रतिगामियोंके साथकी लड़ाइयाँ दिखला दर्शकोंके सामने शिक्षा-जनक मनोरंजन पेश कर रहे थे। रेडियोके भोंपे दुनियाके दूर-दूर कोनोंके संगीत कल तक घासकी चपली पहननेवाले पहाड़ियोंको सुना रहे थे। गैसके लम्प रातको भगा और बिजलीके प्रदीप अँधेरेको जला रहे थे।

यह रात-दिनसे भी अधिक प्रकाशमान थी। दाखुन्दा और गुलनार हाथ मिलाये एक दूसरेको सहारा देते एक बजे रात तक शहरमें चक्कर लगाते रहे, फिर अपने वासस्थानमें लौटे। उनका वासस्थान एक

बेमालिकका घर था, जिसे बसमाचियोंके ध्वंसके बाद दरवाजा-खिड़कियाँ लगाकर उन्होंने रहनेके लायक बना लिया था। दाखुन्दाने गुलनारके हाथसे अपना हाथ खींचकर जेबसे कुंजी निकाल किवाड़ खोला और दियासलाईसे लालटेन जलाई। बकुचों और सामानसे खाली कमरा अर्ध-यूरोपीय जैसा मालूम हो रहा था, लेकिन फर्शकी जगह अब भी चटाई बिछी थी। कमरेकी एक तरफ लकड़ीका एक बड़ा पलंग था, जिसपर सादा साफ तकिया और बिस्तरेपर लिहाफ पड़ा था।

दाखुन्दाने लालटेनको चारपाईके पास रक्खी कुर्सीपर रख दिया। बहुत थके होनेसे दोनों पोशाक उतारे बिना ही पैरोंको नीचे लटका पलंगके किनारे बैठ गये। गुलनार अपने एक हाथमें उसका हाथ पकड़, दूसरे हाथको पीठ-पीछेसे उसके बगलमें लगा, सिर उसके सीनेपर रख अर्ध निर्मीलित तंद्रिल दृष्टिको भूमिपर गड़ाये विचारोंमें निमग्न हो गई। दाखुन्दा भी सामनेके कोनेपर नजर डाले विचारमग्न था।

गुलनारने थोड़ी देर बाद अपनी आँखें खोलीं, लेकिन सिरको उसके सीनेसे हटाये बिना ही घरकी चीजोंपर नजर दौड़ाते चटाईकी एक एक पत्तीको देखते बोली—सिनेमामें कैसे खुले और उद्यान-सज्जित घर देखे? उस तरहके घर रहनेको कहाँ मिलेंगे?

दाखुन्दाने जवाब देनेमें देर न की—बाबाओंने कहा है "खाना ताजा रहे, दिल ताजा रहे" दूसरे यह कि अभी...

"वाय, साँप तो नहीं!" चिल्लाकर बोलती गुलनारने दाखुन्दाकी बातको बीचमें ही काट दिया। दाखुन्दा एक छलाँगमें वहाँ पहुँचा। सचमुच साँप था। साँप भागना चाहता था, किन्तु कड़ी सर्दीमें दूर न भाग चटाईके नीचे छिपने गया। वह अपने आधासे अधिक शरीरको अन्दर कर पाया था कि दाखुन्दाने अपने बूटसे साँपके सिरकी जगह चटाईपर दो-तीन बार जोरसे मारकर खूब रगड़ा। साँप कुछ क्षण अपनी पूँछ हिलाता छल्ले बनाता अन्तमें ठंडा पड़ गया। दाखुन्दा एक हाथसे उसकी पूँछ पकड़ दूसरे हाथसे

चटाई के नीचे बिच्छू !

चटाईको हटा साँपको अलग करना चाहता था। इसी समय वहाँ एक दूसरा प्राणी दिखलाई पड़ा, जो बड़ी तेजीसे जमीनपर रेंग रहा था। दाखुन्दाने ऊँची आवाजमें कहा—गुलनार, लालटेनको और आगे ला।

गुलनार साँपके डरसे अपनेको पलंगपर खींच गुमसुम पड़ गई थी। किन्तु यादगारको परेशान-सा देख प्रेमकी बलिदानी भावनासे प्रेरित हो झटपट उठ पड़ी और लालटेन उठाकर उसके पास दौड़ी। दाखुन्दाने देखा कि उस प्राणीका कहीं पता नहीं। गुलनारके भयको दूर करते यादगारने कहा—डर नहीं, साँपको मैंने कुचल दिया।—इसके बाद मृत-मर्दित साँपको द्वारके बाहर ले जाकर रख दिया और फिर कहा—साँपको तो कुचल दिया लेकिन जान पड़ता है, चटाईके नीचे बिच्छू है।

गुलनार लालटेन दिखाने लगी और यादगार घरके फर्शको हर तरफ देखने लगा। दाखुन्दाका सन्देह सच निकला। एक बड़ी पूँछवाला हरा बिच्छू घरमें जोरसे दौड़ते एक कोनेमें मिट्टीमें सिर डालकर छिपने जा रहा था। लेकिन छिपनेसे पहले ही उसे दाखुन्दाने अपने बूटसे पीस दिया। फिर चटाईको अपनी जगहपर रखकर पलंगपर बैठा। कुछ रुककर गुलनारसे उसने कहा—ये साँप और बिच्छू हमको कुछ सिखला रहे हैं। आज पहला सम्मेलन सम्पन्न हुआ। मैं आदिसे अन्त तक वहाँ उपस्थित रहा। सभी भाषण मैंने ध्यानपूर्वक सुने। व्याख्यानोंका अभिप्राय यही था, कि हमने साँप जैसे बसमाचियोंको नेस्तनाबूद कर दिया, लेकिन वह गिरोह—जिनके प्रतिनिधि यह बसमाची थे—अब भी मौजूद हैं और बिच्छूकी तरह चटाईके नीचे-नीचे आँखोंसे ओझल रह, डंक मार, हमारी प्रगतिमें पग-पगपर रुकावट डाल रहा है। हमें चटाईके अंदर दुबके हुए इन बिच्छुओंको चुन-चुनकर खत्म करना होगा, जिसमें समाजवादी व्यवस्था एवं देशके नवनिर्माण करनेमें हम सफल हों।

क्षण भर चुप रह दाखुन्दा फिर बोलने लगा—गुलनार! तू हमारे घरकी अकिंचनताकी शिकायत कर रही थी। मैं कहना चाहता था कि एक

घरको बसाना और स्वतंत्र करना बहुत आसान है, किन्तु हमारा ध्येय इतना छोटा नहीं। जैसा कि सम्मेलनमें स्वीकृत हुआ, हमें चाहिये कि मुल्कको आबाद करनेमें बाधा डालनेवाले सभी शत्रुओंका खात्मा करें; अपने देशको स्वतंत्र और सुखी जीवन-सामग्री-सम्पन्न घरकी भाँति नये सिरेसे निर्मित करें; तब उस विराट् गृहके एक व्यक्तिकी तरह मैं और तू भी सुख-सुविधाका जीवन बितायेंगे। किन्तु इसके लिये हममेंसे प्रत्येकको सदा एक निश्चित क्रमसे काम करना होगा। कामको सीखना, पढ़ना और याद करना होगा। यही कारण है, जो कि हमारी सरकारने एक तरफ निर्माणके बड़े-बड़े कार्य आरंभ किये हैं, और दूसरी तरफ वह तरुण नर-नारियोंको मस्को और ताशकन्द जैसे महानगरोंके महाविद्यालयोंमें शिक्षा प्राप्तिके लिये भेज रही है। यदि तू भी राजी हो, तो हम दोनों साथ चल दो-एक साल वहाँ विद्या सीखें, जिसमें लौटकर अपने घर—देश—का नये ढंगसे निर्माण करनेमें होशियारीके साथ हाथ बटायें।

—मैं तो अक्षर भी नहीं जानती। बड़े विद्यालयोंमें जाकर क्या लूँगी?—गुलनारने कहा।

—यह कमी छः महीनेमें पूरी की जा सकती है। यदि चाहे तो छः महीनेमें अच्छी तरह साक्षर हो सकती है। मुझे ही नहीं देखती, क्रान्तिके आरम्भमें लिखना-पढ़ना आरम्भ किया। बसमाचियोंके साथ लड़ते-भिड़ते समय पढ़नेका मौका कम ही मिला, और इधर जब मुल्कको कुछ आराम मिला और हमें भी; तो मैंने कोशिश करके अपने ज्ञानको कुछ बढ़ाया। अब मैं हाई स्कूलमें दाखिल हो सकता हूँ। लेकिन हमारा ज्ञान अभी बहुत कम है। याद रख, बसमाचियोंकी बरबादियों और युगोंसे चली आई कमियोंको दूर करनेके लिये बहुत अधिक परिश्रम, बहुत अधिक विद्या और बहुत अधिक हुनरकी ज़रूरत है।

—बसमाचियोंके जमानेमें देशकी बहुत अधिक क्षति हुई है न?

—हमारा ताजिकिस्तान क्रान्तिसे पहले भी उतना आबाद न था। जो

भी आमदनी होती, वह अमीर, अमलदारों, मुल्लों, ईशानों (पीरों), जागीरदारों और चारबाग़दारों (मेवा बागके मालिकों) के पेटमें चली जाती। बेचारे गरीब किसानों, चारयक्कार-पंचयक्कारों (बटाईदारों) मजूरों और चरवाहोंके भाग्यमें था मर-मरके काम करना। जो लोग सिर्फ अपने व्यक्तिगत लाभको ही सामने रखते थे, वह देशको आबाद करनेकी कोशिश भला क्यों करने लगे? बसमाचियोंके प्रादुर्भावके बाद स्थिति और भी विषम हो गई।

दाखुन्दाने बगलसे कागज निकालकर देखते हुए कहा—सम्मेलनमें सरकारने जो हिसाब पेश किया, उसके अनुसार मेवोंके बाग आधे रह गये। ऊपरसे नहरें तबाह, खेत परती और गाँव उजाड़ हो चुके हैं। वस्तुतः इस गाँवसे उस गाँव और इस दर्रासे उस दर्रा तक लोग सिर्फ गर्मीकी फसलोंको लकड़ी और कुदालकी मददसे बोते थे। बसमाचियोंके जमानेमें वह भी बिल्कुल चौपट हो गया। देशके बहुसंख्यक गरीबोंके घरोंमें कपड़ेका टुकड़ा, कटोरा या थाली भी नहीं रह गई है। यदि गाँवमें एक मुँहटूटी देग है, तो गाँवके सारे लोग अपनेको भाग्यशाली समझकर उससे लाभ उठाते हैं। तू खुद ही हिसाब करे तो समझ सकती है, कि बसमाचियोंने कितना सत्यानाश किया है। बसमाचीगर्दी प्रायः छ साल तक रही है, जिसमें कभी-कभी उनकी संख्या तीस हजार तक पहुँच गई थी। उन्होंने एक तरफ तो मुल्कको जलाया—बर्बाद किया और दूसरी तरफ लूटकर धनको अपने ऐशो-आराममें खर्च किया। फिर उसी लूटमेंसे अमीरको भेजा, गोली और बन्दूकके लिये अंग्रेजोंके पास भी भेजा। इस तबाहीका हिसाब करनेपर सारी हानि एक अरब रूबलसे भी अधिक हुई। इन तबाहियों और खर्चोंसे हमारा ताजिकिस्तान—जिसमें आठ लाख आदमी रहते हैं—किस दशामें पहुँच गया है और इसे आबाद करनेके लिये कितने धन और श्रमकी आवश्यकता है, यह अच्छी तरह समझा जा सकता है। इन सारी बातोंपर विचार करके अब हमें हिम्मतके साथ कमर बाँधकर मेहनत करनेमें लग जाना है।

२

रेलगाड़ी

तिर्मिजसे दोशम्बाकी ओर आग-गाड़ी (रेल) बड़ी शान-शौकतसे चल रही थी। धीरे-धीरे विशाल मैदान सिकुड़ने लगा। हवासे बातें करनेवाले आगके घोड़ेकी घनघनाहटसे पर्वत क्रन्दन करनेके लिये तैयार हो गये। संस्कृतिके इस कारवाँकी दौड़के लिये वन-पर्वत एक समान थे। उसके जानेके लिये दर्रा और बयाबान हाथकी हथेलीकी तरह समतल थे। अरे! यह कमकरोंके शक्तिशाली हाथ थे, जिन्होंने गहरे दर्रोंको पाट, ऊँचे पहाड़ोंको छेद और काटकर मानवताके आगे बढ़नेका पथ प्रशस्त किया। इस पर्वत, इस जोतमें—जो चंद साल पहले बर्बर बसमाचियोंके आखेट-स्थान थे—सभ्यताने कदम बढ़ाया और उसने वे खूनी घटनाएँ इतिहासके पृष्ठोंको सौंप दीं, जो कि अब सिर्फ प्रत्यक्ष-दर्शियोंको भयानक स्वप्नकी तरह याद आती हैं।

—यह वही दर्रा है, जहाँ अब्दुल्ला दादखाहके दस्तेके साथ एक सप्ताह लड़ते अपने चंद तरुण साथियोंकी बलि दे हमने उसे मार भगाया।

—यह वही पर्वतकटि है, जहाँ कुमक पहुँचने तक मोर्चा बाँधकर हमने मुल्ला अहमदबी कूरबाशीका मुकाबला किया।

—यह वही चोटी है, जहाँ बैठे बसमाचियोंने हमपर गोलियाँ चलाईं। हम चट्टानोंको ढाल बनाये एक-एक पग ऊपरकी ओर बढ़े और अन्तमें बसमाचियोंने हार खाई। उनमेंसे कितने ही चोटीसे गिरकर चकनाचूर हो गये, कितने ही हमारी संगीनों और तलवारोंके घाट उतरे। बहुत थोड़े ही भागकर जिन्दा बचे, किन्तु हथियार दे आत्म-समर्पणके अतिरिक्त उनके लिये और कोई रास्ता नहीं रह गया।

—ओ! धुएँकी चिमनीवाले इन सफेद मकानोंकी पाँतीको देखा

इनकी चारों ओर कपासके खेत फैले पड़े हैं और एक ओर हरा नया बगीचा। ओः! शाखा-विहीन इस वृक्षकी तरफ भी देखो। यहाँ पहले एक गाँव बसता था, लाल सेनाको रास्ता बतानेके अपराधमें बसमाचियोंने समूचे गाँवको जला दिया। नर-नारी, बालक-बूढ़ा, छोटा-बड़ा जो भी हाथ आया, सबका कत्ल किया। बसमाचियोंका अंत होने पर यहाँ कपासकी खेतीका कल्खोज़ (पंचायती खेती) स्थापित हुआ। उन नई इमारतोंको देख रहे हो? यह स्कूल, क्लब, वाचनालय और मशीनघर हैं। लोगोंने अपनेको नये सिद्धान्तोंके अनुसार संगठित किया है। सब एक साथ काम करते हैं और अपने परिश्रमके फलको अपने कामके अनुसार बाँट लेते हैं। अब उस मारामारी जलाजलीका यहाँ कोई प्रभाव नहीं रह गया। उस समयका चिह्न सिर्फ यह ठूँठा पेड़ है जिसने उस आगमें अपने शाखा-पत्रोंको जलाया और जो सन्तापपूर्ण उस विगत युगका स्मृति-चिह्न बन आनेवालोंके लिये शिक्षा-स्तम्भका काम करता है।

ट्रेनके मुसाफिरोंमेंसे कितने ही अपने सिरको खिड़कीसे बाहर करके इस तरहकी बातें कर रहे थे।

ट्रेन दौड़ रही थी। मैदान और दर्रे पीछे छूट गये थे। आँखोंके सामने मनोरम दृश्य घूम रहा था। हर तरफ सुन्दर चित्ताकर्षक खेतियाँ थीं। हर स्टेशन पर कुछ लोग उतरते और कुछ सवार होते। ट्रेन मानवताकी सवारीकी तरह दुनियाकी सैर करने निकली थी। एक स्टेशन पर यूरोपीय पोशाक पहने मध्यवयस्क दो स्त्री-पुरुष उतरे। स्त्रीने कहा—यदि अंदाज करनेमें तूने गलती की है, तो हमारा सारा श्रम व्यर्थ जायगा।

—खातिर जमा रह, मेरा अंदाज गलत न होगा। मैं इस जगहके चप्पे-चप्पेको जानता हूँ।

—अच्छा, यदि ऐसा है तो चल जल्दी टिकान पर पहुँच जायँ।

मर्दके हाथमें एक छोटा सूटकेस था और स्त्रीके हाथमें स्त्रियोंका हैंडबैग। दोनों पैदल चलते चंद मिनटोंमें स्टेशनसे दूर हो गये।

३

दर्रा-अपरिचित

—मेरे अंदाजके अनुसार दर्रानिहाँसे निकलनेकी जगह यहीं होनी चाहिये, किन्तु यह जगह बिलकुल उस जगह-सी मालूम नहीं होती, जिसे मैंने बीस साल पहले देखा था; और फिर बसमाचियोंसे लड़ते वक्त अनेक बार यहाँ आकर यहाँके एक-एक पत्थरको गिना था···यह कहकर ट्रेनसे उतरे पुरुषने स्त्रीसे आश्चर्य प्रगट किया।

—मैंने कहा नहीं, यदि अन्दाज करने में गलती की है, तो हमारा सारा श्रम व्यर्थ होगा—कहते स्त्रीने चुटकी ली।

—नहीं, गलती नहीं हो सकती। मुझे विश्वास है कि दर्रानिहाँका रास्ता यहीं था। किन्तु आश्चर्य मुझे इस बातका हो रहा है, कि चिह्न क्यों इतने बदल गये?

—संभव है, चिह्नोंको तू भूल गया।

—नहीं गुलनार! हर बातको भूलना संभव है, परन्तु दर्रानिहाँको नहीं। मेरा सौभाग्य भी और दुर्भाग्य भी यहींसे आरम्भ हुआ। जब मैं अजीमशाहके हाथसे निकलकर भागा, तो दर्रानिहाँ मेरा शरणदाता हुआ। यहीं तेरा प्रेम पाया। यहीं अलीमर्दांके हाथों गिरफ्तार हुआ और अन्तमें बसमाचियोंके साथ लड़ते यहींसे लगे बाबाताग़पर अलीमर्दांका काम तमाम किया। भला कैसे हो सकता है, कि चंद सालोंमें इन सारे चिह्नोंको भूल जाऊँ?

मर्द यानी दाखुंदाने पोर्टफोल खोल एक कागज निकाल उसे देखते हुए कहा—स्कूलमें भूगोल पढ़ते वक्त मैंने स्मृतिसे दर्रानिहाँके चिह्नोंको नक्शे पर उतारा था, यह वही नक्शा है। इसके अनुसार दर्रानिहाँको

यहीं होना चाहिये। किन्तु नक्शे पर मैंने जिन चिह्नोंको बनाया था, वह यहाँ नहीं हैं। सबसे बड़ा चिह्न जो बदल चुका है, वह है वह पुराना रास्ता। दर्रानिहाँका रास्ता बहुत घूम-घुमौआ था। कुछ स्थान तो ऐसे थे, जिनसे पार होते दिल काँपता था। अब हम यहाँ मोटरकी बड़ी सड़क देख रहे हैं। अच्छा, चलें, आगे मालूम होके रहेगा।

दाखुंदा पोर्टफोल बगलमें दाबे अपने साथीके साथ आगे-आगे चला। अभी पाँच सौ कदम भी वह आगे नहीं बढ़े थे, कि एक बड़ी चट्टानको देखकर दाखुन्दा खुश हुआ और बोला—जो भी हो, एक चिह्न तो दिखलाई पड़ा! यह वही चट्टान है जिसपर अजीमशाहके हाथसे भागने पर मैं पहली बार सुखकी नींद सोया था। अलीमर्दा और अब्दुल्ला दादखाहके दस्तोंका ध्वंस करनेके बाद भी इसी चट्टान पर बैठकर मैंने साथियोंके साथ रोटी खाई थी। लेकिन उस वक्त इस चट्टानके पाससे नाला गुजरता था, और अब देख रहा हूँ, मोटरकी सड़क। अभी-अभी यहाँ से मोटर गई है, देख, उसके पहियोंकी छाप यहाँ मौजूद है—कहते दाखुन्दाने उसे गुलनारको दिखलाया।

उस ऐतिहासिक चट्टान पर कुछ देर आराम कर चुकने पर दोनों फिर आगे चले, लेकिन जितने कदम आगे बढ़ते, उतना ही उनका विस्मय भी बढ़ता जाता। वहाँ रास्ता ही अच्छा न था, बल्कि स्वेच्छाचारी चश्मे और नदीके पानीको एक जगह बड़ी झीलके रूपमें जमाकर फिर उससे एक बड़ी नहर निकाली गई थी, जिसके लिये पत्थरके बाँध, पाये और दीवारें तैयार की गई थीं। फिर उससे छोटी-छोटी नहरें निकालकर उन्हें खेतों और बागों तक पहुँचाया गया था। दर्रामें एक टुकड़ा भी कामकी जमीन परती और बेकार न थी। अनाजके खेतोंके बीच-बीचमें कपासके बड़े-बड़े खेत थे।

—मैंने शायद अपने अंदाजमें गलतीकी हो—दाखुन्दाने गुलनारसे

कहा—किन्तु ताजिकिस्तानमें ऐसी कितनी ही जगहें थीं, जो इन चन्द सालोंमें नई हो गई हैं।

धीरे-धीरे गुलनारने दाखुन्दाकी दलीलोंको मान लिया और उसे विश्वास हुआ, कि यह वही दर्रानिहाँ है, यद्यपि उसकी कायापलट हो गई है और वह एक दर्रा-अपरिचित सा लगता है। दोनों यात्री नज़ारा देखते आगे बढ़े। आगे उन्होंने एक जवानको घास काटते देखा, किन्तु यह घास जंगली नहीं बल्कि पाँतीसे लगाई घास थी। दाखुन्दाने जवानसे पूछा—यह कौन सी घास है?

जवानने उठकर पहले पूछनेवालेको सिरसे पैर तक देखा और फिर जवाब दिया—जान पड़ता है, तुम यहाँके नहीं हो। यदि यहाँके होते तो तूत (वृक्ष)को घास न बताते।

दाखुन्दाने जवानके मज़ाकका जवाब न दे सिर्फ इतना पूछा—तो फिर क्यों इन्हें घासकी तरह लगाया गया?

—दो साल हुए, हमारे गाँवमें नमूनेके तौर पर रेशमका कीड़ा पालनेका फार्म खुला, विशेषज्ञोंकी सम्मतिके अनुसार हमने तूतको पौधेके रूपमें उगाना शुरू किया। हर साल हम इन बूटोंके पत्ते कीड़ोंको खिलाते हैं। दो सालके अनुभवसे मालूम हुआ कि कीड़े बड़े वृक्षोंके पत्तोंकी अपेक्षा इन पत्तोंको अधिक चावसे खाते हैं। दूसरा लाभ यह है, कि तूतको इस तरह लगानेके लिये कम जमीनकी जरूरत होती है।

दाखुन्दाने धीरेसे गुलनारके कानोंमें कहा—जान पड़ता है, गाँव अब मुल्लोंके मकतबसे बहुत आगे बढ़ गया है। हमने तीन साल हाई स्कूलमें शिक्षा पाई और इन विषयों पर कुछ-कुछ पढ़ा भी और यहाँ देख रही हो गाँवके इस जवानको? मालूम नहीं, कुछ पढ़ा-लिखा भी है या नहीं, परन्तु कृमि-पालन तथा तूतकी खेतीके बारेमें यह हमसे अधिक जानता है। हमारी हालत यह है कि घास और तूतके पौधोंमें अन्तर नहीं कर सके।

दाखुन्दाने जवानसे फिर पूछा—यहाँ नजदीकमें खाने-पीनेकी कोई जगह है ?

—करीब हजार कदम आगे जाने पर तुम्हारे सामने स्कूल, लाल चायखाना और क्लबकी इमारत आयेगी। वहाँ चाहे आराम करो, खाना खाओ, सोओ या पढ़ो—कहकर जवान अपने काममें लग गया।

यात्री आगे रवाना हुए। पीछेसे घोड़ेकी टापोंकी आवाज सुनाई दी। वह सड़ककी एक तरफ हो गये। देखा, सवार आ रहा है। सवारने पास आकर यात्रियोंकी तरफ नजर किये बिना जवानसे पूछा—काहे इतना हैरान हो रहा है संगीनज़ादा ? कीड़ोंके कोयोंसे घरको रेशमसे भर देना चाहता है क्या ?—सवारने जवानको बोलनेका मौका न दे सूखी हँसी हँसते कहा—कीड़ा पोस कर बाप-दादोंके रवाजको तो तोड़ फेंका ही, अब नामको भी बदलकर संगीनज़ादा बन गया ! तो, फिर अब भी क्यों कलखोज (पंचायती खेती) में शामिल नहीं होता ?

—मालिक ! कहावत है "लैलीकी बारी गई अब मजनूँकी आई" तुम्हारे जमानेमें जो कुछ तुम चाहते थे, करते थे। अब हमारी पारी है। कीड़े पालते हैं, अपना नाम बदलते हैं, कलखोजमें भी शामिल होंगे। तुम्हारे परिहाससे हम अपना पथ नहीं छोड़ेंगे।

—अच्छा, जो चाहो करो—कहते सवार घोड़ा दौड़ाते मुसाफिरोंके सामनेसे निकल गया।

—यह कौन आदमी हो सकता है ?—गुलनारने दाखुन्दासे पूछा।

—मैं भी नहीं पहचानता। हो सकता है, गाँवके सीनाज़ोरों ज़ालिमोंमेंसे हो। बातचीतसे मालूम होता है, कि गाँवमें वर्गसंघर्ष चल रहा है।

—अभी भी हमराह बाय ज़िन्दा हैं क्या ?

—वह तेरे माँ-बापके मरते वक्त मर गया था। लाल-सेनाके साथ जब मैं यहाँ आया था, तो पूछ-ताछ की थी। एक बूढ़ेने बतलाया था, कि उन तीनोंको एक ही महीनेमें दफनाया गया था। उससे मालूम हुआ कि उसका लड़का जिन्दा है।

माँ-बापके मरनेकी खबरसे गुलनारका चेहरा कुछ उदास हो गया, जिसका प्रभाव यादगार पर भी पड़ा और कुछ देर तक दोनों चुपचाप चलते रहे।

४

स्कूल

एक सफेद इमारत थी, जिस पर लगी तख्ती बतला रही थी, कि वह स्कूल है। उसके सामने थोड़ी जगहमें गुलाबकी जगह कपास लगाये हुए थे। वहाँ एक पचीस-साला जवान कितने ही बच्चोंको लिये उन्हें कपासकी खेतीके बारेमें समझा रहा था। दो मुसाफिरोंको आया देख जवानने बच्चोंको बिदाकर "इस स्कूलका अध्यापक फ...ज़ादा" कहते उनकी तरफ हाथ बढ़ाया। मुसाफिरोंमेंसे भी एकने "ताजिक विद्यार्थी यादगार बाजारज़ादा" और दूसरेने "गुलनार रुस्तमज़ादा" कहकर हाथ मिलाया। कुशल-प्रश्नके बाद दाखुन्दाने अध्यापकसे पूछा—क्या इस कपासको खुद बोया है?

—हाँ, यह मिस्री कपास है। कृषि-विशेषज्ञ ने कहा था, कि हमारे देश जैसे स्थानमें जहाँ बसन्त समय पर आरम्भ होता है और मौसिम गरम हो जाता है, मिस्री कपास अच्छी होगी। मैंने यहाँके अग्रोनोम (कृषि-परामर्शदाता) की सलाहसे इस थोड़ी-सी जमीनमें मिस्री कपास बोई है। देख रहे हैं न, कैसी अच्छी फसल है!

—बहुत अच्छी। आपने स्कूलको कामका स्कूल बना दिया, शाबाश!

यदि छुट्टी हो तो लाल चायखाना तक हमारा पथ-प्रदर्शन कीजिये। वहाँ बैठकर थोड़ी देर बात करेंगे—दाखुन्दाने कहा।

"बहुत अच्छा" कहकर अध्यापक उन्हें साथ लिये लाल चायखानामें पहुँचा। तीनों मेजपर बैठे चाय पीते बात करने लगे।

—हमारे ताजिकिस्तानमें कितने स्कूल खुले हैं?—दाखुन्दाने पूछा।

—आपको मालूम है न, कि अमीरके जमानेमें स्कूल नामकी कोई चीज न थी। किन्हीं-किन्हीं मसजिदोंमें धार्मिक-मकतब थे भी, तो उनमें दसमेंसे नौ बच्चोंके लिये जानेका रास्ता न था और जानेवाले सौमेंसे एक आदमी दस साल तक छड़ी-थप्पड़ खाते कठमुल्ला बनके निकलता; बाकी सभी अनपढ़ बने रहते। इसलिये उस जमानेमें सौमेंसे एक ताजिक भी मुश्किलसे लिख-पढ़ सकता था। पहलेके बुखारा प्रजातन्त्रके जमानेमें और बसमाचियोंके जमानेमें भी स्कूलके लिये काम करना सम्भव न था। वस्तुतः यह काम १९२५से आरम्भ हुआ, जब कि स्वायत्त ताजिकिस्तान प्रजातन्त्र स्थापित हुआ। बसमाची बरबाद हुए और आर्थिक अवस्था सुधारनेका काम प्रारम्भ हुआ। यद्यपि आरम्भमें सड़क न थी, सामान न थे, अध्यापक न थे, किन्तु पिछले तीन सालोंमें स्कूलका काम बहुत आगे बढ़ा। एक ओर अल्प-समयके पाठ्यक्रमके अनुसार अध्यापक तैयार किये जाने लगे और दूसरी ओर स्कूल खुलने लगे। ताजिकिस्तानमें अब सैकड़ों स्कूल खुल गये हैं, जिनमें अब हजारों विद्यार्थी पढ़ते हैं। अगले साल और भी स्कूल और विद्यार्थी हो जायेंगे। हजारसे अधिक हमारे अच्छे-अच्छे ताजिक जवान इस समय मस्को, ताशकन्द और समरकन्दके बड़े-बड़े विद्यालयोंमें शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। निरक्षरता दूर करनेका भी काम शुरू हुआ है और वयस्कोंके पढ़ानेके लिये सैकड़ों क्लासें लग रही हैं। इन अन्तिम तीन सालोंमें तीस लाख रूबल इसपर खर्च हुआ है, जो बतलाता है कि पार्टी और सरकारका

इस ओर कितना अधिक ध्यान है। पिछले दो सालोंसे ताजिकिस्तान-सरकार-प्रकाशन-कार्यालयने बहुत-सी किताबें प्रकाशित की हैं। यह भी स्कूलके कामके आगे बढ़नेका प्रमाण है। अलबत्ता, अगले साल और भी ज्यादा किताबें छपेगीं; लेकिन वर्ग-शत्रु स्कूलके काममें भी बाधा डालनेसे बाज नहीं आते और दीन-धर्मके नामपर कमकरोंको बहकाते हैं।

५

सड़क-निर्माण

एक सत्ताइस-साला जवान एक मध्यवयस्का स्त्रीके साथ लाल चायखानामें आया। अध्यापक फ... ज़ादासे वह मिले। उसने उनमेंसे एकको पार्टी-मन्त्री मिसकीनज़ादा और दूसरेको ग्राम सोवियत् (पञ्चायत)की प्रधाना फ़ातिमा बेगीम् कहकर उनका दाखुन्दा और गुलनारसे परिचय कराया। दाखुन्दा और गुलनारने भी "हाई स्कूलके विद्यार्थी छुट्टीके दिनोंमें विश्राम और देशकी सफलताओंको देखनेके लिये आये" कहकर अपना परिचय दिया। दाखुन्दा साधारण शिष्टाचारके अनुसार सेक्रेटरीसे मिला, किन्तु फ़ातिमाका नाम सुनकर उससे मिलते वक्त उसके दिलमें कई तरहके विचार तरङ्गित होने लगे, जिसका प्रभाव उसके चेहरेपर पड़े बिना न रहा और वह गुलनारसे भी छिपा न रह सका। किन्तु वहाँ उसके बारेमें पूछनेका मौका न था।

"भले आये" कहकर मन्त्रीने दाखुन्दाकी विचार-शृङ्खलाको तोड़ दिया।

"अच्छी तरह तो हैं" कहते दाखुन्दाकी आँखें फिर एक बार फ़ातिमाके ऊपर गड़ गईं।

—हाँ, तो आबाद होनेके रास्तेमें हमारे ताजिकिस्तानको कितना आगे

बढ़ा देख रहे हैं—कहकर मन्त्रीने बाध्य किया, कि दाखुन्दा और जगहोंसे विचारको हटाकर सवालका जवाब दे।

दाखुन्दाने हाथसे माथेपर गिरे बालोंको आधे सिर तक करते बात शुरू की—नये ताजिकिस्तानको अभी मैंने पूरी तरहसे नहीं देख पाया। रेलसे यहाँ तक आते जो कुछ थोड़ा-बहुत देख पाया, उसने मुझे आश्चर्यमें डाल दिया। जिन जगहोंको चन्द साल पहले मैंने देखा था और चप्पा-चप्पाको जानता था, उन्हें करीब-करीब पहचान न सका।

—रास्तेमें कौनसी चीज़ ज्यादा ऐसी मालूम हुई?

—जिस चीज़ने हमें सबसे अधिक आश्चर्यमें डाला, वह है यही रास्तेका आराम। पहले जिन पर्वतों और जोतोंको हम बड़ी मिहनतके साथ दिनों लगाकर पार होते थे, उन्हें अब चन्द घण्टोंमें बिना थकावटके पार हो जाते हैं।

—जान पड़ता है आप स्टेशनसे यहाँ तक पैदल आये हैं। अगर चाहते तो मोटर-बस भी मौजूद थी। सरकार सिर्फ सड़कोंको ही नहीं बनवा रही है, बल्कि इन बनी सड़कोंके लिये मोटरें और मोटर-बसें भी उसने भेजी हैं, जिसमें मुसाफिर आसानीसे एक जगहसे दूसरी जगह पहुँच जायँ। यदि आप ताजिकिस्तानकी अच्छी तरह सैर करना चाहते हैं तो मोटर-बसोंमें सैर करें। इस प्रकार थोड़े समयमें बहुत अधिक स्थानोंको देख सकेंगे। नयी नहरोंवाले प्रदेशोंको जरूर देखें। वहाँ कल्खोज (पञ्चायती खेती) और सोव्-खोज (सरकारी खेती) स्थापित हुए हैं। नये ताजिकिस्तानका नमूना वहाँ देखनेको मिलेगा। इन जगहोंमें मोटर और मोटर-बसोंका यातायात भी बहुत अधिक है।

मन्त्री गरमागरम वार्तालापमें इतना तत्पर हो गया था, कि उसे चायके प्यालेका ख्याल न रहा। अध्यापकके इशारा करनेपर एक घूँटमें प्यालेको खतमकर उसने फिर बात शुरू की—अमीरके वक्तके रास्ते इस तरहके थे, कि एक गाँवके लुटनेका दूसरेको पता नहीं; यानी वह गाँवको गाँवसे, दर्रा

को दरेंसे और शहरको इन सभीसे सम्बन्ध स्थापित करनेका मौका नहीं देते थे। उस समय देशको आगे बढ़ाना सम्भव नहीं था। देशमें कारखानोंके माल, खेतीके सामान, सभ्यताके साधनोंको लाने और अपने मालको बाहर भेजने, कारखानों और स्कूलोंको खोलनेके लिये बड़े रास्तोंकी बड़ी जरूरत थी। हम देशको एक परिवारकी तरह ऊपर ले जाना चाहते हैं, समाजवादी सिद्धान्तके अनुसार नये समाजका निर्माण करना चाहते हैं। सबसे पहले रास्तेकी ज़रूरत थी, इसलिये सरकारने देशको आबाद करनेके दूसरे कामोंकी तरह सड़कोंको बनानेमें भी पैसेको दिल खोलकर खर्च किया। द्वितीय सम्मेलनकी योजनाके अनुसार पिछले दो सालोंमें यात्रा और भार ढोनेके साधनोंपर साठ-लाख रूबल खर्च किया गया, लेकिन अभी यह कार्यका आरम्भ ही भर है। आगे चलकर हमें देशके सारे रास्तोंको फिरसे नये तौरसे बनाना है, जिसमें ताजिकिस्तानकी भूमिके ऊपर और भीतरके खजानोंसे ताजिक-कमकर पूरी तौरसे फ़ायदा उठा सकें।

—हम नयी नहरोंवाले इलाकोंको देखना चाहते हैं—दाखुन्दाने पूछा—इसके लिये कहाँ और कब मोटर मिल सकती है?

—इसी जगहसे सप्ताहमें तीन-चार मोटर-बसें गुजरती हैं। यदि आप काफ़िरनिहाँके किनारे जाना चाहें, तो हर रोज बस मिल सकती है। लेकिन अभी आप एक-दो दिन हमारे अतिथि रहें और राहकी थकावटको दूर करें, फिर दूसरी जगह जाइयेगा—मन्त्रीने कहा।

"फिर बात करेंगे" कहकर मंत्रीने फ़ातिमाके साथ उठकर दो कदम हट सलाह किया और फिर आकर कहा—हमारी इच्छा है, कि अपने प्रिय अतिथिके लिये ग्राम-सोवियत्की एक साधारण सभा बुलायें, जिसमें ताजिकिस्तानके आबाद करनेके बारेमें भाषण हो। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि शामको पाँच बजे गाँवके क्लबघरमें पधारें।

अतिथियोंने मन्त्रीकी बात स्वीकार की। मिसकीनजादा और फ़ातिमा-बेगीम् चले गये, लेकिन अब भी दाखुन्दा मध्यवयस्का महिलाके बारेमें बहुत

सोच रहा था। गुलनार और अब अपनेको रोक न सकी और उसने "इस औरतको देखकर क्यों होश उड़ गया, क्या उसके साथ कोई पुरानी जान-पहचान है?" कहकर आधा परिहास और आधी गम्भीरताके साथ दाखुन्दासे पूछा।

—यह स्त्री मेरी बहुत जान-पहचानकी मालूम होती है, लेकिन बहुत सोचने पर भी मुझे याद नहीं आता कि इसे कहाँ देखा। मुझे जान पड़ता है, मैंने इस स्त्रीको एक बार नहीं, अनेक बार देखा है, लेकिन कब और कहाँ यह स्मरण नहीं होता। फ़ातिमा नाम भी बहुत सुना सा मालूम होता है।

अध्यापक जो मन्त्री और प्रधानाके साथ-साथ चला गया था, लौट आया और अतिथियोंको लिये घूमने निकला।

६

आबाद गाँव

गाँवके क्लबघरमें स्त्री-पुरुषोंकी भारी भीड़ थी। फ़ातिमा बेगीमूने सोवियतकी ओरसे सभाका आरम्भ करते प्रिय अतिथियोंका स्वागत किया और ताजिकिस्तानके आबाद करनेके बारेमें मन्त्री मिसकीनज़ादाको बोलनेके लिये कहा।

फ़ातिमा जिस समय बात कर रही थी, दाखुन्दाने फिर उसकी ओर ध्यानसे देखते धीरेसे गुलनारके कानोंमें कहा—"मैंने इस स्त्रीको इससे पहले देखा है। किन्तु आश्चर्य है, कि देखी-सुनी किसी बातको न भूलते भी मुझे याद नहीं आता कि इसे कहाँ देखा।

—जान पड़ता है इस स्त्रीसे तेरा परिचय अधिक पक्का न हुआ था—कहकर गुलनारने फिर परिहास किया।

—गुलनार! मेरी तुझसे प्रार्थना है—इसके बाद फिर दूसरी

स्त्रियोंके सम्बन्धके बारेमें बात न कर। मैं जानता हूँ कि तू परिहासमें कह रही है, तो भी मैं उसे तेरे मुँहसे नहीं सुनना चाहता।

मिसकीनज़ादाने भाषण आरम्भ कर दिया था। पहले बाहरी-भीतरी अवस्था सम्बन्धी दो-चार साधारण बातें कहकर वह बोलने लगा—हमारे गाँवमें जो काम हुए हैं और उनमें जो कमियाँ रह गयी हैं, उनके बारेमें मैं यहाँ कुछ नहीं कहना चाहता; क्योंकि उन्हें आप सब जानते हैं और उनमेंसे कुछको हमारे अतिथियोंने भी देखा होगा। हो सका तो दूसरे दिन मैं उनके बारेमें कहूँगा। मैं यहाँ संक्षेपमें उन कामोंके बारेमें कहना चाहता हूँ, जो कि ताजिकिस्तानके आबाद करनेके सम्बन्धमें हुए हैं और हो रहे हैं।

साथियो! ताजिकिस्तानके आबाद करनेका इतिहास प्रथम सम्मेलन (कान्फ्रेन्स)से होता है। तबसे आज तक तीन सालसे कम ही समय बीता है लेकिन काम बहुतसे हुए हैं।

मन्त्रीने कामोंका विवरण देते हुए कहा—बसमाचियोंके अत्याचार और लूटके कारण हमारे देशकी खेती सिर्फ साठ सैकड़ा रह गयी थी और बागवानी तो आधीसे भी कम। इन तीन सालोंमें खेती और बागवानी यथापूर्व हो गयी। इसके अतिरिक्त पहले हमारे देशमें कपासकी खेती नाम-मात्र होती थी, वह भी बसमाचीगर्दीके जमानेमें बिल्कुल खतम हो चुकी थी और अब वह लाख एकड़से ज़्यादा पर पहुँच गयी है। यह काम अपने आप नहीं हुआ है। एक ओर कमकरोंने काम करनेके लिये कमर बाँधी और दूसरी ओर सरकारने खर्च करनेमें जरा भी हिचकिचाहट नहीं की। ऊपरसे उज्बकिस्तान और सारे सोवियतिस्तानके कमकरोंने सहायता दी। पिछले तीन सालोंमें पुरानी बर्बाद नहरें फिर तैयार हो गयीं। यही नहीं काफिरनिहाँ, वख्श, किज़िलशू और सूख़ाब नदियोंसे नई नहरें निकालनेमें भारी रकम खर्च की गयी, जिनसे लाखों एकड़ ज़मीन आबाद और सीराब हुई। खेतीके हथियार

और सामान भी बहुत भारी परिमाणमें किसानोंमें बाँटे गये। गाँवकी आर्थिक अवस्थामें बाधा पैदा करनेवालेके कारणोंको दूर करनेमें भी बहुत धन और श्रम खर्च किया गया, और गरीब किसानोंको आर्थिक मदद दी गयी। ताजिकिस्तानके कमकरोंकी अवस्था कितनी अच्छी हो गयी है, इसे जाननेके लिये इतना समझना काफ़ी है। बसमाचियोंके युद्धसे पहले हर परिवार अपनी ज़रूरतकी सारी चीज़ोंको तैयार करता था। जो चीज़ें खरीदता भी था, उन्हें भी अधिकतर अदल-बदल करके। अन्तिम समय पूर्वी-बुख़ारा यानी आजके ताज़िकिस्तानमें जो कारखानेवाला माल लाया जाता था, वह जनताके श्रम-फलको लूटनेवाले धनवानों और अमलदारोंके लिये खर्च होता था। कारखानोंका बना माल यदि कुछ कमकरोंके हाथमें आ भी जाता था, तो बादमें नक़द पैसेकी जगह एक हाथसे दूसरे हाथमें होता, मालगुजारी या मोहरानाके रूपमें हाकिम और काज़ीके हाथोंमें चला जाता। बसमाचियोंके जमानेमें माल-असबाब नामकी कोई चीज़ न रह गयी थी, लेकिन पिछले तीन सालोंमें करोड़ोंका कारखानोंका माल हमारे यहाँ आया और लोगोंमें बेंचा गया। जनताकी आर्थिक अवस्थाके बेहतर होनेका यह अच्छा प्रमाण है।

मन्त्रीने आगे बढ़ते हुए फिर कहा—जिस समय हम मुल्कके आबाद होने तथा सुखी बनानेकी बात करते हैं, उस वक्त यह न भूलना चाहिये कि युद्धसे पहले देशकी हर एक चीज़ अमीरके अमलदारों, मुल्लों, ईशानों और दौलतमन्दोंकी मिल्कियत थी। देशकी साधारण कमकर-जनता इस मुफ़्तखोर छोटेसे वर्गके लिये गुलामोंकी तरह काम करती, भूखों मरती या उससे भी बुरी अवस्थामें जीती थी; लेकिन अब देशके आबाद होनेका अर्थ है जन-साधारणके सुख और समृद्धिकी वृद्धि। आज हर कामकी सफलता साधारण कमकर जनताके लाभके लिये है। दिन-प्रतिदिन अपने कामोंको पंचायती या साझेका बनानेकी ओर कमकरोंकी रुचि बढ़ती जा रही है। इसका एक उदाहरण पंचायती कारीगरी है। इन तीन सालोंमें

गाँवमें सैकड़ों पञ्चायती-हस्तशिल्प स्थापित हुए हैं, जिनके हजारों मेम्बर अब सूदखोरों और बायोंके हाथोंसे स्वतन्त्र हैं।

और आगे बोलते हुए—देशको समाजवादी और पञ्चायती बनानेके लिये एक बड़ा पग है कल-खोज (पञ्चायती खेती) सोव-खोज (सरकारी खेती)का कायम होना। इन तीन सालोंमें हमारे देशमें सैकड़ों कल-खोज और सोव-खोज कायम हुए हैं, जो ग्रामोंके आर्थिक जीवनकी नयी नींव डाल रहे हैं, लेकिन साथ ही इस कामने वर्गयुद्धको भी तेज कर दिया है। कमकर जितने ही अधिक सब कामको पञ्चायती करनेकी तरफ झुक रहे हैं, वर्ग-शत्रु भी उतने ही जोरसे मुकाबला कर रहे हैं। मुल्लाओंके द्वारा वर्ग-शत्रु धर्मके नाम पर कल-खोज और सोव-खोजके विरुद्ध लोगोंको बहका रहे हैं। ग्राम-सोवियतों (पञ्चायतों)में अपने आदमी भेजकर सब काम अपने हाथमें लेना चाहते हैं; कल-खोजोंमें घुसकर लोगोंमें ज़हर फैला, कल-खोजोंको तबाह और ढोरों तथा चीज़ोंको बर्बाद करनेकी कोशिश करते हैं। यहाँ तककी मुस्तैद और मिहनती कमकरोंको जानसे मारने और मरवानेसे भी बाज़ नहीं आते। क्रान्तिके विरोधियों, हमारे इन वर्ग-शत्रुओंका मुकाबला कमकर अपनी वर्ग-चेतनाकी होशियारीसे ही कर सकते हैं।

मन्त्रीने यह भी कहा—एक दूसरी प्रगतिके बारेमें मैं आपको बतलाना चाहता हूँ, वह है कमकरों की स्वास्थ्य रक्षाके कामका आगे बढ़ना। अमीरके ज़मानेमें बीमार पड़ना और मरना एक बात थी। जो गरीब बीमार पड़ा वह मरा, किन्तु इन तीन सालोंमें बहुतसे अस्पताल, दवाखानें और डाक्टरखानें खुले हैं, जिनपर काफ़ी पैसा खर्च किया जा रहा है। दो-तिहाई ताजिक इन अस्पतालोंसे फायदा उठा रहे हैं, वही ताजिक जो बीमार पड़ने पर ईशान (पीर) और दुआख्वान (ओझा-सयाने)के कोड़ेके नीचे मरते थे। साथियो! तुम यह पूछना चाहोगे कि हमारा ताजिकिस्तान एक उजड़ा, पिछड़ा आफतोंमें फँसा देश था; हकूमतने

लोगोंकी ग़रीबीका ख्यालकर पहले सालोंमें मालगुज़ारी माफ़ कर दी थी और हालमें जो थोड़ी सी मालगुजारी लेती भी है, वह इतनी कम है कि उन गिनाये खर्चोंके साथ उसका कोई हिसाब नहीं हो सकता। फिर इतनी भारी रकमको सरकारने कहाँसे लाकर खर्च किया? साथियो! तुम्हें यह पूछनेका हक है। लेकिन एक बातको न भूलें—सोवियत् सरकारका सिद्धान्त है, पिछड़े प्रदेशोंको और अधिक सहायता पहुँचाना, जिसमें सोवियत्के सभी कमकर आर्थिक वा सांस्कृतिक तौरसे एक समान हो आगे बढ़ें। इसी सिद्धान्तके अनुसार सोवियत्के कमकरोंने हमें आर्थिक और सांस्कृतिक सहायता पहुँचानेमें जरा भी कसर न की। सोवियत्-संघकी सरकारने अपने एक अत्यन्त पिछड़े प्रदेश ताजिकिस्तानके लिये अपने खजानेका दरवाज़ा खोल दिया। यही कारण है, कि हमें खर्चकी तंगी न हुई।

मन्त्रीने और भी कहा—साथियो! मैंने जो हिसाब आपके सामने पेश किया, उसे हवासे नहीं लिया। यह हिसाब उस पुस्तिकामें दिया हुआ है जिसे द्वितीय कान्फ्रेन्समें पेश किया गया था। असलमें तो देशकी सुख-समृद्धिको प्रमाणित करनेके लिये इतने हिसाब-किताबकी जरूरत नहीं। हमकी सफलताएँ सबके सामने हैं। हर आदमी देखता और समझता है कि इन चन्द वर्षोंमें ताजिकिस्तान कहाँसे कहाँ पहुँच गया है।

दिन खतम हो चुका था और दुनियामें अँधेरा छा गया था। इसी समय बिजलीके प्रदीप जल उठे और क्लबघरके अन्दर दिन सा हो गया। मन्त्रीने अपना व्याख्यान जारी रखते हुए कहा—देशकी खुश-हालीके बारेमें मैं और नहीं कुछ कहना चाहता। यह आपकी आँखोंके सामने प्रकाशित विद्युत-प्रदीप बतला रहे हैं कि इन तीन सालके छोटेसे समयमें हमारा देश काले तेलके चिरागसे बिजलीके युगमें पहुँच गया।

लोगोंने ज़ोरकी ताली बजाई। मिसकीनज़ादाने भाषण समाप्त करते हुए कहा—जिन्दाबाद हमारा प्रकाशमान भविष्य।

एक लके (किरगिज़) कमकरने सभाके प्रधानसे आज्ञा ले ताजिकिस्तानकी जातियोंकी ओरसे बधाई देते हुए कहा—अमीरके जमानेमें देशकी बरबादीका एक कारण यह भी था, कि अमलदार (कर्मचारी) और धनी लोग उज्बक, ताजिक, कज़ाक और तुर्कमान कमकारोंको एक दूसरेके साथ लड़ाते रहते थे, यहाँ तककी दर्वाज़, वखिया, करातगिन और गर्मके इलाकोंके लोगोंमें द्वेषकी आग बराबर भड़काते रहते थे, जिसका परिणाम होता था देशका बरबाद होना, कमकरोंके घरका उजड़ना। लेकिन उससे फायदा उठाकर अमलदार और बड़े लोग निश्चिन्त हो उस पर शासन करते कमकरोंका खून पीते थे। अब पार्टी और सरकारके नेतृत्वमें हमने इन सारी बातोंको खतम कर दिया। सभी जातियोंके कमकर अमलदारों और सीनाजोरोंके मुकाबलेमें एक होकर खड़े हुए थे और अब सभी जातियोंके कमकर मुट्ठियोंको एकमें बाँध देशको आबाद करने और उसके द्वारा अपनी सुख-समृद्धि बढ़ानेके लिये कोशिश कर रहे हैं। देशको आबाद करनेमें जो सफलता हो रही है, उसका एक कारण है—जातियोंके प्रश्नको मित्रता और समानता द्वारा हल करना।

७

मरा मूस

दाखुन्दाने अतिथि-सेवा और स्वागतके लिये अपनी और गुलनारकी ओरसे धन्यवाद देते हुए कहा—आरे! हमारा ताजिकिस्तान आगे बढ़ रहा है। यह एक बड़ी सफलता है। ताजिकिस्तानने बसमाचियोंको खतम करनेके बाद काम करनेका जो मौका पाया है, उससे फायदा उठाकर थोड़ेसे समयमें वह इतना आगे बढ़नेमें सफल हुआ। लेकिन जैसा कि व्याख्याताने कहा, अभी भी हमारे शत्रु जीवित हैं। शिर कुचले साँपकी तरह यद्यपि उन्होंने अपनेको बिलमें छिपा लिया है, तो भी वह जिन्दा हैं। पुराने अमलदार और सीनाजोर अपने परिवारके चैन और आरामको खतम

हुआ या हमारी उन्नतिको फूटी आँखों नहीं देख सकते। हम जितना ही आगे बढ़ रहे हैं, उनकी शत्रुता भी उतनी ही बढ़ रही है। यद्यपि उनका यह काम दम तोड़ते वक्तकी छटपटाहट है, तो भी उनका विरोध बढ़ रहा है इसमें सन्देह नहीं। फ़ुज़ैल मख़दूमका अन्तिम बार निकलना उसी तरहकी एक छटपटाहट थी। अरे! फ़ुज़ैलका निकलना आखिरी दमका घुटना था। वह कुछ गाँवको बरबाद और जलाकर कुछ जवानों और स्त्रियोंको दारपर खींचकर भाग गया, उसी तरह जिस तरह अंगूरकी चोरीके लिये आया कुत्ता बागवानके सजग हो जानेपर सामनेकी चीजको खराबकर भाग निकलता है। अरे! फ़ुज़ैल भागा, लेकिन साथ ही इस बातको सिद्ध कर गया कि अब भी हमारा शत्रु जिन्दा है—हमारा भीतरी-बाहरी शत्रु जीवित है। यदि अवसर पायेगा, तो वह कुत्तोंको हमारे ऊपर छोड़ेगा, इसलिये हमारा कर्त्तव्य है कि आगे बढ़नेके साथ-साथ वर्ग शत्रुको छिन्न-भिन्न करनेकी भी कोशिश करते रहें। शत्रुको पूर्णतया नष्ट करना जरूरी है, जिसमें दूसरी बार उसमें हिलने-डुलने और चोट करनेकी शक्ति न रह जाय। तभी हम निश्चिन्त हो देशको आबाद करने और खराब हुए वतनको समाजवादी सिद्धान्तके अनुसार फिरसे निर्माण करनेका काम कर सकते हैं। इस बातको भी न भूलना चाहिये, कि शत्रु सदा तलवार और बन्दूक हाथमें ले खुल्लमखुल्ला लड़नेके लिये नहीं आया करता। कितनी ही बार वह मरे मूस-सा बन जाता है, लेकिन अनाजकी बखारको खराब करनेसे बाज़ नहीं आता। ऐसा शत्रु खुले शत्रुसे भी बुरा है, इसलिये ऐसे शत्रुपर अधिक निगाह रखनेकी जरूरत है।

दाखुन्दाने तालियोंकी गूँजमें अपना भाषण समाप्त किया। प्रधानाने किसी दूसरेको बोलने देनेका मौका दिया, किन्तु बीचमें एक तरफ़से आवाज़ आई—सवाल।

प्रधाना—लिखकर दो, सभाके अन्तमें जवाब दिया जायगा।

—मेरा प्रश्न सभासे है और इसी वक्त है। सभाके अन्त तक वह नहीं रह जायगा।

चारों ओरसे "पूछो पूछो"की आवाज आयी।

जवाब देनेके लिये मिसकीनज़ादाको वक्त दिया जाता है—प्रधानाने कहा।

—हमारी सभामें "मरा मूस" मौजूद है। क्या उसे यहाँ रहने दें या निकाल फेंकें?

—कौन है यह मरा मूस?

"बतलाओ बतलाओ"की आवाज़ चारों तरफसे आई।

—यह मरा मूस (चूहा) हमराह बायका लड़का है, जो कि यहाँ अपने शिरको भीतरकी ओर खींचकर बैठा है। अपने समयमें इसके बापने दर्राके लोगोंका खून पीया और अब यह अपने बापके पेशेको पक्का करना चाहता है।

"दूर हो, दूर हो, दूर हो..." चारों ओरसे हल्ला हुआ।

सभी आँखें उस तरफ फिरीं, जिधर संगीनज़ादाने इशारा किया था। दाखुन्दा और गुलनार अपने पुराने परिचितको देखनेके लिये आधे खड़े हो गये।

"मरा मूस नेस्त हो" और लोगोंके पैर पटकनेकी आवाजमें, वह अपनी जगहसे उठकर दरवाजेसे बाहर चला गया।

दाखुन्दाने गुलनारसे कहा—यह वही सवार है जिसे आज हमने रास्तेमें देखा था, लेकिन पहिचान न पाये।

यह मरा मूस हमराह बायका लड़का था जिसके साथ जबर्दस्ती गुलनारकी सगाई करने जा रहे थे।

८

स्त्रियोंकी स्वतन्त्रता

लोगोंने गुलनारसे कुछ कहनेके लिये कहा और उसने बोलना शुरू किया—ताजिकिस्तानकी प्रगति स्पष्ट है। इन प्रगतियोंमें एक है स्त्रियोंकी स्वतन्त्रता। यद्यपि पहलेके जमानेमें स्त्रियाँ धनियोंके घरोंमें बनाव-शृङ्गार करने और अत्याचार सहनेके लिये स्वतन्त्र थीं, तो भी देशके साधारण कामोंमें सहकारी बननेका उन्हें कोई अधिकार न था। सभाकी बात तो दूर गलीमें भी स्वतन्त्रतासे नहीं आ सकती थीं। अब हजारों स्त्रियाँ कारखानों और कल-खोजोंमें स्वतन्त्र जीवन बिता रही हैं, हजारों स्कूलोंमें पढ़ती और सभाओंमें शामिल होती हैं। इसी सभामें मैं देख रही हूँ, आधी शाला स्त्रियोंसे भरी है। ग्राम-सोवियत्की प्रधाना स्त्री हैं, जो कि स्त्रियोंकी प्रगतिका एक अच्छा प्रमाण है। जिन्दाबाद स्त्री-स्वतन्त्रता!

अन्तमें प्रधाना फातिमा बेगीमने कहा—आरे! हम आगे बढ़ रहे हैं जिसका एक प्रमाण—जैसा कि साथी गुलनारने कहा—स्त्रियोंकी स्वतन्त्रता है। यद्यपि यह बात अभी पूरी तौरसे अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाई है, और अभी भी स्त्रियोंने काम करनेमें मर्दों जैसी योग्यता नहीं प्राप्त की है, तो भी इस सम्बन्धमें बहुत काम हुआ है। इस साल ग्राम-सोवियतोंके चुनावमें बहुत-सी स्त्रियोंने अपनेमेंसे कुछ मेम्बर रखनेकी इच्छा प्रकट की। जैसा कि साथी यादगारने कहा, हम जितना ही आगे बढ़ रहे हैं हमारा शत्रु भी उतना ही अपने काममें सर-गर्म है। शत्रु जानता है कि किन-किन जगहोंमें हम आगे बढ़ रहे हैं और वह उन्हीं जगहोंपर हमला कर रहा है। शत्रु जानता है कि यदि स्त्रियाँ स्वतन्त्र हुईं और लोग लिख-पढ़ गये तो फिर उनको धोखा देना और उनपर हुकुम चलाना सम्भव नहीं है। इसीलिये फुजैलने अन्तिम बार निकलनेसे पहले इन्हीं दोनों बातोंपर सबसे ज्यादा हमला किया। स्वतन्त्र हुई स्त्रियोंको कतल किया, दारपर

खींचा, कमकरोंको शिक्षित बनानेके लिये काम करनेवाले अध्यापकोंके सिर भेड़ोंकी तरह काटे। लेकिन फुज़ैलने समझनेमें गलती की। उसने आजके ताजिकिस्तानको १९२३-२४का ताजिकिस्तान समझा। उसने सोचा था कि दोशम्बासे फौज आने तक वह गर्ममें क़तल-आम कर चुकेगा, लेकिन अभी वह अपनी रक्त-पिपासाको पूरी नहीं कर पाया था, कि हमारे एरोप्लान (विमान) दैवी दण्डकी तरह उसके सिरपर आ धमके और एक घंटेमें उसके रक्त-रंजनागारको ध्वस्त-विध्वस्त कर दिया। फुज़ैल भाग गया, किन्तु अब भी फुज़ैली जालिम मौजूद हैं। जैसा कि साथी यादगारने कहा, हमें इन शत्रुओंको छिन्न-भिन्न करनेको लड़ाई जारी रखनी चाहिये। इस लड़ाईकी सेना है, कमकर जन-साधारण।

फ़ातिमा बेगीमूने तालियोंके बीच सभा समाप्त करते हुए कहा—जिन्दाबाद ताजिकिस्तानकी प्रगति, जिन्दाबाद स्त्रियोंकी स्वतन्त्रता, नेस्तबाद हमारा वर्ग-शत्रु।

दाखुन्दा इस पहाड़ी स्त्रीकी अग्निमयी वाणी और ओजस्वी भाषणसे बहुत प्रभावित हुआ, किन्तु अब भी वह अपनी स्मृतिसे यह ढूँढ़ निकालनेमें सफल न हुआ कि वह कौन है।

९

संस्कृतिका कारवाँ

पहाड़ी चोटियों और खड्डोंसे होती मछलीकी तरह तैयारकी गई सड़कपर मोटर-बस चली जा रही थी। अन्तमें वह एक समतल विस्तृत स्थानपर पहुँची। यहाँ दोनों ओर नहरें थीं, जो जाड़े और वर्षाके दिनोंमें पानी बहानेका काम देतीं और गर्मी तथा सूखेके समय सिंचाईका। बस पत्थर-कुटी पक्की समतल सड़कपर बिजलीकी गतिसे दौड़ रही थी। यहाँ दो-गजे साँपों, खरगोश जैसे कालमूसों, साही और वज्रपृष्ठोंके सिवा—जो कि जब-तब सामनेसे गुजर जाते थे—कोई बाधा देनेवाला प्राणी न था।

—ये जानवर कहाँसे कहाँ और किस लिये जा रहे हैं ?—दाखुन्दाने अपने एक सहयात्रीसे पूछा।

—इस तरफ़की जमीन कितने ही समयसे परती ही पड़ी थी। नहरोंके बर्बाद होनेसे वह एक सन्तप्त मरुभूमि सी बन गयी थी। यहाँ आदमियों और ग्राम-पशुओंका नाम न रह गया था। इस सूनी भूमिके मालिक हर तरहके भयानक जन्तु बन गये थे। यहाँ नहरें निकाल पानी लाया गया। फिरसे खेतोंको आबाद करके कल-खोज और सोव-खोज स्थापित किये गये। फिर इन जानवरोंके लिये यहाँ जीना मुश्किल हो गया। इनमेंसे बहुतसे खेतीको हानि पहुँचानेवाले जन्तु कृषि-विशेषज्ञके बतलाये उपायोंसे मार डाले गये। अब ज़िन्दा बचे जानवर आबाद जगहोंसे न-आबाद निर्जन जगहोंकी तरफ़ भागे जा रहे हैं। मोटर-बस प्रोलेतेरी (कमकरोंकी) संस्कृतिके कारवाँकी तरह इन हानिकारक जन्तुओंको नष्ट करती आगे बढ़ती चली जा रही थी और साथ ही आबादीके प्रभाव भी अधिक दृष्टिगोचर हो रहे थे। सड़कके दोनों तरफ़ कपासके खेत यूनुच्का (चारा) घास, नये हरे-भरे बगीचे और नयी सुन्दर इमारतें शोभा दे रही थीं। मोटर-बस एक नये बसे गाँवके पास जाकर खड़ी हो गयी। गाँवकी सड़कें और इमारतें यूरोपीय ढंगकी थीं। बसके टिकट-विक्रेताने दाखुन्दा और गुलनारसे कहा "यह है गाँव, जहाँ आप आना चाहते थे।"

दोनों वहाँ उतर गये और मोटर-बस आगे रवाना हो गयी।

१०

नया गाँव

गाँव यद्यपि नया था, किन्तु था बहुत बड़ा। उसमें गर्म, दरवाज़, खोजन्द, ऊरातप्पा, फ़रगाना और दूसरी जगहोंके लोग आके बसे थे। हर परिवारके लिये घर और जगह अलग थी, तो भी ढोरखाना, घास-लकड़ी-खाना, अन्नके बखार और भण्डार, रोज़की खुराकका भण्डार, खेतीके

आदमीका कर्त्तव्य है कि निश्चित परिमाण (नार्म)के अनुसार प्रतिदिन अपने कामको वक्त पर पूरा करे। निश्चित परिमाणसे जो जितना अधिक काम करता है, उसकी मजदूरी भी उतनी ही अधिक होती है। इसलिये सब लोग दिन निकलते काम पर चले जाते हैं और शामको गाँव लौटते हैं।

—तुमको क्या काम मिला है बाबा ?—दाखुन्दाने पूछा।

—मुझे आबी जमीनके एक चकमें सिंचाई या आबदारीका काम मिला है। ब्रिगादीर (नायक)के कथनानुसार मैं हर रोज कपास, युनूत्का, या दूसरी फ़सलकी खेतोंमें पानी देता हूँ।

—क्या तुम्हारे कल-खोजमें तुमसे जवान आदमी नहीं हैं कि भारी कामको तुम्हारे शिरपर रखा है।

—पहले तो यह कि मैं काम करनेमें किसी जवानसे कम नहीं हूँ, बल्कि कितने ऐसे जवानोंसे इतना ज्यादा काम कर सकता हूँ, जिनका पेशा पहले खेती न था और दूसरा काम न ले हमारे कल-खोजमें आकर दाखिल हो गये। दूसरी बात यह है कि हमारे कल-खोजमें सबसे हल्का काम आबदारी है। यद्यपि कामके बारेमें मैं अभी अपनेको बूढ़ा नहीं मानता, लेकिन जवानोंने मेरे सफेद बालों पर रियायत करके मुझे यह हलका काम सौंपा है।

—अकेले बाबा ! तुम कैसे नहरों-नालियोंको खोलते-बाँधते हो ?

"ठहरो, पानीके पास चलेंगे तो देखना कि बाबा आखिर कितनी आसानीसे पानी खोलता-बाँधता है"—कहकर बूढ़ा दाखुन्दाको फिर बोलनेका मौका न दे तेजीसे कदम बढ़ाने लगा।

रास्तेकी दोनों तरफ कपासके खेत फैले हुए थे। जिस तरह एक चतुर माली अपनी क्यारीको खाद-पानी दे लहलहा देता है, उसी तरह ये विशाल खेत कपासके पौधोंसे लहलहा रहे थे। खेत समतल और क्रम-बद्ध थे, और उन्हें चौड़ी रविशें एक दूसरेसे पृथक् कर रही थीं। खेतोंके

बीचसे जल-प्रणालिकाएं इस तरहसे खींची हुई थीं, कि पानी आसानीसे खेतोंमें डाला जा सके। नहरियोंके किनारे पौधे लगे हुए थे, जो कुछ सालोंमें छाया देने लायक हो जायेंगे। यद्यपि वह नहरके पानीमेंसे कुछ खुद पीते हैं, किन्तु साथ ही वह सूर्यसे पानीकी रक्षा भी करते हैं।

कपासके पौधे बहुत हरे-भरे थे। फर्गाना और बुखारावाली कपासकी खेतीकी पुरानी जगहोंमें आज-कल कपास खेतमें बोये जा रहे थे, जब कि यहाँ वह फूलकर कलियाँ भी बाँधने लगे थे। बूढ़ा अपने सहयात्रियोंसे "सीधे चलो, मैं खेतके मुँहको बन्दकर तुमसे आ मिलता हूँ" कह दो खेतोंके बीचकी रविशपर दौड़ा और खेतकी परिक्रमा करते नहरके किनारे पहुँच गया, जहाँ कि दाखुन्दा और गुलनार धीरे-धीरे पहुँचे थे।

"यह खेत भर गया। अब खेत नम्बर दोमें पानी देता हूँ" कहकर कुलावाके पास गया। उसे एक बूँद भी पानी न देने-लायक करके तख्तेसे बाँध रखा था।

बाबाने तख्तेको निकालकर एक मुँहको खोलकर उसीसे दूसरे मुँहको बन्द कर दिया। दाखुन्दाको अपने काममें प्रसन्न देखकर बाबाने कहा—देखा, बाबा साबिर कितनी आसानीसे पानी खोलता और बाँधता है? पुराने ढंगकी सिंचाईमें इस कामके लिये बेलचा और कुदाल लिये चार आदमियोंकी जरूरत होती और दो आदमीको हमेशा बंधके पास बैठे रहना पड़ता, जिसमें पानी कहीं फटकर निकल न भागे। फूट जानेपर तो उसे दश आदमी भी न बांध सकते। पुरानी सिंचाईकी नहरके दोनों किनारे टूटे-फूटे होते और भीतर कीचड़ और बालू भरा होता जिनको ठीक करनेके लिये भी किसानोंको हर साल कितने ही दिन काम करना पड़ता। लेकिन इस हमारी नहरमें एक आदमी बिना एक कुदाल चलाये या बिना एक मुट्ठी मिट्टी डाले एकड़ों खेत सींच सकता है। नहरमें बसन्तके बहावकी कीचड़-मिट्टीको साफ करनेके लिये सिर्फ एक बार काम करना पड़ता है। यह हमारी नहरें नई तेकनीक (साइन्सी तरीका) के

अनुसार बनाई गई हैं, इसलिये बरसाती पानीके बहावके समय भी इनमें कीचड़-मिट्टी बहुत कम जमा होती है।

बाबा साबिरनें खेत चक नम्बर दोमें पानीको खोल बातें शुरू कीं—अब कुछ घन्टोंकी मुझे छुट्टी है। यदि चाहते हो तो कल्खोज़की दूसरी खेतीको भी तुम्हें दिखलाऊँ।

दाखुन्दा और गुलनारने "अन्धा क्या चाहे दो आँखें" कहकर बूढ़ेकी बातको स्वीकार किया। वह रास्तेसे रवाना हुए। कपासकी खेती खतम होनेके बाद यूनुक्का और सब्ज़ीके खेतोंके पास पहुँचे। बाबाने खेती दिखलाते हुए कहा—यह फसल एक ओर कल्खोज़के आदमियों और जानवरोंकी आवश्यकताको पूरा करती है; दूसरी ओर कपासकी अगली फसलके लिये जमीनको अधिक ऊर्वर बनाती है।

यहाँ खेतमें स्त्रियोंकी एक टुकड़ी बेकार घासोंको निकाल प्याज आदि सब्जियोंकी निकाई कर रही थी। मर्द खर्बूजा-तरबूजाकी जमीनमें थाला-बन्दी और आलूके खेतोंमें कुदाल चला मिट्टी चढ़ानेमें लगे हुए थे। मर्दोंकी एक दूसरी टुकड़ी यूनुक्काको काटकर फैला रही थी और दूसरी टुकड़ी सूखे यूनुक्काके पूलें बाँध रही थी। यात्रियोंने उनसे "थक न जाना" कहा, जिस पर काम करनेवालोंने "सलामत रहें" कहकर अधिक न बोलनेका भाव व्यक्त किया, क्योंकि यह कामका समय था।

अब खेत खतम हो गये थे। आगे गैरआबाद जमीन थी, जिसे ट्रैक्टर (मोटरवाला हल)-ड्राइवर घासोंको जड़से उखाड़ने-तोड़नेमें लगे हुए थे। बाबा साबिरने उधर अँगुली उठाकर कहा—यह जमीन इस साल जुतकर धूप खायगी और अगले साल इसमें दूसरे खेतोंसे भी अच्छी कपास होगी।

आगे विषमतल ऊबड़-खाबड़ मैदान आया, जहाँ कल्खोज़के माल चर रहे थे। दाखुन्दा और गुलनारने सैर खतम समझ गाँवकी तरफ लौटना चाहा। इसी वक्त बाबा साबिरने कहा—यदि थक नहीं गये तो

थोड़ा और आगे लालमी (बिना सिंचाईके) खेतोंमें चलें, वह भी हमारे कल्खोज़के हैं।

—थकनेकी बात न करो बाबा—दाखुन्दाने कहा—हम जितने कदम आगे चलते हैं, उतना ही बल भी ज्यादा होता जा रहा है। तीन साल तक शहरकी बँधी हवामें हम काम सीखनेके लिये बन्द रहे। इस शुद्ध स्वच्छ वायुमें साँस लेना एक नई स्फूर्ति प्रदान करता है।

बहुत दूर नहीं जाना पड़ा। आध घंटा बाद वह खेतोंके एक विस्तृत मैदानमें पहुँचे। बाबा साबिरने कहा—अभी इस जगह पानी नहीं ला सके, इसलिये यहाँ हम लालमी खेती करनेके लिये मजबूर हैं।

जौ और गेहूँ कट चुके थे। तिल, उड़द, लोबिया, ज्वार, कुंजद, नखुदके मरकत-हरित पौधे पाँतीसे शोभा दे रहे थे। एक आध जगह परीक्षार्थ कपासको भी लालमीके तौरपर बोया गया था। बूढ़ेने कलाईकी घड़ी देखकर कहा—चक नम्बर दो भी पानीसे पट चुका होगा, अब लौटना चाहिये।

यात्री आये रास्तेसे लौट चले। बाबा साबिर मेहमानोंकी मंद-चारिकाका ध्यान न रख तेजीसे कदम बढ़ाता उनकी नजरसे गायब हो गया।

१२

"पन्द"

दाखुन्दा और गुलनारने इस नये गाँवमें कलखोज़चियोंको लिखना-पढ़ना सिखाने तथा पार्टीके दूसरे कामोंके लिये तीन मास दिये थे। अब उनके शहर लौटनेका समय आ गया था। लोगोंने उनकी बिदाईकी तैयारी की। आज दोनों अन्तिम बार जन-उद्यानमें जा बेंचपर बैठे। इतने दिनोंसे बराबर आते-आते उद्यानके साथ उनका प्रेम-सा हो गया था। इसी समय एक साठ-साला बूढ़ा अपनेको आयुसे भी अधिक वृद्ध

दिखलाते, हाथमें बैसाखी लिये, कमर टेढ़ी किये लम्बी साँस खींचते धीरे-धीरे कदम रखते उद्यानकी एक तरफसे चलकर दाखुन्दा और गुलनारकी ओर आने लगा। पास आकर सलाम कहकर "उफ्!" कहते उसने साँस ली। फिर दाखुन्दाकी तरफ ज़रा देर देखकर बोला—"बेटा यादगार! मुझे नहीं पहचानता?"

दाखुन्दाने सिरसे पैरतक बूढ़ेको देखकर कहा—नहीं, मैं नहीं पहचानता।

—न, प ह चा न ना भी ठी क है—बूढ़ेने हाँफते हुए कहा—पहले यह कि करीब बीस सालसे एक दूसरेको नहीं देखा। दूसरे यह कि तू सरकारका एक बड़ा आदमी बन गया है, मुल्ला हो गया है, कानूनदाँ हो गया है, बोलशेविक है; अब हम जैसे बूढ़े गुलामोंको क्यों देखने लगा?

—अता (बाप)! इन बेकारकी बातोंको छोड़, बतला कि मुझे कबसे जानता है और मैंने तुझे कहाँ देखा?

—मैं तेरा पितृ-परिचित हूँ। जब तेरा बाप अजीमशाहके घरपर था तो अपने हर काममें मेरी सलाह लेता था; मैं वही कुदरत समावारची हूँ। जब तू बंदी हुआ था, उस वक्त कर्ज देकर मैंने ही तुझे सरेजूयके बंदीखानेसे छुड़ाया।

—हाँ-हाँ, अब पहचाना तुझे—दाखुन्दाने कह गुलनारकी तरफ निगाह की—सच कहता है बाबा कुदरत, मेरे साथ तूने बहुत नेकी की है। मेरी पीठ-पीछे हर पाँच तंका पर एक तंका रोजाना सूद लेकर मुझे जेलसे छुड़ाया। और गुलनार! तेरा भी पितृ-परिचित है। हाकिमकी ओरसे मंगनी माँगकर तेरे साथ बड़ी नेकी की है।

बूढ़ा—हाय-हाय, यह मेरी बेटी गुलनार, क्या खूब—गुलनारकी ओर निगाह करके—बेटी गुलनार! तेरे साथ भी नेकी की थी। तुझे दर्रासे

निकालकर बिलायतके हाकिमके महलमें बेका (रानी) करके बैठाया था। आज तू भी नेकी करनेसे बाज न आ।

—खूब, अब क्या कर रहा है, और हमसे क्या चाहता है?—दाखुन्दाने पूछा।

—मैं एक गरीब आदमी था। हाकिमखाना, काजीखानाके दरवाजे-पर समावारचीगीरी करके और गरीबोंको पाँच-दस करज दे दिन काटता था—बूढ़ेने आह खींचकर फिर बात शुरू की—वह दिन चले गये। अब एक कौर रोटीके लिये भी मुहताज हूँ। चाहता हूँ कलखोजमें शामिल हो जाऊँ और अपने बल-बूतेके अनुसार काम करके रोटी खाऊँ। लेकिन यह लोग 'पत्त' कहकर मुझे कलखोजमें नहीं लेते। तू आज बड़ा आदमी है और सब लोग तेरी इज्जत करते हैं। तू कृतज्ञता समझकर मेरी सहायता कर और 'पत्त-वत्त' न कर 'कलखोज'में शामिल करा दे।

दाखुन्दा यद्यपि इस पितृ-परिचितको पहचान उसके कामोंको यादकर कुछ विमनस्क हुआ था, लेकिन उसके "पत्त-वत्त" कहनेसे वह अपनी हँसीको न रोक सका और 'पत्त-वत्तसे उनका क्या मतलब है' कहकर पूछा।

—मैं क्या जानूँ इस रूसी बोली को। मैंने इसका मतलब साबिरसे पूछा—वही साबिर जो अजीमशाहके घरपर रहता था। मैंने उसके साथ भी उपकार किया था। उसने कहा, इसका मतलब है कि तू कमकरोंका दुश्मन है।

—लेकिन क्या साबिर अभी तक जिंदा है?

—हाँ, जिंदा है। जमींनदारीका नया सुधार हुआ, तब अजीमशाहकी जमीनसे कुछ हिस्सा उसको मिला था और कुछ हिस्सा घरकी नौकरानी लड़की फातिमाको मिला। दोनोंने शादी कर ली। साबिर यहाँ चला आया, अब कलखोजका मेंबर है।

—फातिमा भी यहाँ ही है?—आश्चर्यके साथ दाखुन्दाने पूछा।

—चंद रोज पहले नहीं थी। कल साबिरके घर गया था। वहाँ उसे देखा।

—और अजीमशाहका क्या हुआ?

बूढ़ेने लंबी साँस खींचकर कहा—बेचारा बाय क्रांतिके शुरू ही में डरके मारे मर गया। उसका लड़का दरवाजमें बसमाचियोंका सरदार बना था, लेकिन वह भी एक शोगनानी लड़की पर हाथ डालते वक्त एक ताजिक स्वयंसेवकके हाथ मारा गया।

बूढ़ेकी इस बातको सुनकर दाखुन्दाके ओठोंपर एक गर्वपूर्ण हँसीकी रेखा फिर गई, लेकिन गुलनारकी आँखोंमें क्रोध झलकने लगा। बूढ़ेकी निगाह उधर न थी। उसका सारा ख्याल कलखोजमें शामिल होनेकी ओर था।

दाखुन्दाने बूढ़ेसे कहा—हम आज शहर जाना चाहते हैं। मुझे साबिरका घर बतला। हम उसे देखना चाहते हैं। तेरे बारेमें उससे बात करके बतलायेंगे।

बूढ़ा पहलेसे कुछ ताजा हो 'अच्छा' कहकर आगे चला और उन्हें गाँवके किनारेपर युरोपीय ढंगके नये घरोंमेंसे एकमें ले जाकर आवाज दी—साबिर! यह ले तेरे पुराने परिचितको तेरे पास लाया हूँ। अब पच्च-वच्च कहकर कलखोजमें शामिल होनेसे न रोकना।

दाखुन्दाने साबिरको देखते ही 'बाबा साबिर! अब पहचाना कि तू वही चचा साबिर है' कहते उसकी बगलमें जा उसके शिर और दाढ़ीको चूमा। फातिमा बेगीम आश्चर्यसे मिट्टीकी मूरत बन गई थी। उसे देखकर दाखुन्दा बोला—क्षमा करें बेगीम! इसी साल तुझे देखा। बहुत कोशिश की, लेकिन याद न कर सका कि तुझे कहाँ देखा था। जो भी हो, आज तुम दोनोंको अच्छी तरह पहचाना।

लेकिन बाबा साबिर और फातिमा अब भी न समझ पाये थे, कि बात क्या है, और न यही कि इस विद्यार्थीसे उनकी कहाँकी पहचान है।

कुदरत समावारचीने उन्हें पूछताछका मौका दिये बिना "क्या पहचानता नहीं साबिर ! यह अका बाजारका पुत्र यादगार है और यह उसकी प्रदत्ता" कहकर उनकी तरफ इशारा किया ।

बाबा साबिरने अतिथियोंको 'भले आये' कहनेसे पहले कुदरतकी तरफ निगाह करके "अच्छा किया जो तूने इन्हें यहाँ लाकर परिचय कराया, मैं इसके लिये तुझसे खुश हूँ । तू भी अच्छा आया, लेकिन इसी वक्त मेरे घरसे चला जा और फिर मेरे सामने न आना । मैं नहीं चाहता कि तेरे जैसे पराये पक्षके आदमीसे बात करूँ" कहकर उसे घरसे बाहर कर दिया ।

कुदरतने घरसे निकलते वक्त दाखुन्दासे 'बेटा यादगार !' कहते उससे सहायताकी आशा प्रगट की, लेकिन देखा कि दाखुन्दा उसकी ओर ध्यान न दे फातिमाकी तरफ मुँह करके बात करनेमें लगा है ।

कुदरत "उफ्...! अजीमशाहका नमक तुम्हारा कलेजा फोड़कर निकले" कहते चला गया ।

१३

सप्तम प्रजातंत्र

१६२६के अक्तूबरका अंत था । किसलक-नौ (नयागाँव)के क्लब घरमें नरनारी भरे हुए थे । स्कूलकी संगीत-मंडलीने अध्यापकके नेतृत्वमें दस-बारह तान और गीतें सुनाईं । लोगोंने गज़ल और कविता-पाठमें एक दूसरेका मुकाबिला किया, फिर नाच शुरू हुआ । अंतमें एक कोनेमें बैठे किसी आदमीने कहा—मेरा खयाल है क्यों न हमारे प्रिय अतिथि साथी बाज़ार-जादा और गुलनार जो कि आज हमसे बिदा हो अपने विद्यालयको जा रहे हैं, एकाध पद्य कहकर हमें खुश करें ।

चारों ओरसे 'निवेदन है निवेदन है' कहकर ताली बजने लगी ।

दाखुंदा बोला—मित्रोंकी प्रसन्नताके लिये मैं उनकी इस माँगको माननेको तैयार हूँ । समरकंदके एक ताजिक कविके एक बिल्कुल नये

गीतको भी लिखकर मैंने पासमें रखा है। लेकिन इस गीतको गानेमें एक शर्त है। बाबा साबिर और फ़ातिमा बेगीम भी पुराने जमानेमें हमारे साथ एक जालिम परिवारमें जुल्म सहते रहे और हम सालों बाद एक दूसरेसे अलग हो आज मिले हैं। यदि वह भी हमारे गानेमें साथ हों तो।

चारों ओरसे 'प्रार्थना है, प्रार्थना है' की आवाज आई।

तालियोंकी गूँजमें दाखुंदा, गुलनार, बाबा साबिर और फातिमा बेगीम मंचपर पहुँचे। पंद्रह मिनटकी तैयारीके बाद पर्दा हटा। फिर जोरोंसे तालियाँ बजने लगीं। दाखुन्दाने हाथके इशारेसे ताली बंद कराई। फिर चारोंने मिलकर गाना शुरू किया :—

हम गरीब हैं हमें हर बहाने	हाथोंसे जमानेके
सभी तीर जुलुमके जो जो हुए रवाने	हम हुए निशाने
हम गरीब हैं जो आराम न पाये	बीते जमानेमें
फिरते थे दर-बदर और खाना-ब-खाना	घबड़ाये हुए सीना
हम गरीब हैं कि बेवस्त्र बेजगह	दासतामें धायके
करते बहुत मेहनत ताकत-तोड़ते	दिन भी और रात
पैरोंमें जंजीर सिरपर असि कंधे पै डंडा	जिदान काना-खाना
अंते हमारे तन व मन व सिरसे	और हृदयसे भी
ज्वाला भरी आग घनघोर उठी	विप्लव-कारी
इस ज्वालाभरी आगसे जली पुरानी दुनिया	जला शाहोंका दरबार
प्राचीन व्यवस्था अन्यायकारिणी भी	हुई लुप्त विश्वसे
हम गरीब हैं कि इस पर्वत औ' मरुको	कर दिया जिमि उद्या
जो कुछ कि कहा था जैसे कि कहानी	दुनियाके लोगोंने
हर्षसे आये कलखोजके संघमें	जैसे कि नमूना
एकताके जीवनसे भरे हुए	सुखी मनुष्य
यह लाभपूर्ण श्रम, यह पत्थरी हिम्मत-	की संदर प्रशंसा
गाते हैं प्रसन्न अपनी विजयके गीत	चंग और डफके साथ

बड़े जोशकी तालियोंके साथ संगीत समाप्त हुई। लेकिन सभाके समाप्त होनेसे पहले कलखोजके एक प्रधानने मंचपर आके कहा—'साथियों! मैं तुम्हारे सामने एक बहुत जबर्दस्त खबर सुनाने आया हूँ, जो अभी-अभी दोशंबाकी डाकसे आई है। यह ऐसी खबर है जो मेरे, तुम्हारे और ताजिकिस्तानके सारे कमकरोंके सामने एक बहुत भारी जवाबदेही रखती है। सोवियतोंकी तृतीय विशेष कान्फ्रेंसने—जो कि पंद्रह अक्टूबर १९२९को आरंभ हुई थी—ताजिकिस्तानके कमकर जनसाधारणकी इच्छा और आर्थिक उन्नतिका विचार करके उज्बकिस्तानसे अलगकर ताजिकिस्तानको सोवियत-संघके अंदर सातवें सोवियत-समाजवादी-प्रजातंत्रके रूपमें स्वीकार किया है।'

तालियाँ बजने लगीं और लोगोंने नारा लगाया 'जिंदाबाद सोवियत-समाजवादी-प्रजातंत्र-संघका सातवाँ प्रजातंत्र।'

एक दूसरी भी महत्त्वपूर्ण सूचना है—'कान्फ्रेंसके प्रतिनिधियोंने दोशंबा शहरका नाम बदलकर स्तालिनाबाद रखनेकी इच्छा प्रगट की, इसे भी कान्फ्रेंसने एक रायसे स्वीकार किया।'

फिर तालियाँ बजीं और नारा लगा 'जिंदाबाद स्तालिन और स्तालिनाबाद।'

सभा समाप्त हुई।

समरकंद १० मार्च १९३०

—६१—

परिशिष्ट

१—'दाखुंदा' और ऐनी

सदरुद्दीन ऐनीका उपन्यास 'दाखुंदा' अमीरके जमानाके बुखारा और ताजिकिस्तानके जीवन और समाजके संबंधमें पहला बड़ा ग्रंथ है। हमने पहले पहल ऐनीको उपन्यासकारके तौरपर उनकी कहानी 'आदीना'में देखा। लेकिन 'दाखुंदा' बिल्कुल दूसरी चीज है। वह कलापूर्ण साहित्यकी एक उच्च-श्रेणीकी बहुमूल्य कृति ही नहीं है, बल्कि दाखुंदाका महत्त्व सबसे अधिक इस बातमें है, कि इसमें बुखारा और ताजिकिस्तानकी बहुत सी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं और वर्ग-संघर्षका चित्र खींचा गया है। दाखुंदाकी घटनाएँ दिन-प्रतिदिन अधिक राजनैतिक महत्त्व रखेंगी।

इस उपन्यासका लेखक 'जदीदों' (नवीनवाद) आन्दोलनका एक प्रसिद्ध प्रतिनिधि और बुखाराकी क्रांतिकारी हलचलमें आरंभसे ही क्रांतिके लिये काम करनेवाला रहा। इसलिये बुखारा-क्रांतिकी घटनाओंका विवरण उसके मुँहसे सुनना, उसकी कलमसे पढ़ना एक विशेष महत्त्व रखता है।

ऐनी यद्यपि उन व्यक्तियोंमेंसे हैं, जिन्होंने जदीदी-आंदोलनकी बुखारामें नींव डाली, लेकिन वह 'जदीद (नवीन) वाद' और जदीदोंकी रंगीन तस्वीर नहीं खींचते, बल्कि उनकी असली तस्वीरको पूरी निष्पक्षताके साथ

और घटनाओंके आधारपर पाठकोंके सामने रखते हैं। ऐनीने "दाखुंदा"में एक कलापूर्ण किंतु सीधी भाषामें बतलाया है, कि जदीद मध्यमवर्ग (बुर्जुअजी) के सुधारक-समुदायके प्रतिनिधि थे। शोषित जनसाधारणसे उनका कोई संबंध न था, और न वह उनके अधिकारोंके हिमायती थे। 'दाखुंदा'में पूर्वी बुखारा (ताजिकिस्तान)में बसमाचीगरीका पैदा होना, अनवरपाशाका आकर उनके साथ मिलना, जदीदोंका अनवर और बसमाचियोंसे सम्बन्धका बहुत स्पष्ट और सविस्तर वर्णन किया गया है।

इसलिये 'दाखुंदा'को केवल एक कलापूर्ण साहित्य-ग्रंथके तौरपर ही नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक कृति—जिसमें मध्य एसियाके एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्रांतिका इतिहास वर्णित है—के तौरपर देखना चाहिए।

ताशकंद, दयाकोफ़्

४ सितंबर १९३०

२—सदरुद्दीन ऐनी *

...ऐनीकी जुबलीके समय हमें अपने प्रिय 'मानव-आत्माके इंजीनियर' गोर्कीकी बात याद आती है। उसने अपनी जुबलीके समय कहा था—'है कोई स्थान पूँजीवादकी दुनियामें, जहाँ लेखकका इतना मान-सम्मान हो सकता हो ? नहीं है। पूँजीवादका मंदिर ध्वस्त हो चुका है। वहाँ कोई चीज़ बची नहीं है।" मानव-आत्माके इंजीनियर सदरुद्दीन ऐनीकी जुबलीके समय आज भी हम उन शब्दोंको दुहरा सकते हैं...

सामंतवादी पूर्व (देशों)में रूदकी, फिरदौसी, सादी, उमर खैयाम, हाफिज़ जैसे कितने ही योग्य और महान् साहित्यकार पैदा हुए हैं, किंतु

* ऐनीकी तीस-साला जुबलीके समय १६ नवंबर १९४५को स्तालिनाबादमें आविदोफ़्का भाषण।

ये महामानव यदि दार (शूली)पर खींचे जानेसे बच पाये, तो भी वह सदा उत्पीड़ित या निर्वासित होकर रहे।...विश्वकवि और दार्शनिक नासिर खुसरूकी जीवन-घटना है।...एक दिन वह शहर नेशापूर पहुँचा। दूरसे पैदल आनेसे जूते फट गये थे। उन्हें सीनेके लिये मोचीको दिया। इसी समय शहरमें हल्ला मचा। मोची अपने हथियारके साथ उस तरफ दौड़ गया। घंटा बाद खूनसे रंगे अपने चर्मावरकके साथ लौट आया। नासिर खुसरूने पूछा—'वहाँ क्या बात हुई?' मोचीने जवाब दिया—'एक पतित नास्तिक आदमी—जिसका नाम भी जिह्वापर नहीं लाना चाहता,—का शिष्य हमारे शहरमें आया है।' कविने जोर देकर कहा—'जैसे भी हो उसका नाम बतलाओ।' मोचीने जवाब दिया—'उस पापीका नाम नासिर खुसरू है। अभी धर्म-युद्ध घोषित करके उसके शिष्यकी बोटियाँ-बोटियाँ उड़ा दीं। मैं देरसे पहुँचा और केवल अपने चर्मावरकको उसके खूनसे रंग पाया। इसमें भी पुण्य है, हाँ उतना नहीं।' 'अलबत्ता ठीक'—कविने जवाब दिया। इस घटनाको सुनकर उसका दिल काँप गया। वह सोचने लगा, यदि मेरे शिष्यके साथ ऐसा कर सकते हैं, तो मुझे पहचान लेनेपर मेरी क्या गत बनायेंगे? फिर एकाएक अपनी जगहसे उठ चिल्लाकर बोला—'नहीं, मैं इस शहरमें नहीं ठहर सकता, जहाँ कि ऐसे पतितके शिष्य रहते हैं' और जूतेको बिना लिये ही नंगे पैर शहरसे चला गया। यह था बर्ताव सामंतशाही पूर्वका महान व्यक्तियोंके प्रति।

हमारे प्रसिद्ध लेखकके जीवन-पथका बड़ा भाग अमीरी अत्याचार और प्रतिगामिताके जमानेमें गुजरा। सदरुद्दीन ऐनी १८७८ ईस्वीमें बुखाराके पास गिजदवान तूमान (परगना)में एक गरीब किसानके घर पैदा हुए। छः वर्षकी उम्रमें वह गाँवके मस्जिदवाले मकतबमें पढ़ने गये। माँने मकतब भेजते वक्त ऐनीसे कहा 'जब तू चार साल चार माह चार हफ्ता चार रोजका हुआ, तो तुझे तश्तरी और दस्तरखानके साथ हमने मकतब भेजकर पाठारंभ करवाया था, लेकिन उस समय तू बहुत छोटा

था। मैं बहुत डरती थी कि मकतबमें तुझे बहुत तकलीफ देंगे। इसीलिये रोक लिया और तू अब तक खेलता-कूदता रहा। लेकिन अब खूब मेहनत करके पढ़ना, जिसमें तेरे घरपर रहनेके इन चार सालों तक मकतब जाने वाले अपने पड़ोसियोंके बराबर हो जाय।'

ऐनी जब बारह सालके हुए तो उनके बाप मर गये और बड़े भाई [हाजी सिराजुद्दीन खोजा] उन्हें बुखारा ले गये। वहाँ चौकीदारीका काम करते उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी। उनका वह जीवन कष्ट और दुखपूर्ण जीवन था, लेकिन जीवनके यह अनुभव ऐनी जैसे सूक्ष्मदर्शी लेखकके भविष्यके कामके लिये बड़े ही लाभदायक सिद्ध हुए। ऐनीने उस जीवनके बारेमें कहा है। 'मेरी मासिक आय ७८ तंकासे अधिक न थी। सारे मदरसेकी झाड़ू-बर्दारी और बड़ोंकी सेवा करना भी मेरे जिम्मे था। ऊपरसे मुतवल्ली (प्रबंधक)ने मदरसाकी संपत्ति हिन्दू सूदखोर किरायादारोंके रहनेकी सरायका प्रबन्ध भी मेरे शिरपर रक्खा था। इसी समय मुझे सूदखोर हिंदुओंके जीवन और रीति-रिवाजोंका परिचय हुआ।

मदरसाके फर्राश (फर्श बिछानेवाले) होनेकी वजहसे उन्हें विद्वत्-संसारके साहित्यकारों और कवियों यानी अहमद कल्ला और दूसरोंसे परिचित होनेका मौका मिला। जल्दी ही सदरुद्दीन प्रगतिशील आदर्शकी ओर आकृष्ट हुए, जिसने उन्हें जदीदोंकी पंक्तिमें ला रक्खा।

ऐनीने कोशिश की, कि नये ढंगके मदरसोंको खोल नई तरहकी पाठ्य-पुस्तकोंको तैयार कर विद्यार्थियोंको पढ़ाया जाय। इसका परिणाम हुआ—अमीरके सामने दोषारोपण कर उन्हें दंड दिया जाना, और अमीरके जल्लादोंके हाथसे पचहत्तर बेंत खा जेलमें डाल दिया जाना।

ऐनी १९१८ ई०में जेलसे मुक्त हुए। अमीरके हाथसे अब वह बाहर थे, लेकिन उसने उनके भाई तथा जदीदी आन्दोलनके पुरस्कर्ताओंमें

से एकका कत्ल कराया। अपमान, शारीरिक दण्ड, भाईका कत्ल और साथ ही किसानोंके कष्टमय जीवनके अनुभवने ऐनीको अमीरका दुश्मन बना दिया···(अपने विचारों को ऐनीने) इन पद्योंमें प्रगट किया है :—

भगवान् ! वह मुफ्ती, वह काज़ी, वह शाह और वज़ीर
नतशिर हो अपने रक्तमें लुंठित होवें।

यह उधृत वाक्य यद्यपि अमीरों, खानों और जल्लादोंके सारे समुदायके विरुद्ध घृणा प्रकट करते हैं, किन्तु तो भी उस वक्त अभी उनकी वाणीमें कमकरोंकी स्वतन्त्रताके क्रान्तिकारी मार्गका कहीं पता नहीं लगता···क्रान्तिकारी आन्दोलन आगे बढ़ा। फिर अक्तूबर (रूसी) क्रान्तिने उनपर जबर्दस्त प्रभाव डाला और सद्रुद्दीन ऐनीको आगे बढ़ा पूर्वके क्रान्तिकारी लेखकोंकी पंक्तिमें ला खड़ा किया!

ऐनी की कितनी ही पुस्तकें रूसी, उजबेकी, उक्रेनी आदि भाषाओंमें अनुवादित हो चुकी हैं।

(ऐनीका) 'आदीना' ताजिकी भाषाके साहित्यमें यदि प्रथम उपन्यास है, तो सद्रुद्दीन ऐनीकी दूसरी कृति 'दाखुन्दा' निश्चय सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृति मानी जायगी···ऐनीकी नई कृति 'गुलामान (जो दास थे)' इतिहासके एक बड़े भागका उच्च तथा मर्मज्ञतापूर्ण दृश्य पेश करते प्रजातन्त्रिक कलखोजकी स्थापना और नवीन जीवन···के नजदीक तक पहुँचाती है···

अहमद कल्लाका ऐनीके ऊपर आरम्भमें बहुत प्रभाव रहा। सद्रुद्दीन ऐनीके कृतित्वकी विशेषता अपने पहलेके लेखकोंसे क्या है? ऐनी किस तरहका श्रेष्ठ कलमका धनी है? सबसे पहला बड़ा काम ऐनीका है ताजिक भाषाको अरबी शब्दोंसे—जोकि लम्बे ऐतिहासिक कालमें आ घुसे थे—शुद्ध करना। इसी लिये सबकी समझमें आनेवाली उनकी कृतियोंसे बहुसंख्यक जनताने लाभ उठाया।

ऐनीने जनताकी चलती भाषासे सिर्फ फायदा ही नहीं उठाया, बल्कि उस भाषाको पूर्ण और उन्नत कर अपनी कृतियों द्वारा उसे दुनियाके साहित्यमें स्थान दिलाया…

'आदीना' और 'दाखुन्दा' की भाषा वह भाषा है, जिसमें लोग बातचीत करते हैं। इससे तथा जनसाधारणके जीवनकी गम्भीर जानकारीने ऐनीको बहुत जल्द कमकर-जन-साधारणकी भारी संख्यामें प्रसिद्ध कर दिया। गाँवों, कलखोजों और स्कूलोंमें ऐसे कितने ही पाठक मिलेंगे, जो 'आदीना' और 'दाखुन्दा' की कहावतोंको, बातचीतमें प्रयुक्त करते हैं…।

सदरुद्दीन ऐनीने ताजिकिस्तान समाजवादी सोवियत प्रजातन्त्रकी केन्द्रीय कार्यकारिणी-समितिके स्थायी सदस्यके तौर पर हमारे प्रजातन्त्रकी संस्कृतिके निर्माण करने और स्कूलोंकी समस्याओंको हल करनेमें भारी काम किया है।

पूज्य गुरु सदरुद्दीन ऐनी अधिक वर्षों तक हमारे भीतर रह शत्रुओंकी भय भीत करते हमारे समाजवादी देशकी भलाईके लिये…काम करते रहे।

३—सदरुद्दीन ऐनी*

"…छः सालकी अवस्थामें माँ-बाप मुझे मस्जिदके मकतबमें ले गये…मकतबका फर्श केवल १६ वर्ग अर्शीन (६-६ वर्गगज) था। उसे लकड़ीके कठघरेसे नौ भागोंमें बाँट दिया गया था। विद्यार्थी इन्हीं कठघरोंमें ढोरोंकी तरह बैठते थे और मुल्लाका डंडा उनके सिरपर रहता था। विद्यार्थी बिना समझे ही कुरानकी आयतोंको जोर जोरसे

* 'मास्कोन्यूज' ८ मार्च १९४७

दुहराया करते थे।"'मैंने अपने जीवनमें दो स्वतन्त्रताओंको सबसे अधिक महसूस किया, जिनमेंसे एक वह थी जब कि बयालीस सालकी उम्रमें पचहत्तर बेंत खाकर अमीरके जेलमें पड़े मुझे वहाँसे छुड़ाया गया और दूसरी उससे छत्तीस वर्ष और पहले छः सालकी उम्रमें, जब कि मुझे मकतब न जानेकी इजाज़त मिल गई। कह नहीं सकता, दोनोंमेंसे किसको ज्यादा मैंने पसन्द किया।" [ऐनीने एक जगह अपने बारेमें लिखा है।]

बारह सालकी आयुमें ऐनी गाँवसे अपने भाईके पास बुखारा-कदीममें चले गये। वहाँ उन्हें उक्त मदरसेमें चौकीदारका काम मिल गया। प्रबन्धकोंकी कृपासे जीविकाके लिये चौकीदारका काम करते भी मदरसामें पढ़नेकी आज्ञा मिल गई। यहाँ इस विद्यार्थी-जीवनमें शिक्षित नौजवानोंकी संगति पाकर ऐनीका ध्यान उस द्वन्द्वकी ओर गया, जो कि तत्कालीन समाजमें दिखाई पड़ता था। एक ओर तो यह विद्या और प्रकाश की हरियावल थी और दूसरी ओर चारों तरफ अनन्त विजन बालुकाराशि, एक ओर आँखोंको चकाचौंधमें डालनेवाला बुखारा-नगरका वैभव और दूसरी ओर बहुसंख्यक जनताकी घोर दरिद्रता"'।

१९१८ में क्रान्तिकी गूँज बुखारा पहुँची। शताब्दियोंसे दबी जनताने रूसी मजूर कोलोसोफके सैनिक दस्तेकी सहायतासे अमीर और उसकी हकूमतको मार भगाया"'। नई प्रजातन्त्री व्यवस्थाके प्रारम्भमें ऐनीको जिन कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा, उन्होंने उनके कलामय मस्तिष्क और अनुभूतियोंको और भी सशक्त, और भी व्यापक बना दिया। यद्यपि उन्होंने क्रान्तिसे पहले ही साहित्य-क्षेत्रमें पग रखा था, लेकिन उन्हें अपने कामका पूरा अवसर सोवियत-युगमें ही मिला। क्रान्तिके आते ही ऐनी दिलोजानसे अपनी जनताको विद्या और ज्ञानके आलोकसे आलोकित करनेमें जुट गये। सोवियतकी ओरसे पहलेपहल खोले गये स्कूलोंमें उन्होंने अध्यापनका काम किया, फिर मध्य-एसियाकी प्रथम प्रकाशन

संस्थामें सम्पादकका भार सँभाला, साथ ही प्रथम प्रकाशित होनेवाले पत्र-पत्रिकाओंमें लेख लिखना प्रारम्भ किया। उनका प्रथम उपन्यास 'आदीना' ऐसे ही लेखोंके रूपमें निकला।

और अब उनके ताजिकिस्तानमें तीन हजार स्कूल, सात कालेज, एक युनिवर्सिटी, बीस टेकनिकल स्कूल, पचहत्तर दैनिक पत्र और पत्रिकाएँ हैं। "ताजिक-सरकार-प्रकाशन-संस्था" (स्तालिनाबाद)की ओरसे पुस्तक-पुस्तिकाओंकी प्रतियाँ चार करोड़ बीस लाख ताजिक भाषामें प्रकाशित हो चुकी हैं।

ऐनी अब भी सोवियत ताजिकिस्तानके निर्माण कार्यमें भाग लेते हैं। पहली पंचवार्षिक योजनाके समय नव-निर्माणके स्थानोंमें नीचेसे ऊपर तक उन्होंने घूम-घूमकर देखा और उन पर पत्रोंमें लेख लिखे। विश्व-युद्धके समय ताजिक बहादुर तैमूर मलिक पर ऐनीने पुस्तक लिखी। वख्श (वक्षु) उपत्यकाकी भारी नहर तथा बिजलीके कारखाने और दूसरे निर्माणों पर लेख लिखे।

दूसरी पीढ़ीके तरुण लेखकोंको तैयार करनेमें ऐनीका विशेष हाथ है। वह उस्ताद ऐनीके पास अपनी पुस्तकोंकी पांडुलिपियाँ संशोधनके लिये भेजते हैं। १९४७के निर्वाचनमें लोगोंने ऐनीको ताजिकिस्तानकी पार्लमिन्ट-का मेम्बर चुना।

ऐनीकी पुस्तकोंके अनुवाद केवल सोवियतकी एसियाई भाषाओंमें ही नहीं, बल्कि उक्रइन, बेलोरूसिया और रूसकी भाषाओं में भी हुए हैं।

४—स्वलिखित जीवन-घटनाएँ

"मैं सन् १८७८ में बुखारा जिलेके गिजदवान तहसीलके साकतारी गाँवमें एक गरीब किसानके घर पैदा हुआ। बारह सालकी आयुमें

अनाथ हो गया। बड़ा भाई बुखारामें पढ़ रहा था, उसने मुझे अपनी संरक्षकतामें ले लिया। वहाँ मैं पढ़ता और मजूरी करता रहा। मदरसा-आलमजानमें एक वर्ष झाड़ूदार (फर्राश) का भी काम किया। १९०५ से अध्यापक और स्कूली पुस्तकोंके लेखनका काम करता रहा। १९१५-१६ में एक साल किजिलतप्पाके कपासके कारखानेके कटाईके आफिसमें काम किया

१९१६ में बुखाराके एक मदरसामें मुदर्रिस (प्रोफेसर) नियुक्त हुआ। १९१७ के राष्ट्रीय आन्दोलन या "फरवरी क्रान्ति"में अमीरके विरुद्ध भाग लिया। १६ अप्रेलको गिरफ्तार कर मुझे पछत्तर कोड़े मारे गये और आबखाना नामक जेलमें डाल दिया गया। रूसी क्रान्ति-सेनाने मुझे जेलसे निकालकर कागनके अस्पतालमें रख दिया, जहाँ बावन दिन रहनेके बाद मैं स्वास्थ्य लाभ कर सका। १७ जून (१९१७) को समरकन्द आया। तबसे समरकन्द नगरमें ही मेरा निवास है।

मार्च १९१८ में कोलिसोफ्के युद्धकांडके समय मेरे छोटे भाईको—जो कि मुदर्रिस थे—अमीरने पकड़वाकर मरवा दिया। १९१८ से मैं सोवियत्के हाई स्कूलोंमें पढ़ाने लगा। साथ ही १९१९—२१में समरकन्द-के दैनिक और मासिक पत्र-पत्रिकाओंमें साहित्यिक सम्पादकका भी काम करता रहा। बुखाराकी क्रान्तिमें भाग ले अमीरके विरुद्ध जनताको उभाड़नेका काम किया। १९२२ में मेरे बड़े भाईको साकतारी गाँवमें बसमाचियोंने मार डाला। १९२१के अन्तसे १९२३ तक बुखारा जन-सोवियत्-प्रजातन्त्रके वकीलके सहायक (नायब) के तौर पर समरकन्दमें काम करता रहा।

१९२३के अन्तसे १९२५ तक समरकन्दमें सरकारी व्यापारका संचालक (डाइरेक्टर) रहा। १९२६ से १९३३ तक लिनिंग्रादमें साइन्स और साहित्य विषयक सम्पादकका काम किया। सितम्बर १९३३में

ताजिक सरकारने पेन्शन दे मुझे कामसे फुर्सत दे दी, जिसमें कि मैं घर पर रहकर अपना साइन्स (अनुसन्धान) और साहित्य सम्बन्धी कार्य स्वतन्त्रतापूर्वक कर सकूँ।

१९३५ से मैं उजबकिस्तानकी उच्च शिक्षण-संस्थाओं—उजबक सरकारी युनिवर्सिटी (समरकन्द), समरकन्द ट्रेनिंग कालेज, ताशकन्द ट्रेनिंग कालेज, ताशकन्द लॉकालेज, मध्य-एसिया युनिवर्सिटी (ताशकन्द) —में एम० ए०, डाक्टर-उमेदवार (पी-एच० डी०) और डाक्टर (डी० लिट्) की परीक्षाओंका परीक्षक और परामर्शदाता होता हूँ। इस समय मध्य-एसिया युनिवर्सिटीके डाक्टर-विद्यार्थी इब्राहीम मोमिनोफ, उजबक युनिवर्सिटीके डाक्टर-विद्यार्थी वाहिद अब्दुल्ला और डाक्टर-उमेदवार विद्यार्थी मिर्ज़ाज़ादा; और ताशकन्द ट्रेनिंग कालेजके एम० ए० के विद्यार्थी मर्दन शरीफजादा और सदारत अयूबजानोफ अपने अपने विषयों पर मेरे तत्वावधानमें काम करते हैं।

१९२३ में ताजिक समाजवादी सोवियत् प्रजातन्त्रकी केन्द्रीय कार्य-कारिणीका मैं मेम्बर चुना गया। १९२९-३८ तक भी उसका मेम्बर रहा। १९३१ में ताजिक सरकारने मुझे "लाल श्रमध्वज" का तमगा प्रदान किया। ११३५ में सरकारकी ओरसे मुझे एक कार और भवन प्रदान किया और उजबक सरकारकी ओरसे सनद और रेडियो मिला।

१९२३ में अखिल सोवियत लेखक-संघका मैं मेम्बर चुना गया। १९३४ से १९४४ तक उसके प्रेसीदियम (सभापति-मंडल) का एक सभापति और ताजिकिस्तान तथा उजबकिस्तानके लेखक-संघोंकी उच्च-समितियोंका भी सदस्य रहा। अप्रेल १९४१ में सोवियत् सरकारने "आर्डर-लेनिन" नामक तमगा प्रदान किया। १९४३ में उजबक साइन्स अकदमीका मैं "माननीय सदस्य" निर्वाचित हुआ। १९४६ में "साइन्सके कामके लिये" तमगा मिला। १९३९ में स्तालिनाबादकी नगर सोवियत् (कार्पोरेशन) का मेम्बर चुना गया। २९ अक्टूबर

१९४० को "माननीय साइन्सी नेता ताजिकिस्तान समाजवादी सोवियत् प्रजातन्त्र" की उपाधि मिली। अक्टूबर १९४६ में उजबक युनिवर्सिटीकी साहित्य फैकल्टीका डीन (प्रधान) बनाया गया।

ऐनी*

—२३ अप्रेल १९४७।

—:०:—

* मेरे कहनेपर ऐनीने उपरोक्त विवरण लिख भेजा था।—राहुल।